अन्तिम झाँकी

लेखिका

मनुबहन

अनुवादक

गो० न० वैजापुरकर

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

रा ज घा ट, का शी
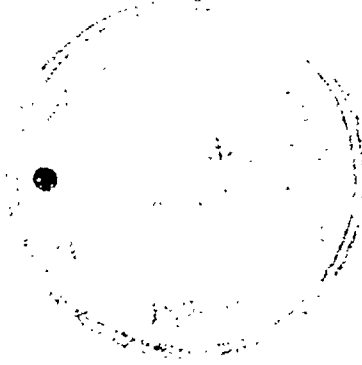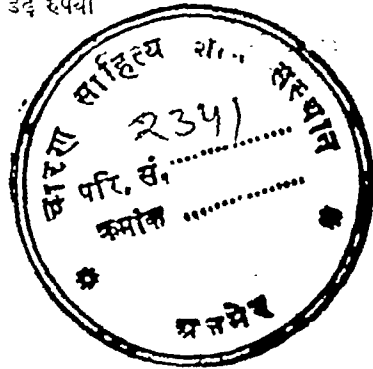
अपनी बात

पूज्य बापू के जीवन का उत्तरार्ध और मुख्यतः उनका अन्तिम काल अत्यन्त ही उज्ज्वल, महत्त्वपूर्ण और अपूर्व रहा है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं बापू के अन्तिम दिनों में उनके चरणों के निकट रह सकी। अन्तिम दिनों में उनके निकट रहने का सौभाग्य तो मुझे मिला, पर यह नहीं पता था कि अपनी ही आँखों मुझे बापू का निर्वाण भी देखना होगा।

बापू के जीवन की अन्तिम एक महीने की डायरी मैं अपनी टूटी-फूटी भाषा में लिख लिया करती थी। बापू के ये अन्तिम दिन भारतीय इतिहास के अमिट अध्याय हैं। इन पृष्ठों में पाठक भारत की तत्कालीन स्थिति और बापू की वेदना, आकुलता को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

मैं कोई विदुषी नहीं और न मुझे कोई अनुभव ही है। फिर भी अपनी बुद्धि के अनुसार अब तक जो कुछ भी टूटी-फूटी भाषा में लिखा है, उसे जनता ने बड़े प्रेम से स्वीकार किया है। असल में तो मेरे लेखन में जो कुछ मधुर और श्रेयस्कर रहा है, वह सब बापू का ही है। मैंने अपने शब्दों में बापू को ही व्यक्त करने का प्रयास किया है।

स्व० पूज्य किशोरलाल काका का आभार मानना तो मुझे कृत्रिम लगता है। उन्हें तो मैं हृदयपूर्वक वन्दन करके ही उनका ऋण अदा करूँगी। श्री मनु भाई जोधाणी (सम्पादक—'स्त्री-जीवन') तथा श्री जयन्तीलाल भाई (सम्पादक—'भावनगर-समाचार') का जितना आभार माना जाय, उतना थोड़ा है। उन्होंने अत्यन्त प्रेम और आत्मीयतापूर्वक मेरी संस्मरणात्मक यह लेखमाला प्रकाशित की। मूल प्रेरणा तो श्री किशोरलाल काका की थी ही।

बापू ने कहा था कि "मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है", इसलिए इसमें जो कोई भी घटना प्रसंगवश आयी है, उसमें मैंने हर तरह से यह सावधानी बरती है कि किसीका नाम आदि न आ पाये। फिर भी इतने लम्बे विवरण में

यदि किसीको कुछ भी दुःख होने जैसी बात लगे या अपने साथ अन्याय होने जैसा मालूम हो, तो वह मुझे क्षमा करे; यह मैं बार-बार विनती करती हूँ।

इसमें मुख्यतः बापू के महाप्रयाण तक का दैनिक विवरण दिया गया है। उसके बाद उनकी अन्तिम विधि का वर्णन और उससे सम्बद्ध अनेक बातें अन्यत्र विस्तृत रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं। अतः उनके बारे में विशेष न लिखकर जितना मैंने आँखों देखा, उसे ही संक्षेप में देकर यह झाँकी पूरी की है।

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ मेरी इस डायरी का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रहा है, अतः राष्ट्रभाषा-प्रेमी सभी लोगों को अब इसका लाभ मिलेगा। मुझे विश्वास है कि हिन्दीभाषी जनता में इसका समुचित स्वागत होगा।

—लेखिका

अनुक्रम

अन्तिम झाँकी

: १ :

सेवक और चित्त-शुद्धि

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
३१-१२-'४७

बुखार क्यों आना चाहिए ?

आज तो मैं दो दिनों की डायरी पूरी करके यह लिख रही हूँ। तबीयत ठीक है। प्रार्थना से उठकर बापू ने पहला यही सवाल किया :

"देख, बुखार कितना है ?· सुबह तो १०० डिग्री रहा। आज दो दिन बाद इतना उतरा। कल तो शाम के ६ बजे से ही सो गयी थी, कब उठी ? यही बताता है कि तू काफी कमजोर हो गयी है। तुझे सोचना चाहिए कि इस तरह बार-बार, महीने-दो महीने में बुखार क्यों आता है ? यह मुझे तनिक भी अच्छा नहीं लगता। मुझे अभी तुझसे बहुत-बहुत काम लेना है। ईश्वर ने तुझे सेवा-भावना दी है, हृदय दिया है और बुद्धि, प्रेम आदि सभी कुछ दिया है। लेकिन शरीर को न सँभालेगी, तो सब कुछ व्यर्थ है। यह भी निश्चित समझ ले कि ईश्वरीय वरदान की इस तरह अवहेलना करने से ईश्वर नाराज हुए बगैर नहीं रहेगा। तू दो दिनों तक बुखार में पड़ी रही, इससे मेरे कितने काम रुक गये ! फिर मुझे चिन्ता भी रहती ही है। इसलिए तू खूब खुश रह, पूरा आराम कर और शरीर से ज्यादा काम मत ले। तुझे दिनभर थोड़ी-थोड़ी पौष्टिक चीजें भी खानी चाहिए। खूब फल खाया कर। एकबारगी बैठकर खाया नहीं जाता, इसलिए आवश्यक पोषण नहीं मिल पाता।

"ध्यान रख, मैं तुझ पर बिगड़ नहीं रहा हूँ। तुझ पर बिगड़ने में मेरा कोई लाभ नहीं और तेरा तो है ही नहीं। यह तो सिर्फ अपना दुख-दर्द सुना रहा हूँ। जब मैं कुछ फुरसत पाता हूँ, तो लगता है कि इस बच्ची ने 'बा' की और मेरी सेवा में अपने कोमल शरीर को सुखा डाला और मैं इतना भी नहीं कर पाता कि तू सोलह साल की लड़की जैसी सशक्त दीखने लगे। मैं इतना भी काम का नहीं रहा, तो फिर हिन्दू-मुसलिम-एकता का महाभारत किस तरह हल कर सकता हूँ ?

तू कल्पना ही नहीं कर सकती कि तेरे १०३ डिग्री बुखार ने मुझे कितना बेचैन कर डाला। इन दो दिनों में तू कितनी कुम्हला गयी? यह देखकर मुझे कितना दुःख हो रहा है? अगर मुझे तेरा ही पूरा सहयोग न मिला, तो इतनी बड़ी इकाई बनाने के लिए मैं जो सभी का सहयोग चाह रहा हूँ, वह कहाँ से मिलेगा? (प्रेम की थपकियाँ लगाकर) तू रोती है, यह मुझे तनिक भी नहीं भाता! आज तो मुझे दुःख ही हो रहा है। इसलिए देख, अब यह तय कर ले कि तुझे तो तन्दुरुस्त ही रहना है। काम का अधिक लोभ मत रख! आखिर यह लोभ भी तो पाप ही है न?"

महादेवभाई की स्मृति

सुबह-सुबह, बापू ने यों तो अत्यन्त प्रेम से, पर पूरी गम्भीरतापूर्वक मुझसे यह बात कही। इस बात को लेकर दिनभर मैं अनमनी ही रही। रात में तो बापू ने मेरी डायरी भी पढ़ने के लिए माँगी। बहुत दिनों बाद उसे पढ़ा। डायरी उन्हें पसंद आयी। हस्ताक्षर भी कर दिये। सारा-का-सारा अक्षरशः ज्यों-का-त्यों लिखा देख एकाएक कह उठे: "अहा! आज महादेव होता, तो इस तरह अक्षरशः लिखे नोटों को देखकर नाच उठता। महादेव में यह अद्भुत सामर्थ्य थी। वह तुझे इतना अधिक विकसित कर देता कि तू उसका हाथ बँटाने लगती और इस तरह उसके काम का बोझ काफी हल्का हो जाता। आज पग-पग पर महादेव की कमी खटक रही है।…यहाँ…के बीच झगड़ा खड़ा हो गया है। अगर महादेव होता, तो वह तुरत ही शांत हो जाता। उसमें समर्पण-शक्ति तो अद्भुत थी!"

आज दिन में मेरी तबीयत ठीक रही। बापू की मालिश, स्नान, बङ्गाली पाठ, कताई, भोजन आदि तो नियमानुसार ही चलते हैं। आज मुलाकातों का ताँता लगा रहा, इसलिए खास कुछ लिखवाया नहीं। सिर्फ तात्यासाहब पर एक नोट लिखवाया। ठक्कर बापा आये थे। उनकी तबीयत भी कमजोर होती जा रही है। जाड़ा इतना तेज पड़ रहा है कि हाथ-पैर ठिठुर जाते हैं। उसके साथ ही मुझे तो बुखार के कारण अन्दर से भी उतना ही जाड़ा लग रहा है।

चित्त-शुद्धि के बिना स्वराज्य कैसा?

…को लिखते हुए बापू ने लिखवाया: "हमें अंग्रेजों से लड़ना कठिन

मालूम पड़ता था। लेकिन आज मैं देखता हूँ, तो वह लड़ाई बहुत ही सरल प्रतीत हो रही थी। किन्तु आज की यह लड़ाई कठिन लग रही है। अंग्रेजों से तो हम, तिल का ताड़ बनाकर, कुछ भी कह सकते थे। लेकिन आज तो हम खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। कर्तव्य सामने उपस्थित होने पर उससे भागने लगते हैं। बिना शुद्धि के स्वराज्य कभी स्थापित नहीं हो सकता। हममें शुद्धि नहीं थी, इसीलिए ऐसा राज्य हम लोगों के हाथ लगा। मेरे विचार से यह स्वराज्य है ही नहीं, 'स्वराज्य' का सच्चा अर्थ यही है कि मानव अपनी शासन-सत्ता के अन्तर्गत स्वयं सरलता से जीये और अपने आसपास के लोगों को जिला सके।..."

सेवक का आचरण

दोपहर में सुभद्रा बहन गुप्ता और दूसरी कई बहनें आयी थीं। उनसे बातचीत करते हुए बापू ने कहा : "आप लोग निर्वासित कैम्पों में सामाजिक कार्य करने जाती तो हैं, लेकिन उन पर आपका कुछ भी प्रभाव पड़ ही नहीं सकता। कारण आप ये रेशमी कपड़े पहन और अप-टू-डेट बनकर जाती हैं और वहाँ उपदेश देती हैं : 'हाथ-कते सादे कपड़े पहनिये, सफाई कीजिये।'...अरे! ये तो बेचारे गरीब ही हैं, इन्हें आप क्या उपदेश देंगी? हाँ, आप ही चार बहनें इस दिशा में आगे आयें। आप लोगों का बाह्य एवं आन्तरिक जीवन जितना ही सादा और सात्त्विक होगा, उतना ही आपके काम का असर होगा। आप लोग घर से, बँगले से खा-पीकर, बन-ठनकर, इठलाती, बल खाती और हाथ में पर्स ले मोटर से उतरती हैं। किन्तु आपके सामने के लोग ऐसे होते हैं, जिनके पास तन के कपड़े के सिवा दूसरे कपड़े का ही टोटा है और इसी कारण जो नहा भी नहीं पाते। उन्हें हजारों की कीमत का अपना सारा माल-असबाब छोड़ देना पड़ा है। ऐसे लोगों के पास आप जाती तो हैं, पर कभी इस पर विचार किया है? आपको तो समाज में नाम कमाना है, यही आपकी आन्तरिक इच्छा है। आजकल बहुत-सी बहनें सेवा के लिए निकल पड़ी हैं। इसमें कुछ अपवाद तो हैं ही। कितनी ही बहनों ने सचमुच ही समाज-सेवा के निमित्त तन, मन, धन अर्पण कर दिया है। लेकिन वे इनी-गिनी ही हैं। मैं तो ऐसी ही बहनों को चाहता हूँ, जिनके

आचरण से ही सामने की बहनों को बिना कहे अपने-आप यह मालूम पड़ जाय कि हमें यह काम करना ही चाहिए।"

समुद्र की तरह उदार-हृदय बनिये

दोपहर में कई स्वयंसेवक आये थे। उन्हें भी सन्देश देते हुए बापू ने कहा : "क्या आपको चरखे के प्रति श्रद्धा रही है ? (यहाँ चरखे से मेरा मतलब रचनात्मक काम से है।) यदि यह चरखा न होता, तो आजादी की लड़ाई भी न हो पाती। मुझे तो सन्देह है कि तब यह स्वराज्य ही हो पाता या नहीं ? आप जनता के धन का किस तरह उपयोग करते हैं, इसका भी विचार करना चाहिए। स्वयंसेवक की किसीसे भी दुश्मनी न रहे। हमें जात-पाँत का भेद भूल ही जाना चाहिए। यह सब व्यक्तिगत रूप में ठीक है, पर सामूहिक रूप में तो हम सब एक ही मातृभूमि के निवासी हैं और इस तरह भाई-भाई हैं। हमें अपना हृदय दरिया की तरह विशाल रखना चाहिए। दरिया में लोग कितना कूड़ा-करकट फेंकते हैं ? फिर भी उसमें नहाकर हम पवित्र हो जाते हैं। खारा होने पर भी उसकी कितनी ज्यादा जरूरत है, यह कभी सोचा है ? अगर हम इस तरह उदार बनें, तो अपनी मानवता से दुनियाभर में दरिया जैसी आवश्यकतावाले महत्त्वपूर्ण देश के नागरिक के नाते ख्याति प्राप्त करेंगे।"

भारत के गाँवों में घूमने की इच्छा

शाम को पट्टनी साहब आये थे। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की थी कि उत्तरदायी शासन के समय बापू भावनगर पधारें। बापू ने कहा : "यहाँ से निकलना संभव ही नहीं। हाँ, 'करो या मरो' इन दोनों में से एक प्रतिज्ञा पूरी हो जाय, तो भावनगर अवश्य आऊँगा। बहुत वर्षों से काठियावाड़ नहीं गया। मेरी इच्छा है कि यह महाभारत-कार्य सन्तोषजनक रूप में पूरा हो जाय, तो भारत के गाँव-गाँव में घूमूँ। इस तरह देशभर घूमकर लोगों के सुख-दुःख जानूँ। लेकिन यह सब आसमानी सुल्तानी की बात है। कौन जानता है कि कल क्या होगा ? सिंध की हालत तो इतनी बुरी है कि यदि मुझे दिल्ली छोड़नी हो, तो पहले ही सिंध में जाना है। सिंध जाते समय मैं कोई पासपोर्ट न लूँगा। अपने भाई के घर जाना हो, तो क्या अनुमति की जरूरत होती है ?"

पट्टनी साहब मेरे पास भी आये थे और मुझे भी भावनगर आने के लिए कहा। लेकिन मैं कैसे जा सकती हूँ? शाम को तो धीरे-धीरे किसी तरह प्रार्थना में गयी थी। चलते समय कमजोरी ज्यादा मालूम पड़ती है। जाड़ा तो है ही।

शरणार्थियों की वापसी का प्रश्न

आज के प्रार्थना-प्रवचन में बापू ने सिंध के हिन्दुओं के लिए कहा: "कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान हो आये हैं। उनका कहना है कि 'अब हिन्दू पाकिस्तान जाना चाहें, तो जा सकते हैं।' पर मैं समझता हूँ कि अभी वापस लौटने का समय नहीं आया है। अगर वैसा हो, तो आज जो सिन्ध में रह गये हैं, वे डरकर क्यों यहाँ आना चाह रहे हैं? या तो सिन्ध में हिन्दुओं को पूर्ण संरक्षण मिले या उन्हें सही-सलामत ढंग से यूनियन में लाने की व्यवस्था करें। जब तक इन दोनों में से एक भी नहीं होता, तब तक भारत-सरकार शान्ति से नहीं रह सकती, यह निश्चित है। जो लोग जहाँ से आये हैं, जब तक वहीं वे वापस न लौट जायँ, तब तक औरों की बात तो ठीक, मैं स्वयं शान्ति से नहीं बैठ सकता। सम्भव है कि यहाँ अब थोड़े-बहुत शरणार्थी स्थिर भी हो गये हों। लेकिन उससे क्या? इन लोगों को अपना वासस्थान, घर-बार याद आये बगैर रह कैसे सकता है? पर मैं शरणार्थियों को यह सुझाव दे रहा हूँ कि वे प्रामाणिकता के साथ शरीर-परिश्रम करके खायें। इससे उनका दुःख भी कुछ भूल जायगा और वे पापाचार से भी बचे रहेंगे।"

सारा जीवन प्रार्थनामय

रेडियो में बापू का प्रवचन आता है, उस बारे में...ने पत्र लिखा है। उसका भी जवाब प्रार्थना में देते हुए बापू ने कहा: "मैं जो कुछ रोज कहता हूँ, वह सारा प्रार्थना का ही एक अंग है। मेरा तो जो कुछ है, सारा भगवान् को समर्पित है। उस व्यक्ति ने भजन और प्रार्थना का रिकार्ड उतरवाने के लिए लिखा है। भजन और प्रार्थना का रिकार्ड जरूरत हो, तो ले सकते हैं। लेकिन भजनों के पीछे इन लड़कियों की भक्ति है। रेडियो पर तो अनेक रागदारियाँ गायी जाती हैं। पर उनमें और इन लड़कियों के भजन में अन्तर है। ये भगवान् को सान्निध्य में रखकर गाती हैं, इसलिए इनका पवित्र प्रभाव पड़ता है।

"जूनागढ़ और अजमेर के बारे में मुझे तार मिले हैं। काठियावाड़ के जूनागढ़ में तो मैं बड़ा हुआ और पढ़ा-लिखा भी। मैं कबूल करता हूँ कि अजमेर में भी बहुत बुरी घटना हो गयी है। वहाँ आगजनी और लूटपाट करने में कोई कसर नहीं रखी गयी। फिर भी वहाँ से अतिशयोक्ति भरे समाचार प्रकाशित किये जाते हैं। यह बहुत बुरी बात है। ऐसा न होना चाहिए। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को अपनी-अपनी खामियाँ मिटानी चाहिए। एक-दूसरे के दोष देखने में किसीका भी लाभ नहीं है।"

ईसा का स्मरण

रात में राजकुमारी बहन आयी थीं। आज तो साल का आखिरी दिन है। उनके साथ और भी अंग्रेज आये थे, बापू का आशीर्वाद पाने के लिए। उन सबके साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा: "विश्व में कोई भी आदमी पूर्ण नहीं है। धर्म-संस्था तो समय के अनुसार ही बनती है। ईसा को हम लोगों ने (मनुष्य-समाज ने) ही बेहाल करके सूली पर चढ़ा दिया। उसी ईसा को आज हम लोग पूजते हैं। जीवित प्राणी को कीलें ठोंकीं और मरने के बाद पूजा···इस इतिहास की हम अनेक शताब्दियों से पुनरावृत्ति ही करते आ रहे हैं। आजकल तो हम लोग ऐसे हो गये हैं कि वह चीनी कन्फ्यूशियस कहता है: 'To know what is right and not to do it cowardice.' (सत्य को जानते हुए भी उसके अनुकूल आचरण न करना कायरता है।)" और बापू ने कहा: "स्वतंत्र धर्म तो सम्पूर्ण ही हो सकता है। हम लोगों ने उसे नहीं देखा, पर वैसे ईश्वर को भी कहाँ देखा है? इसीलिए जिसकी मैं गत साठ वर्षों से आतुरतापूर्वक रट लगाता आ रहा हूँ, वह आत्मदर्शन मुझे करना है। यह तो नहीं कह सकता कि आज मैं उसमें पूर्ण सफल हो गया हूँ। फिर भी यह सच है कि मैं उसके नजदीक पहुँच रहा हूँ और मेरी सारी प्रवृत्तियाँ इसी दृष्टि से चल रही हैं।"

स्वास्थ्य की सावधानी

उनके चले जाने के बाद बापू ने अखबार पढ़े और पैर धोकर, कसरत कर सोने की तैयारी की। मैंने पैर और सिर में मालिश की। पैर दबाये। अभी बुखार बिलकुल तो उतर नहीं गया था। सोने के पहले बुखार दिखवाया था।

पैर तो मुश्किल से पाँच मिनट ही, मुझे राजी रखने के लिए ही दबवाये और तुरन्त ही सो जाने के लिए कहा। सोते-सोते पुनः मुझसे कहा कि "आज सुबह मैंने जो तुझे कहा, उसे तेरी डायरी में तो पढ़ा। लेकिन जरा गम्भीरता से विचार करना। अभी तो मैं इतना ध्यान रखता हूँ। अगर इतना ध्यान न रखता, तो तू कब की खतम हो गयी होती या किसी बड़े रोग का शिकार होते देर न लगती। वजन गिरने लगे, कमजोरी मालूम पड़े, तो तत्काल सावधान हो जाना चाहिए। आज जीवराज भी मुझसे कह रहे थे कि यह लड़की अगर भविष्य में ध्यान न रखेगी, तो हैरान हो जायगी। बच्ची है और चढ़ता खून है, इसलिए पता नहीं चल पाता।"

मैं तुरन्त सो गयी और ध्यान रखकर स्वस्थ हो जाऊँगी, यह कहा।···को गीताजी सीख लेनी चाहिए। लेकिन 'नहीं' कह रहे हैं। बापू कहते हैं, तो फिर उसे मेरे पास रहने का मोह छोड़ देना ही होगा। या तो राजकोट जाय या···के पास जाय। यहाँ रहना और सभी बातों में हठ पकड़ना कैसे चल सकता है? यहाँ कौन जबर्दस्ती रखना चाहता है? भाई साहब के साथ भी···के बारे में बातें हुईं। भाई साहब ने मौलाना साहब का वह भाषण सुनाया, जो लखनऊ में हुआ था। आज तो मुलाकातियों की भीड़ इतनी अधिक रही कि देखते ही थकान मालूम पड़ने लगती थी।

दस बजे सबने सोने की तैयारी की। बापू ने जल्दी उठकर चिट्ठियाँ नहीं लिखायीं और वे बढ़ गयी हैं। शायद इसीलिए उन्होंने अपने बिस्तर के पास लिखने का सारा सामान रखवा लिया है। ० ० ०

नूतन वर्षाभिनन्दन : २ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१-१-'४८

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद बापू ने पत्र लिखे··· "यहाँ का मामला मेरी राय से कुछ सुधर नहीं रहा है। अभी तो यहाँ बैठा हूँ। पता नहीं, क्या हो सकेगा? पुलिस के डर से ही शहर में शान्ति है। लोगों के

हृदय में तो आग भरी है। या तो उस आग में मुझे जलना होगा या उस आग को बुझाना होगा। तीसरा कोई रास्ता अभी तो नहीं दीखता।"

आज अंग्रेजों का नया वर्ष होने के कारण नूतन वर्षाभिनन्दन और क्रिसमस के अनेक कार्ड बापू के पास पहुँचे। लार्ड तथा लेडी माउण्टबैटन की बधाइयाँ भी आयीं। राजकुमारी बहन तो बड़े सबेरे, भोर में ही, प्रणाम करने आयी थीं।

...एक बहन को धीरज बँधाते हुए बापू ने लिखा: "तेरा भाई चला गया? मुझे तो बीमारी की खबर ही न थी। लेकिन प्रभु ने उसको बीमारी से मुक्त कर दिया, यह भी उसकी दया ही माननी चाहिए। इसी तरह एक दिन मुझे, तुझे और हम सबको जाना है। देश में प्रतिदिन सैकड़ों आदमी मरते होंगे। कितनों ने बेचारे निराधार बच्चे छोड़ दिये होंगे, तो कितने ही माँ-बाप के लाड़ले फूल-से बालक मुरझा गये होंगे। तुझे देश की वर्तमान स्थिति का विचार करना चाहिए और इस तरह अपना दुःख हलका करना चाहिए। हमारे अपने दुःख तो स्वार्थ के कारण ही हैं।"

नियमानुसार बापू टहलने के लिए निकले, तब भी बहुत से अंग्रेज बापू को नव-वर्ष के निमित्त प्रणाम करने आये थे। एक भाई ने तो बापू की यह कहकर स्तुति की कि "आप साक्षात् भगवान् ईसा ही हैं।" बापू कहने लगे: "मैं ईसा-मसीह तो हूँ ही नहीं, हाँ, उनके पथ पर जाने का मेरा प्रयत्न अवश्य है।"

अभी चाँद बहन की तबीयत ठीक नहीं है। इसलिए डॉ० कर्नल भार्गव को टेलीफोन करके बुलाने के लिए बापू ने कहा।

लौटते समय बापू ने आँखें भी बन्द कर ली थीं। बापू को थकान ज्यादा है।

कड़ाके का जाड़ा होने से आज मालिश देर से की गयी। इस बीच बापू ने 'हरिजन' की तैयारी की।

अहिंसा के रूप में निर्बलता

एक लेख में बापू ने बताया कि "जिसे मैं अहिंसा मान बैठा था, वह वास्तव में सच्ची अहिंसा नहीं थी, बल्कि अहिंसा के नाम पर निरी निर्बलता ही थी। कहने का मतलब यह कि अहिंसा कभी निष्फल नहीं होती। हाँ, अहिंसक निष्फल

अवश्य हो जाते हैं। किन्तु मैं उतनेभर से रुक नहीं जाता। 'जगे तभी से सवेरा' के अनुसार मैं पिछली भूलों को सुधारकर आगे बढ़ना ही ठीक मानता हूँ। आदमी इसी तरह आगे बढ़ सकता है।"

दोपहर में मुझे अस्पताल जाना पड़ा। वहाँ से लौटने पर एकाएक मुझे बुखार चढ़ आया। बुखार खूब जाड़ा देकर आया और घण्टेभर में १०४ डिग्री तक पहुँच गया। मुझे इससे उतनी परेशानी नहीं होती थी, जितनी मेरी बीमारी देख चिन्ता में पड़ जानेवाले बापू को देखकर होती थी।

देशवासी आपस से ही भयभीत

पट्टनी साहब आये थे। उनसे बापू ने रोज आने के लिए कहा है, इसलिए वे आये। डेढ़ बजे भोजन के लिए गये। सियाम के थेनेट रोमन के साथ यहाँ फूट पड़नेवाली अमानुषी हिंसा के विषय में बातचीत हुई। उन्होंने बापू का अभिनन्दन भी किया कि "आपके परिश्रम से ही भारत आजाद हुआ है। उसका असर सभी देशों पर पड़ा। उससे सभी के हृदय में आजाद होने की अभिलाषा जगनी ही चाहिए।" बापू ने कहा: "लेकिन मैं तो इसका श्रेय ले ही नहीं सकता। मैं इस आजादी को आजादी मानता ही नहीं। यदि मुझे पहले से ही पता होता कि हमारी यह अहिंसा निष्क्रिय प्रतिकार (पैसिव रेजिस्टेन्स) मात्र था, तो कदाचित् ऐसा परिणाम रुक भी जाता। आज तो इस राजधानी के शहर में भी लोग निश्चिन्त होकर घूम-फिर नहीं सकते। अपने भाइयों को देश-बन्धुओं का डर लगता है। तब मैं कैसे कह सकता हूँ कि हमारा देश आजादी की खुशी मना रहा है? किसका दोष है, इसमें मैं आपको नहीं घसीटता। फिर भी यह निश्चित है कि यह सब विदेशी सत्ता का ही परिणाम है, यह कहे बगैर रह नहीं सकता।"

उनके जाने के बाद ज्ञानी करतारसिंहजी और सरदार दिलीपसिंहजी आये। उन्होंने पंजाब और कश्मीर की खबरें सुनायीं। अभी तो राख से ढँकी आग-सी लग रही है। कब, कहाँ यह ज्वालामुखी फूट पड़ेगा, कहा नहीं जा सकता।

प्रार्थना-सभा में बापू ने सर्वप्रथम ईसाई भाइयों का नववर्षाभिनन्दन किया। आज की प्रार्थना-सभा भी रोज की अपेक्षा बहुत बड़ी रही। बहनों को बैठने के लिए कठिनाई हो रही थी।

बापू ने कहा : "आज ईसाई वर्ष का पहला दिन है। इसलिए मैं सबका नूतन वर्ष पर अभिनन्दन कर रहा हूँ।"

बहनों को बैठने की जगह करने में सात-आठ मिनट बिगड़ जायँ, तो करोड़ों के अनेक मिनट बिगड़े, ऐसा माना जाता है। हमारे देश में ऐसी पद्धति ही नहीं कि बहनों को हमेशा सरलता से जगह मिल जाय। लेकिन अन्य देशों में वह है। जिन देशों में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त होता है, वह देश गौरवान्वित माना जाता है। हमारे शास्त्रों में एक संस्कृत श्लोक है कि जहाँ-जहाँ नारी का पूजन होता है, वहाँ-वहाँ सभी देवता निवास करते हैं। फिर अब तो आजादी मिल गयी है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गयी है।

जो लोग यहाँ आते हैं, वे केवल राजनैतिक लक्ष्य से ही न आयें। प्रार्थना तो आत्मा की खुराक है। जिस तरह खुराक के बगैर शरीर कमजोर होता जाता है, उसी तरह प्रार्थना के बगैर हम लोग दिनोंदिन असंस्कारी बनते जायँगे।

हरिजन और शराब-बन्दी

आज मुझे आपसे हरिजनों के बारे में कुछ बातें कहनी हैं। हाल ही में उत्तर प्रदेश में एक हरिजन-परिषद् हुई थी। उसमें एक मंत्री ने उनसे गन्दे न रहने और व्यसन छोड़ देने के लिए कहा। इस पर एक हरिजन भाई ने उठकर बड़ी हिम्मत के साथ कहा : "हम लोग नंगे-उघाड़े घूमेंगे, पर गन्दे न रहेंगे। शराब तो जहर से भी खराब है। गरीब लोग काफी मेहनत-मजदूरी करके घर लौटते हैं। अपनी थकान मिटाने के लिए, साथ ही गरीबी का दुःख न देख सकने के कारण उसे भुलाने के लिए ही ये लोग शराब पीते हैं। लेकिन शराब पीने से शरीर और आत्मा की बेहद दुर्दशा होती है। मेरी चले, तो मैं सरकार से नम्रतापूर्वक यह सूचित करूँ कि आप शराब की सारी दूकानें बन्द करवा दें और उन दूकानों पर इन गरीबों के लिए चोखा, पर कम कीमत का खाने लायक माल रखें। साथ ही वह ऐसे साहित्य का भी विकास करे, जिससे लोगों को कुछ जानने-समझने को मिले। आज एक ओर ऐसे व्यसनों में, तो दूसरी ओर भद्दे सिनेमा आदि में पैसे बहाये जा रहे हैं।

"मैंने खुद देखा है कि गाँववाले कठोर परिश्रम कर शहर में अपना माल बेचने आते हैं, तो उनमें एकआध ही कोई ऐसा किसान निकलेगा, जो बिना सिनेमा देखे

अपने गाँव लौटता हो। मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर हम ऐसा ही करते रहे, तो अपना शरीर और मन स्वस्थ नहीं रख सकते। कांग्रेस के विधान के अनुसार तो सन् १९२० से ही मद्य-निषेध-आन्दोलन शुरू हुआ है। अब तो कांग्रेस की सरकार बनी है। इसलिए सर्वप्रथम उसे इस ओर बड़ी ही गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए कि हमने प्रजा के साथ क्या-क्या वायदे किये हैं और कौन-कौन-से सिद्धांत विधान के विरुद्ध हैं? उसे ऐसी नापाक आबकारी आय को सर्वथा त्याग ही देना चाहिए। अगर मेरी तूती की आवाज सुनाई दे, तो मैं सुनाना चाहता हूँ कि इससे न तो सरकार का नुकसान होगा और न प्रजा का ही। दोनों को परस्पर लाभ ही होगा। फिर प्रजा को संस्कारी बनाने में कदाचित् सरकार को कुछ घाटा भी उठाना पड़े, तो भी मैं मानता हूँ कि आजादी के इस युग में जनतांत्रिक सरकार को उतना सहन कर ही लेना चाहिए।"

प्रार्थना के बाद बापू टहलने गये। मैं तो तबीयत ठीक न होने के कारण टहल न सकी। टहलते समय बापू के साथ कौन था, यह मैं नहीं जानती।

टहलकर लौटने के बाद बापू ने भाषण लिखा।...के साथ भीतर-ही भीतर अपार मतभेद चल रहे हैं। उसका असर चारों ओर है। प्रजा में तो होगा ही। अगर इसी तरह चला, तो बापू मानते हैं कि एक बार छेद हो जाने पर सारी इमारत चकनाचूर हो जायगी। बापू के हाथ में ही यह बाजी है। अगर इसमें बापू का प्रयत्न सफल न हुआ, तो यह कुछ और ही रूप पकड़ेगा।

...के साथ घंटेभर से ऊपर बातचीत की। कश्मीर के लिए बापू बेचैन हैं।

...को लिखते हुए उसके पाँच पन्ने के लंबे पत्र पर बापू ने सूचित किया कि "अन्ध अनुकरण भी बुद्धि का लकवा है। क्या कभी बुरी वस्तु का भी अनुकरण या माप किया जा सकता है? याने हिन्दुस्तान ने कितने मुसलमान मारे या पाकिस्तान ने कितने हिन्दुओं का सफाया किया, इस झमेले में पड़ना अपने ओछेपन का नग्न प्रदर्शन ही है। भगवान् सबको सन्मति दे। आज तो आखिर इस प्रार्थना के बल पर ही मैं जी रहा हूँ।..."

साढ़े नौ बजे बापू उठे। व्यायाम कर बिस्तर पर लेटने के पहले मेरा बुखार देखा गया—१०१°६ था। ये सारी बातें और वातावरण को जान सकने के लिए मैं

बिस्तर पर लेटी नहीं रहती थी । इसीलिए बापू नाराज़ हुए : "ऐसे तो एक महादेव ही थे । अगर बिस्तर पर पड़े रहने की इच्छा न हो, तो बुखार भी न आना चाहिए न ? बुखार आते ही उसी समय बिस्तर पर सो जाना धर्म हो जाता है । ऐसा होते हुए भी अगर तू यह लोभ न छोड़ेगी, तो कदाचित् मैं माफ़ कर दूँ, पर ईश्वर कभी माफ नहीं कर सकता । उसके पास तो सदैव न्याय-तुला रखी ही है । अपने शरीर के उपभोग के बारे में तू इतना लोभ रखेगी, तो इतनी ज्यादा कमजोर हो जायगी कि उसे सूद के साथ चुकाना पड़ेगा । (बहुत दिनों तक सोना पड़ेगा ।) महादेव तो तभी बिस्तर पर लेटे, जब कि वे सदा के लिए सो गये ।"

बापू ने मुझे पैर नहीं दबाने दिये । इन दिनों महादेवभाई बापू को बहुत ही याद आया करते हैं ।···के बीच के संघर्ष में बापू ने कहा कि "आज महादेव की कमी पूरी खटक रही है । यदि वे होते, तो ऐसी स्थिति पैदा ही न होने देते ।"··· लगभग १० बजे बापू सोये । जाड़ा काफी है ।···के सोने के विषय की बात भी मुझसे कही ।

○ ○ ○

हिन्दू-मुसलिम एकता की समस्या : २ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२-१-'४८

साढ़े तीन बजे नियमानुसार प्रार्थना । दतौन करते ही मुझे टेंपरेचर देखने के लिए कहा । बापू को भी सर्दी हो गयी है । इसीलिए मैं बापू से दूर रहती हूँ, ताकि मेरी सर्दी उन्हें न लग जाय । तब भी अभी सबको एक-के-बाद-एक करके असर हो ही गया है । ठंड भी कड़ाके की चल रही है । सुशीला बहन की आवाज तो बिल्कुल बैठ गयी है । चाँद बहन भी बिस्तर के अधीन-सी ही थीं । अभी तो हम सबकी तबीयत का यही हाल है ।···लेकिन बापू तो स्पष्ट कहते हैं : "हम सच्चे हृदय से राम का नाम लेते हों और प्रकृति के नियमों का पूर्ण रूप से पालन करते हों, तो बाह्य आबोहवा का शरीर पर असर हो ही नहीं सकता । ऋतु भी प्रकृति ने हमारे हित के लिए ही रची है । प्रकृति की अपार दया है कि वह पृथ्वी के सभी प्राणियों के हितार्थ ही सब कुछ रचती है । लेकिन हम उसे पहचान नहीं पाते और इसीलिए

उसे दोष दिया करते हैं।" मुझे अभी १००° बुखार रहा—बापू को टाइफाइड का डर लग रहा है। मीरा बहन की सेवा में थी, इसलिए शायद ऐसा हुआ हो। पर मुझे तो ऐसा नहीं लगता। प्रार्थना में तो बैठने नहीं दिया, लेटे-लेटे ही सुनने को कहा।

सब अपने-आप दुःखी

प्रार्थना के बाद तो मैं बापू के पास ही सो गयी। इसलिए बाद में बापू ने क्या-क्या, यह नहीं जानती। लेकिन नियमानुसार चिट्ठियाँ पढ़ीं और उत्तर लिखे : "आज तो मानव ही मानव से डरते हैं। अरे, अपने पड़ोसी से डरते हैं, तब राष्ट्र की बात तो क्या बताऊँ? हम खुद ही अपने-आप जान-बूझकर दुःखी होते हैं। अपने को धोखे में डालते हैं। कोई किसीका बुरा कर ही नहीं सकता। मैं तो मानता हूँ कि मनुष्य के दुःख का कारण मनुष्य ही है। यह राजधानी का शहर होते हुए भी मरा हुआ-सा लगता है। कोई किसीका एतबार नहीं करता। जो शान्ति है, वह तो पुलिस के डर की शान्ति है। क्या बात है कि अहिंसा का स्वराज्य हिंसा से रक्षित माना जाता है? मैं अपने दिल को ढूँढ़ता हूँ। निराशा तो क्या, मगर ईश्वर को मुझे यह भी दिखाना होगा! अब तो करना है या मरना है। देखूँ, स्थितप्रज्ञ-अवस्था में और कितनी कमजोरी होगी? ईश्वर का अहसान मानता हूँ कि मुझमें जाग्रति आयी।..."

मनु की बीमारी

"चि० मनु आजकल काफी बीमार हो गयी है। उस लड़की में शक्ति तो बहुत भरी है, मगर शरीर बहुत नाजुक हो गया है। मैं कबूल करता हूँ कि उस लड़की से मैंने काफी निष्ठुर बनकर काम लिया, उसीका यह नतीजा है। आखिर बेचारी का शरीर कहाँ तक सहन करे? उसके शरीर से जितना काम लिया, उससे भी ज्यादा उसके मन से लिया है। मगर मुझे इतना जरूर सन्तोष है कि उसने कुछ खोया नहीं है। लड़की काफी तैयार हो गयी है—अगर अब मैं उसका शरीर दुरुस्त कर सका! वह खुद भी अपने स्वास्थ्य के बारे में काफी लापरवाह है। मेरी सेवा में सब कुछ भूल जाती है। तुम चिन्ता मत करना। खैर, मेरे मन में तो उसके स्वास्थ्य की गहरी चिन्ता है ही। शायद टाइफाइड होगा, ऐसा भी लगता है।

"तुम सब कैसे हो? बिहार का मामला कठिन तो है ही। मगर आज तो जो नतीजा देहली का होगा, वही सारे हिन्दुस्तान का होगा।..."

सत्य की पहचान

…ने "गीता में कहा है कि ज्ञानशून्य सारा कर्म व्यर्थ है। वह बिल्कुल सच है। मुझे तो इसके कई अनुभव आये हैं और बहुतों को भी आये ही होंगे। अगर कर्म ज्ञानमय हो जाय, तो उसमें भक्ति तो अपने-आप ही आ मिलती है। इसके लिए आदमी को हमेशा सत्य का आश्रय लेना पड़ता है। अगर सत्य पहचान लिया, तो उसके लिए और कोई भी प्रयत्न वाकी नहीं रहता। जैसे दर्पण में हम अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं, चेहरे पर जरा-सा दाग होने पर वह भी दीख पड़ता है, वैसे ही हमें पहले अपना हृदय टटोलना चाहिए। बाद में ही दूसरे की आलोचना करनी चाहिए। शायद ही कोई सर्वाङ्गपूर्ण होने का दावा कर सके। इसलिए मेरी तुझे नम्र सलाह है कि…के दोष देखने के बदले अपना दोष देखता जा। अगर मेरी सलाह… के गले उतरे, तभी उसका विचार किया जाय। नहीं तो उसे फेंक दे सकते हैं।"

दूसरा पत्र मेरे बड़े बापूजी को लिखा था : "मैं तो अभी भट्ठी में पड़ा हूँ। क्या होगा, कहना कठिन है। शायद शीघ्र ही कुछ परिणाम निकले। चि० मनुड़ी (मनु) अत्यन्त दुबली हो गयी है। इस समय उसकी दशा चिन्ताजनक है। इसमें दोष जितना उसका है, उतना ही मेरा भी होगा। मैंने उससे १८-१८ घंटे काम लिया है और उतना ही या उससे भी ज्यादा मानसिक श्रम भी करवाया है। आखिर बेचारी १५-१६ साल की छोकरी हो ठहरी! फिर भी मैं मानता हूँ कि अगर उसके हृदय में राम-नाम अङ्कित हो जाय, तो उसका शरीर कभी कमजोर नहीं हो सकता। लेकिन इसे मैं कैसे देख सकता हूँ? अभी जब तक मैं उसकी तबीयत ठिकाने नहीं ला पाता, तब तक मुझे चिन्ता तो रहेगी ही। इस यज्ञ में उसका भाग मामूली नहीं है। मेरे निकट असंख्य लड़कियाँ आयीं और गयीं। उनमें मनुड़ी की सेवा का हिस्सा उसकी उम्र को देखते हुए शायद सबसे पहला है। अगर मैं उसे अपने पास न बुलाता, तो इस लड़की के साथ अपार अन्याय करने का दोष मुझ पर रहता। अब उसे मैं भलीभाँति पूर्ण स्वस्थ देखूँ, इतना ही बस है।

"अभी यहाँ कब तक रहना होगा, कहा नहीं जा सकता। करना है या मरना है, तो बीच के मार्ग को अवकाश ही नहीं रहता।

"आपकी तबीयत कैसी है? अब खुराक के प्रयोग तो नहीं करते न? बाकी

चि० मनुड़ी लिखेगी। इतने बोझ में भी मेरी तबीयत ठीक है, यह ईश्वर की महान् कृपा है।

—बापू के आशीर्वाद।"

बापू ने लिखे हुए पत्र नकल करने के लिए दिये और टहलने चले गये। मुझे लेटे रहने के लिए कहा।

...दिनभर बुखार रहा। काफी कमजोरी मालूम हो रही है। बापू के पास कौन-कौन आया-गया, इसका पता नहीं। रात में चाँद बहन के विवाह के बारे में बातें चल रही थीं। बापू ने तय किया है कि जब तक हिन्दू-मुसलिम-एकता नहीं हो जाती, तब तक किसीके विवाह-शादी में नहीं पड़ूँगा। लेकिन देवप्रकाशभाई (नैयर) और चाँद बहन का आग्रह है। इसलिए जब तक एकता नहीं हो जाती, तब तक कदाचित् वे लोग विवाह न भी करें। बापू की भी अजब बलिहारी है! किसीके शादी-विवाह में—किसीके विवाह-विच्छेद में—किसी निर्वासित के जीवन में—तो पण्डितजी और सरदार दादा के राजनैतिक प्रश्नों में तथा मुझ जैसी की बीमारी में—ऐसी अनेक समस्याओं को बड़े प्रेम से हल करते हैं।

वे देवभाई और चाँद बहन को समझाने-बुझाने में भी काफी समय देते हैं, ताकि कहीं उनको यह न लगे कि बापू हमारे नहीं हैं। वैसे देखा जाय, तो सचमुच सभी को यह लगता है कि बापू हमारे ही हैं।

सुशीला बहन तो अमेरिका जाने की तेजी से तैयारी कर रही हैं। उनकी समस्याओं पर भी बापू उतनी ही चिन्तापूर्वक बारीकी से ध्यान देते हैं।

आज तो बारिश ही हो रही है। दिन बड़ा ही खराब गया। शाम को कमलनयनजी आये थे। उन्हें बापू ने खूब हँसाया। प्रार्थना में जाते समय बारिश के कारण बापू ने नोआखालीवाली हैट पहनी थी। श्रोताओं को इससे आश्चर्य भी हुआ था।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा : "आप सबको यह टोप देखकर आश्चर्य हुआ होगा। लेकिन यह मेरे लिए एक कीमती चीज है। एक तो यह टोप नोआखाली के एक मुसलिम किसान ने मुझे भेंट दिया है और दूसरे, यह छाते की आवश्यकता भी पूरी कर देता है। यह छाते से बहुत सस्ता भी है और एक

ग्रामीण हाथ-कारीगरी का नमूना है। इस तरह हम लोग गाँवों में जाकर ऐसी कितनी ही उपयोगी चीजें पैदा कर सकते हैं।

"अभी आपने जो भजन सुना ('दर्शन देना प्राण पियारे'), वह प्रातःकाल गाने का है। भक्त भगवान् से दर्शन देने के लिए कैसी अनुनय-विनय कर रहा है ? हम इस तरह अनुनय करनेवाले दुःखी भाइयों की यथाशक्ति मदद करें तो ? ईश्वर कभी नहीं सोता। वह सदा-सर्वदा जागता ही रहता है।

"अभी-अभी इलाहाबाद से मेरे नाम एक पत्र आया है। वे भाई स्पष्ट लिखते हैं कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को छोड़ दें, तो कदाचित् ही कोई ऐसा मुसलमान निकले, जो हिन्दुस्तान के प्रति पूर्ण वफादार रहे। अगर हम लोगों के बीच लड़ाई घोषित हो जाय, तब तो एक नन्हा-सा बच्चा भी वफादार न रहेगा। इसलिए जैसे बने, वैसे भारत से मुसलमानों को जाने ही देना चाहिए।

"इस भाई को मुझे सूचित करना होगा कि अगर हमारी ऐसी ही भावना रही, तो निश्चय ही हमारा स्वराज्य खतरे में पड़ जायगा। जब तक हकीकत साबित न हो, तब तक उस पर आक्षेप कर बैठना मानवता नहीं है। कुछ ही दिन पहले लखनऊ में एक लाख मुसलमान जुटे थे और उन्होंने कहा था कि हम लोग अपनी जान कुर्बान करके भी देश के प्रति वफादार रहेंगे। क्या ऐसी घोषणा पर विश्वास न रखना एक राष्ट्र के लिए शोभा के लायक माना जा सकता है ? फिर भी मान लीजिये, कोई बेवफा ही निकला, तो उसे गोली मार सकते हैं। फिर भी यहाँ मैं इसका भी स्पष्टीकरण कर देता हूँ कि यह तरीका मेरा नहीं है।

"यदि ऐसी भावना रही, तो कदाचित् सभी देशों में ये भागनेवाले कायम रहेंगे। मान लीजिये कि सभी देशों के बीच लड़ाई घोषित हो जाती है, तो मुझे तो जरा भी जीने की इच्छा नहीं रहेगी। फिर भी जब तक मुट्ठीभर किन्तु सम्पूर्ण सत्य और अहिंसा को माननेवाले लोग हैं, तब तक इन सब देशों के बीच लड़ाई का कदम नहीं उठाया जायगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।"

प्रार्थना के बाद पंडितजी आये। कश्मीर की समस्या इतनी उग्र हो गयी है कि हो सकता है, लड़ाई छिड़ जाय। दूसरी ओर देशी नरेशों को भी अब शीघ्र यूनियन में मिला दिया जायगा। देशी नरेश क्या करेंगे, कहा नहीं जा सकता।

जूनागढ़ और कश्मीर, ये तीनों टुकड़े कदाचित् भयङ्कर भविष्य उपस्थित कर दें, तो कोई अचरज नहीं।

शेख साहब अभी तो बहादुरी के साथ काम कर रहे हैं। लेकिन सरदार दादा का मन उनके बारे में जरा खटक जरूर रहा है। पंडितजी का तो शेख साहब पर अगाध विश्वास है।

और कांग्रेस संस्था में भी रोज-ब-रोज सभी एक-दूसरे पर ऐसे व्यक्तिगत आक्षेप किया करते हैं, जिससे बहुत दुःख होता है। आखिर ये सारे जहर के घूँट बापू को ही पीने पड़ते हैं।

रात में करीब १० बजे सोये। सोने के पहले···की मेरे साथ बातें हुईं। बापू कनुभाई को···इस बारे में लिखनेवाले हैं। लेकिन···को अच्छा नहीं लगता। अभी कुछ वातावरण अत्यन्त उदासी से भरा रहता है। अगर बापू नाराज हों, तो···को इन लोगों को खूब हैरान होना पड़ेगा।

मुझे देख लेने के बाद बापू सोये। गरम पानी खूब पीने को कहा। वे मुझसे कहते : "तेरे शरीर की कमजोरी मुझे सचमुच चिंता कराती है। लेकिन जैसे बने, वैसे पानी पी, आराम कर और सोना अच्छा न लगे, तो भी आँखें बन्द कर राम का नाम लेती हुई पड़ी रह। यह तेरा धर्म है, तेरा फर्ज है।···" मुझे तो रोना ही आ गया—एक तो इन सबकी सेवा लेना। इनके उपकार सिर पर चढ़ रहे हैं और उसका मन में काफी रंज रहता है। मुझ पर सारे-के-सारे उपकार चढ़ रहे हैं।

● ● ●

राष्ट्रभाषा और लिपि का मसला : ४ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

३-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना से पहले बापू ने मेरी तबीयत देखी। अब तो यह मियादी बुखार-सा लगता है। वैसे उठने-बैठने की तो बापू ने मनाही कर दी है, पर मैं थोड़ा उठ-बैठ लेती हूँ। रात में आभा भाभी बापू के पास सोयी हुई थीं। फिर भी रात दो बजे खुद बापू ने मुझे पानी पिलाया। पता नहीं किस जन्म का बापू का यह ऋण निकला है?

नोआखाली से···का पत्र आया है। बापू कहते हैं : "जब अपने ऊपर बीतती है, तभी हमेशा आदमी को हर बात की समझ आती है। इन दिनों में जितना अध्ययन कर रहा हूँ और मनुष्य की जो अन्तिम स्थिति देख रहा हूँ, ऐसी जिन्दगी-भर नहीं देखी। कदाचित् यह सारा समय मेरी बीती हुई जिन्दगी का क्यों नहीं हो सकता ? मैं जिसकी कल्पना तक नहीं कर सकता, ईश्वर मुझे उतना स्पष्ट दर्शन करा रहा है। और वह मुझसे कह रहा है कि तू चेत···यह सारी चेतावनी की लीला है।

"तुझे पूरी तरह स्वस्थ हो जाना चाहिए। तभी मुझे शांति मिलेगी। तूने अपनी डायरी दो दिनों से मुझे नहीं दी। आज देना। देख तो सही कि···के जैसी अच्छी-अच्छी स्त्रियाँ भी आज बरताव करती हैं। यह सारा मेरी आँखों से ओझल नहीं है। लेकिन कल ही मैंने प्रार्थना में कहा था कि 'मैं तो विश्वासी मनुष्य हूँ।' विश्वास रखने में मानव कुछ भी गमाता नहीं। वह अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है। इसीका नाम है, सच्ची जिन्दगी !"

आज दोपहर में तो बुखार नार्मल हो गया। बापू बहुत प्रसन्न हुए और अब खूब ध्यान रखने के लिए कहा।

आज के पत्र में : "मैं अब तक राम के नजदीक नहीं पहुँचा। वहाँ पहुँचने की कोशिश है। अगर वहाँ पहुँच गया, तो मेरी अहिंसा का तेज चारों तरफ फैलेगा।

"यहाँ की हालत बहुत खतरनाक है। कश्मीर के बारे में माउण्टबेटन खुद भी काफी प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ भी हो, अब बङ्गाल और बिहार को जलना न होगा। अगर वहाँ जरा-सी भी गड़बड़ होगी, तो आप मुझे जिंदा नहीं देखेंगे। यह मेरा सन्देश सबके पास पहुँचा देना।"

सुबह राजेन्द्र बाबू के साथ की बातचीत के वक्त भी बापू बहुत व्यथित थे। इस ओर···के बीच के सम्बन्ध बिगड़ रहे हैं। उसका असर इतना बुरा हो रहा है कि मानो पाकिस्तान में इस परिणाम की राह ही न देखी जा रही हो। भले ही माउण्टबेटन प्रयत्नशील हों। लेकिन आखिर अन्दरूनी पारिवारिक बातों में उन्हें इतना अधिक रस-रुचि क्यों लेने देनी चाहिए ?

और अब तो मानो इस संस्था की एक-एक ईंट खिसकती जाय, वैसे यह निस्तेज बनता जा रहा है। बापू कहते हैं : "यदि मुझे दिल्ली छोड़ दे, तो मैं सारे

हिन्दुस्तान की यात्रा ही करना चाह रहा हूँ। हमें अपने पहले दिये हुए वचनों को याद कर उन्हें योग्य आकार (मूर्तरूप) देना होगा या यह कबूल करना होगा कि राज्य करना एक बात है और भाषण करना दूसरी। अगर ऐसी बातों से मन में दुःख होता ही रहे, तो भी हमें उसे घोषित कर देने में देश की अधिक सुरक्षा है। कश्मीर की समस्या दिन पर दिन गंभीर स्वरूप धारण कर रही है और यदि हम लोग यूनो में जायँ, तो समझ ले कि हमारी इज्जत मिट्टी में मिल गयी। सर्वप्रथम तो—अगर आपका स्वास्थ्य साथ दे, तो मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि—आप देश के कोने-कोने में घूमें और सरकार की दृष्टि तटस्थ रूप से प्रजा को समझायें। अगर काँग्रेस-अध्यक्ष का पद 'तटस्थ' होगा, तो सरकार और प्रजा, दोनों का लाभ होगा, यह मैं मानता हूँ।"

जाड़ा अधिक होने के कारण आज बापू मालिश के लिए देर से गये। चिट्ठियाँ देखीं।...का खूब गरमागरम पत्र है। बापू ने उसे लिखा : "...तेरा तीखा पत्र मिला। तू इतना अधिक गरम हो जाय, क्या यह उचित है? लोहा गरम हो जाने पर उसमें से चिनगारियाँ निकलने लगती हैं। लेकिन हथौड़ा चाहे जैसा पीटिये, वह लाल होकर जलता नहीं। अगर तू हथौड़े जैसी बन जाय, तो तेरे इच्छानुसार सब कुछ होकर रहेगा। यों अगर दरिया में ही आग लग जाय, तो किसे क्या कहा जाय?"

आश्रम आत्मनिर्भर हों

"मुझे नहीं लगता कि मैं यहाँ से निकल सकूँगा। करना है या मरना है। आप समझते होंगे कि दिल्ली में शान्ति है। मगर वह हृदय की नहीं, शस्त्र की है। मैं भारत की आवाज की प्रतीक्षा में हूँ। मेरे पास आजकल तीन-चार लड़कियाँ तो सेवा में हैं ही। बिरला के इतने बड़े महल में पड़ा हूँ, मगर मुझे जरा भी चैन नहीं। लड़कियाँ तो काफी सेवा कर रही हैं। आपकी सेवा की जरूरत अभी तो महसूस नहीं कर रहा हूँ। हाँ, सब लड़कियाँ चाहे जब मुझसे इजाजत लेकर जा सकती हैं। केवल मनु ही इस यज्ञ की भागीदार है। और सब लड़कियाँ तो इत्तफाक से आ गयी हैं, वैसे ही जा भी सकती हैं। मुझे कबूल करना पड़ेगा कि इस यज्ञ में मनु की सेवा अजीब ही बनी रही। वह केवल अपने शरीर की तरफ से काफी बे-खबर रहती है। आप सब कैसे हैं? खादी-प्रतिष्ठान का क्या हाल है? आश्रम में

कितनी संख्या है ? आश्रमों को दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। मैं तो सेवाग्राम के लिए भी इसी निश्चय पर पहुँचा हूँ कि या तो आश्रम अपने पैरों पर खड़ा रहे या उसे बन्द ही कर दिया जाय। आजकल तो आश्रम पिंजरापोल-सा बन गया है।

"...जो निश्चय करना हो, वह खूब विचारपूर्वक करना चाहिए। भरी दरिया में गिर पड़ने पर यदि कोई दूसरा विचार करे, तो उसका एक ही परिणाम होगा और वह होगा, डूब जाना!"

बापू के कई पत्र तो साढ़े तीन लाइनों के होते हैं। लेकिन कभी-कभी तो काव्यमय भी हुआ करते हैं।

मालिश और स्नान में एक घण्टा बीत गया। नहाते समय मैंने हजामत की। मुझसे कहने लगे : "अब अगर मैं जीवन का कोई अलग ही प्रकरण शुरू करूँ, तो तू आश्चर्य मत करना। इन सबमें तू तो रहेगी ही, पर अब और लोगों को यहाँ नहीं चाहता। किसी-न-किसी बहाने एक-एक करके सभी नोआखाली छोड़ यहाँ चले आते हैं। यह सब ठीक नहीं मालूम देता।...को भी विचारपूर्वक...को लिख देना चाहिए।...भी अपने विचारों पर दृढ़ नहीं और फिसलती ही जा रही है। अगर मैं यहीं मर जाऊँ, तो और कुछ करना बाकी ही नहीं रह जाता। लेकिन अगर कुछ शान्ति हो जाय, तो मेरा नया ही जीवन शुरू होगा। इस बार की कसौटी कुछ अधिक विपत्तिमय होगी। अपनी अन्तरात्मा की पुकार सुनने के लिए कान लगाये बैठा हूँ। उसके आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आभा और सुशीला तो जरा भी विचलित नहीं हो सकतीं। इस विषय का इस सर्दी-गर्मी से कोई सम्बन्ध नहीं। आज तक जो भाई-बहन तेरे ऊपर टूट पड़े—१६-१७ साल की मेरी नन्हीं पौत्री पर अनुचित आक्षेप किये—वे ही तेरी पूजा करेंगे। मेरे पास दम्भ दिखानेवाले खुद ही अपने-आप दूर हट जायँगे। अहिंसा और प्रेम से ही दंभियों को हटाया जा सकता है। इस विषय में सभी को आत्म-परीक्षण करना चाहिए। तभी माना जायगा कि इन लोगों ने दुनिया की बहुत बड़ी सेवा की। अगर मैं तेरी पवित्र और सच्ची माता होऊँ, तो मुँह से राम का नाम रटते हुए, स्वाभाविकता के साथ तुझसे बातें करते-करते तेरी गोद में सो जाऊँगा।

“लेकिन तू वीमार रहा करती है, यह मुझे वड़ा ही दुःखदायी लगता है। यह सच है कि तू अपनी शक्ति से अधिक टिक सकी है। तू सादी, सरल और भोली है, इसीलिए ईश्वर तुझे यह हिम्मत दे रहा है। लेकिन दिल्ली की परिस्थिति दिन-दिन विगड़ती जा रही है। मन्त्रिमण्डल में एकमत नहीं है। ये सारी वातें तुझे इसीलिए कह रहा हूँ कि अव कदाचित् मैं देह से तेरे पास न भी रहूँ—आत्मा से तो हूँ ही—तो पीछे से तुझे परेशानी न हो। तेरी प्रकृति वहुत ही कमजोर हो गयी है, इसकी मुझे अत्यधिक उलझन है। अगर यह तू समझ सके, तो मैं समझाना चाहता हूँ। तू आज की इन वातों को एक कागज पर लिखकर मुझे दे देना। मैं उसे सुधारकर तुझे दे दूँगा, ताकि तू उसे अपने भाई को भेज दे। आजकल तेरी डायरी भी नियमित देख नहीं पाता, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।”

यह वात सुनकर मेरी आँखों से आँसुओं की धारा वह निकली। वापू वड़े प्रेम से थपकियाँ देकर कहने लगे : “क्या इस तरह कभी घवड़ाने से काम चल सकता है ?” मैंने पूछा : “क्या आप उपवास करने की सोच रहे हैं ?”

वापू : “अभी तो किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा; पर निर्णय तो करना ही पड़ेगा। तू घवरा न जाय, इसीलिए अभी से तुझे तैयार करने का मेरा यह प्रयत्न है।”

नहाकर वाहर निकले, तो पण्डितजी आये हुए थे। उन्हें भी वापू ने मेरे साथ की गयी वातों का थोड़ा सार वतलाया। भोजन के समय स्थानीय मौलाना लोग आये। उनसे भी वापू ने कहा : “अव आप लोगों के धीरज की कसौटी है। देखें, खुदा मुझसे क्या करवाता है ?”

चूँकि वापू ने मुझसे कहा था कि “मेरी कही हुई वातों की किसीसे चर्चा मत करना”, इसीलिए मैंने किसीको कुछ नहीं वताया। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वापू कहीं आमरण अनशन तो नहीं कर देंगे ? कलकत्ते में भी वापू ने ऐसा ही किया था।

आराम के वाद राष्ट्रभाषा संवंधी कई प्रश्नों के उत्तर लिखते हुए उन्होंने वतलाया :

राष्ट्रभाषा का प्रश्न

प्रश्न : राष्ट्रभाषा को 'हिन्दी' कहिये या 'हिन्दुस्तानी' यह कोई खास विवाद का सवाल नहीं है। रोज की वातचीत में तो चालू हिन्दुस्तानी काम में आयेगी ही। ऊँचा साहित्य, विज्ञान और ऐसे ही अन्य विषयों के लिए नये शब्दों का कोष संस्कृत

भाषा से ही बनेगा, इससे भी शायद ही कोई इनकार करे! यह बात साफ-साफ सबको बतलायी जाय, तो क्या हर्ज है?

उत्तर : "इस सवाल का पहला हिस्सा तो ठीक है। अगर एक नाम के सभी एक ही मानी करें, तो झंझट रहता ही नहीं। झगड़ा नाम का नहीं, काम का है। काम एक हो, तो अनेक नामों का विरोध वितण्डावाद होगा।

"ऊँचे साहित्य और विज्ञान के शब्द संस्कृत से ही क्यों लिये जायँ? इस बारे में किसी तरह का आग्रह होना ही नहीं चाहिए। एक छोटी-सी समिति ऐसे शब्दों का कोष बना सकती है। उसमें चालू शब्द इकट्ठे किये जायँ।

"मान लीजिये, एक अंग्रेजी शब्द हिन्दुस्तानी में पड़ा है। उसे निकालकर हम क्यों खास संस्कृत शब्द वहाँ बनायें? अगर अंग्रेजी का चालू शब्द ले लेते हैं, तो उर्दू का क्यों नहीं? 'कुर्सी' शब्द के लिए 'चतुष्पाद-पीठिका' शब्द लें या बे-रोक-टोक 'कुर्सी'? ऐसी मिसालें और भी निकल सकती हैं?

लिपि की समस्या

"जो मसला है, वह लिपि का है। दो लिपियाँ चालू रहते हुए भी यह सवाल—और ठीक सवाल—सभी करते हैं कि दो लिपियों का चलाना राष्ट्र का काम चलाने में बेकार बोझ साबित होगा। तब तो दो लिपियों के बदले एक लिपि, जो सभी प्रान्तों के लिए सहज और आसान हो, क्यों न मानी जाय?

"दो लिपियाँ मानने के मानी भी मैं समझना चाहता हूँ। क्या उसका यह मतलब होगा कि केन्द्रीय सरकार के सारे विज्ञापन दोनों लिपियों में छपेंगे? फिर तार-घर वगैरह से जो तार आदि निकलेंगे, वे तो किसी एक ही लिपि में लिखे जायँगे। दूसरी लिपि का उपयोग इन जगहों में किस तरह हो सकेगा, यह भी मैं जानना चाहता हूँ। मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं कि दूसरी लिपि मुसलमान भाइयों को खुश करने के लिए रखी गयी है। हमें तो यह देखना चाहिए कि किसी पर भी अन्याय किये बिना राष्ट्र का भला किस लिपि के चलने में होगा। 'नागरी' के चलने से मुसलमान भाइयों का नुकसान होगा, ऐसा मानना भी ठीक नहीं है।

"जहाँ तक मैं समझा हूँ, दोनों लिपियों का चलन थोड़े अर्से के लिए ही जरूरी

है, ताकि वे लोग, जो इन लिपियों के जानकार नहीं हैं, धीरे-धीरे जान जायँ। आखिर में सभी एक लिपि अपना लेंगे, इसमें सन्देह ही क्या है ?

"दो लिपियों को रखते हुए भी आखिर में जो आसान होगी, वही चलेगी। बात इतनी ही है कि उर्दू का बहिष्कार न हो, इस बहिष्कार में द्वेष है, इस झगड़े की जड़ में द्वेष था, आज वह बढ़ गया है। ऐसे मौके पर हम, जो एक हिन्दुस्तान चाहते हैं और वह हथियारों की लड़ाई से नहीं, उनका फर्ज होगा कि दोनों लिपियों को जगह दें। हम यह भी न भूलें कि बहुतेरे ऐसे हिन्दू, सिख भी पड़े हैं, जो नागरी लिपि जानते ही नहीं। मुझे इसका तजुर्बा हमेशा होता है।

"करोड़ों को दोनों लिपियाँ सीखने की बात नहीं है। जिन्हें अपने सूबे से बाहर काम करना है, उन्हें वे सीखनी चाहिए। केन्द्र के दफ्तर में भी सब कुछ दोनों लिपियों में छापने की बात नहीं है। विज्ञापन सबके लिए हों, उन्हें दोनों लिपियों में छापना जरूरी है। जब दोनों कौम के बीच जहर फैल गया है, तब उर्दू लिपि का बहिष्कार लोकवाद का विरोध ही बताता है। तार आदि जब रोमन लिपि में नहीं लिखे जायँगे, तब शायद उर्दू या नागरी लिपि में लिखे जायँगे। इसे मैं छोटा सवाल मानता हूँ। जब हम अंग्रेजी और रोमन लिपि का मोह छोड़ेंगे, तब हमारा दिल और दिमाग ऐसा साफ हो जायगा कि हम इस झगड़े के लिए शरमायेंगे।

"किसीको राजी रखने के लिए कोई बेजा काम हम कभी न करें। पर राजी रखना हर हालत में गुनाह नहीं है। एक ही लिपि को सब खुशी से अपनायें, तो क्या अच्छा नहीं है ? मगर ऐसा होते हुए भी दोनों लिपियों का चलना आज जरूरी है।"

इसके सिवा बापू का भोजन, कातना, मालिश वगैरह नियमानुसार चलता है। दोपहर को राजकुमारी बहन आयी थीं। उनके साथ भी कश्मीर सम्बन्धी बातें हुईं। कौन जानता है कि शायद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच लड़ाई छिड़ जाय। बापू कहते हैं : "मैं तो यह देखने के लिए जीता ही नहीं रहूँगा। क्या आजादी का परिणाम इतना भयानक और करुण लिखा होगा ?"

आज तो दिनभर जो-जो लोग आये, सबसे बापू ने एक ही बात कही कि "अब दिल्ली में मेरे निवास का परिणाम शीघ्र ही प्रकट होगा।" सुबह मुझसे भी

यही बात कही थी। मुझे तो ऐसा लगता है कि…बापू तो कौमी झगड़े के बजाय कौटुंबिक (कांग्रेस के अन्दर नेताओं के एक-दूसरे के प्रति अविश्वास से) करुण परिस्थिति से काफी बेचैन हो उठे हैं और कहीं अनशन ही न कर बैठें। इस समय अनशन करना बापू के लिए भयानक सिद्ध होगा। क्योंकि कलकत्ते के अनशन को अभी कुल छह महीने ही हुए हैं। उस समय की क्षीण हुई शक्ति अभी उनमें कहाँ आ पायी है ?

शाम को भाई साहब से भी मैंने यह बात कही। आज की प्रार्थना 'वादेल-कैम्प' में थी। इस कैम्प में सुचेता दीदी की बड़ी ही अच्छी व्यवस्था थी। कैम्प में रहनेवाले लोग भी कुछ समझदार थे। दुःख रहने के बावजूद वे हँसते हुए बहादुरी के साथ उसका सामना कर रहे हैं।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा : "मुझे ऐसी छावनी में आकर आप लोगों के साथ बातें करने का अवसर मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य ही मानता हूँ। बहुत दिनों से आप लोगों के बीच आने की अपनी इच्छा आज पूरी कर सका हूँ। यहाँ उपस्थित सभी भाई-बहनों से, जो हजारों की संख्या में अपना सर्वस्व गँवाकर आये हुए हैं, प्रार्थना करता हूँ कि आप इन लड़कियों द्वारा प्रभु से की गयी मेरी इस प्रार्थना में हृदय से अपना स्वर मिलाइये कि भगवान्! आप पुनः हमारे देश में एकता और शान्ति स्थापित कर हमें सन्मति दें।

"मानव के पास कितना ही धन या सुख-सामग्री रहे, फिर भी जब तक आन्तरिक शान्ति नहीं होती, तब तक कभी बरक्कत नहीं आती। सभी धर्मों में सत्य को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। अगर वह मिल जाय, तो मानव चाहे जहाँ रहे, अपार सुख का अनुभव करता है। उसे भविष्य की चिन्ता नहीं रहती। भावी बतलानेवाला एकमात्र परमेश्वर ही है। श्री रामचन्द्रजी जैसों को भी पता न था कि अपने राज्यारोहण के दिन वनारोहण करना पड़ेगा। राजकीय पोशाक के बदले वल्कल धारण करने पड़ेंगे। किन्तु रामचन्द्रजी के मन में बाह्य सुख से ही शान्ति नहीं थी। वे तो अपने हृदय में ही शान्ति का अनुभव करते रहे। इसलिए उनके मन ने वन या राजगद्दी, दोनों को समान ही माना। हम हिन्दू, सिख और हममें से हरएक को आयी हुई विपत्ति में शांति खोजनी चाहिए। अगर हम रामचन्द्रजी का आदर्श अपने जीवन में उतार लें, तो ऐसे पागलपन के शिकार कभी न होंगे।

"सबसे पहले मुझे यह बताया गया कि सभी कैम्पों की अपेक्षा इस कैम्प में रहनेवाले भाई-बहन अधिक सुव्यवस्थित हैं। मैं यह देख भी सकता हूँ। कैम्प-जीवन का अनुभव भी एक प्रकार का वैभव है। मैं तो कैम्पों में काफी रहा हूँ और यदि यह कहूँ कि वहाँ किस तरह रहना चाहिए—इस बारे में मैं पूर्ण निष्णात हूँ, तो यह अतिशयोक्ति न होगी। फिर भी आपको यहाँ काफी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं, यह मैं भुला नहीं सकता। आपमें से बहुतों ने धूपछाँह तक नहीं देखी है। फिर भी अगर आप इस आयी हुई विपत्ति को सम्पत्ति समझकर मौके के अनुरूप बन जायँ, तो आप अपने वे सुखमय दिन भूल जायँगे। सन् १८९९ में बोअर-युद्ध शुरू होने पर अंग्रेज ट्रान्सवाल छोड़ नेटाल चले गये थे। लेकिन उनको मामूली काम से लेकर सब कुछ आता था और वहाँ सभी लोग समान रूप से रहते थे। एक अंग्रेज इंजीनियर तो मेरे साथ बढ़ईगिरी भी करता था।

"सारांश, इस कैम्प में रहनेवाले सभी भाई-बहन समान दर्जे से रहें और इसे ऐसा आदर्श कैम्प बना दें कि दुनियाभर के और हिन्दुस्तान के लोग खास रूप से इसे देखने को आयें। अभी आपने 'ईशावास्य' का श्लोक सुना होगा। उस मंत्र का अर्थ भी यही है कि अपने पास जो कुछ हो, वह सब भगवान् को अर्पण कर अपने लिए जितना आवश्यक हो, उतना ही लें। अगर हम इस मन्त्र के अनुसार बरतें, तो न केवल इस कैम्प को, बल्कि जहाँ शरणार्थियों की बदनामी हो रही है, उस दिल्ली शहर को भी नवीन तेज प्राप्त होगा और दिल्ली द्वारा हिन्दुस्तानभर के आतंकग्रस्त क्षेत्रों में सच्चा और आन्तरिक सुख प्रकट होगा।"

प्रवचन के बाद कई भाई-बहनों ने हस्ताक्षर लिये। कितनी ही जर्जर वृद्धाएँ और बूढ़े बापू के चरण-स्पर्श के लिए अधीर हो रहे थे। इस छावनी के भोजन आदि के बारे में भी हमें बतलाया गया।

बापू शरणार्थी हिन्दुओं के बहुत-से कैम्पों में हो आये हैं। उनकी अपेक्षा इस कैम्प में इतने दुःखों के बावजूद, शान्ति और भक्ति अत्यधिक दीख पड़ी। कैम्प के व्यवस्थापकों के प्रति भी शरणार्थियों के मन में अपार सम्मान का भाव देखा गया।

रास्ते में बापू कहने लगे : "हर कैम्प में भक्त और सुव्यवस्थित लोग रहते ही हैं। लेकिन अत्यधिक दुःख झेलकर आने पर और कैम्प के व्यवस्थापक की ओर से

भी सन्तोष न हो, तो ये नाराज होंगे ही। यहाँ के व्यवस्थापक ही भावुक हैं और वे शरणार्थियों के दुःखों में पूरा साथ देते हैं। व्यवस्थापिका वहन भी कितनी सादी थीं, जब कि दूसरे के कैम्पों में इसका अभाव था। इन दुःखी शरणार्थियों के पास जाना हो, तो संचालक को अत्यन्त मर्यादित, संयत होकर रहना चाहिए। दूसरे कैम्पों में संचालिका वहनों की वेश-भूषा देखकर ही मैं तो आश्चर्यचकित हो जाता था। उससे उनका प्रभाव पड़ ही नहीं सकता।"

वहाँ से आने के बाद बापू टहले। नियमानुसार पंडितजी आये। बापू ने प्रार्थना- वचन लिख लिया है। अभी साढ़े नौ बजे हैं। थोड़ी ही देर में पंडितजी उठने की तैयारी में हैं। ऐसा लगता है कि सभीको कश्मीर का प्रश्न व्याकुल कर रहा है।

● ● ●

कश्मीर की समस्या : ५ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
४-१-'४८

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना। दतौन करते समय...के साथ बातें।...के विषय में कनुभाई का पत्र। अब सबको कदाचित् पता लगेगा। नारणदास काका को भी सूचित करने के लिए कहा। देखें, आगे क्या होता है। अभी तो यहाँ पुनः सभी जुट गये हैं, इसलिए बापू चाहते हैं कि खुद ही सप्ताहभर के अन्दर उचित निर्णय कर लें। वे ऐसा ही सोच रहे हैं। दतौन करते समय उन्होंने कहा : "अभी तो हृदय में मंथन चल रहा है। ठीक-ठीक प्रकाश नहीं मिल पाया है। फिर भी प्रकाश के मार्ग पर हूँ, ऐसा अवश्य मालूम पड़ रहा है। अब तू जरा भी बीमार न पड़े, तो बाकी सब-कुछ मैं हल कर लूँगा। शरीर से बुखार को हटाना ही चाहिए।"

देवभाई (देवप्रकाशभाई नैयर) और चाँद बहन का वातावरण खूब डाँवाडोल है। सुशीला बहन अमेरिका जाने की तैयारी में व्यस्त हैं। उनकी स्थिति भी अजीब है। बापू अभी ऐसी एक-न-एक बात कहते हैं, जिससे लगता है कि कदाचित् वे बिरला-भवन छोड़ किसी मुसलिम बस्ती में चले जायँ और वहीं अकेले रहने का निर्णय कर लें। साफ-साफ कुछ समझ में नहीं आता। सबसे ज्यादा अपने ऊपर

ईश्वर की कृपा मानती हूँ। वे जिनसे बातें करते हैं—पंडितजी और राजेन्द्र बाबू जैसों के साथ भी—उनसे यही कहते हैं कि "मैं कुछ सोच रहा हूँ। उसमें सिर्फ मनु ही साथ रहेगी, और किसीकी जरूरत नहीं। आखिर देखें क्या होता है?"

प्रार्थना के बाद छात्रावासों में हरिजन-प्रवेश के बारे में परीक्षितलाल भाई का पत्र पढ़ा। उसके नीचे नोट लिख दिया : "इसमें इतना बढ़ा देना चाहिए कि अगर छात्र सच्चे होंगे, तो कोई उन्हें रोक नहीं सकता। इस जमाने में छात्रों के आगे संचालकों की चल नहीं सकती—उसमें भी अगर छात्रों के पक्ष में धर्म हो और संचालक अधर्म का आचरण करते हों, तब!...लोगों को भोजन से मतलब है, दूसरे झगड़ों से नहीं। चाहे जो हो, छात्रावासों में हरिजन हक से और आदरपूर्वक दाखिल होने ही चाहिए।"

एक बालिका को लिखा : "बालकों को पेन्सिल से कभी नहीं लिखना चाहिए। उसी तरह फाउण्टेनपेन से भी नहीं। बरू की कलम से लिखने पर अक्षर सुधरते हैं। तू अपनी माँ के घरेलू कामों में मदद करती ही होगी। नियमित आध घंटा कातते रहना। कसरत करके शरीर खूब मजबूत बनाना। तुझे रोटी और शाक बनाना आ गया है न? ठीक, जब मिलेंगे, तब मुझे जरूर खिलाना। खूब हँसती-खेलती रह। बाकी मनु बेन लिखेगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

एक बहन को : "कल की कौन जानता है? मेरा तो सभी अनिश्चित है। लेकिन प्रकाश के पथ पर हूँ। तेरा प्रदर का रोग मिटना ही चाहिए। नमक तो खाना ही नहीं चाहिए। द्विदल (दाल) इस रोग में जहर-सी है और मिर्च-मसाला भी। कटि-स्नान और पेड़ू पर मिट्टी रखना और आराम करना। मेरे साथ रहती, तो उपवास कराता। पर मुझे विश्वास है कि इतने बाह्य उपचारों के साथ हृदय से राम-नाम रटती रहेगी, तो निश्चय ही रोगमुक्त हो जायगी। हिन्दुस्तान में पचहत्तर प्रतिशत बहनों को यह रोग है। इसके प्रमुख कारण हैं : बहनों की शर्म, इस विषय का पूर्ण अज्ञान, कृत्रिम जीवन, खान-पान आदि। अगर मैं यह कहूँ कि सभी रोगों में यह रोग कितना भयानक और त्रासदायक है, इसका बहनों को भान ही नहीं है, तो वह झूठ न होगा। अगर मैं इन सब कामों से मुक्त हो जाऊँ, तो सर्वप्रथम

प्राकृतिक उपचार से बहनों के सभी रोग मिटा दूँ—ऐसी मेरी पूर्ण श्रद्धा है। लेकिन आज तो यह आसमानी सुलतानी की बात है।

"चाँद अभी पूरी तरह अच्छी तो हुई ही नहीं है। उसे शारीरिक रोग की अपेक्षा मानसिक रोग अधिक है। आभा और मनु अच्छी हैं। आज बम्बई से सुशीला आनेवाली है। यह सुबह के समय लिख रहा हूँ। कदाचित् मैं चिट्ठी देर-अबेर से दूँ, तो भी तुझे तो नियमित लिखना ही चाहिए। बाकी मनुड़ी लिखेगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

दिल्ली में कौमी आग

टहलते समय राजेन्द्र बाबू आये। उन्होंने कश्मीर की गंभीरता समझायी। भाई साहब ने खबर दी कि रात को दिल्ली में पुनः कौमी आग फूट पड़ी। अब तो बहनें भी निकल पड़ी हैं। एक मुसलिम मुहल्ले में बहनें और बच्चे मुसलमानों के घरों में घुस गये। पुलिस को अश्रुगैस छोड़नी पड़ी। आज के अखबारों में भारत-पाकिस्तान की लड़ाई की अफवाहें छपी हैं। कोई कहता है कि इसमें माउण्टबैटन का स्थान कहाँ होगा, यह विचारणीय है। इसमें अन्दर से अंग्रेजों का ही हाथ हो, तो आश्चर्य नहीं। बापू कहते हैं: "यह तो जैसा होगा, दीख ही पड़ेगा, पर मैं नहीं मानता कि इसमें अंग्रेजों का सीधा हाथ होगा। फिर माउण्टबैटन हमारे गवर्नर जनरल हैं, इसलिए हम सुरक्षित हैं।"

प्रतिदिन मामला चारों तरफ से बिगड़ता जा रहा है। जूनागढ की अस्थायी हुकूमत की अव्यवस्था का भी एक अलग रूप है। अब तो कुछ दिनों में भावनगर अपना उत्तरदायी शासन प्रजा को सौंप ही रहा है। लगभग तारीख भी तय हो गयी है। लेकिन महाराज साहब, पट्टनी साहब और बलवंत भाई सभी चाहते हैं कि बापू के हाथों में ही उत्तरदायी शासन सौंपा जाय। बापू कहते हैं कि "दिल्ली मुझे छोड़े, तो सब कुछ हो सकता है।"

आज तो बादल भी हैं। रात में बारिश भी हुई थी। धूप न होने से आज मालिश जरा देर से हुई। मालिश में सो नहीं पाये। दिल्ली और पाकिस्तान के आज के कश्मीर विषयक वक्तव्य से बापू बेचैन हैं। बंगाली पाठ नियमानुसार हुआ।

भोजन के समय नियमानुसार स्थानीय मुसलमान भाइयों ने खबर दी कि

"हमारे लिए तो आफत ही है। शहर में रोज कुछ-न-कुछ होता ही रहता है। आपके सिवा अब किसीका भी आधार नहीं रहा। पुलिस भी बे-दरकार हो गयी है।"

केवल मानववाद ही सही

बापू कहते हैं : "आपकी बात सच है। जब हमारी नीति का रुख ही ऐसा बना है, तो फिर उससे और दूसरा क्या हो सकता है? हमारी पुलिस और इंगलैण्ड की पुलिस में जमीन-आसमान का अन्तर है। वहाँ की पुलिस 'फर्ज' समझकर ही नौकरी करती है। जब कि यहाँ की पुलिस पेट भरने का साधन समझकर नौकरी करती है। इतना महान् अन्तर है। जब हम सबको यह अपना देश प्रतीत होगा, तभी यह स्थिति सुधरेगी। जिस दिन हम लोगों के दिलों में यह भावना जाग उठेगी, उस दिन हमारे देश की आजादी दुनियाभर में विख्यात हो जायगी। तब न तो साम्यवाद की जरूरत होगी, न समाजवाद की और न पूँजीवाद की। तब 'मानववाद' के सिवा और किसीकी भी जरूरत न होगी। आज हम लोगों में से मानवता उठ गयी है। उसीका यह परिणाम है।

"इसके साथ ही आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ कि जहाँ तक हो सके, आप लोग अपना प्रभाव मुसलिम भाई-बहनों पर डालिये और उन्हें शान्त रखिये, तो हिन्दू और सिख तो अपने-आप ठिकाने पर आ जायँगे। अब तो कदाचित् आपको जितनी राह देखनी पड़ी, उतनी देखनी भी न पड़े। एक ओर पाकिस्तान भी लड़ाई की बातें कर रहा है। आपको भी उस बात का गम्भीरता से विचार करना ही होगा। अगर आप उसमें सहमत हों, तो मुझे कुछ कहना नहीं है। लेकिन अगर असहमत हों, तो आपको इसकी खुली घोषणा कर देनी चाहिए। अगर आप ऐसा करें, तो भारत के मुसलमानों की बहुत बड़ी सेवा करेंगे।"

उनके जाने के बाद बापू ने कुछ देर तक विश्राम किया। लेकिन लगता है कि आज की दिल्ली की अशान्ति से बापू काफी सोच में पड़ गये हैं। पंडित सुन्दरलालजी ने भी बापू से अशान्ति के बारे में बहुत कुछ कहा। जब बार-बार एक के बाद एक बुरी खबरें आती रहती हैं, तो बापू को तो यही लगता है कि कदाचित् यह सारा गम्भीर तूफान उठ पड़ा है। सुन्दरलालजी के समाचार की भी यही प्रतिक्रिया हुई। लेकिन ऐसी स्थिति में हम लोग न इधर ही बोल सकते हैं और

न उधर हो। क्योंकि जब हकीकत ही खराब है, तो उसमें फिर कमी-बेशी को बापू महत्त्व देते ही नहीं।

आज तो दिनभर काफी बादल रहे। करीब चार बजे से तो बारिश भी शुरू हो गयी। फिर भी कुछ लोग प्रार्थना में आये ही हुए थे। पहले तो विचार हुआ कि प्रार्थना अन्दर ही की जाय। पर बापू ने कहा कि "जब लोग इतने कष्ट सहन कर बाहर से—दूर से, आये हों, तो मुझे वहाँ तक जाना ही चाहिए।"

बापू ने प्रार्थना में आनेवालों का अभिनन्दन करते हुए कहा : "आप लोग यहाँ केवल कुतूहल की दृष्टि से नहीं, बल्कि प्रभु का भजन करने के लिए ही आये हैं—ऐसा मानता हूँ।

"मुझे तो आज आपसे कुछ अलग ही बातें कहनी हैं। आज के समाचार-पत्रों में और सर्वत्र एक ही चर्चा चल रही है कि यूनियन और पाकिस्तान के बीच लड़ाई शुरू होगी। अभी तो स्वतन्त्र होकर छह महीने भी पूरे नहीं हुए और हम लोगों ने लड़ाई की बातें शुरू कर दी हैं, यह हमारा कितना दुर्भाग्य है! पाकिस्तान ने आज यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि यूनियन ने लड़ाई करने के लिए राष्ट्रसंघ के पास गुहार की है। ऐसा सफेद झूठ देख मुझे तो अपार आश्चर्य हो रहा है। यह तो 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' जैसी बात है। अलबत्त आप मुझसे पूछ सकते हैं कि यूनियन राष्ट्रसंघ से न्याय माँगे, तो क्या यह उचित माना जा सकता है? इस पर मेरा जवाब दोनों प्रकार का है। न्याय माँगने के लिए दौड़ना अच्छा भी है और बुरा भी। अच्छा इसलिए कि कश्मीर में एक प्रकार से हमले चल ही रहे हैं और ऐसी अफवाह है कि उसमें पाकिस्तान का भी हाथ है। अगर पाकिस्तान ऐसा दावा करता हो कि यह बात सच नहीं है, तो मुझे इतने मात्र से सन्तोष हो ही नहीं सकता।

"अगर कश्मीर यूनियन से मदद माँगता है, तो यूनियन को भी पड़ोसी और मित्र के नाते उसकी मदद करनी चाहिए। इसमें यूनियन भूल करता हो, तो उसका न्याय ईश्वर दे देगा। यूनियन का सिद्धान्त है कि जो पड़ोसी शरण आये, उसकी मदद अवश्य की जाय। लेकिन पाकिस्तान ने जो यह वक्तव्य दिया है, मैं मानता हूँ कि उसमें उसकी गम्भीर भूल ही है। ऐसा गंभीर वक्तव्य देने से पूर्व उसे यहाँ

की सरकार से बातचीत कर लेनी चाहिए थी। खुले तौर पर तो ये लोग यही कहते हैं कि हम यूनियन के साथ रहकर ही सब कुछ करेंगे, पर यथार्थ में इसके विपरीत ही आचरण करते हैं। धर्म के नाम पर पाकिस्तान की स्थापना हुई है, इसलिए ऐसा पाकिस्तान तो हर प्रकार से 'पाक' याने संपूर्ण शुद्ध रहना चाहिए। मैं मानता हूँ कि भूलें तो दोनों देशों में समान ही हुई हैं। तो क्या अब भी उन भूलों की परम्परा बनाये रखनी है? अगर दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ, तो तीसरी कोई प्रबल सत्ता हम लोगों पर चढ़ बैठेगी और इस तरह हम लोग गत १५० वर्षों से अपार विपत्तियाँ झेल और हजारों-लाखों के बलिदान के बाद पायी हुई बहुत ही महँगी इस आजादी को खो बैठेंगे। तब तो वह हमारी मूर्खता की हद ही मानी जायगी।

"अभी कुछ भी बिगड़ा नहीं है। दोनों देशों के नेता लोग ईश्वर को साक्षी रखकर परस्पर विश्वास पैदा करें। अगर राष्ट्रसंघ के पास मामला गया हो और हम लोग उसे वापस लौटा लें, तो वे लोग भी राजी ही होंगे। मैं ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करूँगा कि वह हमें इस युद्ध से बचाये। अगर युद्ध होना तय ही हो, तो कम-से-कम मैं तो उसका साक्षी बनना चाहता ही नहीं। लेकिन यहाँ एक बात का स्पष्टीकरण कर लेना चाहता हूँ कि मन-ही-मन दुश्मनी रखने और एक-दूसरे के प्रति षड्यन्त्र करने की अपेक्षा बेहतर है कि दिल खोलकर लड़ ही लिया जाय।

"अभी दिल्ली के दिल में भी शान्ति स्थापित नहीं हो रही है। गत रात बच्चों और बहनों को आगे करके अमुक लोग मुसलमानों के मकानों में घुस गये और उस समय मार-काट छिड़ गयी। लाचार हो पुलिस को अश्रुगैस छोड़नी पड़ी। दुःखी तो सचमुच दुःखी हैं ही, पर ऐसी आफत के समय वे मर्यादा का खयाल न करें, तो दुःख बढ़ता ही जायगा। इस तरह मारकाट करने से आप सरकार के मददगार होने के बदले उसके लिए परेशानी बढ़ानेवाले ही बन जायँगे। स्वतंत्र भारत में यहाँ दुनिया-भर के राजदूत स्थायी रूप से आकर बसे हैं। उन सबको हम अपना झगड़ा बताकर अहिंसा को लजा रहे हैं। एक ओर तो कहा जाता है कि भारत ने खून की एक बूँद भी बहाये बगैर आजादी पायी है और दूसरी ओर हम ही अपने भाइयों के बीच कत्लेआम शुरू करके क्या कर रहे हैं? बच्चों और बहनों को आगे रखकर दूसरों का सामना करने में कोई बहादुरी नहीं। पुराने जमाने में गायों को आगे रखकर

मुसलमान कत्लेआम करते थे, जिससे हिन्दू लोग सामने वार न कर सकें। इस तरह तो हम अपनी बहनों का दुरुपयोग कर उन्हें लजा रहे हैं, इसलिए हमें शरम आनी चाहिए। भगवान् आपको सन्मति दे।"

प्रार्थना के बाद अन्दर पेसेज में ही बापू टहले। टहलते समय भाई साहब ने बापू को बतलाया कि "कंट्रोल हटा देने से जनता बड़ी ही खुश है और भावों में भी काफी परिवर्तन हो गया है।" बापू ने भी उनसे कल सभी के बाजार-भाव लिख लाने के लिए कहा।

जहीर साहब के साथ शिक्षण और नयी तालीम के बारे में बातचीत करते हुए बापू ने कहा: "नयी तालीम का प्रत्येक छात्र पूर्ण स्वावलंबी होना चाहिए। अगर यह नहीं होता, तो इसे मैं नयी तालीम की नहीं, बल्कि आप सब शिक्षकों की ही असफलता मानूँगा। आखिर हमारे यहाँ शिक्षित लोग कितने प्रतिशत होंगे? बड़ी मुश्किल से पाँच निकलें, तो क्या उनमें अक्ल नहीं? सब कुछ है, लेकिन गरीबी के कारण वे अक्षर-ज्ञान से भी वंचित हैं। इसलिए देश की आर्थिक स्थिति और शिक्षा—दोनों विभाग सगे भाई जैसे ही हैं। एक प्रश्न हल करेंगे, तो दूसरा अपने-आप हल हो जायगा। मेरी चले और कोई मुझे नौकरी पर रखे, तो मैं शिक्षक होना ही पसंद करूँगा। जब तक थोड़े में पेट का गड्ढा नहीं भरता, तब तक देश कभी भी ऊँचा नहीं उठ सकता। अगर यह गड्ढा भरने की कोई कला हो, तो वह नयी तालीम ही है, अतः उसे व्यापक बनाना चाहिए। उसी तरह प्रत्येक छात्र शिक्षा के साथ-साथ अपना खाना, कपड़ा और निवास भी खुद ही पैदा करे। इस देश के लिए यह सब सुलभ है। लेकिन मेरी यह तूती की आवाज कहाँ तक पहुँच सकेगी, यह खुदा ही जाने।"

चाँदवानीजी ने हिन्दी प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद किया। बापू को उसमें काफी संशोधन करना पड़ा। रात में नियमानुसार पंडितजी आये थे। घंटे भर बैठे। कसरत करके ९॥ बजे के बाद सोने की तैयारी हुई। सोने पर मैंने रोज की तरह तेल की मालिश की और बापू ने बीमार और स्वस्थ सभी की तबीयत का दिनभर का हाल सुना। दिनभर तरह-तरह की माथापच्ची करते हुए भी बापू एक बात नहीं भूलते। किसको कितने दस्त हुए और कितना बुखार रहा? कितना खाया और कितनी बार बाथ लिया—यह सारा बारीकी से पूछा।

● ● ●

खादी और कंट्रोल की समस्या : ६ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
५-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना। आज मौन का दिन होने से बापू को खुद ही लिखना था। मैं तो प्रार्थना के बाद बापू को भीतर पहुँचाकर थोड़ी देर सो गयी।

बापू ने आज हिन्दी में खादी पर लिखते हुए बताया कि लोग नीचे के सवाल उठाते हैं :

"आजादी मिलने के बाद शुद्ध खादी, अप्रमाणित खादी, मिल के कपड़े और विलायती कपड़ों में बहुत फर्क नहीं रह जाता। जितनी जरूरत हो, उतना खुद ही कातकर और बुनकर पहनें, तो जरूर फर्क पड़ जाता है। क्योंकि इससे एक खास विचारधारा का पता चलता है। पर जितना कपड़ा चाहिए, उतना सूत तो काता नहीं जाता। खादी तो खादी-भंडार से ही खरीदते हैं। उसके लिए भी जितना सूत देना पड़ता है, खुद नहीं काता जाता। शुद्ध खादी में कोई सुधार दिखाई नहीं देता। अप्रमाणित खादी में कई तरह के कपड़े काम आते हैं। इसका कारण यह दिखाई देता है कि शुद्ध खादीवालों को सुधार में कोई रुचि नहीं है। आजकल मजदूरी इतना ज्यादा हो गयी है कि जीवन-वेतन का भी सवाल नहीं रहता फिर जरूरत हो, तो अप्रमाणित खादी लेने में क्या हर्ज है?

"सारे देश में कपड़े की काफी कमी है। राष्ट्रीय सरकार खुद विलायती कपड़ा मँगाती है। विलायती कपड़ा मँगाना या न मँगाना सरकार के हाथ में है। फिर भी वह कपड़ा मँगाती है, तो फिर उसे खरीदने में क्या बुराई है?

"प्रमाणित खादी ही प्रमाण हो सकती है। यहाँ 'प्रमाणित' शब्द का सही मतलब पूरी तरह जाहिर नहीं होता। 'प्रमाणित' का असली मतलब है—वह खादी, जिसमें पूरा दाम देकर सूत खरीदा गया हो, जिसे ठीक दाम देकर बुनवाया गया हो, और खरीद का दाम नफाखोरी के लिए नहीं, बल्कि लोक-लाभ के लिए ही रखा गया हो। स्वावलंबी यानी अपनी बनायी खादी के सिवा बाकी ऐसी खादी, जो बाजार से लेनी पड़ती है, उस खादी के लिए प्रमाण जनता के लिए जरूरी है।

ऐसा प्रमाण देनेवाली एक ही संस्था हो सकती है और वह है—'चरखा-संघ!' इसलिए चरखा-संघ जिसे प्रमाण-पत्र दे, वही प्रमाणित खादी है।

"उसे छोड़कर जो खादी मिले, वह अप्रमाणित खादी हो जाती है। प्रमाण-पत्र न लेने में कुछ-न-कुछ दोष तो होना ही चाहिए। दोषवाली खादी हम क्यों लें? दोषयुक्त और निर्दोष में फर्क है, इसमें संदेह के लिए गुंजाइश ही नहीं हो सकती।

"यह सवाल किया जा सकता है कि प्रमाण-पत्र की शर्त में ही दोष हो सकता है। अगर दोष है, तो उसे बताना जनता का धर्म हो जाता है। आलस के कारण दोष बताने के बदले अप्रमाणित और प्रमाणित का फर्क ही उठा देना किसी हालत में ठीक नहीं। हो सकता है कि हममें कुचाल इतनी बढ़ गयी हो कि हम जनता के बीच में ठीक चाल चल ही नहीं सकते या जिसे हम ठीक चाल मानते हैं, वह धोखा ही हो। इस हद तक जाना जनता के प्रतिनिधि का काम है ही नहीं।

"खादी, स्वदेशी मिल के कपड़े और विदेशी कपड़ों में फर्क है, इस बात में शक ही कैसे पैदा हो सकता है? विदेशी राज्य गया, इसलिए विदेशी कपड़ा लाना ठीक बात कैसे हो सकती है? ऐसा खयाल करना ही बताता है कि हम विदेशी राज्य के विरोध का असली कारण ही भूलते हैं। विदेशी राज्य होने से मुल्क को बड़ा भारी नुकसान होता था। इस भारी नुकसान को मिटाना ही स्वराज्य का पहला काम होना चाहिए।

"निचोड़ यह कि स्वराज्य में शुद्ध खादी को ही जगह है। उसीमें लोक-कल्याण है। उसीसे बराबरी पैदा हो सकती है।"

सेवाग्राम की चिट्ठी

आज सेवाग्राम से मुन्नालाल भाई आये। उन्होंने वर्धा के आश्रम की तथा अन्य भी नयी-पुरानी बातें सुनायीं। बापू तो अब स्पष्ट मानते हैं कि 'आश्रम को अपने पैरों पर ही खड़ा होना चाहिए।' दवाखाना आश्रम के बाहर चला गया है। वह तो कुल मिलाकर ठीक ही चल रहा है। बापू ने एक चिट पर लिखा: "यदि सेवाग्राम में रचनात्मक कार्यक्रम संपूर्ण स्वावलंबी न बना, तो समझिये कि आश्रमवासी सोये हुए हैं। 'रचनात्मक कार्यक्रम का सर्वथा अखंड और संपूर्ण अमल यानी संपूर्ण स्वराज्य' यह मेरी व्याख्या है।

"मैं स्वयं अभी दृढ़ निश्चय पर नहीं पहुँचा हूँ। सेवाग्राम आने की बात को तो हवाई ही समझें। हवाई जहाज तो दिन पर दिन बढ़ ही गये हैं न ? मैं तो आकाश के नीचे बैठा होऊँ और ऊपर खरर-खरर जोर से आवाज आये, तो देख लूँ। यह सब देखता हूँ, तो यही लगता है कि सारी दुनिया कर्तव्यनिष्ठ है। दुनिया में अगर कोई बेकार है, तो एक मैं ही हूँ।"......(एक साथ विनोद और गम्भीरता का वातावरण छा गया।)

नोआखाली में कनुभाई को लम्बा पत्र लिखा, पर...को वह पसन्द नहीं पड़ा, इसलिए कदाचित् न भेजें।...लेकिन काफी दुविधा में हैं। सुशीला बहन को इस महीने में अमेरिका जाना था, पर अब मई में जाना तय हुआ है। इससे वे भी प्रसन्न हुईं। बापू को छोड़कर जाना वे बिलकुल ही नहीं चाहती थीं।

आज सुशीला बहन ने बापू की मालिश की। मालिश के समय नित्य नियमानुसार बंगला पाठ किये गये। सर्दी इतनी बढ़ी है कि शरीर में से हटती ही नहीं। फिर भी बापू 'बाथ' में बरफ जैसे ठण्डे पानी में बैठते हैं। दतौन करने और हाथ-मुँह धोने के लिए भी ठण्डा पानी ही काम में लाते हैं।

बाथ में हजामत करते समय बापू १० मिनट सो गये। पंडितजी आये। कुछ देर बातें करके चले गये। इन्दिरा बहन भी नन्हें-मुन्ने को लेकर आयीं। बापू ने उसे संतरा दिया। वह तो खूब खुश हो गया और बापू की गोद में बैठकर खूब खेला।

मालूम पड़ता है कि बापू को सर्दी होगी। भोजन में भी परिवर्तन कर दिया गया।

हिन्दू-मुसलिम झगड़े का अन्त ?

नियमानुसार मौलाना लोग आये। वे शिकायत करने लगे : "हिन्दू लोग मुसलमानों को हिन्दू-महल्लों में हैरान तो करते ही हैं, हथियार भी उनके पास हैं।" बापू ने लिखकर बताया कि "इसके प्रमाण देंगे, तो बहुत सुविधा होगी। मेरे पास यह भी शिकायत आयी है कि मुसलमानों के पास भी काफी हथियार हैं। इसलिए आपका पहला फर्ज तो यह है कि मुसलमान भाइयों से प्रार्थना कर

उनके पास जो हथियार हों, वे मुझे लाकर सौंप दें। फिर अगर सरकार मुसलमानों का पूर्ण संरक्षण नहीं करती, तो पहले मैं मरूँगा, बाद में उन्हें मरने दूँगा।"

बाकी मुलाकातें तो रोज जैसी ही चल रही थीं। सुभद्रा बहन गुप्ता ने भी मुसलमानों को हैरान करने की बात कही। बापू ने लिखा : "अगर तेरे जैसी किसी लड़की के ऐसी शिकायत करने के लिए आने के बजाय, यह सुनता कि मुसलमानों को बचाते हुए एक हिन्दू के हाथों सुभद्रा का खून हो गया, तब मैं नाच उठता। मुझे लगता है कि जब ऐसी बहादुरी के साथ हिन्दू-बहनों और भाइयों के बलिदान होंगे, तभी इस झगड़े का अन्त होगा।"

मिट्टी, कताई, चिट्ठी-पत्री आदि नित्य की तरह ही हुए। आज बापू ने हरिजन-फंड और अन्य हिसाब भी जाँचा। बची हुई खादी हरिजन कॉलनी में हरिजन बालकों के लिए भेज देने की सूचना दी। 'अपने पास आवश्यकता से अधिक—भेट की खादी में से—एक रूमाल का टुकड़ा भी नहीं रखा जा सकता।'

कंट्रोल उठा देने का परिणाम

शाम को प्रवचन लिखा। आज के प्रवचन में कण्ट्रोल पर विवेचन हुआ। अनाज के पहले के और हाल के भाव बतलाये।

प्रवचन में बताया कि "कण्ट्रोल उठा देने से मेरे पास चारों ओर से मुबारकबादी के तार आ रहे हैं। अभी भी जिन-जिन चीजों पर कण्ट्रोल हो, उसे भी उठा लेना चाहिए, यह माननेवाला वर्ग भी काफी बड़ा है। मेरे आग्रह पर एक बड़े व्यापारी ने मेरे नाम अंग्रेजी में एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं।"

वे लिखते हैं कि "कण्ट्रोल थे, तब के और उसके हटने के बाद के भावों में निम्नलिखित परिवर्तन हुआ है :

वस्तु	तौल	चालू भाव (कण्ट्रोल हटने पर)	कण्ट्रोल के समय का भाव
खाँड़	मन	३७॥)	८०) से ८५)
गुड़	,,	१३) से १५)	३०) से ३२)
शक्कर	,,	१४) से १८)	३७) से ४५)

खाँड़ की आधा सेर की थैली		||≡)	१||) से १|||)
खाँड़ (देशी)	मन	२०) से ३५)	७५) से ८०)

इस तरह खाँड़ और तत्सम अन्य चीजों में ५० प्रतिशत कमी हुई। अब अनाज के भाव देखिये :

वस्तु	तौल	चालू भाव	कण्ट्रोल के समय का भाव
गेहूँ	मन	१८) से २०)	४०) से ५०)
चावल (वासमती)	,,	२५)	४०) से ४५)
मक्का	,,	१५) से १७)	३०) से ३२)
चना	,,	१६) से १८)	३८) से ४०)
मूँग	,,	२३)	३५) से ३८)
उड़दी	,,	२३)	३४) से ३७)
अरहर	,,	१८) से १९)	३०) से ३२)
चने की दाल	,,	२०)	३०) से ३२)
मूँग की दाल	,,	२६)	३९)
उड़दी की दाल	,,	२६)	३७)
अरहर की दाल	,,	२२)	३२)
सरसों	,,	६५)	७५)

"गरम और अन्य कपड़ों पर से भी कण्ट्रोल उठ गया, इसलिए बाजार में उस किस्म का कपड़ा बेशुमार आ गया है। रेशम की तो ५० या ६५ प्रतिशत तक कीमत गिर गयी है।

"सूती कपड़े और सूत के भाव पर से भी कदाचित् एकाएक कण्ट्रोल उठा दिया जाय, ऐसा लोग सोचने लगे हैं। इसलिए उनके भाव भी काफी गिर गये हैं।"

"लेकिन मुझे तो विश्वास है कि अभी भी जिन-जिन चीजों पर कण्ट्रोल है, उसे तत्काल उठा लिया जाय, तो हर चीज के भावों में ६० से ६५ प्रतिशत गिरावट आ सकती है। इसके सिवा कपड़ों की किस्मों में भी काफी सुधार होगा, यह भी निश्चित है। जब तक माल की तङ्गी मालूम पड़े, तब तक उसका बाहर निर्यात होना ही नहीं चाहिए।

"पेट्रोल पर भी लड़ाई के कारण कंट्रोल लगाया गया था। मेरी दृष्टि से अब उसको भी जरूरत नहीं। क्योंकि कंट्रोल के कारण अमुक ट्रान्सपोर्ट चलानेवाली कंपनी को बेहद नफा होता है। अगर पेट्रोल पर कंट्रोल न रहे और व्यक्तिविशेष को मार्ग-विशेष पर मोटरें चलाने का ठेका न दिया जाय, तो मैं मानता हूँ कि एक ही गाड़ी के मालिक को शायद ३००) से अधिक की आय हो। लेकिन आज तो पेट्रोल के परमिटों का भी धड़ल्ले से व्यापार चलता है। इससे देश में मकानों और अनाजों की अदला-बदली की समस्याएँ भी हल हो जायँगी। कण्ट्रोल के साथ आप लड़े, वह आम जनता के लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद साबित हुआ।

"मैं मानता हूँ कि प्राप्त आँकड़ों को देखते हुए कदाचित् ही इस कदम से घाटा उठाना पड़ेगा। इतना होते हुए अगर कोई सबूत के साथ इस पर उज्र पेश करेगा, तो मैं उसका बड़ा आभारी होऊँगा।

जनता का बहुत बड़ा समुदाय जो बात चाहता हो, उसे कर देने के लिए जनता के प्रतिनिधियों को किसी भी तरह से डरने की जरूरत नहीं। मान लीजिये, इसमें कदाचित् वे निराश हो जायँ, तो पुनः जनता पर कण्ट्रोल तो लगाया ही जा सकता है!

"मुझे यह बतलाया गया है कि दुनिया में जितना पेट्रोल निकलता है, उसका सिर्फ एक प्रतिशत भारत में निकलता है। लेकिन इससे हमें निराश नहीं होना चाहिए। हम लोगों की मोटरें कहीं भी चलती हुई रुकी हो नहीं हैं। हम लोग कोई लडाकू नहीं, इसलिए हमें पेट्रोल को ज्यादा जरूरत ही नहीं है। अगर हमें उसकी जरूरत पड़े और आज दुनिया में जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले, तो क्या दुनिया को भी इसकी तंगी उठानी पड़ेगी? मेरे अज्ञान की आलोचना करनेवाले इसे मसखरी न समझें। मुझे तो ज्ञान प्राप्त करना है। इसलिए अगर अपना अज्ञान जाहिर न करूँ, तो मुझे वह कहाँ से प्राप्त होगा?

"सारांश, जब पेट्रोल यहाँ इतना कम है, तो फिर वह चोर-बाजार में कहाँ से आता है? एक भाई ने लिखा है कि जिसके पास एक ही ट्रक या एक ही लारी होती है और एक ही रास्ते पर चलने का लाइसेन्स मिलता है, वह महीने में दस से पन्द्रह हजार रुपया तक कमाता है। अगर यह सच हो, तो चौंक उठने जैसी ही बात है। तब क्या यही मानना होगा कि कण्ट्रोल गरीबों के लिए शाप और पैसेवालों के

लिए वरदान वना है ? अगर इजारा पद्धति और कण्ट्रोल का ऐसा ही बुरा परिणाम हो, तो एक क्षण का भी विचार किये वगैर तुरन्त इसे उठा देना चाहिए ।

"फिर कपड़े पर कण्ट्रोल तो मुझे जरा भी समझ में नहीं आता । क्योंकि अगर हम खादी को भूल न गये हों, तो कपड़े पर फिर कण्ट्रोल किस वात का ? कपड़े पर कण्ट्रोल की दलीलों में एक भी ऐसी नहीं, जिसका समर्थन किया जा सके । हम लोगों के पास पर्याप्त मात्रा में रुई और करोड़ों हाथ हैं । गाँवों में घर-घर चरखे हैं । इसी तरह हाथ-करघे चलाये जा सकते हैं और खेल की तरह वड़ी सरलता से अपने काम लायक कपड़ा प्राप्त किया जा सकता है । कपड़े के वारे में तो मेरा दृढ़ मत है कि उसके लिए जरा भी हायतोवा मचाने की जरूरत नहीं । उसी तरह मोटरें या लारियाँ दौड़ाने की भी कोई आवश्यकता नहीं है । गुलामी के जमाने में हमारी रेलों का पहला काम सेना की सेवा करना था और दूसरा काम वन्दरगाहों पर रुई पहुँचाना तथा वाहर से आनेवाला तैयार कपड़ा देश के भीतर ले आना था । लेकिन हमारी 'कैलीको', जिसका नाम 'खादी' है और वह गाँवों में ही वनती हो, तो ऐसे एक भी केन्द्र वनाने की तनिक भी जरूरत नहीं । हमारा आलस ही हमें रोकता है और अज्ञान भी । फिर भी इन दोनों दुर्गुणों को ढँकने के लिए हम लोग अपने गाँवों की फजीहत करते हैं, यह कोई कम वदनामी नहीं है ।"

आज का प्रवचन काफी लम्वा रहा । मौन के दिन वापू के प्रवचन हमेशा लम्वे ही हुआ करते हैं ।

मौन खुला, तो विरलाजी और सभी घर के ही मुलाकाती थे । वापू का जव तक मौन रहता हैं, तव तक सभी कुछ शान्त रहता है । जव मौन खुलता है, तो पुनः शोरगुल शुरू हो जाता है ।

लगभग पूरा दिन लिखने, पढ़ने और आराम में ही वीता । फिर भी वापू थकने की वात कहते थे । कदाचित् सर्दी होने की तैयारी है, उसका भी यह कारण हो ।

मुन्नालाल भाई ने भी वातें शुरू कर दीं । लेकिन वे अभी ठहरनेवाले हैं, इसलिए वातचीत दूसरे समय के लिए रखी गयी ।

लगभग १० वजे कसकर सोने की तैयारी हुई । पाकिस्तान ने 'नेशनल हेरल्ड' में कश्मीर-संवंधी जो वक्तव्य दिया है, उसके वारे में पंडितजी के साथ चर्चा हुई ।

बापू तो यह भी मानते हैं कि राष्ट्रीय मुसलमानों को भी (यूनियन में से) इस बारे में वे जैसा कुछ मानते हों, उसे घोषित कर देना चाहिए । • • •

सच्चा लोकतन्त्र : ७ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
६-१-'४८

बापू प्रार्थना से १० मिनट पहले जग गये । आज रात में सर्दी भी कड़ाके की रही । कनुभाई के लंबे पत्र के बारे में···के साथ चर्चा की । बापू ने एक बात पर कहा : "लगता है कि अभी मुझे सोचने को काफी रह गया है । क्योंकि जो जहाँ हों, वे वहाँ शान्ति से बैठकर काम नहीं करते । सब यही मानते हैं कि सारा काम तो दिल्ली में रहने पर ही होता है । हम लोगों से शहरों का मोह छूटता ही नहीं । असंख्य गाँवों की बदौलत ही आज दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई जैसे शहर बने हैं । उनकी भी परवाह नहीं । फिर भी आखिर लोगों का नैतिक जीवन ऊँचा उठने के बदले आज अत्यधिक बिगड़ गया है । परिणामस्वरूप हुल्लड़ और अराजकता बढ़ गयी है । इसलिए अगर हम यह सारा मूलरोग नहीं मिटाते और जीवन-दर्शन के लंबे-चौड़े भाषण देते हैं, तो अब चल नहीं सकता । हमें लोगों को काम देना होगा और स्वयं भी काम करना होगा । अब ही तो आश्रमवासियों की कसौटी है । अगर इस कसौटी पर आप खरे उतरें, तो ठीक; नहीं तो उसमें भी अपनी असफलता जाहिर कर मैं नया रास्ता अपनाऊँगा । मैं तो 'आज क्या सच है और क्या सच लगता है' इसी पर निर्भर हूँ । अगर कल का सच हो, तो उसे अपनाऊँगा, नहीं तो उसे फेंक देने में भी क्षणभर का विलंब न करूँगा । इसलिए यह सब आप लोगों को सोचना होगा । मैं तो जैसा हूँ, वैसा ही हूँ । अगर मुझे अपने इस यज्ञ में कुछ भी हानि दीख पड़े, तो उसे जैसी की तैसी पेश कर दूँगा । कारण मुझ पर सर्वसाधारण जनता जो अटल विश्वास रखती है, उसका मुझसे विश्वासघात हो ही नहीं सकता । मैं जनता का हूँ और जनता मेरी है । इसलिए मेरे पास व्यक्तिगत जीवन जैसा कुछ भी नहीं है, यह सभीको विचारपूर्वक समझ लेना चाहिए ।"

आज तो आये हुए पत्र बापू ने ही पढ़े । प्रायः यदि बापू को दिल्ली में कुछ सफलता मिली, तो वे कश्मीर जाने की भी सोच रहे हैं ।

स्थानीय मुसलमानों ने शिकायत की कि शरणार्थी तो मुसलमानों के घर चाहते हैं। अगर उन्हें कोई दूसरी सुविधा मिलती होती, तो भी मान्य नहीं। वापू ने कहा : "यह वहादुरी यहाँ दिखलाने की क्या जरूरत है ? अगर ऐसा ही था, तो उन्हें सर्वप्रथम अपना देश ही छोड़ने की जरूरत न थी और वहाँ अगर मुकावला किया होता, मुझे कोई परवाह न होती।"

जेव यानी संग्रह की इच्छा

वाथ में वापू ने हजामत की। मेरा कुर्ता फट गया था। मेरा ध्यान ही न था, पर वापू का उधर ध्यान गया और उसे सीने के लिए कहा। लेकिन वह इतना गल गया है कि सीधा सिल नहीं सकता, यह उनके भी ध्यान में आ गया। मुझसे कहने लगे : "इस जेव के हिस्से का कपड़ा निकालकर यहाँ जोड़ देगी, तो ठीक पेवंद वैठ जायगा। आखिर हमें जेव की क्या जरूरत है ? ऐसे जेव रखने लगे, इसलिए हमारे जीवन की आवश्यकताएँ वढ़ गयीं। जेव रखने पर उनके भीतर कुछ रखने की इच्छा होने लगती है। अगर जेव न हो, तो कदाचित् ही अधिक संग्रह करने की वृत्ति हो।"

वापू छोटी-सी वातों से भी जाने कहाँ से दार्शनिकता ढूँढ निकालते हैं !

वापू को खूव सर्दी हो गयी है। आवाज भी भारी हो गयी है। नाक से गरम पानी पीते हैं। कदाचित् ठंढी, वादल और वारिश के कारण ऐसा होता हो।

खुर्शीद वहन आयीं। उन्होंने वापू को खूव हँसाया और कहा : "पानीपत नहीं गये, यह ठीक ही हुआ। नहीं तो आप वहाँ पुनः पानीपत का महायुद्ध ही खेलते (अनशन या ऐसा ही कोई कदम उठाते), इसकी मुझे भारी चिन्ता थी।"

वापू ने कहा : "वह तो अभी कायम ही है। अव तो यही लगता है कि 'करो या मरो', इनमें से किसी एक दिशा की ओर शीघ्र ही मुड़ना चाहिए।"

वापू और अन्य लोगों के (वड़ों के) विनोद में भी काफी गम्भीरता मालूम पड़ती है। कौन जानता है, वापू क्या करेंगे ?

वा का स्मरण

आज...को विदेश जाना था, अतः उनके लिए रेशमी कपड़े आये। अगर वहाँ खादी ले जायँ, तो पेटियों में वहुत ही कम समायेगी। फिर धोने की भी कठिनाई !

बापू दुःखी हुए : "ये सारे बहाने हैं। कम ले जायँ, तो भी क्या हर्ज था? ···के जैसे भी अगर खादी पहनकर न जायँ, तो हमारे देश का प्रभाव क्या पड़ेगा? क्या यह सब मुझे कहना पड़ेगा? यह तो मेरी कल्पना से परे की बात है। ओहो! ईश्वर ने मुझे कितना जाग्रत कर दिया? अभी तक तो अन्धा ही था न? ···से कहना कि बापू कहते हैं या बापू को पसन्द है, इसलिए कुछ भी मत कीजिये। आपको खुद को जो अच्छा दीखे, पसन्द आये, जिसमें आनन्द हो, वैसा ही करना चाहिए।

"अब मैं समझ सकता हूँ कि बिना समझे आज क्या-क्या चल रहा है? इन पढ़े-लिखे लोगों की अपेक्षा बा कितनी ऊँची रही? उसने जो कुछ किया, उसमें वह पूर्ण और निरन्तर अखण्ड वफादार रही। ऐसी बहुत-सी बहनें (आज के जमाने के अनुसार तो 'अनपढ़' ही कहलायेंगी) मुझे मिली हैं—शकरी बहन, दुर्गा, गोमती। आश्रम की इन सभी बहनों को जब मैं देखता हूँ, तो मेरा सिर झुक जाता है। कभी भी आगे आने या अखबारों में नाम, प्रचार आदि की वृत्ति नहीं। फिर भी आजादी की लड़ाई में इन बहनों का हिस्सा अपूर्व था, यह मुझे कबूल करना होगा।" इस घटना से बापू को आन्तरिक दुःख हुआ। मुझे क्या पता था कि इससे यह परिणाम निकलेगा? मैंने तो···के लिए पार्सल आया, तो दस्तखत कर उसे ले लिया और बापू को सौंप दिया। बापू ने कहा कि "इसे खोल दे और देख, भीतर क्या है? तुझसे पूछें, तो कह देना, मैंने खुलवाया है···। इसमें अब बेचारी खादी कहाँ निभ पाती? आजादी में जैसा इस बूढ़े का हाल है, वैसा ही अगर खादी का करेंगे, तो कदाचित् आजादी टिकी रहे, पर आबादी टिक न पायेगी—तू तो जिन्दा ही रहेगी—इसे देख लेना और फिर बापू को याद करना कि इस बूढ़े का हिसाब बिल्कुल झूठा नहीं था।"

कृष्णनभाई नायर आये। वे तो रिलीफ का काफी काम करते हैं। बापू को कोई खास तकलीफ देने नहीं आते। कई बार तो सिर्फ बापू को देखने के लिए ही आते और भाई साहब जैसों से या हम लोगों से बातचीत करके चले जाते।

मंडी के राजासाहब और रानी साहिबा आये हुए थे। बापू को राजा साहब ने १०१) का एक चेक और रानी साहिबा ने अपनी हीरे की अँगूठी दी। उन्होंने दुशाला भी दिया था। लेकिन बापू ने विनोद में कहा : "अब तो इन सबकी मुझे

जरूरत नहीं—अब तो खुद आपकी मुझे जरूरत है।" उन्होंने कहा : "आपके हुक्म के अधीन ही हैं।"

हकीम अजमल खाँ आये। उन्होंने कहा कि "मुसलमानों के तो अब आप ही हैं। अगर आप न होते, तो यहाँ हमारा कोई भी न था।"

बापू ने कहा : "हम सबका खुदा ही है। मनुष्य मनुष्य का क्या रक्षक हो सकता है? लेकिन अब आपको मुसलिम परिवार में विश्वास पैदा कर उनके पास जो हथियार हों, उन्हें ले लेने का प्रयत्न करना चाहिए।"

रामेश्वरी बहन और ब्रजलाल नेहरू भी आये थे। ब्रजलालजी ने तो बापू को सर्दी मिटाने के लिए आसन के अमुक प्रयोग बतलाये। बापू मेरी ओर उँगली दिखाकर कहने लगे : "इस लड़की को आप अगर बिलकुल स्वस्थ कर सकें, तो उसे आपको सौंपने के लिए मेरा उत्साह बढ़े। वैसे तो उसके अन्तर में राम-नाम बसता हो, तो कुछ भी न होगा।"

ब्रजलालजी ने मुझसे विनोद में कहा : "हृदय फाड़कर बता तो कि राम-नाम है या नहीं? लेकिन यह ताकत भी तो आसन आदि से आ सकती है।"

संस्कृति के लिए कलंकरूप

आज की प्रार्थना में बापू ने बतलाया : "अभी भी मेरे पास ऐसी शिकायतें आती हैं कि निर्वासित लोग मुसलमानों पर घर खाली कर देने के लिए दबाव डाला करते हैं। इसी कारण जबरन अपने घर खाली कर मुसल्मानों को खुले आसमान के नीचे रहना पड़ता है। ऐसी असह्य सर्दी में इस तरह खुले में रहना पड़े, यह कोई साधारण बात नहीं है। ठंडक के साथ बारिश भी हो रही है। शरणार्थी ऐसा ही आग्रह क्यों रखते हैं कि मुसलमानों के मकान ही हम लेंगे? अगर वे मुसलमानों के सिवा और घरों का कब्जा लेने के लिए जुटते हों, तब तो मकान की तंगी समझ सकता हूँ। इस बिरला-भवन से मुझे, एक बीमार बहन को और इन सबको निकाल बाहर करने का प्रयत्न हो, तो वह भी ठीक है। लेकिन निर्दोष मुसलमान-परिवार को निकालना हमारी संस्कृति के लिए कलंकरूप ही माना जायगा। मुसल्मानों को राजधानी के शहर से खदेड़ने की मनोवृत्ति का परिणाम बहुत बुरा होगा, यह आप सबको समझ लेना चाहिए।

"हाल ही में मुझे समाचार मिला है कि बम्बई के जहाजों से गोदी में माल ढोनेवाले मजदूर हड़ताल कर रहे हैं। कांग्रेस के नेता या सदस्यों, साम्यवादी या समाजवादी—इन सभी दलों से मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस तरह हड़ताल न कराइये। अपना विरोध हो, उस बारे में हमें अवश्य झगड़ना चाहिए और उसके लिए अमुक को नेता चुनकर उसके नेतृत्व में समिति स्थापित कर समझदारी से काम लेना चाहिए। आजादी के जमाने में वे रस्म-रिवाज चल नहीं सकते, जिन्हें हम गुलामी के जमाने में आजमाते थे। सदैव व्यावहारिकता का ध्यान रखना चाहिए। समय, समाज और वस्तुस्थिति को समझकर तदनुसार ही काम लिया जाय। अभी हड़ताल कराने का समय नहीं है। इससे जनता और हड़ताली सभी का नुकसान होगा।

सच्चा लोकतन्त्र

"आज तो मुझे 'सच्चे लोकतन्त्र' पर कुछ बातें कहनी हैं। आप सब जानते ही होंगे कि औंध के राजा ने वर्षों पहले वहाँ की जनता को उत्तरदायी शासन सौंप दिया है और अप्पासाहब ने भी अपना जीवन प्रजा की सेवा में ही बिताया है। अब राजासाहब और नेताओं ने अपना राज्य यूनियन में मिला देने का लगभग तय कर लिया है। इस तरह जो राज्य यूनियन में मिल जायँगे, उन्हें वार्षिक गुजारा दिया जायगा। किन्तु औंध के राजासाहब तो ऐसे हैं कि वे प्रजा के लिए जरा भी भारभूत होना नहीं चाहते। वे तो प्रजा की सेवा के बदले जो मेहनताना मिलेगा, वही लेने को राजी होंगे। उन्होंने मुझे एक पत्र भेजा है, जिसमें वे लिखते हैं कि 'हमने अपने राज्य में जो पंचायत बनायी है, वह चालू रखी जाय या नहीं।' इसका अविकल उत्तर तो मैं नहीं दे सकता, लेकिन अपनी बुद्धि के अनुसार कहूँगा कि यूनियन में मिल जाने के बाद सारे भारत में जैसी राज्यशासन-व्यवस्था होती होगी, वैसे ही होगा। अगर लोगों को पंचायत रखनी हो, तो उस तरह की व्यवस्था चलाने से रोकने की बात हमारे संविधान में नहीं है।

"औंध राज्य भले ही मिट जाय, पर औंध के नाम से पहचाने जानेवाले गाँवों के समूह का विशिष्ट स्वरूप मिट नहीं सकता। वह कायम ही रहेगा। भारत में पंचायत हो या न हो, पर अगर वह समूह के एक अंग के रूप में सेवा और अपना

फर्ज अदा करती हो, तो उस अधिकार को कोई न छीनेगा। औंध में पंचायत-पद्धति लोगों की सेवा के लिए ही चलायी गयी है। सच्चा लोकतंत्र प्रधान की कुर्सी पर बैठने से ही नहीं आता। मौलिक रूप में वह तो हर गाँव और शहरवाले, सबकी मदद से ही होगा।

"एक भाई ने मुझे आयात-निर्यात का सन्तुलन रखने के बारे में सूचित किया है: 'भारत में माल का आयात निर्यात की अपेक्षा कम रहे, यह आवश्यक है। आज जैसा चल रहा है, वैसा सदैव चलता रहा, तो कुछ ही दिनों में भारत की संपत्ति समाप्त हो जायगी। खिलौने और ऐसी ही जिन चीजों की हमें विशेष जरूरत न हो, उन्हें बाहर से मँगाना बन्द कर देना चाहिए। आज भारत से कच्चा माल बाहर जा रहा है और हम उसीका पक्का माल मँगाते हैं। इससे भारत सर्वथा कंगाल बन जायगा।' इस भाई की विचारसरणी का मैं समर्थन करता हूँ कि हिन्दुस्तान को अधिक-से-अधिक स्वावलंबी बनना चाहिए। इससे ये सारे झगड़े भी अपने-आप मिट जायेंगे। भारत और अन्य देश भी कोई किसीका शोषण न करेगा। बल्कि परस्पर मदद देने की भावना से ही एक-दूसरे की चीजों का आदान-प्रदान करेंगे।"

प्रार्थना के बाद बापू टहले। आँखें बन्द करके घूमे। घूम आने के बाद प्रवचन देखा। तुरत ही पंडितजी आये। कश्मीर में पुनः खूब मारकाट मची हुई है। एक घंटे तक बातचीत की। पंडितजी के जाने के बाद पैर धोकर, कसरत कर सोने की तैयारी हुई। मैंने रोज की तरह पैर दबाये। तेल मला। बापू ने सबकी तबीयत का हाल पूछा। चाँद बहन को अभी कमजोरी काफी मालूम पड़ रही है।

• • •

करने या मरने का संकल्प : ८ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
७-१-'४८

गरीबी का कंपन

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना के लिए उठे। मालूम पड़ता है, बापू की सर्दी और खाँसी फिर बढ़ रही है। खुद मुझे भी सर्दी और खाँसी हुई है। बापू को

भीतर ले जाकर चिट्ठी लिखने के लिए कागज दिये। चिट्ठी में आये हुए कुछ लिफाफे वैसे के वैसे पड़े थे। उन्हें लेकर बापू ने स्वयं ही बड़े सुन्दर ढंग से कैंची से काटा और 'पैड' बनाया। मैंने पूछा : "क्या जाड़े में हाथ नहीं काँपते ?" बापू ने कहा : "कुदरती सर्दी तो आदमी के बहुत ही काम आती है। मैं तो अपनी गरीबी से काँपता हूँ कि इसका कब अन्त होगा ? इस महल में तो तुझे गरीबी लगती ही न होगी ? इसी कारण इस तरह लिफाफे और कागज इकट्ठा रख छोड़े हैं। जिन्हें गरीबी में पढ़ना पड़ता है, वे ही जान सकते हैं कि इन कोरे कागजों का कितना मूल्य है। वे इन्हें इस तरह बेकार नहीं छोड़ेंगे। यह काम तो रोज-के-रोज ही कर लेना चाहिए।"

मैं तो क्षणभर चकित हो रह गयी कि बापू का ध्यान बिसेनभाई के टेबुल पर भी क्या-क्या पड़ा है, यहाँ तक पहुँचता है और किसीको कहे बगैर खुद ही कर दिखाते हैं।

इसके बाद चिट्ठियाँ पढ़कर थोड़ा-सा लिखा : "सिन्ध की खबर से मैं बेचैन हो उठा हूँ। सिन्ध जाने की इच्छा तो हो ही रही है, पर कौन-सा मुँह लेकर जाऊँ ? घर को जलता छोड़कर दूसरों को बचाने जाने पर आग और भभक उठती है। उसकी अपेक्षा अपना घर बचाने का प्रयत्न सफल हो जाय, तो दूसरे को मदद मिले।"

एक दूसरे पत्र में : "समुद्र में रहकर मगर के साथ दो-दो हाथ दिखाने की बहादुरी करना निरी मूर्खता ही मानी जायगी न ? इसलिए आश्रम के नियमों का पालन न कर सकें, तो सुख से आश्रम के बाहर रहकर अनेक जन-कल्याणकारी काम हो सकते हैं। इससे ज्यादा लिखने का अब समय नहीं।

"मेरी उम्मीद तो है कि अब यहाँ थोड़े ही दिनों में कुछ काम हो जायगा। अभी तो यहाँ आग जल रही है। आज हम अपनी इन्सानियत को ठुकरा रहे हैं। ईश्वर को जैसा मंजूर होगा, वैसा मार्ग दिखलायेगा। हमें तो अपना पुरुषार्थ नहीं छोड़ना चाहिए।

"आज तो सो नहीं पाया। कुछ तो चि० मनुड़ी का काम किया और चिट्ठियाँ देखीं। यहाँ काम इतना ज्यादा है कि सुबह ही प्रार्थना के बाद अगर चिट्ठियाँ देख सकें, तभी उनका उत्तर दिया जा सकता है। फिर तो मुलाकातों का ताँता ही

लग जाता है। यहाँ तो मैं करने या मरने के लिए बैठा हूँ। क्या होगा, यह कैसे कह सकता हूँ? प्रकाश की खोज में हूँ और अस्पष्ट किरणें दीख भी रही हैं। यदि सम्पूर्ण प्रकाश मिले, तो दिल्ली में 'दिली दोस्ती' बनी रहेगी। चलो, इतना तो बड़ी मुश्किल में लिखा। आप सब कैसे हैं? तेरी तबीयत कैसी है? चि० मनुड़ी को तो लिखते ही रहना। बाकी सब वही लिखेगी। उसका शरीर में सुधार नहीं पाता। नोआखाली में मेरी सेवा में यह काफी दुबली हो गयी है। अगर पुनः यह अपने को सुधार ले, तो मुझे अपार सन्तोष हो। मेरी बात मानकर अगर यह दो महीने आराम करे और सन्न रहे, तो बाकी के सभी बाह्य उपचार मैं कराऊँ। आज तो यह हो नहीं रहा है। मैं पूरा ध्यान नहीं दे पाता। यहाँ कुछ परिणाम ला सकूँ, तो फिर दूसरा काम मनुड़ी को पहलवान जैसा बनाना है। अथवा भले ही मर जाय... यह विनोद में लिख रहा हूँ।"

चिट्ठियों के बाद घूमने निकले। घूमते समय सिंध के बारे में चर्चा की। आज खबर मिली है कि गोपाल स्वामी आयंगार कश्मीर के मामले के लिए कल 'यूनो' रवाना होंगे।

घूम आने के बाद बापू के पैर धोये। मैंने मालिश की तैयारी की। मालिश में बापू बंगाली पाठ कर अखबार पढ़ते-पढ़ते सो गये।

बाथ में मुझे तबीयत के लिए व्याख्यान मिला। मैंने कहा: "पर आपकी तबीयत कहाँ अच्छी है?" बापू ने कहा: "मैं तो ७८ साल का हुआ और तू तो १७ साल की है न? ७८ साल की तो हो जा, तब मेरे साथ स्पर्धा करना। मैं यह विनोद नहीं करता। मुझे समय नहीं मिलता। लेकिन यहाँ के लिए जैसा 'करने या मरने' का संकल्प है, वैसा ही संकल्प अब तेरे लिए भी करना पड़ेगा कि 'अच्छा होना या मरना!' आज ही तेरी बहन को मैंने चिट्ठी में लिखा है। अगर न देखा हो, तो देख लेना।"

हजामत के समय बापू ने साबुन का उपयोग करना छोड़ दिया है। बापू का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए मैंने कहा कि "साबुन के बगैर जल्दी हजामत नहीं बन पाती।..." बापू ने कहा: "पगली लड़की! बात पलट दे रही है न?" मैं तो इतनी हँसी कि बापू को भी हँसना पड़ा।

यों बापू हर बात या हर प्रसङ्ग को कभी गंभीरता से नहीं लेते। लेकिन आज तो गंभीरता से मेरे बारे में अपने अन्तर की चिन्ता प्रकट कर रहे थे। मुझे लगा कि लगभग हर दो दिन बाद या तो मेरा बुखार बढ़ जाता है या सर्दी वगैरह कुछ हो जाता है। फिर भी कुछ याद न आये, तो बापू ड्रेसिंगरूम में रखे तौल के काँटे पर ही मुझे चढ़वाते। जाने क्यों हर वक्त वजन घटता ही रहता है। या कभी-कभी उतना ही रहता है। कभी भी एक भी औंस बढ़ा ही नहीं। इसलिए और भी चिन्ता किया करते हैं। मेरा तो यह रोज का हो गया। यह बुखार, सर्दी आदि मुझे तो बहुत भयंकर नहीं लगते। फिर बापू को व्यर्थ चिन्ता में क्यों डालूँ? लेकिन आखिर बापू ने भावभरी आवाज में और मुझे खूब थपथपाते हुए कहा : "तू तो नादान है! नव अंकुरों को मैं पानी न दूँ, तो यह मेरा भयंकर अपराध होगा। तुझे इससे अधिक कहना भी व्यर्थ है, क्योंकि तुझे कहने की अपेक्षा मुझे ही अधिक ध्यान रखना चाहिए। तेरी इस तबीयत का उत्तरदायी मैं ही हूँ।" ...मेरी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह पड़ीं। बापू का यह कैसा अद्भुत प्रेम है!

भोजन के समय थोड़ी देर मेरे नोट देख हस्ताक्षर कर दिये। घर से आये हुए पत्र पढ़वाये। परिवार का हाल भी बहुत दिनों बाद पूछा।

श्री आयंगार मिलने आये थे। बापू का तो यही मन है कि "हमें खुद ही अपना झगड़ा तय करना सीखना चाहिए। लेकिन अब मेरी और आपकी पद्धति जुदी है। मैं तो इसलिए कह रहा हूँ कि ''इतो भ्रष्टः, ततो भ्रष्टः' (इधर से भी गये और उधर से भी गये) ऐसा मत कीजिये। या तो आप अपने ही ढङ्ग से शासन चलाइये और उचित निर्णय कीजिये या सम्पूर्ण सत्य-अहिंसा से। अब बिचला रास्ता अख्तियार करने से काम नहीं चल सकता।"

उनके जाने के बाद माधवराव अणे साहब आये। दरियागंज के मुसलमानों में अब्दुलगनी साहब, मौलाना हबीब उल रहमान साहब प्रमुख थे। उन्होंने रोज की तरह मुसलमानों पर होनेवाले अत्याचारों के बारे में शिकायतें कीं। बापू भी काफी बेचैन हैं। डॉ० सूर्यकान्त और शन्नोदेवी भी आयीं। हमारी अपहृत बहनों के बारे में लाहौर में एक सम्मेलन हुआ था। मृदुला बहन और रामेश्वरी बहन उस सम्मेलन में गयी थीं। ये लोग वहाँ की चौंका देनेवाली बातें कह रही थीं। इन्होंने तो अपने जीवन की बाजी लगाकर बहनों को यहाँ लाने का खूब प्रयत्न किया है। हिन्दू बहनों

को तो इस बात का भी डर है कि अब समाज कदाचित् उन्हें न अपनाये। उससे तो यहीं रहना ठीक है। उन्हें काफी समझाना पड़ता है। इन लोगों ने कहा कि "इन बहनों के प्रति जनता का क्या धर्म हो सकता है, इस बारे में अगर आज बापू अपने प्रवचन में कुछ कहें, तो अच्छा होगा। श्रीनगर में हम लोग जहाँ टिके थे, उन सेठी साहब ने कश्मीर छोड़ दिया है। वहाँ अन्न-पानी की बड़ी ही कठिनाई हो रही है।" इस तरह उन्होंने अत्यधिक दुःखभरी बातें कहीं।

बापू की कताई, मिट्टी, भोजन वगैरह नित्य के अनुसार ही चलता है। आज के प्रार्थना-प्रवचन में चिट्ठियाँ तो काफी आयी थीं। लेकिन रेडियो रेकार्डिंग में १५ मिनट से अधिक समय न मिलने से उतने ही समय में प्रवचन पूरा करना पड़ा।

एक चिट्ठी में एक निर्वासित भाई ने लिखा था कि "जब तक यहाँ से मुसल्मानों को न खदेड़ा जायगा, तब तक मैं अनशन करता रहूँगा।" उसे उत्तर में बापू ने सूचित किया कि "उसका अनशन निरा अधर्म है। लेकिन जिसे अधर्म ही करना हो, उसे कौन रोक सकता है? अनशन के बारे में सभी की अपेक्षा मेरा ज्ञान अधिक है, ऐसा मैं मानता हूँ। कारण यह शस्त्र खोजनेवाला भी मैं ही हूँ। इसलिए सार्वजनिक अनशन कहाँ किया जाय, इस पर पूर्ण विचार करना चाहिए।"

एक दूसरी खबर मिली है कि "छात्र लोग हड़ताल कराकर अपना मनचाहा कर लेते हैं। इस तरह हड़तालें की ही नहीं जा सकतीं। मैं स्वयं इस विषय में भी निष्णात हूँ। इतना ही नहीं, बल्कि मैंने कई बार हड़तालों का संचालन भी किया है। हर हड़ताल या अनशन उचित नहीं होते।"

"दिन में मेरे पास बहुत से शरणार्थी आये थे। उन्होंने मुझसे अपने पर हुए असह्य अत्याचारों की आपबीती बड़े ही दुःखभरे हृदय से कह सुनायी। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि मैं उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं देता। किन्तु यह सच नहीं है। उनके कल्याण के लिए ही मैं यहाँ पड़ा हुआ हूँ। नहीं तो मेरा यहाँ क्या काम था? अपना हाल तो मैं ही जान सकता हूँ या जान सकता है एक ईश्वर! आज मेरी कौन सुनता है?

असमर्थ सरकार हट जाय

"एक जमाना था, जब मैं जबान से एक शब्द भी निकालता, तो लोग तत्काल

उसे झेलने के लिए तैयार थे। यह सच है कि उस समय मैं अहिंसक सेना का सेनापति रहा। किन्तु आज तो मानो जंगल में रोता रहूँ, ऐसा मेरा यह अरण्यरोदन है। आप अपनी पूरी शिकायतें कीजिये। मकान और खाने-पीने की सुविधा माँगते हैं, तो इसका आपको पूर्ण अधिकार है। लेकिन उसके साथ-ही-साथ आपको जो-जो काम सौंपे जायँ, उन्हें भी पूरी वफादारी के साथ पूरा करना चाहिए। आज राज्यशासन चलानेवाले मेरे मित्र हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं जैसा कहूँ, वैसा ही वे चलते हैं। ऐसे चलें भी क्यों? मित्र के नाते मेरी बात सुन लें। फिर उस पर अमल करना या न करना उन लोगों की इच्छा पर निर्भर है। मैं कोई परमेश्वर तो हूँ ही नहीं। वैसे ही गर्व से भी नहीं कहता। लेकिन अगर कोई मेरा थोड़ा भी माने, तो मुझे लगता है कि यह दुर्दशा न भुगतनी पड़े। कदाचित् ऐसा भी हो कि इसमें मैं कुछ भूल भी करता होऊँ?

"कराची और सिंध में आज हिन्दू-सिख रह नहीं सकते। सिन्ध से रवाना होने से पूर्व ये सब वहाँ के गुरुद्वारे में जुटे थे। उसी समय उन पर हमला किया गया। वहाँ की सरकार कहती है कि 'हम लाचार हैं। हमारी कुछ भी नहीं चलती। जो हुआ और हो रहा है, उसे रोकने में हम असमर्थ हैं। कोई भी सरकार ऐसा कैसे कर सकती है?' मैं तो दोनों सरकारों से कहता हूँ कि आप तो पूर्ण निःसहाय बन जाइये। कुछ भी करने की शक्ति न रखते हों, तो बेहतर है कि आप वहाँ से हटकर रास्ता साफ कर दीजिये, फिर भले ही जनता लुटेरी बन जाय। कोई भी सरकार इस तरह लोगों को मरने दे, इससे पहले खुद उसे मर मिटना चाहिए।"

बापू ने आज के प्रवचन में सरकार को जो सुनाया, जनता पर उसका काफी असर हुआ। प्रार्थना के बाद घूमते समय रामेश्वरी बहन थीं। मृदुला बहन भी आयी थीं। उन्होंने पंजाब की अपेक्षा सिन्ध में काफी खून-खराबी हुई, इसके समाचार सुनाये।

प्रवचन जाँच लिया और पंडितजी आये। वे ३५ मिनट बापू के साथ अकेले बैठे। पण्डितजी आते हैं, तो बड़ा ही उदास चेहरा लेकर आते हैं और जाते हैं, तब तो उतने ही प्रफुल्लित होकर और मन का बोझ हलका कर विदा होते हैं। लेकिन बापू तो उनके जाने के बाद उतने ही अधिक चिन्तन में दिखाई पड़ते हैं।

क्योंकि दिनभर तो लोगों की तरह-तरह की अनेक समस्याएँ हल करनी पड़ती हैं— मारकाट की दुःखद बातें सुननी पड़ती हैं और रात में पण्डितजी द्वारा दिनभर से भी गम्भीर तथा उदासीभरी बातें सुनकर हल निकालना पड़ता है। कारण, यह सारा कष्ट बड़ों के कारण ही आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। राज्य-संचालकों की अंदरूनी विचारणा ही भयंकर होती है। लेकिन पण्डितजी पर से यह बोझ बापू अपने ऊपर ठीक वैसे ही उठा लेते हैं, जैसे कोई पिता पुत्र के पास से किसीकी आँखों पर चढ़ने या अप्रिय बनने का उत्तरदायित्व स्वयं उठा लेता है। सचमुच रात में तो बापू धीरता और वीरता के अजीब संगम दिखाई पड़ते और अपना रास्ता साफ करते हैं।

● ● ●

गहरी चिन्ता में

: ९ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
८-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना। काका साहब कल से ही यहाँ आये हुए हैं, इसलिए आज प्रार्थना में वे भी उपस्थित थे। प्रार्थना के बाद काका साहब अन्दर बैठे थे। बापू ने उनसे पूछा : "क्यों आपको समय चाहिए न ?" काका साहब ने कहा : "मिल सके तो, नहीं तो नहीं।"

बापू ने कहा : "ऐसा कहोगे, तो रह ही जायेंगे। मेरे पास इन दिनों जितना काम लदा है, उतना कभी भी लदा नहीं रहता था। यह देखकर मुझे ऐसा लगता है कि अब मेरा ऐन मौका आ गया है। मैं इतना काम देख पागल क्यों नहीं हो जाता ? ईश्वर मुझे कैसे निभा रहा है, यही आश्चर्य हो रहा है! ऐसी मेरी स्थिति है।"

बापू का कहना भी सच ही है। उनके पास मुलाकाती भी इतने ज्यादा हैं और चिट्ठियाँ भी लदती ही जा रही हैं। फिर तबीयत भी ठीक नहीं।

काका साहब से बातें करते समय बापू थोड़ी देर लेट गये। करीब दस मिनट आँखें भी लग गयीं। दरमियान घूमने का समय हो जाने से गरम पानी और

शहद लेकर घूमने के लिए उठे। मैंने बापू के पास उन्हींके हाथों लिखने की चिट्ठियाँ रख दीं।

आराम का समय आ रहा है

घूमते समय काका साहब साथ थे। भाई साहब ने भावलपुर के दंगे की बात कही। रोज कुछ-न-कुछ नयी बात हो ही जाती है। कहीं से शान्ति के समाचार आते ही नहीं। बापू भी काफी बेचैन हो उठे हैं। मैंने मालिश की तैयारी की। मालिश में बापू के बंगला पाठ के बाद मैंने कहा : "बापू, आज आप आराम ही कीजिये न? क्यों पढ़ रहे हैं?" बापू ने कहा : "अब तो मुझे भी लगता है कि आराम का समय नजदीक आता ही जा रहा है। फिर तो तू झकझोरकर जगायेगी, तो भी मैं न जागूँगा। देख तो सही कि चिट्ठियों का कितना ढेर लग गया है। दूसरी ओर दिन-दिन भयंकर अशान्ति के समाचार आ ही रहे हैं। इस बारे में तो मुझे और तुझे विचार करना है कि हमारी कसौटी कहाँ है? हम जाग्रत हैं या इस बिरला-भवन में आकर सो गये हैं? इसका खूब विचार कर।"

मैं तो एक शब्द भी न बोली और अपना काम चुपचाप किया। बाथ में आज बापू की हजामत का दिन था। स्वयं को चिट्ठी लिखने का समय नहीं मिलता, इसलिए हजामत का 'रेजर' खुद लिया, मुझसे कागज और कलम ले आने के लिए कहा और स्वयं हजामत करते हुए दो पत्र लिखवाये : "दो दिनों से यहाँ काका साहब आये हुए हैं। हिन्दुस्तानी के बारे में और अन्य भी कई बातें करने का बड़ी मुश्किल से समय निकाल पाये। अगर वे न कहते, तो यहाँ हफ्तों रह जाने पर भी बात करने का समय मिल पाता या नहीं, कहा नहीं जा सकता। दिनभर सैकड़ों भाई-बहन आते रहते हैं और चिट्ठियों का ढेर लगा हुआ है। 'हरिजन' का तो पूरा करना दूर ही रहा। जरा भी समय नहीं। चि० मनु ही मेरी हजामत करती है, पर आज उसका काम मैंने ले लिया है। बाथ में पड़ा-पड़ा मैं दाढ़ी पर उस्तरा फेर रहा हूँ और यह चिट्ठी, याद रखकर, चि० मनु से लिखवा रहा हूँ।

"मेरी तबीयत चाहिए वैसी नहीं है। राम-नाम की न्यूनता!···को राजकोट जाना चाहिए, ऐसा मैं मानता हूँ। यहाँ रखने और रहने में खुद ही अपने को ठगता है और दूसरे को भी। आदमी खुद ही अपना दुश्मन बनता है। कोई

किसीका दुश्मन नहीं बन सकता। इसी तरह दुनिया में कोई किसीका बिगाड़ भी नहीं सकता।

"अब आश्रम में रहने का मोह त्याग दें। आश्रम में तो अब जो इने-गिने लोग हैं, उनसे भी कहता हूँ कि जो अपने पैरों पर खड़े रह सकते हों, वे ही रहें।

"कंट्रोल टूटने से राहत मिली। उसका तो मुझे जरा भी डर नहीं था। किन्तु अमुक के हितों को नुकसान पहुँचेगा, इसलिए सरकार ही डरती रही। लेकिन क्या इस तरह डरने से राज्य चलाया जा सकता है?

"इन दिनों मेरी तो अस्तव्यस्तता ही समझिये। यहाँ अभी आग दबी हुई है। कब फट हो उठेगी, कहा नहीं जा सकता।"

"....आपका खत अंग्रेजी में लिखा हुआ मिला था। पहले तो मैं माफी माँगता हूँ कि आपको जवाब देर से दे रहा हूँ। मेरे पास एक मिनट की फुर्सत नहीं रहती। इस समय भी टब में लेटा हूँ। हजामत कर रहा हूँ। वैसे तो रोज मनु करती है। मगर आज मैं खुद अपने हाथ से हजामत करता हुआ मनु से यह लिखवा रहा हूँ। यह है आज की मेरी हालत!

"बहावलपुर का मामला बहुत बिगड़ रहा है। बिगरी कौन सुधारे? मैं काफी बेचैन हो उठा हूँ। पण्डितजी तो दिन में एक दफा आते ही हैं। उनसे बात कर लूँगा। वहाँ जाने से कुछ लाभ नहीं है। अगर यहाँ कुछ कर सकूँ, तो सारे हिन्दुस्तान में कुछ हो सकेगा। वैसे इधर-उधर दौड़धूप करने से कुछ होनेवाला नहीं है। यहाँ तो करना है या मरना! अगर बहादुरी से मर सकूँ, तब भी बहुत लाभ होगा। देखें, आखिर ईश्वर क्या करवाता है? हम सब उन्हींके हाथ में हैं।

"आप वहाँ की जनता को छोड़कर हरगिज मत आइये। अगर वहाँ आप बहादुरी से मर भी जायें, तो बहावलपुर की खैरियत है।"

मर-मिटने का समय

स्नान में बहुत देर लग गयी और बाहर सुचेता बहन कृपालानी वगैरह आये हुए थे। इसलिए ज्यादा नहीं लिखवाया। कोर्का बहन ने सिंध की हालत सुनायी। बापू ने जवाब दिया कि "वहाँ का वर्णन तो मैं खूब-खूब सुनता हूँ। लेकिन यह नहीं सुनता कि कांग्रेस का एक भी नेता मारा गया हो। आप यह वर्णन सुनाने आयीं,

इससे बेहतर होता कि अगर मैं यह सुन पाता—बहनों की इज्जत बचाते हुए कोकी बहन पर हमला हुआ और वे मर गयीं। जिस दिन हममें ऐसी बहादुरी आयेगी, उसी क्षण अपने-आप शान्ति स्थापित हो जायगी। अब समय बातें करने, उपदेश देने या वर्णन करने का नहीं है। यह तो मर-मिटने का समय है।"

रोज की तरह स्थानीय मुसल्मान भाई आये हुए थे। दोपहर में तो कताई और कुछ डाक भी देखी गयी। रुक्मिणी बहन येरुल्कर आयी थीं।

दोपहर में सरदार दादा भी आये। आज तो बापू की सर्दी ठीक मालूम पड़ रही है। वर्तमान परिस्थिति पर बातचीत के सिलसिले में बापू ने विनोद किया कि "आपको तो १०० साल जीना है न? और अब जीना ही चाहिए।" तुरत ही सरदार दादा ने जवाब दिया: "शर्त लगाकर कि आपके १२५ तो मेरे १००; नहीं तो नहीं!"

पट्टनी साहब भी मिलने आये थे। ठक्कर बापा और हरिजी सिर्फ मिलने के लिए ही आये थे। मीरपुर के निर्वासितों ने रोते-कलपते बापू को अपनी आपबीती सुनायी। उसे सुनकर तो क्षणभर सुननेवाले भी काँप उठते।

प्यारेलालजी अपने साथ नोआखाली की एक निर्वासित बहन को लेकर आज ढाका से आये। उन्हें सभी 'दीदी' कहते हैं। मालूम पड़ता है कि वे हिन्दी नहीं जानतीं। लेकिन चेहरे पर से बुद्धिमान् दीख पड़ती हैं। करीब ४० साल की होंगी। भटियालपुर में वे खुद जिस गाँव में काम कर रहे थे, उसी गाँव की ये बहन हैं।

पंडितजी भी चालू मुलाकात कर गये। रात में पुनः शेख साहब के साथ आयेंगे। खासकर वे बापू की तबीयत देखने के लिए ही आये थे।

शराब, हड़ताल और सत्याग्रह

आज के प्रार्थना-प्रवचन में बापू ने कहा: "एक भाई की शिकायत है कि उन्होंने कल दोपहर में ३॥ बजे एक चिट्ठी लिखी होगी, पर मैंने उसका जवाब नहीं दिया। मेरे पास असंख्य चिट्ठियाँ आती हैं। कितनी ही बार ऐसी भी चिट्ठियाँ आती हैं, जिनकी भाषा मैं नहीं जानता। इसलिए उस भाषा के जानकार जब मुझे उसमें का मजमून समझाते हैं, तब काम चलता है। लेकिन बहुत जरूरी बात हो, तो मुझे अवश्य बता सकते हैं।

"एक दूसरा प्रश्न यह पूछा गया है कि 'आप हरिजनों से शराब छोड़ने के

लिए कहते हैं, तो औरों से क्यों नहीं कहते ? क्या पैसेवाले और पढ़े-लिखे लोग उसे न छोड़ें ?' यह प्रश्न ही अनुचित है। एक आदमी पाप करे, तो क्या दूसरों को भी वह करना चाहिए ? और जो पढ़ा-लिखा वर्ग है, सेना में काम करता है, उसे क्या समझाया जाय ? गरीब और मजदूर तो दिनभर खूब मशक्कत करके घर आते हैं। उन्हें वहाँ कुछ भी मानसिक और शारीरिक आराम नहीं मिलता। इसी कारण वे शराब पीते हैं। लेकिन धनिक वर्ग के लिए तो ऐसी बात नहीं है। किन्तु मैं तो सेना को ही नहीं मानता। तब सेना के सैनिकों के शराब पीने की बात ही कहाँ रही ? लेकिन ऐसे अंग्रेज और भारतीय भी काफी तादाद में हैं, जो कभी शराब को छूते नहीं।

"छात्रों की हड़ताल के बारे में मुझे यह पत्र मिला है कि उसमें कांग्रेसी छात्र नहीं हैं, कम्युनिस्ट हैं। कम्युनिस्ट या सोशलिस्ट, आखिर सबका लक्ष्य देश-सेवा ही करना है। यह समझकर राजी हो सकते हैं। लेकिन छात्र जब तक पढ़ रहे हों, तब तक उनका एक दल होना चाहिए और वह है—विद्या हासिल करने का दल। जब हिन्दुस्तान स्वतंत्र नहीं हुआ था, तब मैंने हड़ताल करने और कराने में भाग लिया है। पर सभी हड़तालें अहिंसक और सत्यमूलक होती हैं, यह मानने का कोई कारण नहीं। आज जब कि देश भयंकर स्थिति में से गुजर रहा है और उसे सच्चे छात्रों की जरूरत है, तब इस तरह हड़ताल कराने से विपत्ति और बढ़ जाती है, यह समझना चाहिए।

"एक दूसरे भाई ने मुझे सूचित किया है कि 'आप पाकिस्तान जाकर वहाँ की भयानकता का सामना क्यों नहीं करते ? वहाँ जाकर आप अत्याचारों के सामने सत्याग्रह क्यों नहीं करते ?' वहाँ मैं किस मुँह से जाऊँ ? जब यहाँ हम पाकिस्तान की पुनरावृत्ति कर रहे हैं, तो वहाँ जाकर किसे क्या कहूँ ? अगर भारत में शान्ति स्थापित हो जाय, तो आज ही और अभी ही मैं पाकिस्तान के लिए चल पड़ूँ। यहाँ राजधानी के शहर में ही हिन्दू, सिख पागल बन गये हैं और वे चाहते हैं कि यहाँ से सभी मुसलमानों को निकाल बाहर कर दें। अगर हम ऐसा करेंगे, तो वह हमारे लिए बड़ी ही लज्जा की बात होगी। फिर पाकिस्तान में हिन्दू, सिख तो रहना ही नहीं चाहते, तब कौन सत्याग्रह करे और किसके सामने करे ? आज सत्याग्रह और

अहिंसा रह ही कहाँ गयी है ? आज तो सभी को सेना का संरक्षण चाहिए। हमने सेना को ईश्वर की जगह ही बैठा दिया है। अभी भी मैं कहता हूँ कि अगर मेरी बात मान लें, तो देश का रूप ही बदल जाय। सत्याग्रह तो हर हालत में और हर मौके पर काम आनेवाली चीज है। लेकिन उसे चलानेवाले होने चाहिए न !

"आज मेरे पास कश्मीर के, मीरपुर के और बहावलपुर के लोग आये थे। वे सभी अत्यधिक हैरान, परेशान थे; फिर भी बातें विवेक से ही करते रहे। पंडितजी के साथ भी उनकी बातें हुईं और उन्होंने कहा कि मुझसे जो कुछ बनेगा, अवश्य करूँगा। भले ही वहाँ लड़ाई शुरू न हुई हो, पर एक प्रकार की तो लड़ाई चल ही रही है न ? ऐसी स्थिति में से रास्ता निकालकर सबको खदेड़ना भी मुश्किल हो जाता है। हमारे पास पर्याप्त गाड़ियाँ भी नहीं हैं।

"बहावलपुर में भी भीषण अत्याचार हो रहा है। एक आदमी से अधिक-से-अधिक जितना हो सकता है, मैं उतना करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

"उनकी एक और शिकायत है कि जब कोई किसी अन्य प्रान्त से आता है, तो उसे वहाँ नौकरी मिल सकती है। लेकिन जब कोई देशी राज्यों से आता है, तो उसे नौकरी नहीं मिलती। मैंने सरदार साहब से इस बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि इस तरह भेद हो ही नहीं सकता। फिर भी गलतफहमी से किसी पर ऐसा अन्याय हो गया हो, तो वे उसकी सूचना दे सकते हैं।"

प्रार्थना के बाद बापू टहले। रात में डॉ॰ किचलू साहब और शेख साहब आये थे। कश्मीर की बातें चल रही थीं। हम लोग आज बाहर घूमने के लिए निकल पड़े थे। सरदार दादा के घर तक गये। हमें देख सरदार दादा ने पूछा, तो हमने जवाब दिया : "तबीयत नहीं लगती, इसलिए आज बिरला-भवन से बाहर घूमने निकले।" सरदार और मणिबेन दोनों आफिस में काम कर रहे थे। हम लोगों का जवाब सुनकर मणिबेन ने कहा : "इन लड़कियों को खिलौने की पिटारी ला दो, जिससे ये खेलें।"

मणिबेन ने हमें लावा का लड्डू और अचार, वह भी बंगाल का था, प्रेम से खिलाया। लौट आने तक तो बापू के सोने का समय हो चुका था। पर वे इतने

अधिक थक गये थे कि शाम को ही ७-७॥ के बीच सो गये थे। उठने के बाद प्रवचन देखा।

···बापू आजकल बहुत दुःखी रहते हैं। प्यारेलालजी के साथ आयी हुई बंगाली बहन तो कमरे से बाहर ही नहीं निकलतीं। बापू मुझसे कहते हैं कि तुझे इन्हें बहलाना चाहिए। लेकिन ये तो प्यारेलालजी के सिवा किसीसे बातें ही नहीं करतीं।

आजकल तो बापू का आहार इस कार चलता है: प्रार्थना के बाद भोर में गरम जल और शहद। फिर ५॥ बजे २ चम्मच शहद और गरम जल। ९॥ बजे भोजन में एक दिन ३ पतली रोटियाँ, कच्चा शाक, दूध १६ औंस, २ संतरे, १ सेव और एक दिन ३ केले, १६ औंस दूध—दूध और केला अलग कर और केले के दिन गेहूँ नहीं—और उसके साथ संतरा या कोई फल। फिर १२॥ बजे आराम कर लेने के बाद गरम जल और २ चम्मच शहद तथा जरा-सा सोड़ा। फिर ३॥ बजे मिट्टी रखने के बाद गरम जल और शहद—गरम जल हर बार १ गिलास और शहद २ चम्मच। ४ बजे उबला हुआ शाक, थोड़ा-सा संतरा या उसीके जैसा रसदार फल तथा १६ औंस दूध और प्रार्थना के बाद ७ बजे गरम जल और शहद।

रात में नित्य के अनुसार बापू पैर धोकर और कसरत कर बिस्तर पर लेटे। कह रहे थे कि "आज दिनभर इतनी मुलाकातें थीं कि इस समय थकान मालूम पड़ रही है। कश्मीर का मामला सरलता से हल हो जाय, ऐसा नहीं दीखता। शेख साहब के साले तो सब कुछ इन्दौर में लेकर बैठे हैं, ऐसी भी एक शिकायत आयी है। देखें, जो कुछ हो सो सही।" बापू कुछ गहरे विचार में हों, ऐसा लग रहा है। पहले जैसे प्रफुल्लित नहीं दीख पड़ते, यद्यपि उनका विनोद, काम आदि सब कुछ नियमानुसार ही चलता रहता है।

रोज की मुलाकातों में मिलने आनेवालों में प्रतिदिन दो-चार विदेशी हुआ ही करते हैं। उनसे भी बापू नम्रता के साथ कह देते हैं कि "आजकल जो कलह मचा है, वह हमारे लिए बड़ी लज्जा की बात है।"

सम्बन्धियों में एक विवाह हुआ, इस बारे में नारायण काका का एक पत्र आया था।

...को बापू ने लिखा—उसमें भी ऐसी भयानक स्थिति में यह सब होता है, इसी कारण उन्हें जरा भी उत्साह नहीं—इसका प्रतिबिम्ब यह रहा : "चि०...के बारे में आश्चर्य और खेद ! जो हो, उसे मुझे देखते रहना है। सब कुछ अपने स्वभाव के अनुसार।...फिर नवीन ही अपवाद क्यों बने ? इस विवाह के विषय में मैं पूर्णतः उदासीन हूँ। मुझे क्या सोचकर आपने लिखा होगा ? मेरे आशीर्वाद कैसे ?

—बापू के आशीर्वाद।"

यह पत्र ९ तारीख को 'पोस्ट' किया गया।

● ● ●

दिली दोस्ती ही हमें बचायेगी : १० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
९-१-'४८

बापू आज प्रार्थना-समय से १० मिनट पहले ही जग गये थे। उन्होंने...को लिखे पत्र में सुधार करने के लिए कहा। बापू ने कहा : "मैं जो मानता हूँ, वह मुझे कनु और नारायणदास को भी सूचित कर ही देना चाहिए। अहिंसा और सत्य को माननेवाले के लिए किसीसे डरने या छिपाने को कोई बात ही नहीं होती। मैं तो उस संस्कृत श्लोक को मानता हूँ : 'अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्, असाधुं साधुना जयेत्।' आखिर इस श्लोक को माननेवाला और इसके प्रति श्रद्धा रखनेवाला और लिख या कह ही क्या सकता है ? इसमें अगर जरा भी नरमाई करूँ, तो वह चल ही नहीं सकती। कौन क्या सोचेगा, इसकी दरकार करने का यह समय नहीं। यह तो महायज्ञ है, जिसमें अब सम्पूर्ण और सर्वांगशुद्धि ही निभ सकती है। दम्भी लोग एक के बाद एक अपने-आप नीचे गिरते जायँगे, यह सुनिश्चित है।

"अगर हम जैसे अनेक मिट जायँ, तो भी सत्य या अहिंसा का गज इंचभर भी घट नहीं सकता। मैं स्वयं भूलों से भरा हुआ हूँ। मैंने भूलें नहीं कीं या न करूँगा, ऐसा अहंकार किया ही नहीं जा सकता, लेकिन ये भूलें अगर इरादे के साथ न की गयी हों, तो सदैव क्षमा के लायक हैं।

हमें दिली दोस्ती ही बचायेगी

"आज यह राजधानी भी एक तरह से कैद में ही है। भारत की राजधानी

स्वतन्त्र होते हुए भी पुलिस और सेना के संरक्षण से ही सुरक्षित है। इसके बीच में बैठा हूँ और देखा करता हूँ। अहिंसा को माननेवाले लोगों को भी आज हिंसक शस्त्रों का सहारा लेना पड़ रहा है, इसमें मेरी कैसी कसौटी होगी ? ईश्वर की इच्छा में न जाने क्या अजीब रहस्य समाया होगा ? लेकिन मुझे तो करना है या मरना ! दिल्ली में हथियार हमें बचा सकते हैं, ऐसा माननेवाले भारी भूल कर रहे हैं। क्या दिल्ली को और क्या दुनिया को, एक ही चीज बचा सकती है और वह है, दिली दोस्ती !

"समय बिलकुल नहीं है। चिट्ठियों से दबा पड़ा हूँ। आज तो इतना ही।"

बापू के कोई-कोई पत्र कभी काव्यमय बन जाते हैं। उन्होंने यह पत्र नहीं, पोस्टकार्ड लिखा है। और इस कार्ड में अहिंसा पर एक महानिबंध (थीसिस) लिखा जाय, वैसे शब्द प्रयोग किये हैं और गूढ़ ज्ञान भर दिया है।

आज घूमने के समय कोई खास बातें नहीं हुईं। वर्तमान परिस्थिति पर ही बातें हुईं। बापू ने कहा : "हम लोगों के पापों से (देश के नेताओं के निर्णयों से) बेचारे निरपराध हजारों गाँववालों को यह भुगतना पड़ रहा है और हम लोग तो ऐसे आलीशान बंगलों में मजा लूट रहे हैं। मौके-बेमौके लोग पार्टियों और उत्सवों में कहीं भी भाग लेने से नहीं चूकते। इसी कारण दुःखी प्रजा को स्वराज्य होने का किसी भी प्रकार अनुभव नहीं होता। घर में किसीकी मृत्यु होने पर यह प्रथा है कि सारा परिवार कुछ नियत समय तक उसका शोक मनाता है। इससे जिस पर वह आपत्ति आयी हो, उसे सहानुभूति का अनुभव होता है। इसी तरह अगर हम लोग भी इस दुःखी प्रजा की सहानुभूति में अमुक-अमुक त्याग किये होते, तो उन्हें यह दुःख होने के बावजूद एक प्रकार का आनन्द ही होता। लेकिन हम लोग मुँह से तो लम्बी-चौड़ी बातें करेंगे, भाषण देंगे कि हमें आपसे सहानुभूति है, पर आचरण में शून्य ही रहेंगे।

आत्म-निरीक्षण

"मुझे खुद को ऐसा मालूम पड़ता है कि मैं इतने बड़े महल में किसलिए रहता हूँ। अपनी आवश्यकता से एक इंच भी अधिक जमीन इस्तेमाल करने का मुझे कतई हक नहीं। अगर हर नेता और हर बँगले का मालिक इस तरह सोच-समझकर आचरण करे, तो देश में आपत्ति होने के बावजूद एक तरह का गौरव मालूम पड़ सकता

है। बेचारे निर्दोष निर्वासित इस कड़ाके की सर्दी में खुले आकाश के नीचे पड़े-पड़े अपने बच्चों और बहनों की भयंकर दुर्गति और वेदना से आह भर रहे हैं, उनकी यह जलन भी इस तरह कुछ शान्त की जा सकती है। पर यह सब कहाँ कहूँ और किससे कहूँ? यह सुनने की फुर्सत ही किसे है? यह कहूँ, तो चल सकता है कि इसके लिए फुर्सत मेरे सिवा और किसीको है ही नहीं।"

बापू अपनी मनोवेदना तो स्वयं ही समझ सकते हैं। वे ही उसे पी सकते और सँभाल सकते हैं। दूसरा होता, तो हार्टफेल ही हो जाता। फिर भी दिल्ली, बहावलपुर, सिन्ध और पंजाब की परिस्थिति से आजकल वे काफी बेचैन हैं और कहा करते हैं कि "इसका अपराधी तो मैं ही हूँ। अपनी अहिंसा और सत्य का सूक्ष्मता से विचार और आचरण करने में निश्चय ही मैंने कहीं भूल की, फिर उसका प्रतिबिम्ब तो पड़ेगा ही। मैंने मान लिया कि यह शूरों की अहिंसा और शूरों का सत्य है। कदाचित् ईश्वर ने उस समय मुझे जान-बूझकर अन्धा बना दिया हो। अच्छा हुआ कि जिन्दगी की समाप्ति के समय ही मैं जाग सका और यह देख सका। इसी तरह बहादुरी के साथ मर सकूँ, इतनी ही मेरी भगवान् से प्रार्थना है। अपने आपके लिए इतना भी कर सकूँ, तो भी उसमें मेरी विजय ही होगी।"

मालिश के समय बापू ने अखबार देखे और बंगाली पाठ किया। स्नान के समय 'टर्किश बाथ' की चर्चा करते हुए कहा : "उसमें पहले गुनगुना पानी, फिर अधिक गरम और फिर तो इतना ज्यादा गरम होता कि सहन ही नहीं हो पाता। इसकी फी भी बहुत होती है, पर लाभ भी काफी होता है।"

सरदार दादा सिर्फ मिलने के लिए आये। भावनगर का मन्त्रिमण्डल भी लगभग तय हो गया है। वे लोग आज मिलेंगे, सब कुछ तय हो जायगा।

जीवनजी भाई ने कहा कि 'उर्दू हरिजन' बहुत नहीं खपता, इसलिए उसमें काफी घाटा उठाना पड़ रहा है। बापू उसके बारे में 'हरिजन' में लिखते हैं। बहावलपुर के लोग भी आये। वे चाहते हैं कि बापू की ओर से कोई वहाँ जाकर प्रत्यक्ष आँखों से सारी स्थिति देख आये। पंडितजी, मेकडानल्ड और दूसरे भाई सिर्फ [illegible] करने के लिए आये थे।

भावनगर की चिन्ता

गोहिलवाड़ जिले की ओर से आये हुए प्रतिनिधि-मण्डल में मनुभाई पंचोली, बलवन्त भाई, मोहन भाई मोतीचन्द (गढ़डावाला) आदि थे। एक सुझाव यह भी आया था कि नानाभाई भट्ट को भावनगर के उत्तरदायी शासन का प्रधान मन्त्री बनाया जाय। बापू ने कहा : "मैं तो चाहता हूँ कि जैसे रामराज्य में वशिष्ठ मुनि सलाहकार थे, वैसे ही आप भी नानाभाई को सलाहकार नियुक्त करें। ये प्रधान बन-कर इससे अधिक उस पद को सुशोभित न कर पायेंगे। अगर प्रजा और राज्य के बीच संघर्ष हुआ, तो ये कड़ी का काम करेंगे। ये अपना कार्यक्षेत्र भी शहर में नहीं, 'आंबला' गाँव में ही रखें। मैं नहीं मानता कि इसके लिए नानाभाई ना कहेंगे। वे सत्ता के पद पर विशेष सुशोभित न हो सकेंगे। उनका स्थान शिक्षा के पद पर ही हो सकता है। अगर सभी मन्त्री बन जायँ, तो प्रजा कौन होगी? जैसे मन्त्री शिक्षित चाहिए, वैसे ही प्रजा भी शिक्षित होनी चाहिए न? जब प्रजा शिक्षित होगी, तभी वह मन्त्रियों को जाग्रत रख सकती है। देश की समृद्धि का मार्ग तो शिक्षित जनता ही दिखा सकती है। इसकी अपेक्षा मेरी तो निजी राय है कि बलवन्त राय को प्रधान मन्त्री बनाया जाय। वे वर्षों पुराने भावनगर के सेवक हैं। सिवा बलवन्त में प्रधान मन्त्री बनने की जो योग्यता है, वह नानाभाई में नहीं है और नानाभाई में जो है, वह बलवन्त राय में नहीं हो सकती। अकेले ढेबर से भी काठियावाड़ का काम चलना कठिन है। पूरे काठियावाड़ में अगर ये दोनों रहें, तो फिर मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं। इस समय सारे काठियावाड़ का बोझ अकेले ढेबर पर डालने का भी कोई अर्थ नहीं।"

दूसरी एक विशेष बात का ध्यान रखते हुए बापू ने कहा : "इस उत्सव में पट्टनी को बड़े आदर के साथ रखना चाहिए, यह मेरी निजी सलाह है। लेकिन अगर उन्हें बुलाकर उनकी निन्दा करनी हो, तो मत बुलाइये। किसी भी प्रकार का पूर्वग्रह रखेंगे, तो सदैव पिछड़ जायेंगे। इनसे बहुत कुछ सीखना है। कितनी बार तो इनके अनुभवों से ही इस राज्य को उन्नत किया जा सकता है। लेकिन यह तो मेरी बिना माँगी हुई सलाह है। गले न उतरे, तो पूरी तरह त्याग दें। फिर भी ऐसा न मानिये कि बापू ने इतना कहा, उन्हें यह अच्छा लगेगा, इसलिए करना ही

चाहिए और करते हैं। मुझे रिझाने के लिए कुछ करेंगे, तो रिझानेवाला और मैं, दोनों पिछड़ जायेंगे।"

आज तो निर्वासित भी काफी आये। कितने ही निर्वासितों ने, यहाँ के मुसलमानों के साथ संपर्क होने के कारण, ये शर्तें रखीं कि वे यहाँ के मुसलमानों को वहाँ के अपने घर दे दें और वहाँ के हिन्दुओं को यहाँ के मुसलमानों के घर मिलें। इस तरह निजी सम्बन्ध के कारण उन्होंने आपस में ही अदला-बदली कर ली है। किन्तु सरकार विदेशी राजदूतों की व्यवस्था के लिए उनसे वे मकान खाली करवा रही है। यह भी बापू को अच्छा नहीं लगा। सरकार, जनता और नेता लोग एक के बाद एक ऐसी-ऐसी भूलें कर बैठते हैं कि मुश्किल से एक आपत्ति का अन्त होता नहीं, तब तक दूसरी खड़ी हो जाती है।

आज के प्रवचन में बापू ने कहा : "बहावलपुर में एक मन्दिर था और आज भी है। लेकिन अब वह हिन्दुओं के पास नहीं रहने दिया गया है। वहाँ के मुखियाजी मेरे पास आये और बड़ी ही कठिन स्थिति से बचकर आये हैं। वे कुछ बहनों को तो बचा सके, पर सभी न बच सकीं। अब वहाँ जो पड़े हैं, उनकी कुछ-न-कुछ व्यवस्था तो होनी ही चाहिए। एक मानव से जितना हो सकता है, उतना तो मैं कर ही रहा हूँ। बाकी एक-दूसरे के राज्य में एक-दूसरा दखल न दे, इसलिए मैं अधिक क्या कर सकूँगा, इसकी जामिन तो दे ही नहीं सकता। मैं तो यही कहता हूँ कि ईश्वर के सिवा और किसी पर भरोसा रखना मूर्खता ही है।

"आज मेरे पास अमुक भाई-बहन आये थे। उन्हें सरकार ने विदेशी राजदूतों के रहने के लिए मकान की आवश्यकता बतलाकर उसे खाली करने की सूचना दी है। इसमें सचाई कितनी होगी, यह तो मैं नहीं कह सकता। उन लोगों का दावा है कि उन्होंने वहाँ रहनेवाले मुसलमानों के साथ आपसी अदला-बदली कर ली है। लेकिन उनके पास कोई प्रमाण तो है नहीं। ऐसी स्थिति में इस मामले में मैं एक ही बात कह सकता हूँ कि किसी भी रहनेवाले आदमी को किसी भी सरकार द्वारा यह कभी नहीं कहा जा सकता कि आप सड़क पर जाकर रहिये या चाहे जहाँ रहिये, पर मकान खाली कर दीजिये। विदेशी राजदूतों के लिए मकान अवश्य माँग सकते हैं, पर उसमें रहनेवाले लोगों को सन्तुष्ट करके ही। फिर भी मैं कोई सरकारी आदमी नहीं। मेरी

वहाँ कौन सुने ? इन लोगों से भी कहता हूँ कि आपके पास किसी भी तरह का प्रमाण तो है ही नहीं । इसलिए सरकार को ऐसा भी लगा हो कि क्या ये लोग लुटेरों की तरह तो घुस नहीं गये ? चाहे जो हो, फिर भी सरकार व्यवस्था करने के बाद ही मकान खाली करा सकती है ।

"एक भाई ने मुझे बतलाया कि मैं 'बिरला-हाउस में रहता हूँ, इसलिए गरीब यहाँ आ नहीं पाते । मैं हरिजन-बस्ती के बदले यहाँ क्यों रहता हूँ ?'

बापू : "मैं दिल्ली में आया, तो यहाँ मारकाट चल रही थी और हरिजन-बस्ती शरणार्थियों से भर गयी थी । इसी कारण मैं यहाँ रहा हूँ । मुझे कुछ इस महल में रहने का शौक नहीं है । लेकिन अगर वहाँ की हरिजन-बस्ती शरणार्थियों के सत्कार्य में काम आ रही हो, तो उसे खाली करवाना मुझे पसन्द नहीं । यहाँ जिसे आना हो, वह आ ही सकता है । मैं तो यहाँ पड़ा-पड़ा जितनों को आश्वासन दे सकता हूँ, देने का प्रयत्न करता हूँ ।"

शेष सारा कार्यक्रम रोज जैसा ही साधारण रहा । प्रार्थना के बाद टहलते समय श्रीमन्नारायणजी साथ थे । फिर ब्रिटेन के हवाई-विभाग के अधिकारी 'आर्थर' आये । बापू उनसे "हवाई जहाज किस तरह बनता है, कितनी देर में कहाँ पहुँचता है" आदि बातों को ध्यान से सुनते रहे । कुछ विनोद भी चलता रहा । इस बीच बापू ने कहा : "मैं अब ऊपर जाने के सिवा अपने लिए दूसरा कोई रास्ता ही नहीं देखता । मुझे तो करना या मरना ही है ।...हाँ, रात में मैं कई बार जहाज की हरी-लाल बत्तियाँ देखता हूँ, तो वे आकाश में तारों जैसी लगती हैं । ऐसी अजीब खोजों के सामने भी मानव का मस्तिष्क ऐसा पागलपन और दुर्बुद्धि अपनाकर इस तरह भीषण मारकाट करता है, यह सोचकर तो स्तब्ध ही हो जाना पड़ता है । नन्हीं-सी बुद्धि क्या-क्या कर गुजरती है ?"

बापू उनके वर्णन में इतना रस ले रहे थे कि मैं पूछ ही बैठी : "बापू ! अब आपको हवाई जहाज चलाना तो नहीं सीखना है न ?" बापू ने कहा : "हाँ, रोज इन सबके साथ हवाई गोले जैसी गप तो लगाते ही हैं ?"...छोटी-छोटी बात भी इतने ध्यान से सुनते हैं कि वह कैप्टन भी उतना ही खिल उठा ।

फिर पण्डितजी दूसरी बार आये । उनके साथ 'हेण्डरसन' भी थे । वे बैठे

थे। इसी बीच रामेश्वरी बहन नेहरू भी आ गयीं। इस कारण प्रवचन देखने में थोड़ी देर हो गयी। बापू ने गरम पानी पीया, कसरत की और ९॥ बजे सोने की तैयारी की। रोज सिर में तेल तो मैं ही मलती हूँ। इस कारण बापू उसी समय सबका हाल भी पूछ लेते हैं। काठियावाड़ की चर्चा करते हुए उन्होंने मुझसे कहा :

"मुझे लगता है कि भावनगर राज्य में बलवन्त राय मुख्य मन्त्री के लिए विशेष योग्यता रखते हैं। फिर भी कल अनन्त राय आयें, तो तू उनकी इच्छा भी समझ ले। हमें राजा, प्रजा और दीवान—सबकी मनोभावनाएँ तो जान ही लेनी चाहिए। कदाचित् कुछ बातें मेरे पास तक न पहुँच पायें, तो तेरे पास तो पहुँच ही जायें। किसीको दुःखी करके तो कुछ करना ही नहीं है, खासकर महाराज और अनन्त राय को। यह जिम्मेदारी तो अब तेरे ही ऊपर है।..."

हिन्दुस्तानभर का ध्यान रखते हुए भी बापू नन्हें-से भावनगर राज्य के साथ जरा भी अन्याय न हो, इसका भी इतना असीम ध्यान रखते हैं। मुझे तो रोज ही मन में यह विचार आता है कि बापू क्या हैं और भगवान् ने इनका कैसा भव्य मस्तिष्क बनाया है!

● ● ●

एशिया खंड एक और अखंड : ११ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१०-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना हुई! फिर बापू की चिट्ठियों की फाइल थी। फाड़ने योग्य कागज फाड़ लिये और लिखने के काम आनेवाले कागज छाँट लिये। जिनका पोस्टेज आया था, उन्हें उत्तर लिखे और बापू को उन्हें सुना दिया।

पत्र-व्यवहार की चिन्ता

आज बापू की ओर से करीब छह चिट्ठियाँ तो मैंने ही लिख डालीं। हरएक की अलग-अलग शिकायत थी। किन्हीं मुसलमानों को हिन्दुओं से परेशानी थी, तो किन्हीं हिन्दुओं को मुसलमानों से। सबको पहुँच भेज दी कि "पू० गांधीजी आजकल बहुत अधिक कार्यव्यस्त रहते हैं और आप सबके कष्ट-निवारण के लिए ही

वे यहाँ रह रहे हैं। उन्होंने निश्चय ही कर लिया है कि करना है या मरना है। बाकी रोज रेडियो पर या अखबारों में जो प्रार्थना-प्रवचन आते हैं, उन पर मनन करेंगे, तो आपको प्रकाश मिलेगा।"

वापू यह पढ़कर खुश भी हुए। यों तो जब से मैं वापू के पास आयी हूँ, तभी से कई वार इस तरह उत्तर भेज दिया करती हूँ। लेकिन अगर इस आनवान के काम में वापू के नाम आयी चिट्ठियों के वारे में उन्हें न वताया जाय, तो वह उन्हें अधिक पसन्द नहीं पड़ता। एक वार तो उलहनाभरा यह व्याख्यान भी सुनना पड़ा था: "लिखनेवाला वर्ग कितनी आशा से मुझे पत्र लिखता होगा? भले ही मैं उन्हें उत्तर न दे पाऊँ, लेकिन मुझ पर दया करने के लिए आयी हुई चिट्ठियों को मुझे न वताने का अधिकार आप किसीको भी नहीं है। मेरी दया करनेवाला तो वैठा ही है। उसे मेरी आवश्यकता होगी, तो मुझ पर दया करेगा। नहीं तो कोई वात नहीं।" इसीलिए आयी हुई सभी चिट्ठियाँ उन्हें वतानी ही पड़ती हैं।

वापू कुछ देर सो गये थे। टहलते समय आज तो खास कोई न था, हम घर के ही लोग थे। सचमुच कई वार वापू अत्यधिक गम्भीर दिखाई पड़ते हैं। हम वच्चों के साथ हँसते-खेलते हैं। सब कुछ करते हैं। लेकिन खुद मुझे तो ऐसा ही लगता है कि वापू अव दिल्ली के वातावरण से ऊव गये हों, दुःखी हो उठे हों, और उसमें से कुछ रास्ता निकालने की सोच रहे हों। चाहे जो हो, वापू का वातावरण वदला हो, ऐसा मालूम पड़ता है।...राजकोट जाना चाहते हैं, ऐसा लगता है। सो कहा: "मेरा मन इतना अधिक अस्वस्थ है कि अव यह सव देखना नहीं चाहता। कव, कैसा कदम उठाऊँगा, इसका मुझे ही पता नहीं।"

वचन का मोल

स्नान के समय वापू को एक हलका-सा चक्कर आ गया। उसमें भी वापू अत्यधिक थके तो हैं ही। वे कहते हैं: "मैं काम से थकता नहीं। लेकिन लोग कभी कुछ और कभी कुछ कहा करते हैं। एक निश्चय पर दृढ़ नहीं रहते। मुझे खुश रखने के लिए मेरे सामने तो मेरे अनुकूल वातें कही जाती हैं और इस विरला-हाउस के वाहर निकलते ही पैंतरे रचे जाते हैं कि किसके सामने कैसा वरताव करें, जिससे आगे आ सकें।......के वीच के मतभेद भी दिन-दिन उग्र होते जा

रहे हैं। किसीको समझा नहीं सकते। पाकिस्तान देते समय हमने वचन दिया था कि ५५ करोड़ रुपये देंगे। इस सम्बन्ध में मतभेद खड़ा हुआ है। अब हम मुकर जायँ, तो हमारा मूल्य ही क्या रहा? जिसे अपने वचन का मूल्य नहीं, वह दो कौड़ी का है।"

बाथ में बापू ने मुझे ये बातें कहीं। इससे लगता है, कदाचित् मेरा यह अन्दाज ठीक ही निकले। इन सभी मानसिक परेशानियों से या भीतर-ही-भीतर धधकते हुए इस दावानल के कारण ही बापू इतने गम्भीर विचार में व्यग्र हैं।

स्थानीय मुसलमान भाई आये। उन्होंने बापू से रोज की तरह ही अपनी शिकायतें कहीं। बापू ने कहा: "अब तक आपको जितनी प्रतीक्षा करनी पड़ी, उतनी अब नहीं करनी पड़ेगी। इतने महीने धैर्य रखा, तो सप्ताहभर और धीरज रख देखें कि क्या होता है?"

पट्टनी साहब के साथ 'प्रीवीपर्स' के बारे में बातें कीं। महाराज की क्या मिल्कियत है, आदि पूछा। भावनगर के महाराज ने तो बापू ज्वार-बाजरा जो भी दें, वही लेना तय किया है।

बापू ने गाडगिल साहब को सलाह दी कि कल जो पासवाले निर्वासित आये थे, उन्हें न खदेड़ा जाय। गाडगिल साहब ने कहा कि "हमें मेहमानों को रखना है।"

बापू ने बिगड़कर कहा: "तो पहले मुझे निकालने की नोटिस दीजिये और इस बिरला-भवन का कब्जा लीजिये। इसी तरह आप सभी मन्त्री अगर बड़े-बड़े बँगले दबाये बैठे हों, तो अपनी आवश्यकताभर दो-चार कमरे रखकर आपको चाहिए कि बाकी का सारा भाग खाली कर दें, उन पर कब्जा करें। जो आश्रित अपने जमे हुए बैठे हैं, उन्हें क्योंकर निकाला जाय? मैंने इस बारे में जवाहर से भी कहा है। वह तो तत्काल समझ गया कि मेरी बात ठीक है। जवाहर में यह एक महान् गुण है, वह अपनी भूल अजीब ढंग से स्वीकार कर लेता है।…"

गाडगिल साहब ने भी तय कर लिया कि पास के बँगले में रहनेवाले निर्वासितों को नहीं निकाला जायगा। वे सरकारी मेहमानों के लिए स्थान का अलग प्रबन्ध करेंगे।

सचमुच बापू से सभी डरते हैं। उनके पास पोल तो चल ही नहीं पाती। दिल्ली के चीफ कमिश्नर साहब भी आये। उनके साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा : "अब तो आप छुट्टी दें या भगवान् छुट्टी दे, तभी आराम लिया जा सकता है न?"

दिल्ली का वातावरण तो काफी बिगड़ चुका है। राजकुमारी बहन ने तो··· के साथ हुई बातें कहीं। डॉ० कर्नल भार्गव साहब, जिन्होंने मेरा आपरेशन किया था, हमें भोजन का निमन्त्रण देने आये थे। बापू ने स्वीकृति दे दी। लेकिन मुझे बुखार आया करता है, इसलिए कल पुनः जाँचकर खिलाने के लिए कहिये। मैंने कहा : "बापू! आपका यह धंधा तो खूब रहा। डॉक्टर जाँच करके तो रोगी से फीस लेता है, पर आप तो उसके बदले मुझे उनके घर खाने के लिए भेज रहे हैं!" बापू ने कहा : "और खाने के लिए जाने को मैं छुट्टी देता हूँ, उसकी फीस नहीं!" इस तरह थोड़ी देर विनोद हुआ।

ईरान और पाक की समस्या

ईरान के राजदूत बापू से मिलने आये थे। उन्होंने कहा : "ईरान और भारत के बीच मधुर सम्बन्ध तो है ही। लेकिन साथ ही यहाँ के भारतीय ईरानियों को मुसलमान मानकर दुश्मन समझकर हैरान करते हैं, यद्यपि बम्बई-सरकार या भारत-सरकार के प्रति हमारी कोई भी शिकायत नहीं है। इसी तरह हम लोग भी ईरान में रहनेवाले भारतीयों की पूर्ण सुरक्षा करने के लिए जाग्रत हैं और रहेंगे। किन्तु अगर यहाँ के भारतीय ईरानियों को हैरान करेंगे, तो कह नहीं सकता कि ईरान के भारतीयों को ईरानी सुरक्षित रहने देंगे या नहीं?···"

बापू ने कहा : "ईरान, अफगान, चीन, जापान, हिन्द या पाकिस्तान—सभी देशों को मैं एक, पूरा एशिया खण्ड, एक ही मानता हूँ। अगर अकेला हमारा एशिया खण्ड ही मजबूत हो जाय, एक दूसरे की ओर अविश्वास की दृष्टि से न देखते हुए पूरी मित्रता के साथ रहे और तदनुसार आचरण करे, तो जमीन पर स्वर्ग हो उतर पड़े। प्रेम, सत्य और अहिंसा पर रचा गया यह आर्य-देश सारी दुनिया के सुख-शान्ति का विश्राम-स्थान बने। यहाँ की सरकार जाग्रत है, फिर भी ईरानियों को भय तो रहता ही है। ऐसी स्थिति में ईरान में रहनेवाले भारतीयों के साथ आप

जितने ही प्रेम से वर्ताव करेंगे, उतना ही असर यहाँ दीख पड़ेगा। इस तरह यहाँ के ईरानियों की तो आप वहाँ बैठे-बैठे ही रक्षा कर सकते हैं।"

आज का प्रवचन शुरू हो रहा था कि इसी बीच एक साधु जैसे आदमी ने चिल्लाना शुरू किया। उसे शान्त करने के बाद पूछा गया, तो वह कहने लगा : "मुझे अपना पत्र यहाँ खुद ही पढ़कर बापू को सुनाना है।"

बापू ने कहा : "यह देखने लायक बात है कि आज हम कहाँ तक गिर गये हैं। ये साधु पुरुष होने का दावा करते हैं, गीता-गायत्री जपते हैं; फिर भी इतनी सभ्यता नहीं कि इस तरह बहस नहीं करनी चाहिए।" वह साधु बड़ी कठिनाई से शान्त हो पाया।

फिर बहावलपुर के बारे में चर्चा करते हुए बापू ने कहा : "मुझे यह समाचार मिला कि बहावलपुर के लोग प्रार्थना-सभा में गड़बड़ी पैदा कर सभा पर पत्थर फेंकने और सभा भंग करने का इरादा कर रहे हैं। लेकिन मेरे मना करने पर ये लोग मान गये। आप सबको यह आदर्श अपनाना चाहिए। इन्हें जो दुःख सहने पड़े हैं, उसका मैं साक्षी हूँ। नवाब साहब ने यह आश्वासन दिया है कि वहाँ के सभी हिन्दू-सिख यहाँ सकुशल आ जायेंगे। आखिर आपको इस पर विश्वास तो करना ही चाहिए। नवाब साहब तो यह भी कहते हैं कि भविष्य में बहावलपुर के लोगों का अधिक नुकसान न हो पाये, इसकी वे अचूक सावधानी बरतेंगे। इसी तरह यहाँ की सरकार भी बे-खबर तो है ही नहीं।

"फिर भी ये सारे चिह्न अच्छे नहीं। हमारा देश एक था, उसके दो टुकड़े हुए। इसके अतिरिक्त दोनों राज्य परस्पर दुश्मन बने और अपने ही वतन में दुश्मन बने! सिन्ध में तो इससे भी भयानक स्थिति है। अब परस्थिति इतनी नाजुक होती जा रही है कि आखिर भारत पर भी इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे मौके पर गुस्सा तो करना ही नहीं चाहिए। गुस्सा करने से कुछ भी सुधार नहीं हो सकता। ऐसे समय यही एक अच्छा उपाय है कि हम लोग परिस्थिति किस तरह काबू में आ सकती है, इसका शान्त चित्त से विचार कर योग्य आचरण करें।

"ईरान के राजदूत मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा कि बम्बई में रहनेवाले ईरानियों को—अधिकतर तो वहाँ ईरानियों के होटल ही हैं—भी नुकसान पहुँचाया जा रहा है। अवश्य ही वहाँ ईरानियों की चाय काफी पसन्द की जाती है। लेकिन

वहाँ कुछ भीतर-ही-भीतर झगड़ा हुआ, बात बढ़ गयी और काफी ईरानी मारे गये। फिर भी उन्होंने बम्बई और दिल्ली-सरकार के सहयोग की तारीफ की। एक दृष्टि से ईरानी और भारतीय सभी आर्य ही हैं। 'जेंदावेस्ता' देखेंगे, तो उसमें आपको कितने ही संस्कृत शब्द मिलेंगे। आपस में बहुत ही पुराना मधुर सम्बन्ध है। अगर वह बिगड़ जाय, तो सभी के लिए शर्म की बात होगी।

"अनाज पर से कण्ट्रोल उठा लेने से जनता मुझे धन्यवाद देती है। लेकिन मैं कोई ईश्वर नहीं कि लाभ होगा या हानि, यह पहले से कह सकूँ। मेरे पास किसी तरह के दिव्यचक्षु भी नहीं हैं। मेरे पास तो आँख, कान, पैर जो भी कुछ कहें, जनता ही है। इसलिए आखिर आपको ही अपना भविष्य तय करना है। मैं कहता हूँ, इसलिए किसीको मेरी बात मान ही लेनी चाहिए या मुझ जैसे बीस-बीस महात्मा कहलानेवाले मिलें, तो भी उनका कहना सच ही होगा, ऐसा भी मानने की कोई जरूरत नहीं। सभी को अपनी बुद्धि से ही विचार करना सीखना चाहिए। तभी सुखी हो सकेंगे।"

टहलते समय बापू काफी थक गये थे। उनके मन में कुछ विशेष चिन्ता और बोझ है। रोज की तरह १० बजे कसरत करके सोने की तैयारी हुई। प्रार्थना-प्रवचन देखा। पंडितजी के साथ बातें कीं। सुबह लिखने की सामग्री अलग छाँट ली।

● ● ●

संकुचितता और भ्रष्टाचार : १२ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
११-१-'४८

कांग्रेस में भ्रष्टाचार

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना से पहले बापू ने कहा : "हमारा इतना अधिक नैतिक अधःपतन हो रहा है—जिसे मैं अभी समझ पाया हूँ—कि हमारा सत्याग्रह या सारी लड़ाइयाँ दुर्बलता की थीं। अगर कांग्रेस के प्रमुख जन इस बारे में स्थिर और दृढ़निश्चयी न रहें, तो यह संस्था चूर-चूर हो जायगी। इससे बेहतर है

कि इसका विसर्जन ही कर दिया जाय। संस्था का ध्येय तो स्वराज्य लेने तक ही सीमित था। मुझे आज ही इस संस्था के बुरे दिनों की आगाही हो रही है। मन्त्री और संस्था के कर्मचारी ठीक-ठीक काम करने में वेदिली दिखा रहे हैं। आन्ध्र से आया हुआ कल का पत्र देखकर तो मैं अत्यन्त व्यग्र हो उठा हूँ। सब तरह की पहुँच रखनेवाले और केन्द्र में बैठे···जैसों के लड़के भी किस तरह पैसा कमाया जाय, इसके लिए धमाचौकड़ी मचाते हैं। आखिर यह सब किस बात का संकेत है। अगर हम सचमुच ऐसे ही हों, तो कहना पड़ेगा कि हम गुलाम ही रहने लायक हैं।···जैसे लोग भी, जिन्होंने बम्बई सरीखे क्रियाशील जाग्रत शहर में बसते हुए भी स्वेच्छा से जान-बूझकर धन कमाना त्याग दिया हो, सिर्फ कांग्रेस संस्था और खादी के बिल्ले की बदौलत मनमाने ढंग से चारों ओर से अन्धाधुन्ध कमाई करते रहें, तो आखिर यह सब कहाँ जाकर रुकेगा ? मैं तो यह सब जानकर स्तब्ध हो गया हूँ। अब तो कम-से कम उस गज-ग्राह की तरह भगवान् ही स्वयं समझकर मेरी लाज रख लें, तो मैं उसके अनन्त उपकार मानूँगा।"

बड़े तड़के बापू ने अत्यन्त दुःखभरी आवाज में···की घटना से बेचैन होकर ये बातें कहीं। मुझे कल से ही मालूम पड़ रहा था कि बापू किसी गहरे विचार में हैं, पर कारण ध्यान में नहीं आ रहा था। यों वे भले ही गम्भीर मालूम पड़ते थे, पर उनका विनोद, भेंट करनेवालों से बातचीत और अन्य कार्यक्रम—भोजन आदि, सारा नित्य की तरह ही चलता रहा, जिससे बाहरी लोग इसे समझ ही न सकें। फिर भी बापू की जरा-सी गम्भीरता का भी असर इस कमरे में तो फैल ही जाता है। मान लें कि···जैसे बम्बई के विख्यात व्यक्ति के बारे में भले ही कदाचित् ये बातें झूठी हों, फिर भी ऐसी बातें क्यों फैलती हैं ? यद्यपि इस घटना में कुछ तथ्य है ही, लेकिन इससे अकल्पित और न माने जा सकनेवाले कितने ही मौके खड़े हो जाते हैं। इसीसे बापू को अत्यधिक हृदयद्रावक दुःख होगा, यह समझ सकते हैं।

मिश्र-खाद और किसानों की तालीम

प्रार्थना के बाद भावनगर के ग्राम-दक्षिणामूर्तिवाले हरिलाल भाई ने पैदावार कैसे बढ़ायी जाय, इस बारे में कुछ सुझाव दिये थे। उन्हें नोट के साथ 'हरिजन' में छापने के लिए बापू ने यह नोट लिखाया :

"भाई हरिलाल के सुझावों में कोई नयी बात नहीं। फिर भी आज जिसके हाथ में देश की बागडोर है, वह किसान नहीं है। इसलिए ये सुझाव उपयोगी हो सकते हैं। अगर हम लोग राजनीति से अवकाश पाकर रचनात्मक काम में लगें और कृषि-सुधार को उचित महत्त्व दें, तो किसानों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं और उनसे भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

जमीन को मिश्र-खाद या कम्पोस्ट देने से खेत बहुत दिनों तक बिना जोते रखने की जरूरत नहीं रहती। यह खाद उसे सदैव ताजा रखती है। मिश्र-खाद को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती। थोड़े से अनुभव से हर गाँव में यह खाद सरलता से तैयार हो सकती है। लेकिन ये काम यन्त्रवत् नहीं होते। हर लेख से उपयोगी ज्ञान प्राप्त कर मौलिक प्रयोगों द्वारा देश करोड़ों किसानों में सच्ची तालीम दे सकता है।

स्व० तोतारामजी

तोतारामजी के देहावसान पर यह नोट लिखाया कि "वयोवृद्ध तोतारामजी किसीसे भी सेवा लिये बगैर ही गये। ये साबरमती-आश्रम के भूषण थे। विद्वान् तो नहीं, पर ज्ञानी थे। भजनों के भण्डार थे, फिर भी गायनाचार्य न थे। अपने एकतारे और भजनों से आश्रमवासियों को मुग्ध कर देते थे। जैसे वे, वैसे ही उनकी पत्नी भी थीं। पर तोतारामजी पहले ही चल बसे।

"जहाँ आदमियों का जमाव रहता है, वहाँ तरह-तरह के झगड़े चलते ही रहते हैं। मुझे ऐसा एक भी मौका याद नहीं, जिसमें इस दम्पति ने भाग लिया हो या ये किसी तरह के झगड़े की जड़ बने हों। तोतारामजी को धरती प्यारी थी। खेती उनका प्राण थी। आश्रम में वे बरसों पहले आये और कभी उसे नहीं छोड़ा। छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष उनके मार्गदर्शन के भूखे रहते। उनसे अनूक आश्वासन पाया करते।

"वे कट्टर हिन्दू थे, पर उनका हृदय हिन्दू, मुसलमान और अन्य धर्मियों के प्रति समान रहा। उनमें अस्पृश्यता की बू तक न थी और न किसी तरह का व्यसन ही था। राजनीति में उन्होंने भाग नहीं लिया। फिर भी उनका देशप्रेम चाहे जिसकी तुलना में खड़ा रह सके, इतना उज्ज्वल रहा। त्याग उनमें सहज ही था। उसे ही वे शोभित करते थे।

"ये फीजी द्वीप में गिरमिटिया के तौर पर गये थे। दीनबन्धु एण्ड्रूज ने ही उन्हें खोज निकाला था। उन्हें आश्रम में लाने का श्रेय श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को है। अन्तिम घड़ी तक जो कुछ उनकी सेवा हो सकती थी, वह भाई गुलाम रसूल कुरेशी की पत्नी और इमाम साहब की बहन ने की थी। 'परोपकाराय सतां विभूतयः' तोतारामजी में यह अक्षरशः सत्य रहा।"

बापू करीब १० मिनट सो गये। मैं भी सो गयी थी। ६॥ बजे उठी, नाश्ता किया और बापू के साथ टहली। सरला भी साथ थी। ७॥। बजे बापू के पैर धोकर मालिश की तैयारी की। धीरेनभाई और इन्दिरा (रंगूनवाले डॉ० प्राणजीवन मेहता की पौत्री) की सगाई से सरला और उसके परिवारवालों को सन्तोष नहीं है, आदि सारी बातें हुईं। बापू भी सभी की सभी बातों में पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। सुबह तो बापू कांग्रेस के इस भ्रष्टाचार पर अति दुःखी थे और दो-चार घण्टे बाद उन्होंने अपने पुराने मित्र की पौत्री की सगाई में इतना अद्भुत रस लिया!

बाथ में बापू ने मुझसे एक तीसरी ही बात बतलाते हुए कहा : "तू बोलती क्यों नहीं? ...की सारी बातें मैं जानता हूँ; लेकिन तू दुःखी रहे, यह मुझे नहीं भाता। तेरा मुँह जरा भी गम्भीर देखता हूँ, तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता। अगर मैं तेरी दृष्टि से तेरा माँ-बाप होऊँ, तो तुझे मन में किसी भी तरह का बोझ न रखना चाहिए।"

साढ़े बारह बजे हम लोग डॉ० भार्गव के यहाँ भोजन के लिए गये और ढाई बजे वहाँ से लौटे। बापू के लिए मिट्टी रखकर गये थे। आकर हम लोग रोज जहाँ संगीत सीखते हैं, वहाँ गये। इस कारण आज १२॥ से २॥ तक की मुलाकातियों की बातें नोट नहीं की जा सकीं। दोपहर में बापू के भोजन के समय शंकररावजी और राजेन्द्र बाबू आये हुए थे। उनके साथ बहावलपुर की और ५५ करोड़ की बातें हुईं। भीमसेन सच्चर ने भी बहावलपुर का बहुत-सा विवरण बताया। लेकिन अब मामला कुछ काबू में आ रहा हो, ऐसा मालूम पड़ता है।

मौलाना हबीब-उल रहमान साहब और स्थानीय अन्य मुसलमानों ने शिकायत की कि "अब तो हमें इंग्लैण्ड का ही टिकट कटा दें, तो अच्छा हो। आज तक हम लोगों ने कांग्रेस में पापड़ बेले।...बलिदान आदि किये। लेकिन आज जब हमें कांग्रेस ही नहीं अपनाती, तब पाकिस्तान में तो हमारे लिए स्थान ही कहाँ?"

बापू को यह बात अत्यन्त चुभ गयी। उन्होंने कुछ नाराज होकर कहा : "आपको आपके देशबान्धव हैरान कर रहे हैं, यह मैं जानता हूँ। इसीलिए तो मैं यहाँ पड़ा हूँ। लेकिन ये देशबान्धव कदाचित् पागल हो गये हैं और आपको अमन चैन से नहीं रहने देते। आखिर यह कितने दिनों तक चलेगा ? और कितने दिन चला ? कुछ दिनों से आप पर इस आजाद हिन्द में थोड़ी आफत आ गयी, तो क्या आपको गुलामी प्यारी है ? फिर यह सारी गन्दगी तो उन्हींकी नीति की आभारी है। फिर भी क्या आपको अपने देश-भाइयों के हाथों मरने की अपेक्षा गुलाम रहना ही पसन्द है ? क्या यही है आपका वह स्वराज्य और वह आत्म-सम्मान ? जिन्दगी के बनिस्वत गुलामी प्यारी है ?" खूब कही।

लेकिन बापू यह तो इतनी वेदना से बोल रहे थे कि इस वेदना की अग्नि वे ही सह सकते थे। इसके साक्षी तो बापू के भगवान् ही होंगे। इससे बापू का (रक्तचाप) भी बढ़ गया। ये सारे लक्षण अच्छे नहीं मालूम पड़े। जाने क्यों, मुझे भी कहीं अच्छा नहीं लगता। बापू ने सुबह घूमते समय मुझसे विनोद में कहा था कि तू जरा भी उदास मत रहना। लेकिन किसी भी बात में मन नहीं लगता। बहुत दिन हुए, घर से भी बहन और भाई के पत्र नहीं आये। जो कुछ हो, मेरा मन कह रहा है कि दो-चार दिनों के वातावरण से यह समझ में ही नहीं आता है कि अब बापू क्या करेंगे ?

दक्षिण अफ्रीका के बापू के साथी श्री सोराबजी भाई, रुस्तमजी और प्रागजी भाई के साथ कातते हुए बापू ने दक्षिण अफ्रीका के बारे में बातें कीं।

पाँच बजे पट्टनी साहब और माँ (यशोमती बहन पट्टनी) आयीं। ये लोग भावनगर राज्य के दीवान-दम्पति के नाते अन्तिम प्रणाम करने आये थे। ये भावनगर जा रहे हैं। साठ-साठ साल की पिता-पुत्र की दीवानगिरी या राज्य की एकनिष्ठा से सेवा करने में यह परिवार आगे रहा है। आज वह उसे प्रजा को सौंप रहा है। पट्टनी साहब की आँखों से आँसू छलक आये। मुझसे कहने लगे : "तुझ पर मेरा बहुत हक है।" बापू विनोद में कहने लगे : "तो इसे भावनगर राज्य का दीवान बना दीजिये !"

पट्टनी साहब : "यह आपके पास की, 'इस दरबार' की दीवानगिरी छोड़कर क्यों आने लगी ?"

मैंने कहा : "बापू को दीवान बना दीजिये और चपरास और गरम कोट मुझे दे दीजिये, तो काम बन गया।..." इस तरह बातें चलती रहीं कि प्रार्थना का समय हो गया।

रोज रेडियो पर बापू का जो प्रवचन आता है, उसमें बहनों और बच्चों की आवाज भी शामिल हो जाती है। इसलिए लोग स्पष्ट रूप से बापू का प्रवचन सुन नहीं पाते। आज के प्रवचन में बापू ने कहा :

"आज आप लोग ज्यादा शोर-गुल नहीं करते, इसलिए आपको मेरा धन्यवाद! आप आपस में बातें करते रहते हैं और बच्चे रोते रहते हैं। अगर ऐसा ही हो, तो प्रार्थना में आने का लोभ छोड़ देना चाहिए। इस बूढ़े को देखने से क्या लाभ? बूढ़े की कही बात जरा भी कर सकें, तो उससे कुछ लाभ भी हो सकता है। सिर्फ सुनने से क्या मिलेगा?

"आज तो मुझे दुःख की बातें कहनी हैं, यद्यपि रोज यही होता है। आज आन्ध्र से मेरे पास एक बड़ा ही करुण और मेरी आँखें खोल देनेवाला पत्र आया है। उन बूढ़े भाई को मैं जानता हूँ। उन्होंने जताया है कि १५ अगस्त को जब से हमें आजादी मिली, तब से हम लोग यह मानने लग गये हैं कि हम चाहे जहाँ, चाहे जैसे बरत सकते हैं। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस और जनता ने असीम बलिदान किये हैं। लेकिन उनके फलस्वरूप आज कांग्रेस इतनी नीचे क्यों गिर गयी? उसे ऊँचा उठना चाहिए था न? सभी कोई एक दिन भी जेल जा चुके हों या खादी पहनी हो, तो नेता बनने की उधेड़-बुन में अनेक दाँवपेंच रचते हैं। एम० एल० ए० या एम० एल० सी०, लोकसभा के सदस्य चारों ओर गन्दगी फैलाने का काम करते हैं। इस तरह कैसे चलेगा? इसलिए धारासभा और लोकसभा के सदस्यों की संख्या कम कर दी जाय, तो बहुत अच्छा होगा। उस भाई ने इस तरह की बातें लिखी हैं।

"उस प्रान्त को मैं भलीभाँति जानता हूँ। मेरे लिए तो यहाँ रहूँ या वहाँ जाकर रहूँ, उसमें कोई फर्क नहीं। सारा देश मेरा ही है और मैं सारे देश का हूँ। पाकिस्तान को मैं अपने मन में जरा भी विदेश नहीं मानता। इस प्रदेश में साम्यवादी और समाजवादी भाई हैं। वे सब यही चाहते हैं कि जिस किसी तरह हो, कांग्रेस

को तोड़ दिया जाय। लेकिन अगर इस तरह सभी हिन्दुस्तान का कब्जा लेने के लिए तैयार हों, तो उसकी क्या हालत होगी? मेरी तो हर भारतीय से यही सलाह है कि हम हिन्द के बनें और हिन्द को अपना बनायें। यह समय इतनी कठिनाई का है कि एक तो हम हिन्दू, मुसलमान कहकर एक-दूसरे के सिर काटते हैं और उसमें जो इस तरह झगड़े पर झगड़े खड़े करें, तो पुनः भयानक स्थिति में गिर पड़ेंगे। अगर हम सिर्फ खुद और अपने सगे-सम्बन्धियों को सरकारी नौकरी में लगाने और उनकी सारी व्यवस्थाएँ करने में जुट जायँ, तो हमें ईश्वर कभी क्षमा नहीं करेगा।

"आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आये थे। उनकी हमेशा की शिकायत तो है ही। लेकिन अब वे कहने लगे हैं कि हम यह भारी हैरानी कब तक सहते रहेंगे? इसकी अपेक्षा हम यहाँ से चले जायँ, तो मार खाना तो मिट जाय। पाकिस्तान में तो हम लोगों के लिए जगह है ही नहीं। अब तो इंग्लैण्ड ही बाकी रहा है। और कुछ भी नहीं सूझता।...

"इन भाइयों से मैं एक ही बात कहता आया हूँ और आगे भी कहता रहूँगा कि आप लोग थोड़ी शान्ति रखिये। चुप रहिये। सरकार तो हर सम्भव कोशिश करती ही है। फिर भी जो कुछ हो सकना मुश्किल होगा, वह और देखा जायगा। आज तो 'यूनियन' में जो बैठे हैं, उन्हें यह भूल जाना चाहिए कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान, सिख हूँ या पारसी या यहूदी। हम सभी हिन्दुस्तानी हैं, इतना ही याद रखना चाहिए। धर्म तो सबकी निजी चीज है, उसे हमें राजनीति में नहीं घसीटना चाहिए। जो दूसरों को दबाने को कोशिश करता है, वह खुद दब जाता है। गड्ढा खोदनेवाला ही उसमें गिरता है, यह प्राकृतिक नियम है। हम सब भारतीय हैं। अगर हम भारत और भारतीयों की रक्षा करते-करते मर जायँ, तो उससे अच्छी मृत्यु कौन-सी हो सकती है? मानवमात्र के लिए एक दिन यही सच्चा रास्ता है। जन्म के साथ ही मृत्यु मुँह बाये खड़ी है। फिर उससे डर क्यों?"

प्रार्थना के बाद तुरत ही बापू ने मौन लिया। मैंने और चाँदवानीजी ने प्रवचन तैयार कर देखने के लिए दिया। टहलते समय बापू कुछ अधिक उल्लास में थे। हम दोनों के कन्धों पर लटककर हमें खूब दौड़ाते थे। हमें ठंड लगती है, उसे भगाने के लिए ही मानो ऐसा कर रहे हों।

रात में देवदास काका, गोपू और काकी आयी थीं। गोपू के साथ हम सभी खेले। गोपू आता है, तो आनन्द और खेल से घड़ीभर कमरे का गम्भीर वातावरण काफी हल्का हो जाता है। राजकीय कमरा मानो वाल-भवन का कमरा ही हो, ऐसा वन जाता है।

अव तो वापू का मौन है। इसलिए लगभग वैसे तो पूरी शान्ति ही है। और कोई खास वात नहीं हो पायी। सारा कार्यक्रम नित्य के अनुसार चल रहा है। शाम के वाद वापू भी प्रफुल्लित दीखते थे, जिससे कुछ तो अच्छा लगा। ● ● ●

अनशन का निर्णय :१३:

विरला-भवन, नयी दिल्ली
१२-१-'४८

३॥ वजे प्रार्थना। फिर मैं वापू को भीतर ले गयी। मौन-दिवस होने से आज तो वापू सव कुछ हाथ से ही करेंगे। वापू को कपड़ा ओढ़ाकर मैं भी सो गयी। ६। वजे जगी और नाश्ता करके ६॥। वजे उठी। इसी वीच वापू ने 'हरिजन' के लिए लेख लिखा और वे भी ६ वजे सो गये थे। ठीक ७ वजे उठे। आज सुवह वापू घण्टाभर सोये। मालिश, स्नान आदि नित्य के अनुसार ही हुआ। आज वापू अत्यन्त प्रफुल्लित दीख रहे हैं। थकान के कारण भी उन पर वोझ रहा हो, इसलिए सुवह घण्टेभर सो गये, यह वहुत ही अच्छा हुआ। भोजन के समय जमनादास काका आये थे। ९॥। पर भोजन समाप्त हुआ। इसी वीच सरदार दादा आये। कश्मीर की स्थिति पर वातें कीं। शेख साहव कश्मीर से महाराज को हटाना चाहते हैं। महाराज वड़ी उलझन में पड़ गये हैं। उन्होंने सलाह भी माँगी थी। इन्दौर में शेख साहव (शेख अव्दुल्ला) के साले सव कुछ हथिया करके वैठे हैं। इसका भी सरदार दादा को उलहना दिया। वापू का आज मौन होने से मुँह से किसीको उत्तर देने की तो वात ही नहीं।

वापू के पैर दवाकर मिट्टी रखी। दोपहर में हम संगीत सीखने के लिए गये और ३॥ वजे वहाँ से लौटे। इस वीच वापू ने अंग्रेजी में भाषण लिखा और मुझसे

कहा कि "चल, हम लोग अनुवाद कर डालें।" हर सोमवार को वापू के भाषण का हिन्दी अनुवाद सुशीला वहन करती हैं। वे मुझे लिखवातीं और मैं तेजी से लिखती जाती हूँ, जिससे सवका समय वच जाता है।

अनशन का निर्णय

जहाँ वापू की मालिश होती है और आजकल जहाँ प्यारेलालजी और उनके साथ आयी हुई वंगाली वहन रहती हैं, वहाँ खाली जगह होने से मैं और सुशीला वहन अनुवाद करने वैठीं। सुशीला वहन एकाएक चीख उठीं : "अरे! मनु! वापू तो कल से अनशन करने जा रहे हैं।" एकाएक यह जोशीली आवाज सुन मैं तो भौचक-सी ही रह गयी। 'हैं?' एकदम वोल उठी। वे दौड़ीं वापू के पास। वापू ने किसीको भी दलील करने से इनकार कर दिया। "मौन खुलेगा, तव वातें होंगी। अभी तो जो अनुवाद हो, वही करो।" फिर वे (सुशीला वहन) गयीं घनश्यामदासजी के पास—उनसे पण्डितजी और सरदार दादा को खवर देने के लिए कहा।

हम लोगों के पास पलभर भी समय नहीं था। आज प्रवचन का अनुवाद अन्तिम घड़ी में करने वैठे। इसलिए मैंने सुशीला वहन से कहा : "अव हम वातों में समय विता देंगी और अनुवाद समय पर न हो पायेगा, तो वा नाराज हो जायेंगे।" इसलिए हम लोग पुनः अनुवाद करने के लिए वैठ गये। इस वार वापू ने अजीव ढंग से यह निर्णय किया। दोपहर में सरदार दादा, पंडितजी सभी आ गये थे और हम सव भी थे। फिर भी वापू ने इस वार अनशन करने के निर्णय का पता अपनी अन्तरात्मा के सिवा और किसीको भी नहीं लगने दिया।

लेकिन मुझे गत सप्ताह से ही वापू की वातों, रंग-ढंग, मुलाकातियों के साथ वार्तालापों और प्रश्नोत्तरों से यह लगता था कि वापू किसी गहरे चिन्तन में तो हैं ही। खुद मुझे भी कहीं अच्छा नहीं लग रहा था। वापू कई वार पूछते कि "तू उदास क्यों रहती है?" लेकिन आखिर मेरा अनुमान सच निकला। वापू को कुछ होनेवाला हो, तो स्वभावतः ही मुझे चैन नहीं पड़ता। कई वार मन उदास हो जाता और वुखार चढ़ आता है। जव यह सव होने लगता है, तो मुझे ईश्वर अशुभ की आगाही करा देता है। वापू से कहती, तो वे कहते कि "यह तेरा शुभ है।

तुझ पर एक तरह की छाप पड़ गयी है।" लेकिन यह तो मेरा अनेक अनुभवों में से प्रत्यक्ष अनुभव है। परसों और कल मेरी डायरी बापू देख रहे थे, तब भी मुझे व्यंग्य में कहा : "मालूम पड़ता है कि पुनः तू बीमार पड़ेगी। तू खुश नहीं रहती, इसका असर तेरी डायरी पर भी है। तुझे जो बीमारी या बुखार आता है, वह अधिकतर तेरे स्वभाव पर ही निर्भर है। जब खुश और प्रफुल्लित रहती है, तब बड़ी सुहावनी लगती है और उदास हो जाती है, तो १०२ डिग्री तक बुखार चढ़ आता है, यह भी गजब है!"

फिर इस अनशन में क्या होगा, कहा नहीं जा सकता! अभी छह महीने पूर्व कलकत्ते में बापू का भयंकर अनशन देखा। लेकिन वहाँ का उत्तरदायित्व तो सुहरावर्दी साहब ने अपने ऊपर ले लिया था। लेकिन यहाँ तो जनता पँचरंगी है। कोई किसीका नेता नहीं। फिर कौन उत्तरदायित्व उठायेगा? यों तो बापू के ये अनशन इस प्रकार के अपराधों के लिए हैं ही नहीं, लेकिन नेताओं में जो गंदे ढंग और भीतर ही भीतर जो खूब अड़ंगेबाजी चलती है, उसके लिए हैं। इस अग्नि-परीक्षा में क्या होगा?

प्रवचन

आज का प्रवचन शब्दशः इस प्रकार था : "लोग सेहत सुधारने के लिए सेहत के कानून के मुताबिक उपवास करते हैं। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है, तब प्रायश्चित्त के रूप में भी उपवास किया जाता है। इन उपवास करनेवालों को अहिंसा में विश्वास रखने की जरूरत नहीं। अगर ऐसा मौका भी आता है, जब अहिंसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिए उपवास करने पर मजबूर हो जाता है, वह ऐसा तभी कर सकता है, जब अहिंसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता। वैसा ही मौका मेरे लिए आ गया है।

"जब मैं ९ सितम्बर को कलकत्ते से देहली आया, तो पश्चिमी पंजाब जा रहा था। मगर वहाँ जाना नसीब में नहीं था। खूबसूरत, रौनक से भरी दिल्ली उस दिन मुर्दों के शहर के समान दीखती थी। जैसे ही मैं ट्रेन से उतरा, मैंने देखा कि हरएक के चेहरे पर उदासी छायी हुई थी। सरदार, जो हमेशा हँसी-मजाक करके

खुश रहते हैं, वे भी उदासी से बचे न थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नहीं था। वे स्टेशन पर मुझे लेने के लिए आये हुए थे। उन्होंने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि 'यूनियन' की राजधानी में झगड़ा फूट निकला है। मैं फौरन समझ गया कि मुझे दिल्ली में ही करना या मरना होगा। फौज और पुलिस के कारण आज दिल्ली में ऊपर से तो शान्ति है, मगर दिल के भीतर आग भभक रही है। किसी भी समय वह फूटकर बाहर आ सकती है। इसे मैं अपने 'करने' की प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं समझता, जो कि मुझे मृत्यु से बचा सकती है। मृत्यु से, जिसके समान दूसरा मित्र नहीं, मुझे बचाने के लिए पुलिस या फौज द्वारा रखी हुई शान्ति ही पर्याप्त नहीं। मैं हिन्दू, सिख और मुसलमानों में दिली दोस्ती देखने के लिए तरस रहा हूँ। कल तो ऐसी दोस्ती थी; मगर आज बड़े-से-बड़े मुसलमानों को जिंदगी हिन्दू या सिख की छुरी, गोली या बम से सुरक्षित नहीं है। यह ऐसी बात है, जिसे कोई हिन्दुस्तानी देशभक्त (जो इस नाम के लायक है) शान्ति से सहन नहीं कर सकता।

उपवास : आखिरी हथियार

"मेरे अन्दर से आवाज तो कई दिनों से आ रही थी। मगर मैं अपने कान बन्द कर रहा था। मुझे लगता था कि कहीं यह शैतान की, यानी मेरी कमजोरी की आवाज तो नहीं है? मैं कभी लाचारी महसूस करना पसन्द नहीं करता। किसी भी सत्याग्रही को नहीं करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है। मुसलमान भाइयों के लिए सवाल था कि 'अब वे क्या करें?' मेरे पास कोई जवाब नहीं। कुछ समय से मेरी यह लाचारी मुझे खाये जा रही थी। उपवास शुरू होते ही यह मिट जायगी। मैं पिछले तीन दिनों से इस बारे में विचार कर रहा हूँ। आखिर निर्णय बिजली की तरह मेरे सामने चमक गया और अब मैं खुश हूँ। कोई भी इन्सान—जो पवित्र है—अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता। मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि मुझमें उपवास करने लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नींबू के साथ या इन चीजों के बगैर पानी पीने की छूट मैं रखूँगा। उपवास कल सुबह पहले खाने के बाद से शुरू होगा।

"उपवास का अरसा अनिश्चित है। जब मुझे यकीन हो जायगा कि सब कौमों

के दिल मिल गये हैं—और वह बाहर के दवाव के कारण नहीं, वल्कि अपना-अपना धर्म समझने के कारण—तव मेरा उपवास छूटेगा।

"आज हिन्दुस्तान का सम्मान सव जगह कम हो रहा है। एशिया के हृदय पर और उसके द्वारा सारी दुनिया के हृदय पर हिन्दुस्तान का साम्राज्य आज तेजी से गायव हो रहा है। अगर इस उपवास के निमित्त हमारी आँखें खुल जायँ, तो यह सव वापस आ जायगा। मैं यह विश्वास रखने का साहस करता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान की आत्मा खो गयी, तो तूफान से दुःखी और भूखी दुनिया की आशा की (आँख की) किरण का लोप हो जायगा।

"कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई हैं, तो—मुझ पर गुस्सा न करें। कई ऐसे मित्र हैं, जो मनुष्य-हृदय को सुधारने के लिए उपवास का तरीका ठीक नहीं समझते। वे मेरी वरदाश्त करेंगे और जो आजादी वे अपने लिए चाहते हैं, वह मुझे भी देंगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है, यह निर्णय मुझे किसी और की सलाह के विना ही करना चाहिए। अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूल का पता चल जाता है, तो मैं सवके सामने अपनी भूल स्वीकार करूँगा और अपना कदम वापस लूँगा। मगर ऐसी सम्भावना वहुत कम है। अगर मेरी अन्तरात्मा की आवाज स्पष्ट है और मैं दावा करता हूँ कि ऐसा है, तो उसे रद्द नहीं किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस वारे में दलील न की जाय। जिस निर्णय को वदला नहीं जा सकता, उसमें मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिन्दुस्तान पर या कम-से-कम दिल्ली पर ठीक असर हुआ, तो उपवास जल्दी ही छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देर या कभी भी न छूटे, ऐसे मौके पर किसीको कमजोरी नहीं जतानी चाहिए।

उपवास : आत्मजाग्रति के लिए

"मेरे जीवन में कई उपवास आये हैं। मेरे पहले के उपवास के वक्त आलोचकों ने कहा है कि उपवास ने लोगों पर दवाव डाला। अगर मैं उपवास न करता, तो जिस मकसद के लिए मैंने उपवास किया, उसके स्वतंत्र गुण-दोष के विचार से निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह सावित किया जा सके कि मकसद अच्छा है, तो विरुद्ध निर्णय की क्या कीमत? शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्म-पालन की

तरह है। उसका बदला अपने-आप मिल जाता है। मैं कोई परिणाम लाने के लिए उपवास नहीं करना चाहता। मैं उपवास करता हूँ, क्योंकि मुझे करना ही चाहिए।

"मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शान्तचित्त से इस उपवास का तटस्थ वृत्ति से विचार करें। अगर मुझे मरना ही है, तो शान्ति से मरने दें। मैं आशा करता हूँ कि शान्ति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिन्दुस्तान का, हिन्दू-धर्म का, सिख-धर्म का और इस्लाम का बेबस बनकर नाश होते देखने के बनिस्बत मृत्यु मेरे लिए सुन्दर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तान में दुनिया के सब धर्मों के लोगों को समान हक न मिले, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तान की नकल करे, तो दोनों का नाश निश्चित है। उस हालत में इसी काम का हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में तो नाश होगा, बाकी दुनिया में नहीं। मगर हिन्दू-धर्म और सिख-धर्म हिन्दुस्तान के बाहर है ही नहीं।

"जो लोग दूसरे विचार रखते हैं, वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे, उतनी ही मैं उनकी इज्जत करूँगा। मेरा उपवास लोगों की आत्मा को जाग्रत करने के लिए है, उसे मार डालने के लिए नहीं। जरा सोचिये तो सही, आज हमारे प्यारे हिन्दुस्तान में कितनी गन्दगी पैदा हो गयी है! तब आप खुश होंगे कि हिन्दुस्तान का एक नम्र यशकर्ता, जिसमें इतनी ताकत है और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गन्दगी को मिटाने के लिए कदम उठा रहा है। अगर इसमें ताकत और पवित्रता नहीं, तब तो वह पृथ्वी पर बोझरूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाय और हिन्दुस्तान को इस बोझ से मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सबके लिए अच्छा है।

"मेरे उपवास की खबर सुनकर लोग दौड़ते हुए मेरे पास न आयें। अपने आसपास का वातावरण सुधारने का प्रयत्न करें, तो काफी है।

आन्ध्र का पत्र

"मैंने कल आपसे आन्ध्र से आये हुए दो खतों का जिक्र किया था। पत्र लिखनेवाले वृद्ध मित्र देशभक्त कोंडा वेंकटप्पैया गारु हैं। मैं उनके खत का कुछ हिस्सा यहाँ देता हूँ।

"राजनीति का—आर्थिक प्रश्न के सिवा—एक बड़ा पेचीदा सवाल यह है कि कांग्रेस के लोगों का नैतिक पतन हो गया है। दूसरे प्रान्त के बारे में तो मैं बहुत

कुछ नहीं कह सकता, मगर मेरे प्रान्त में हालत वहुत खराव है। राजनीति की सत्ता पाकर लोगों के दिमाग ठिकाने नहीं रहे। लेजिस्लेटिव असेम्वली और लेजिस्लेटिव कौंसिल के कई मेम्वर इस मौके का अपने लिए पूरा-पूरा फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

"वे अपनी आन-पहचान का फायदा उठाकर पैसा वना रहे हैं और मजिस्ट्रेट की कचहरियों में पहुँचकर न्याय के रास्ते में भी रुकावट डालते हैं। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर और दूसरे माल-अफसर भी आजादी से अपना फर्ज अदा नहीं कर सकते। कौंसिल के मेम्वर उसमें दखल-अन्दाजी करते हैं। कोई ईमानदार अफसर लम्वे वक्त तक अपनी जगह पर रह नहीं सकता। उसके वरखिलाफ मिनिस्टरों के पास रिपोर्ट पहुँचायी जाती है और मिनिस्टर ऐसे वे-उसूल और खुद-गरज लोगों की वातें सुनते हैं। स्वराज्य की लगन एक ऐसी चीज थी कि जिसके कारण सभी स्त्री-पुरुष आपके नेतृत्व को मानने लगे थे। मगर मकसद हल हो जाने पर अधिकतर कांग्रेसी लड़वैयों के नैतिक वन्धन छूट गये हैं। वहुत-से पुराने योद्धा, जो लोग हमारी हलचल के कट्टर विरोधी थे, आज उनका साथ दे रहे हैं। अपना मतलव निकालने के लिए वे लोग आज कांग्रेस में अपना नाम लिखा रहे हैं। मसला दिन-व-दिन ज्यादा पेचीदा वनता जा रहा है। नतीजा यह है कि कांग्रेस की और कांग्रेस सरकार की वदनामी हो रही है। लोगों का कांग्रेस पर से विश्वास उठ रहा है। अभी-अभी यहाँ म्युनिसिपैलिटी के चुनाव हुए थे। ये चुनाव वताते हैं कि कितनी तेजी से जनता कांग्रेस के कावू से वाहर जा रही है। चुनाव की पूरी तैयारी करने के वाद गुन्तूर में लोकल वोर्ड के मन्त्री का 'फोरी सन्देशा' आने से चुनाव रोक लिये गये।

"मैं समझता हूँ कि करीव दस साल से यहाँ सव सत्ता एक नियुक्त की हुई कौंसिल के हाथों में रही है और अव करीव एक साल से म्युनिसिपैलिटी का काम-काज एक कमिश्नर के हाथों में है। अव ऐसी वात चलती है कि सरकार शहर की म्युनिसिपैलिटी का कारोवार सँभालने के लिए कौंसिल नियुक्त करेगी।

"मैं वूढ़ा हूँ, टाँग टूट गयी है। लकड़ी के सहारे लँगड़ाते-लँगड़ाते घर में थोड़ा-वहुत चलता-फिरता हूँ। मुझे अपना कोई स्वार्थ नहीं साधना है। इसमें शक नहीं कि जिले की और प्रान्त की कांग्रेस-कमेटी जिन दो पार्टियों में वँटी हुई है,

उनके मुख्य-मुख्य कांग्रेसवालों के सामने में कड़े विचार रखता हूँ और मेरे विचार सब लोग जानते हैं। कांग्रेस में फिरकेबाजी, लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बरों की पैसे बनाने की प्रवृत्ति और मंत्रियों की कमजोरी के कारण जनता में वलवे की वृत्ति पैदा हो रही है। लोग कहते हैं कि इससे तो अंग्रेजी हुकूमत बहुत अच्छी थी। वे कांग्रेसियों को गालियाँ भी देते हैं।

"आन्ध्र और दूसरे प्रान्तों के लोग इस त्यागी सेवक के कहने की कीमत करें। वे ठीक कहते हैं कि जिस बेईमानी का उन्होंने जिक्र किया है, वह सिर्फ आन्ध्र में ही नहीं पायी जाती। मगर वे आन्ध्र के बारे में ही अपना निजी अभिप्राय दे सकते हैं। हम सब सावधान बनें।

"अपने बहावलपुर के मित्रों से मुझे यही कहना है कि वे धीरज रखें। सरदार पटेल आज दोपहर को मेरे पास आये थे। मेरा मौन था और मैं बहुत काम में था। इसलिए उनसे बात न कर सका। उनके आफिस के श्री शंकर मेरे पास आनेवाले थे, इसलिए आपका केस मैं उनके सामने न रख सका।"

अन्तरात्मा का आदेश

प्रार्थना से लौटने पर बापू सीधे लार्ड माउण्टबैटन से मिलने गये। हमारे बिरला-भवन का वातावरण तो भारी उदासी से भर गया है और बापू उतने ही अधिक प्रफुल्लित हैं।

भाई साहब, सुशीला बहन और प्यारेलालजी को लार्ड माउण्टबैटन ने कल पार्टी का निमन्त्रण दिया। भाई साहब की पार्टी में जाने की जरा भी इच्छा न थी। उन्होंने बापू से पूछा। बापू ने कहा : "वहाँ जाना ही चाहिए। वहाँ जाकर देखिये कि शराब परोसी जाती है या नहीं? वहाँ भी अनशन के बारे में चर्चा चलेगी ही। तब आप लोग इस सम्बन्ध में मेरे विचार उन्हें समझा सकेंगे।"

३॥ बजे बापू माउण्टबैटन साहब से मिलने गये थे। वहाँ से ७॥ बजे लौटे, तो कमरा ठसाठस भरा हुआ था। सभी से बापू ने कहा : "कोई भी न घबड़ाये। सभी जहाँ-जहाँ हों, अपना-अपना काम करें।" देवभाई से पटना जाने के लिए कहा। सुहरावर्दी साहब आये। मैंने कहा : "बापू! आपके अनशनों के साथ

सुहरावर्दी साहब का गहरा ऋणानुबंध (पूर्व जन्म की लेन-देन) मालूम पड़ता है।"
बापू ने उनसे कहा : "देखो, यह लड़की क्या कह रही है ?"

इसी बीच जवाहरलालजी आये। सभी बाहर चले गये। सुशीला बहन सरदार दादा के पास गयीं। सरदार दादा बड़ी ही चिन्ता में हैं और नाराज भी हैं।

...सिख-हिन्दू की एक ट्रेन पेशावर से आयी है। उस पर असाधारण हमला हुआ। बापू ने किसीसे सलाह-मशविरा किये बगैर अनशन शुरू किया, इसलिए··· बहुत नाराज हैं।

बापू कहते हैं : "मैं गत सितम्बर से यहाँ हूँ। देख रहा हूँ कि लोग मेरे मुँह पर एक बात कहते हैं और होती है दूसरी बात ! फलतः मैं तो भरोसा कर लेता हूँ और जनता मुझ पर भरोसा करती है।···के बीच के गंभीर मतभेदों का दण्ड आम जनता को भुगतना पड़ रहा है।···के भीतर भारी गन्दगी बढ़ती ही जा रही है। इस अनशन को, जो किसी व्यक्ति के लिए तो है नहीं, माउण्टबैटन भी मान गये हैं और वे भी मेरी बात समझ सके हैं कि इससे शुभ परिणाम ही निकलेगा। अगर हिन्दुस्तान सुधर जाय, तो उसके साथ बाकी सब सुधर जायगा।"

१० बजे बापू बड़े ही प्रसन्न होकर बिस्तर पर लेटे। मैंने बापू के सिर में तेल मला। देवदास काका और जमनादास काका आये थे। उन्होंने बापू के प्रवचन में आवश्यक संशोधन किया। देवदास काका ने उपवास के विरुद्ध तो बहुत दलीलें नहीं कीं, लेकिन यह अवश्य पूछा कि "आखिर यह अनशन पाकिस्तान के सम्मुख ही है न ?"

बापू : "हाँ एक दृष्टि से यह सच है। मेरे अनशन सभी के सम्मुख हैं। सभी को अपनी आत्मा की शुद्धि करनी चाहिए।"

जमनादास काका को बापू ने विनोद में कहा : "भई ! लगता है कि तू तो मुझे अनशन करवाने के लिए ही आया है ?"

जमनादास काका कहने लगे : "कौए का बैठना और ताड़ का गिरना—यह काकतालीय न्याय बन ही गया, तो और क्या कहूँ ?"

बापू प्रवचन आदि से निवृत्त होकर करीब १२॥ बजे ही सोये और सभी लोग १२॥ बजे अलग हुए।

देवदास काका जाने से पहले पू० बापू के नाम एक पत्र लिखकर मुझे देते गये और सुबह उन्हें पढ़ने के लिए देने को कहा।

मुझे तो रात में पू० बापू की अत्यधिक चिन्ता रही। उनकी मनोवेदना अभी-अभी अन्तिम सप्ताह से असह्य हो उठी थी। नैतिक और सामाजिक आन्तरिक गन्दगी की बात तो ठीक है, पर इस नन्हें-से बिरला-भवन में भी इन्हें शान्ति न थी। वे खुद कहते : "आदर्श हिन्दुस्तान का मेरा स्वप्न टूटता चला जा रहा है, इसकी मुझे परवाह नहीं। लेकिन अब मुझे ऐसा लगता है कि मेरी अन्तरात्मा मुझे आदेश दे रही है कि 'तू अपना काम कर'।

...एक बंगाली बहन ले आये हैं। कदाचित् उससे शादी करना चाहते हैं। बापू कहते हैं : "मेरे पास लगातार पचीस साल बिताये, फिर भी इस तरह ठगी करता है और भगवान् मुझे अन्धा बना देता है। लेकिन वही पुनः बिजली की चमक की तरह मुझे एकाएक जाग्रत कर देता है। इसलिए मुझे तनिक भी अफसोस नहीं।"

मैं तो यही सोचती हूँ कि एक ओर बापू तो इस तरह भयंकर वेदना और परिस्थिति से गुजर रहे हैं और दूसरी ओर पचास साल की अवस्था में इन्हें ऐसे खयाल कैसे आते होंगे ? बलिहारी है इनकी किस्मत की ! मुझे तो रात में तीन बजे तक इन सभी विचारों के कारण नींद ही न आ पायी। बापू के अनशन में ये सभी कारण जुट गये हैं; पर मुझे लगता है कि अब हिन्दुस्तान बापू के योग्य रहा ही नहीं। अब बापू बहुत अधिक दिन बितायेंगे, ऐसा नहीं दीखता। बहुत उदास हूँ, पर क्या करूँ ? मैं...को समझाने के लिए बहुत ही छोटी हूँ। इसलिए कहने में भी बड़ा संकोच हो रहा है। फिर भी अत्यन्त चिढ़ हो रही है। ● ● ●

पन्द्रहवाँ अनशन : १४ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१२-१-'४८

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना में हम लोगों ने यह भजन गाया :

'हरि नो मारग छे शूरानो
नहि कायर नुं काम जोने रे।'

बापू का वात्सल्य

प्रार्थना के बाद बापू ने मुझसे…की चर्चा करते हुए कहा : "कल से तू मेरी फिक्र में पड़ी है। इसके बदले तुझमें जो तड़पन है, उसका उपयोग कर हिम्मत के साथ तू…से पूछ और उसे समझा। तुझसे बड़े हैं या छोटे, यह प्रश्न कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता। इस समय कलकत्ते की अपेक्षा स्थिति सर्वथा भिन्न है। तू मेरी चिन्ता का विचार भगवान् को सौंप दे और उसके बदले प्रेम से किसी तरह सच्ची बात समझाने से उसका, समाज का और हम सबका लाभ होगा—इसका विचार कर। यह तड़पन तुझमें है ही, पर हिम्मत नहीं है। तू अपने में विश्वास बढ़ा, तो सब कुछ अपने-आप होकर रहेगा। अगर वे शादी करना चाहते हों, तो उन्हें कर लेनी चाहिए। इस तरह तो वे जैसे हैं, वैसे ही दीखेंगे, इससे सभीका लाभ है। इस बार का यह अनशन सिर्फ हिन्दू-मुसल्मानों के लिए ही नहीं है—बल्कि सभी जैसे हैं, वैसे नहीं दीखते, अपनी आत्मा को, मुझे और समाज को भी जो ठग रहे हैं—उन्हींके सम्मुख मेरा यह अनशन है। इन्हीं गन्दगियों के कारण भाई-भाई के बीच मारकाट का रोग फैल गया है। इस तरह मैं तुझसे बहुत आशा रखता हूँ। तू हिम्मत कर, तो सब कुछ हो जायगा। अगर इसमें तू दब जायगी, तो सदा के लिए दबी ही रहेगी। भले ही सब कोई मुझे छोड़ चले जायँ, पर मैं अकेला ही रहूँगा। यह महायज्ञ की दूसरी मंजिल है। तुझे तो काफी सहना होगा। इस तरह ढीली होने से काम न चलेगा।"

मैं तो फूट-फूटकर रोने लगी। कुछ नहीं कह पायी। बापू के ये उपदेशपूर्ण हार्दिक वचन मेरी जगह कोई दुश्मन भी सुनता, तो काँप उठता। बापू को अपने कहे जानेवाले लोगों की भी बेवफाई का शिकार बनना पड़ता है। फिर भी वे सभी 'गांधीजी के व्यक्ति' के नाते बच जाते हैं। है न भगवान् की बलिहारी!… नोआखाली में रहते हैं और अब किसी तरह का भी विरोध नहीं करते। राजकोट से भी कोई विरोध नहीं। इस तरह लोग बापू के नाम पर भलीभाँति बच निकलते हैं, फिर भी दंभ दिखाते हैं। किन्तु बापू की इस सहनशीलता और संचित शान्ति का परिणाम क्या होगा, यह तो भगवान् ही जाने!

मैं तेरा अपराधी!

भगवान् की मुझ पर सचमुच अपार कृपा ही है कि बापू को मेरे बारे में और

किसी भी तरह का असन्तोष नहीं है। मैंने विशेष रूप से इस सम्बन्ध में उनसे पूछा, तो कहने लगे : "तेरी तबीयत का ही इतना असन्तोष है कि इस अनशन में कदाचित् भगवान् मुझे उठा ले, तो मेरे प्राण इसीलिए अटके रहेंगे कि तुझे स्वस्थ नहीं कर पाया! मेरे बाद तेरा कौन ध्यान रखेगा, यह मैं खोज नहीं पाया। तू इतनी कमजोर हो गयी है, इसका दोषी भी आखिर मैं ही हूँ न? मैंने तुझ जैसी १६-१७ वर्ष की नन्हीं बच्ची से रोज १८ से २० घण्टे तक काम लिया। मैं तेरी माँ बना हूँ, इसीलिए अपराधी हूँ। अगर तू थोड़ी-सी सावधान बने, तो मुझे बचा सकती है।"

मैं स्वयं इतनी शिथिल हो गयी हूँ कि इस समय यही लगता है कि कदाचित् बापू को खो न देना पड़े। मेरे प्रति बापू का प्रेम और विश्वास भी दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। पहले ही मेरी डायरी देखी। यद्यपि गत अगस्त में कलकत्ते में बापू को अनशन करते हुए मैंने जीवन में पहली ही बार देखा, फिर भी उस समय मेरा मन इतना दुर्बल नहीं हुआ। लेकिन इस बार कुछ विचित्रता का ही अनुभव करती हूँ। भगवान् से मैं हृदय से यही प्रार्थना करती हूँ कि प्रभो! भले ही मुझसे कुछ भी न बन पड़े, पर इतना अवश्य हो कि मैं जाने-अनजाने कभी बापू को बेवफा न मानूँ। बापू को इतने दुःख में मैं और दुःखी न बनाऊँ, इतनी शक्ति मुझे दो!

बापू के आशीर्वाद

बापू की असह्य वेदना की सीमा ही नहीं है। सचमुच आज महादेव काका याद आ रहे हैं। बापू और नेताओं के बीच कड़ी के रूप में अब कोई नहीं रहा। बापू और बापू के 'अपने' कहलानेवाले निजी मित्रों तथा लोगों के बीच भी कोई कड़ी के रूप में नहीं। भगवान् ने क्या सोचा होगा, यह तो वही जानें। मैं तो यही चाहती हूँ कि मेरे हाथों ऐसा कोई भी अनुचित काम न हो और न ऐसी कोई अनुचित घटना ही घटे।

सुबह की बापू की वह गम्भीरता और साथ ही मेरे प्रति अति वात्सल्य एवं अति विश्वासभरी उनकी वाणी सुनने के बाद पू० देवदास काका का दिया हुआ वह पत्र बापू को देने की मेरी हिम्मत ही न हो पायी। इतना रोना आ गया कि कदाचित्

ही कभी ऐसी रोयी होऊँ। यह डायरी रात १२॥ बजे लिख रही हूँ। लेकिन बापू का स्नेहभरा मीठा हाथ मेरी पीठ सहला रहा है और जो कुछ कह रहा है, उससे मैं कुछ अलग ही भविष्य का अनुभव कर रही हूँ। उसकी आवाज मेरे कानों में गूँज रही है।

सोने से पहले बापू ने मुझे एक चिट्ठी भी दी।

"चि० मनुड़ी,

अगर तू हिम्मत रखने लगे, तो मेरा रंग ही बदल जाय। तुझमें अत्यन्त सामर्थ्य है, पर वह पूरी तरह खिल नहीं उठता। इसका कारण तेरा संकोच ही है। तू विचार कर—यह संकोच तुझे मार डालता है। 'मेरे माँ-बाप को अच्छा लगता है, इसलिए वहाँ खाना मेरा धर्म है'—इस तरह शूरता के साथ वहाँ भी कहने की हिम्मत होनी चाहिए। इतना अवश्य मंजूर करना चाहिए कि मैंने इसे निश्चित करना नहीं सीखा, इसलिए इसके पास खाऊँ, तो इसकी मर्जी में आये, वह और उतना खाऊँ। फिर मुझे आदत पड़ जायगी—यह बेखटके सभी से कहना चाहिए। ऐसा करने पर ही मेरे भीतर के गुण बाहर व्यक्त हो सकते हैं और खिल सकते हैं। तू जानती नहीं कि मैं तेरे बीमार रहने से कितना दुःखी होता हूँ। देख, मुझ पर जयसुखलाल का कितना अटल विश्वास है। इसलिए अगर तू ठीक-ठीक नहीं सुधरती, तो हृदय और शरीर से मुझे बहुत दुःख होगा।

१३-१-'४८ बापू के आशीर्वाद।"

यह चिट्ठी पढ़कर मैं एक कोने में जा बैठी और कोई देख न पाये, इस तरह फूट-फूट कर रोयी। इस वात्सल्य भरे प्रेम से सँभालने का बदला मैं कैसे चुका सकूँगी? अपनी इतनी सारी कड़ी कसौटी में भी बापू मुझे नहीं भूले!

बापू के अनशन

बापू के जीवन में यह १५ वीं बार का अनशन है।

१. सर्वप्रथम १९१३ में दक्षिण अफ्रीका के फिनिक्स-आश्रम में…के नैतिक पतन के लिए उन्होंने ७ दिनों का अनशन किया था।

२. सन् १९१४ में दूसरी बार फिनिक्स-आश्रम में…ने बापू को दिये हुए वचन

का भंग किया और बापू का विश्वासघात किया। इसलिए उन्होंने १४ दिनों का अनशन किया।

३. सन् १९१८ में अहमदाबाद में मजदूर-हड़ताल के समय ३ दिनों का अनशन किया।

४. सन् १९२१ में जब प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये थे, तो उनके स्वागत और बहिष्कार को लेकर सहयोग-असहयोग का झगड़ा रोकने के लिए ४ दिनों का अनशन किया।

५. सन् १९२४ में हिन्दू-मुसलिम संघर्ष होने पर प्रायश्चित्त, प्रार्थना और आत्मशान्ति के लिए दिल्ली में २१ दिनों का अनशन किया।

६. सन् १९२४ में साबरमती-आश्रम में विद्यार्थियों के चारित्रिक दोष के लिए १ सप्ताह का अनशन किया।

७. सन् १९३२ में अप्पासाहब पटवर्धन ने यरवदा के सेण्ट्रल जेल में भंगी का काम करने की माँग की। जेल-अधिकारियों ने इसका विरोध किया। फलतः उन्होंने आमरण अनशन शुरू कर दिया। उनकी सहानुभूति में बा ने २ दिनों का अनशन किया।

८. सन् १९३२ में हरिजनों के लिए आमरण अनशन का संकल्प किया। लेकिन सप्ताहभर में उसका निर्णय हो जाने से उसे रोक दिया।

९. सन् १९३३ में यरवदा-जेल में २१ दिनों तक हरिजन-आन्दोलन और साथियों की आत्मशुद्धि के लिए अनशन किया। लेकिन बापू को जेल से रिहा कर देने के कारण पूना की पर्णकुटी में वह उपवास पूरे किये गये।

१०. व्यक्तिगत सत्याग्रह करने के कारण बापू को यरवदा-जेल में रखा गया। वहाँ उन्होंने केवल 'हरिजन' कार्य ही करने की अनुमति माँगी। पर सरकार ने अनुमति नहीं दी; इसलिए अनशन शुरू किया और ७ वें ही दिन बापू को छोड़ दिया गया।

११. सन् १९३४ में हरिजन-यात्रा के समय अजमेर की एक आम सभा में एक सनातनी ने हरिजन को मारा। इसके प्रायश्चित्तस्वरूप सेवाग्राम-आश्रम में ७ दिनों का अनशन किया।

१२. राजकोट-सत्याग्रह के समय (सन् १९३५ में) अनशन किया। लेकिन वाइसराय की सफल मध्यस्थता के कारण ४ दिनों में यह अनशन समाप्त हो गया।

१३. सन् १९४२ में आगा खाँ महल में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय उचित न्याय पाने के लिए २१ दिनों का अनशन किया।

१४. हिन्दू-मुसलिम कटुता के लिए कलकत्ते के बेलियाघाट में ७३ घन्टे का अनशन किया। और

१५. सन् १९४७ में दिल्ली में दिली दोस्ती करने या मरने के संकल्प के साथ यह अनशन होने जा रहा है।

शान्तिपर्यन्त अनशन

टहलते समय सोरावजी रुस्तमजी अफ्रीकावाले और जोहान्सवर्ग के प्रागजी भाई तथा मोहनलाल अमरशी साथ थे। उससे पूर्व वापू ने रोम्याँ रोलाँ की एक पुस्तक की प्रस्तावना लिखकर दी।

घूमते समय एक व्यक्ति ने कहा : "अगर इस उपवास में मृत्यु हो जायगी, तो यूनियन में एक भी मुसल्मान जीता नहीं रह सकता।"

इस पर वापू ने कहा : "आपमें से किसीकी सलाह या अक्ल काम नहीं आ सकती। क्यों ? इसका जवाव मैं नहीं दे सकता। जवाहरलाल पर तो मैं यक़ीन करता हूँ। उसने इस वारे में मेरे साथ जरा भी दलील नहीं की। लेकिन अव सरदार मान जायँ, तो ठीक। जवाहर को न हर्ष है और न शोक ही।"

साथ में राजकुमारी वहन आयी हुई थीं। मालूम पड़ता है कि इन्हें वापू का यह कदम उचित मालूम पड़ता है। वे यह भी मानती हैं कि इससे देश को लाभ ही होगा। ५५ करोड़ रुपये पाकिस्तान को देने के वारे में वातें हुईं। सरदार दादा को समझाना होगा। इस वीच वाहर तो कई पत्रकार और फोटोग्राफर, कार्का, डा० जीवराज काका तथा अन्य अनेक लोग आये हुए थे।

वापू ने अनशन के पूर्व का अपना अन्तिम भोजन इस प्रकार किया : ढाई रोटियाँ, आठ औंस सेव, १६ औंस दूध, तीन टुकड़े ग्रेइप फ्रूट। ठीक ११ वजे वापू ने अन्तिम भोजन समाप्त किया और प्रार्थना शुरू हो गयी।

'नम्यो हो रेंगे क्यों ?' इस बुद्ध-मन्त्र के वाद 'अउजविल्लाह' यह मुसलिम प्रार्थना हुई। उसके वाद 'ईशावास्य०', 'यं ब्रह्मा०' और अन्त में 'ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय' और सवके अन्त में भजन 'वण्ड्रस् क्रॉस' गाया गया। वातावरण तो अत्यन्त गम्भीर और खिन्न वन गया था।

सभी एक सवाल पूछते हैं कि "अव तो कुछ है नहीं, फिर वापू ने अनशन क्यों शुरू किया ?"

वापू : "कोई आदमी असाध्य वीमार पड़े और घुल-घुलकर मर जाय, इसकी अपेक्षा एकवारगी मर जाना ही अच्छा है न ? चीन में फाँसी की सजा वड़े ही अच्छे ढंग से दी जाती है—वटन दवाते ही आदमी साफ हो जाता है। मैंने कितने ही दिनों तक धैर्य रखा। क्या आज मौलाना साहव या सुहरावर्दी हिन्दुओं के महल्लों में खुलेआम जा सकेंगे ? जव तक ये इस तरह जा नहीं सकते, तव तक मैं सच्ची शान्ति नहीं मानता।"

हकीम अजमल खाँ के लड़के ने कहा कि "आप अनशन स्थगित कर दीजिये। अभी तो कुछ हो नहीं रहा है।" मौलाना साहव वीच में ही वोल उठे : "अभी उन्होंने जो निश्चय कर लिया है, वह हम सर पटक-पटककर मर जायँ, तव भी वदल नहीं सकता। अव तो हमें उनका फाका छूटे, ऐसी ही कोशिश करनी चाहिए।"

यहाँ के डी० आई० जी० साहव आये हुए थे। उन्होंने वापू को कलकत्ते का किस्सा पूरा सुनाया और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे अपने से जितना हो सके, उतना कर गुजरेंगे।

सरदार दादा और मणि वहन : ..."सव कुछ त्याग करके भी हमें अपना सत्य का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। अगर अपने दिये हुए वचनों का हम ही पालन न करें, तो हममें और दूसरों में अन्तर ही क्या है ?" वापू ने देशवन्धु गुप्ताजी और हंसराज वायरलेस के प्रयोग देखे। ध्रांगध्रा के महाराज साहव आये हुए थे। पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास भी आये थे। उन्होंने वंवई की खलवली की आन्तरिक विक्षेप और उसमें भी एक उच्च कांग्रेसी नेता की सिफारिश की कान खड़ा करनेवाली वातें सुनायीं।

रामराज्य स्थापित करें !

कातने के बाद पट्टनीसाहब आये। वे बापू के कई ऐतिहासिक फोटो पर उनके हस्ताक्षर कराने के लिए मुझे दे गये थे। हर फोटो पर 'बापू के आशीर्वाद' इस तरह हस्ताक्षर कराये गये। वे मुझे दो हजार रुपये इस शर्त पर दे गये कि मैं किसीको देनेवाले का नाम न बताऊँ और बापू की मर्जी के अनुसार इनका उपयोग करूँ। लेकिन मैंने उन रुपयों को उनके सामने ही बापू को सौंप दिया। मुझसे कहने लगे : "तुझ पर मेरा हक नहीं और मुझ पर तेरा हक है।" यद्यपि यह भाषा समझने में मुझे जरा देर लगी, लेकिन मैं हँस पड़ी।

वे कल भावनगर जा रहे हैं। बापू ने ही उन्हें इस उत्सव में भाग लेने की साग्रह सलाह दी।

आज से बापू का उपवास शुरू हो रहा है। वातावरण विषाद से भरा हुआ है। कब क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। ऐसे वातावरण में उन्हें जाना पसन्द नहीं आया। फिर भावनगर के महाराज साहब और दीवान साहब की प्रबल इच्छा थी कि इस अवसर पर बापू भी उपस्थित हों। उनका गला भर आया और उन्होंने बापू से कहा : "आप अपनी अनुकूलता देख अगर मेरे यहाँ के ५, मानसिंह रोडवाले मकान में पधारें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी।"

बापू ने कहा : "जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैं वहाँ आ ही गया हूँ। लेकिन अब तो दिल्ली में करना या मरना है। यदि कुछ होगा, तो यहाँ से मैं तो मुक्त ही हूँ न ? फिर तो भावनगर में आपके यहाँ ही आऊँगा। अगर यहीं कहीं हुआ होता और शान्ति होती, तो इस अवसर पर मैं अवश्य ही आता। लेकिन अपनी सभी इच्छाएँ पूर्ण थोड़े ही होती हैं ? अब मुझे लगता है कि इसका कुछ परिणाम अवश्य होगा। ईश्वर को मुझसे काम लेना हो, तो वह लोगों को अवश्य सद्बुद्धि देगा। अथवा यदि मेरा काम पूरा हो गया हो, तो मुझे उठा लेगा; तो भी मेरा कल्याण ही है। इस बीच आपसे मुझे बहुत काम लेना है और उसमें आप अपनी पूरी कला उँड़ेलिये।

"भावनगर का राज्य प्रजा को सौंपने के बाद काठियावाड़ के अन्य राजाओं को इसी मार्ग पर लाने की कुशलता बरतें। काठियावाड़ के राजाओं को आप

भलीभाँति जानते हैं और वे भी आपको भलीभाँति जानते हैं। दुनिया को बतलाइये कि काठियावाड़ के राजा और दीवानों के बीच के ये कौटुम्बिक सम्बन्ध दोनों ने परस्पर किस तरह निभाये हैं। मैं वह दिन देखने के लिए आतुर हूँ कि सभी राजा लोग स्वेच्छा से भावनगर के महाराज की तरह प्रजा को अपना सर्वस्व समर्पण कर उसकी सेवा के लिए खड़े हो जायँ और रामराज्य की मेरी कल्पना भारत के इस कोने में साकार करने का यत्न करें। तब मुझे काठियावाड़ और भावनगर में अपने घर ले जाइये। नहीं तो मुझसे जाया ही नहीं जा सकता।

महुआ के लिए आग्रह

"वहाँ से तरया किनारे एक सुन्दर गाँव है। आपके पिता के समय में वहाँ गया था। वहाँ नरसिंह मेहता को भगवान् का साक्षात्कार हुआ, ऐसा माना जाता है।" बापू को गाँव का नाम याद नहीं आ रहा था, इसलिए वे जरा रुक गये। इस बीच पट्टनी साहब ने कहा : 'गोपनाथन् ?' बापू ने कहा : "हाँ-हाँ! मुझे वह बहुत ही पसन्द पड़ा था। उस समय मेरे साथ महादेव भी था। आपके पिताजी ने चरखा कातते हुए भजन भी सुनाया।"

मैंने बीच में ही कहा : "तब तो बापू! मेरा महुआ बिलकुल पास है।" पट्टनी साहब ने कहा : "यह लड़की मुझे बताती···है और महुआ-महुआ करती है। गन्दा से गन्दा गाँव है वह!" मैंने कहा : "आपके कारण ही न ?" उन्होंने कहा : "हमने तो कब से वहाँ की म्युनिसिपैलिटी को वह सौंप दिया है। प्रजा के म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष में ही कुछ दम न हो, तो क्या हो सकता है ?" "लेकिन भावनगर की बात चलती है, तो मेरा महुआ खड़ा ही हो जाता है।" "पगली! बापू को पहले भावनगर तो आने दे, फिर तेरे महुआ को देखा जायगा।" पट्टनी साहब ने अपनी लाक्षणिक शैली में कहा।

बापू हँस पड़े। लेकिन उन्होंने बापू को प्रणाम कर विदा लेने के लिए हाथ जोड़कर नमस्कार किया। आँखों से आँसुओं की धाराएँ निकलीं। मेरे भी रोंगटे खड़े हो गये।

अनुभव से लाभ उठायें!

उनके जाने के बाद बापू ने कहा : "उपवास के कारण ये जरा निराश हो गये

हैं। उन्होंने कहा है और तेरी भी इच्छा हो, तो एक दिन के लिए जाना हो, तो चली जा। दिल बहल ही जायगा।" मैंने इनकार कर दिया। अनशन शुरू न हुआ होता, तो कुछ सोचती।

बापू ने कहा : "मेरे बदले तुझे देखकर भी वे प्रसन्न हो जायँगे। देख, ये भी तो जा रहे हैं न ? क्योंकि मेरी सलाह मानना इन्हें अच्छा लगता है। नहीं तो इनका स्वभाव भी कम जिद्दी नहीं है। फिर भी मेरी बातें खूब मानते हैं। देख तो सही कि ये तुझ पर अपनी औरस लड़की से भी अधिक ममता रखते हैं; क्योंकि तू मेरी सेवा करती है। याने मेरी कही हुई बात को इच्छा या अनिच्छा से भी मानती है। उन्हें मेरे प्रति पूर्ण श्रद्धा है कि बापू की सलाह मानने में मेरा कल्याण ही हो सकता है।...यही सोचकर वे मेरी सलाह मान लेते होंगे।"

मैंने पूछा : "ये दीवान का पद छोड़ देंगे, तो फिर क्या करेंगे ?"

बापू ने कहा : "देख, अगर मैं इस तपश्चर्या से जीवित रहा, तो उनसे बहुत-सा काम लेनेवाला हूँ। ये कुशल व्यक्ति हैं। काफी काम देंगे, सिर्फ इनसे काम लेने की योग्यता चाहिए। जिसे काम लेना आता हो, उसे ही ये काम देते हैं; दूसरों को नहीं। इसलिए मैं तो इनके अनुभवों से लाभ उठाऊँगा ही। मैं मानता हूँ कि अगर हम ऐसे अनुभवी आदमी के सामने पूर्वग्रह रखकर उनसे लाभ न उठायें, तो ठोकर खायेंगे। तुमने देख ही लिया कि मैंने बलवन्त राय को खास सूचना दी है और मनुभाई से भी कहा है कि इनके सुझाव एवं अनुभवों से लाभ उठाने में कभी मत चूकिये। नम्रता अवश्य रखनी चाहिए। देखें, अब क्या होता है!"

बापू को अभी आज कुछ थकान या कमजोरी मालूम पड़ती हो, ऐसा नहीं लगता। वे कहते हैं : "मैं रोज की अपेक्षा आज अधिक स्फूर्ति का अनुभव कर रहा हूँ, कारण मानसिक बोझ हलका हो गया है।"

पहला दिन

नियमानुसार बापू प्रार्थना-सभा में बड़ी ही स्फूर्ति से गये। उन्होंने आरम्भ में कहा : "मुझे जो कुछ कहना होगा, उसे १५ मिनट में ही पूरा कर देने की उम्मीद रखता हूँ। लेकिन आज कहने के लिए इतना अधिक है कि कदाचित् कुछ मिनट और भी लग जायँ।

"आज तो उपवास का पहला ही दिन है और फिर सुबह खाया भी है। ९॥ बजे खाना शुरू किया, पर बीच में इतने अधिक लोग आ गये कि मैं अपना भोजन ठीक ११ बजे पूरा कर पाया। सम्भव है कि कदाचित् कल से मैं प्रार्थना स्थल तक चलकर न आ सकूँ। अगर आप सबकी इच्छा हो कि प्रार्थना होनी ही चाहिए, तो आप सभी आ सकते हैं। इन लड़कियों में से सभी या एक आध कोई वहाँ प्रार्थना करायेगी।

"कल मैंने बहावलपुर के शरणार्थियों के बारे में कहा। सरदार के मंत्री श्री शंकर अपनी इच्छा से मुझसे मिलने नहीं आ सकते, इसमें कुछ गलतफहमी हो गयी है। मणिबेन ने उस बारे में बताया कि वे दो बजे नहीं आ सकते, और समय आ सकते हैं। यह मुझे ठीक समझ में नहीं आया, इसीलिए ऐसा घोटाला हुआ। लेकिन यह कोई बड़े महत्त्व की बात नहीं है। मैं कह आशा ही नहीं करता कि सरकारी नौकर गैर-सरकारी व्यक्तियों के यहाँ चक्कर काटते रहें। लेकिन इन लोगों को मेरी हकीकत पसन्द नहीं आयी, इसलिए आज इसका खुलासा करना मुझे आवश्यक मालूम पड़ा।

अपना अपराध स्वीकार करें !

"अस्तु, अब मुख्य बात पर आयें। आज दिनभर में मेरे पास असंख्य लोग आ गये। सभी एक ही सवाल पूछते हैं कि यह अनशन किसके समक्ष है ? यह आक्षेप किस पर है ? लेकिन आक्षेप करनेवाला मैं कौन होता हूँ ? और मान लीजिये, इस अनशन से मैं जीवित न रहा, तो यह आक्षेप मुझ पर ही है, यही समझिये। अगर मैं नालायक साबित होऊँ, तो ईश्वर मुझे जीने ही नहीं देगा। आज हिन्दू अपने धर्म का पालन नहीं करते, इसका मुझे बहुत दुःख है, क्योंकि मैं एक आदर्श हिन्दू हूँ। आज हिन्दू और सिख यह वृत्ति रखते हैं कि यहाँ से एक-एक मुसलमान को खदेड़ दिया जाय। लेकिन वह अच्छी नहीं है। इस तरह तो वे अपने धर्म और अपनी जाति को अधर्मी बना रहे हैं। यह सच है कि मैं अल्पसंख्यकों का पक्ष लेता हूँ; लेकिन निरपराध लोगों को नेताओं या अमुकों के निर्णयों की बलि होना पड़े और उन्हें निराधार बनाकर रखा जाय, तो उन सबको उचित मदद करना मानवमात्र का कर्तव्य ही है। इसलिए सच पूछें तो यह उपवास

मेरी आत्मशुद्धि के लिए ही है। भगवान् सभीको शुद्ध करें तथा सम्मति दें, इसलिए है। याने सभीको शुद्ध होना है। यह नहीं कि हिन्दू, सिख शुद्ध हों और मुसलमान नहीं। मुसलमानों को भी सर्वांगशुद्ध होना चाहिए। यहाँ के मुसलमान भी सर्वथा निर्दोष नहीं हैं। इस तरह सभीको अपना-अपना अपराध स्वीकार करना ही चाहिए। मैंने कभी भी किसीकी खुशामद के लिए अनशन नहीं किये, एकमात्र भगवान् की ही खुशामद करता हूँ।

"जब भारत का विभाजन नहीं हुआ था, उस समय भी मुसलिम लीग ने देश के टुकड़े कराने के सिवा दिल के टुकड़े करवाने में भी कम हिस्सा नहीं लिया। मुसलिम लीग जैसी संस्था इस अमानुष कृत्य के लिए अत्यन्त और गम्भीर जिम्मेदार है। लेकिन अन्य मुसलमान, हिन्दू और सिखों ने भी भूलें तो की ही हैं। अब इन तीनों के दिलों में दिली दोस्ती करनी हो, तो सबको अपने-अपने दिल साफ करने चाहिए।

मुसलमान भाइयों के प्रति

"अब दो शब्द अपने मुसलमान भाइयों से अदब के साथ कहना चाहता हूँ। यह अनशन उनके नाम से शुरू हुआ है, इसलिए उनकी जिम्मेदारी बढ़ गयी है। उन्हें कम-से-कम इतना तो निश्चय करना ही चाहिए कि हम हिन्दू और सिखों के दोस्त बनकर रहेंगे। जो यूनियन में रहना चाहते हों, वे यूनियन के प्रति वफादार रहें। ये लोग कहते तो हैं कि हम वफादार रहेंगे, पर आचरण वैसा नहीं करते। मैं तो कहूँगा कि कम बोलो, पर करके ज्यादा दिखाओ!

"बहुत से मुसलिम भाई मुझसे कहते हैं कि जवाहरलालजी अच्छे हैं, पर सरदार मुसलमानों के साथ सहानुभूतिपूर्ण बर्ताव नहीं करते। इससे मैं स्तब्ध ही हो जाता हूँ। ऐसी बातें मुसलमान कहें, तो कैसे चलेगा? सरदार और जवाहर मिलकर ही सारी हुकूमत चलाते हैं। ये सभी आपके सेवक ही हैं और सभीकी मंत्रिमण्डल जैसी पूरी ही जिम्मेदारी है। सरदार ने सचमुच ऐसी कुछ भूलें की हों, तो निडर होकर मुझे बतलाइये। मैं अपने से जो कुछ बन पड़ेगा, देख लूँगा। लेकिन सिर्फ अफवाहों से इस तरह पूर्वग्रह नहीं बनाया जा सकता। मैं तो अपना न्याय अलग ही ढंग से दूँगा। मैं कहूँगा कि सरदार, जवाहर, गांधी या मुसलिम लीग किसीके भी भरोसे न रहें, सिर्फ ईश्वर के भरोसे ही रहना हितावह होगा।

"मैं जानता हूँ कि कदाचित् सरदार की जीभ पर काँटा हो, कड़वाहट हो, पर उनके हृदय में काँटा या कड़वाहट बिलकुल नहीं है। हाँ, वे सच्ची बातें किसीसे भी कहने में नहीं डरते और न कहने से चूकते ही हैं। उन्होंने लखनऊ में कहा है कि मुसलमानों को भारत में रहना हो, तो खुशी से रह ही सकते हैं। लेकिन लीगी मुसलमानों का उन्हें कोई भरोसा नहीं। इसमें उन्होंने कुछ अयोग्य कहा, ऐसा मैं नहीं मानता। आदमी को जैसा मालूम पड़े, वैसा ही कहना चाहिए। और सन्देह रखने का उन्हें अधिकार है ही। लेकिन उस सन्देह का मुसलमानों को गलत अर्थ नहीं करना चाहिए। यों मैं तो यह माननेवाला हूँ कि सन्देह रखना ही नहीं चाहिए और अपराधी सिद्ध हुआ, तो उसे योग्य दण्ड देना चाहिए। लेकिन सरदार तो सरदार ही हैं। इनके सिर पर यह जिम्मेदारी है।

'एकला चलो'

"आज अभी 'एक ली जाने रे' 'एकला चलो' भजन गाया गया। यह भजन मुझे बहुत ही प्रिय है। नोआखाली की मेरी यात्रा के बीच रोज यह गाया जाता था। इसमें कहा गया है कि 'तेरे साथ कोई भी न आये, तो भी तू अपने रास्ते अकेले ही चला जा। ईश्वर तो तेरे साथ है ही।' इसलिए हिन्दू-सिख अगर यहाँ के अल्पसंख्यकों को सँभाल न सकें, तो फिर मुझे जीकर ही क्या करना है? मैं तो कहूँगा कि चाहे पाकिस्तान में सभी हिन्दू-सिख काट डाले जायँ तो भी यहाँ एक नन्हा-सा मुसलिम बच्चा भी सुरक्षित रहना चाहिए। जो कमजोर हैं, निराधार हैं, उन्हें मारना बुजदिली ही है।

अन्तर्मुखता अपेक्षित

"दिल्ली की अब ही कसौटी है। मेरी शर्त इतनी ही है कि भारत के चाहे जिस भाग में या पाकिस्तान में चाहे जितनी मार-काट मचे, तो भी दिल्ली अपने फर्ज से न चूके। दिल्ली की शान्ति जैसी है वैसी ही आबाद रहे, दिल्ली की आबादी आबाद रहे और सुहरावर्दी जैसे भी, जिन्हें गुण्डों का सरदार कहा जाता है, चाहे जहाँ आजादी से घूम-फिर सकें। आज तो सुहरावर्दी साहब जैसों को यहाँ प्रार्थना में लाने में भी खतरा देख रहा हूँ, तब और जगह की तो बात ही क्या है? अगर उनका अपमान होता है, तो उसमें मैं अपना ही अपमान समझता हूँ। इसीलिए

यहाँ नहीं ला सकता। लेकिन मुझे इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि वे चाहे जैसे हों, पर कलकत्ते में मुझे उनका पूरा-पूरा साथ था। वहाँ तो उन्होंने—जितने मुसलमान हिन्दुओं के मकान दवाकर वैठे थे—उन सबको निकाल वाहर किया और उनके घर हिन्दुओं को सौंप दिये। सभी कौमें याने हम सब भारतीय अन्तर्मुख वनें, सच्चे भारतीय वनें और हैवानी को मिटाकर आदमियत कायम करें। अगर ऐसा नहीं होता, तो कम-से-कम अब मेरा जीना ही व्यर्थ है।"

वापू ने आज से टहलना वन्द कर दिया। प्रवचन देखने के वाद पंडितजी के साथ वहुत-सी वातें कीं। वापू का वजन १११ पौण्ड हुआ।

आज की वापू की शारीरिक स्थिति इस प्रकार रही: दिन में ११। वजे गरम सादा पानी। फिर पाखाने गये। फिर १२ औंस मिट्टी लेकर सो गये। दो वजे ८॥ औंस गरम सादा पानी। ४ वजे ८ औंस पानी और फिर कताई। प्रार्थना के वाद गरम सादा ८ औंस पानी। रात १० वजे सोने की तैयारी। १०॥। वजे सभी अलग-अलग हो गये। आज तो परिचित-अपरिचितों की मुलाकातों की सीमा ही नहीं रही।

प्रार्थना के वाद हम लोग विरला-मन्दिर गये। आज कुल पानी ३६॥ से ४० औंस तक पेट में गया, पर निकला कम ही। गत अनशन से ही 'किडनी' (गुर्दा) खराव है। देखें, इस वार क्या होता है? संभव है, इसी कारण वजन में अन्तर नहीं पड़ा। रात में सोते समय आवाज में और चेहरे पर सर्वत्र काफी कमजोरी मालूम पड़ रही है। यों आज परिश्रम भी काफी हुआ है।

अब यह डायरी पूरी कर रही हूँ। किन्तु सोने से पूर्व भगवान् से यही हार्दिक प्रार्थना करती हूँ कि हमारे उन वापू को अधिक कसौटी पर मत कसो, जो करोड़ों के आश्रय हैं; देश के वालक, स्त्री-पुरुष, युवक, गरीव, अमीर, राजा से रंक तक सभीका जो मुट्ठीभर हड्डियोंवाला अस्सी वरस का वुड्ढा एकमात्र आधार है और जो उनका आश्वासन-स्थान है!

○ ○ ●

अनशन का स्पष्टीकरण

: १५ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

१४-१-'४८

पिता-पुत्र का अन्तिम पत्र

रात में दो बार मैं जग पड़ी। यों बहुत सोयी ही नहीं और नींद में भी बापू की चिन्ता तो थी ही। सर्दी तेज है, इसलिए अधिक चिन्ता हो रही है। रात तो एक तरह से ठीक ही बीती। बापू ने अपने बल पर ही रोज की तरह खड़े होकर दतवन किया। मैंने पूछा : "बापू, कमजोरी तो नहीं मालूम पड़ती?" बापू ने कहा : "आज ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि अनशन कर रहा हूँ।" फिर उन्होंने सरला के साथ बातें कीं : "तुझे अपना कार्यक्रम स्वयं ही बना लेना चाहिए। अभी मैं तुझ पर मुग्ध हो सकूँ, ऐसा नहीं दीखता।"

प्रार्थना के बाद मैं बापू को भीतर ले गयी। रात का देवदास काका का पत्र पुनः पढ़ा। उत्तर दिया। पिता-पुत्र के बीच असंख्य पत्र-व्यवहार हुआ होगा, लेकिन यह पत्र और यह उत्तर दोनों के जीवन में अन्तिम ही सिद्ध हुए। देवदास काका का पत्र और बापू का जवाब दोनों अद्भुत हैं।

ता० १३-१-'४८, सुबह ३॥ बजे

"परमपूज्य पिताश्री की पवित्र सेवा में,

आपका वक्तव्य बड़ी उतावली में हो गया है। अभी बहुत से सुधार हो सकते थे। अनशन के औचित्य के विषय में मुझे बहुत कुछ कहना था; लेकिन मुझे तो कोई सूचना थी ही नहीं और न किसीने यह खबर देने का कष्ट ही उठाया। मैं बहुत जल्दी आ सकता और मुझे जो कहना था, कहता। किन्तु अभी ही चि० मनु ने मुझे यह खबर दी। मेरी मुख्य चिन्ता और दलील यह है कि आखिर आप अधीरता के वश हो गये। यह काम ही धैर्य का था। आपने दिल्ली आने के बाद कितनी अधिक सफलता सिर्फ धैर्यपूर्वक मेहनत करके पायी है—इसका आपको खयाल नहीं। आपकी मेहनत से लाखों बच गये हैं और लाखों बचते। लेकिन आप एकाएक धैर्य

खो बैठे हैं। आप जीते हुए जो कर सकते हैं, वह इस बारे में मरकर नहीं कर सकते। यही एक विचार मन में रखकर इस समय अनशन छोड़िये, यही प्रार्थना है।

—देवदास के प्रणाम।"

१४-५-'४८, मकर संक्रान्ति

"चि० देवदास,

तेरा पत्र सुबह प्रार्थना के बाद पढ़ गया। कल तूने जो थोड़ी-सी बातें कीं, उन्हें भी समझ गया। मेरा वक्तव्य तू जिस दृष्टि से उतावली में दिया हुआ कहता है, वैसा नहीं है। हाँ, मेरी अपनी दृष्टि से उतावलीभरा अवश्य है। कारण, उसके देने में साधारणतः मुझे जितना समय लगना चाहिए, उससे कम समय लगा। उससे पहले चार दिनों का विचार-मंथन था और प्रार्थना थी। यह वक्तव्य मंथन और प्रार्थना के फलस्वरूप था। इसलिए उसे मेरी भाषा या किसी भी जानकार की भाषा में 'उतावलीपूर्ण' कहा ही नहीं जा सकता। ऐसे वक्तव्य के विचार की भी भाषा सुधारने या सफाई करनेमात्र के सुधार की गुंजाइश जरूर थी और तेरे सुझाने के साथ ही मैंने सुधार भी दिया। उपवास की योग्यता के बारे में तुझसे या और भी किसीसे में कुछ सुनना नहीं चाहता था। जो सुन लिया, वह मेरे विवेक और धैर्य की ही निशानी है। सूचना तो तुझे पहले ही मिल चुकी थी। तेरी मुख्य चिन्ता और दलील सर्वथा निरर्थक मानी जायगी। तू मित्र तो अवश्य है और यह भी सच है कि ऊँचे पद पर पहुँच गया है, फिर भी 'पुत्र' तो किसी भी हालत में मिट नहीं सकता। इसलिए तेरी चिन्ता स्वाभाविक मानता हूँ। लेकिन तेरी दलील तेरे छिछले विचारों और अधीरता का ही प्रदर्शन है।

इस कार्य को मैं अपने धैर्य की पराकाष्ठा मानता हूँ। जो धैर्य उद्देश्य का हनन करे, उसे धैर्य माना जाय या मूर्खता? मेरे दिल्ली आने के बाद जो परिणाम हुए हों, उसके लिए मैं श्रेय नहीं ले सकता। उसे लूँ, तो वह मोह ही माना जायगा। मेरे परिश्रम से एक या अनेक बचे हों, दुनिया में उसका मूल्य हो ही नहीं सकता। उसका मूल्य तो केवल सर्वज्ञ ही निर्धारित कर सकता है। जिसने सितम्बर के आरंभ से आज तक धैर्य रखा, उसे 'एकाएक धैर्य खो दिया' यह कहना अज्ञान नहीं, तो और क्या कहा जा सकता है? व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें, तो जब मैं पुरुषार्थ

से हार गया, तभी ईश्वर की गोद में सिर रखा। 'उपवास' का यह अर्थ समझने के लिए तू 'गजेन्द्रमोक्ष' को पढ़ और समझ, जो दुनिया का महाकाव्य कहा गया है। तभी तू कदाचित् मेरे कार्य का मूल्य कर सकेगा।

तेरे पत्र का अन्तिम वाक्य तेरे प्रेम का सुन्दर प्रदर्शन है। इस प्रेम का मूल अज्ञान या मोह है। यह मोह सार्वजनिक है, इसलिए यह ज्ञान का स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। जहाँ हम जन्म-मरण के प्रश्न को ही हल नहीं कर सकते, वहाँ यह कहना कि 'जीकर ही अमुक कार्य हो सकता है', आकाश-कुसुमवत् है। 'जीयो तव तक सीयो' यह अच्छा है, लेकिन इतना अध्याहार समझ लेना चाहिए कि 'यह सीना हो निष्काम भाव से।' अव शायद तू समझ जायगा या नहीं। तेरी प्रार्थना मानने योग्य नहीं है। इसलिए उपवास जिसने करवाया, वह राम ही अगर छुड़वाना हो, तो उसे छुड़ा सकेगा। इस वीच में, तू और सभी यह समझें और मानें कि 'राम मारेगा, तो भी श्रेय है और राम जिलायेगा, तो भी श्रेय है।' मुझे तो एक ही प्रार्थना करनी थी कि 'हे राम, उपवास के वीच मेरा मन सवल रखो, जिससे मैं जीने के लालच की उतावली में उपवास न छोड़ बैठूँ।' विचारपूर्वक चि० मनु से लिखवाये इस पत्र को तू संग्रह कर रखना और मौके-मौके इसे पढ़ते रहना।

—वापू के आशीर्वाद।"

गुजराती भाई-वहनों के नाम पत्र

"यह चिट्ठी मैं वुधवार को सवेरे पड़ा-पड़ा लिखता रहा। आज उपवास का दूसरा दिन है, फिर भी अभी चौवीस घण्टे नहीं वीते। 'हरिजन' की डाक भेजने का यह अन्तिम दिन है। इसलिए गुजरातियों को दो शब्द लिखना ठीक मानता हूँ।

"इस अनशन को मैं साधारण नहीं मानता। गम्भीर विचारपूर्वक यह शुरू किया गया है। फिर भी उसका प्रेरक विचार नहीं, वल्कि विचारों का स्वामी राम कहो या रहमान कहो, वही है। यह अनशन किसीके लिए नहीं, या सभीके लिए है। इसके पीछे किसी प्रकार का क्रोध नहीं और न रत्तीमात्र उतावली ही है। सभी चीजों का एक मौका होता है। वह मौका चूक जाने के वाद उसके करने का मूल्य ही क्या इसलिए अव सोचना इतना ही है कि क्या प्रत्येक भारतीय के लिए कुछ करना शेप

है ? भारतीय में गुजराती आ गये और यह गुजराती भाषा में लिखा जा रहा है, इसलिए गुजराती बोलनेवाले सभी भारतीयों के लिए है।

"दिल्ली हिन्दुस्तान की राजधानी है। अगर हम हृदय से हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसल्मान—ये दो विभाग न मानें याने हिन्दू और मुसलमान दो भेद न मानें—तो अब तक हम हिन्दुस्तान का जो नक्शा जानते आये हैं, आज दिल्ली उसकी राजधानी नहीं हुई है, यद्यपि यह तो सदा से ही भारत की राजधानी रही है। हस्तिनापुर भी यही है और इन्द्रप्रस्थ भी यही है। उनके खँडहर आज भी पड़े हैं। यही दिल्ली हिन्दुस्तान का हृदय है। इसे हिन्दुओं या सिखों का कहना मूर्खता की पराकाष्ठा है। यह कहने में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है। भले ही आपको यह कठोर मालूम पड़े, पर है शुद्ध सत्य ही। इस पर कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और कराची से लेकर आसाम के डिब्रूगढ़ तक रहनेवाले और इस प्रदेश को सेवाभाव और प्रेमभाव से अपना बनानेवाले सभी हिन्दू, मुसल्मान, सिख, ईसाई, पारसी और यहूदियों का हक है। इसमें बहुसंख्यकों का ही स्थान है या अल्पसंख्यकों की अवहेलना है—यह कहा ही नहीं जा सकता। जो उसका शुद्धतम सेवक है, वह बड़ा-से-बड़ा हकदार है। इसलिए यहाँ से मुसलमानों को खदेड़नेवाला दिल्ली का पहले नम्बर का दुश्मन है और इसी कारण हिन्दुस्तान का भी। दुर्भाग्य से आज हम इसी स्थिति पर पहुँच रहे हैं।

"इस कुअवसर को टालने के लिए हर भारतीय को भाग लेना चाहिए। वह किस तरह लिया जा सकता है ? देखिये, अगर हम पंचायत-राज चाहते हों, लोकतंत्र स्थापित करना चाहते हों, तो हमें मानना होगा कि छोटा-से-छोटा भारतीय बड़े-से-बड़े भारतीय जितना ही हिन्द का राजा है। इसके लिए उसे शुद्ध होना चाहिए और न हो, तो बनना चाहिए। वह जैसे शुद्ध हो, वैसा ही समान होना चाहिए, जिससे जाति-भेद, वर्ण-भेद का शिकार न बने। वह सबको अपने समान माने और दूसरों को अपने प्रेमपाश में बाँध ले। उसकी दृष्टि में कोई अस्पृश्य न हो और उसके हृदय में मजदूर और महाजन एक समान हों, इससे वह करोड़ों मजदूरों की तरह पसीने की रोटी कमाना जानेगा और कलम तथा कुल्हाड़ी को समान मानेगा। यह शुभ अवसर निकट लाने के लिए वह खुद भंगी बनेगा। सयाना हो, तो अफीम और शराब को छुयेगा ही क्यों ? वह सहज ही स्वदेशी व्रत का पालन

करेगा। पत्नी के अतिरिक्त सभी स्त्रियों को अवस्था के अनुसार माता, बहन या लड़की मानेगा। किसी पर कुदृष्टि न रखेगा और मन में भी बुरी भावना न रखेगा। वह अपने समान ही स्त्रियों का हक समझेगा। मौका आने पर स्वयं मरेगा, पर दूसरों को कभी न मारेगा और वह सिखों के गुरु जैसा बहादुर होगा। अकेले सवा लाख के सामने खड़ा हो जायगा और एक कदम भी पीछे न हटेगा। ऐसा भारतीय पूछेगा ही नहीं कि मुझे इस यज्ञ में क्या भाग लेना चाहिए।

१४-१'४८ मो० क० गांधी।"

अन्याय और पाप का प्रायश्चित्त

आठ बजे बापू चलकर मालिश के टेबुल तक गये। ९ बजे बाथ में आये। बाथ में सुशीला बहन ने देश-विदेश से आये हुए तार पढ़ सुनाये। सुहरावर्दी की बातें करते हुए बापू ने कहा: "यह आदमी अत्यन्त बुद्धिमान् है। इसे जिन्नासाहब ने तरह-तरह से मन्त्रिमण्डल में या वह जिस सम्मान्य पद को चाहें, वहाँ आने के लिए निमन्त्रित किया था। जब उन्होंने मुझसे पूछा, तो मैंने एक ही जवाब दिया: 'आपने हिन्दुओं के साथ जो अन्याय और पाप किया है, उसका प्रायश्चित्त लेना हो, तो हिन्दुओं का वफादार मित्र होना चाहिए और यह मोह छोड़ देना चाहिए।' इसने वह छोड़ भी दिया है। अब मैं इसे पूर्वी बंगाल में भिजवाऊँगा।"

हम मानव बनें

...के ऊपर बापू बाथ में नाराज हो गये।...एक ही बात दूसरे ढंग से रखी जाय, तो बापू अत्यन्त दुःखी हो जाते हैं। बापू को कमजोरी काफी मालूम पड़ रही है। एक बात पर उन्होंने कहा: "इस लड़की को भी मैं जाँचता हूँ। यह दंभ या असत्यता अग्नि-परीक्षा में अपने-आप जल जायगी। मैंने उन दोनों को इस तरह का नहीं समझा था। महादेव ने मुझे आगाह तो जरूर किया था, पर अब उसका कुछ फल नहीं। ईश्वर जो कुछ दिखाता है, देख ही लेना चाहिए। आखिर युधिष्ठिर जैसे चक्रवर्ती राजा ने भी जब स्वर्गारोहण किया, तो अपनी माता और पत्नी सहित चार-चार भाइयों को सुलाने (मरने) का दृश्य अपनी आँखों देखा ही।"

इतना समझाते हुए बापू को थकान हो आयी। मैंने उनसे कहा कि आज आप बाथ में इतना अधिक बोले हैं कि अब न बोलें तो? बापू कहने लगे: "बहुत

जीने के लिए मेरा प्रयत्न होना ही नहीं चाहिए। लेकिन मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह भी मेरी इस अग्नि-परीक्षा और यज्ञ के अविभाज्य अंग के रूप में ही है। अगर मैं तुमसे लेकर सभी मण्डली और बिरला-भवन, दिल्ली और उसके द्वारा भारत एवं समस्त मानव-जाति को समझा सकूँ तथा उनके हृदय के द्वार खुल जायँ, तो कदाचित् ये अमानुष कृत्य होने से रुक जायँ। हम लोग आदमी बनें। इसीलिए मैं कहता हूँ।

मैं उस समय चुप ही रह गयी। हम दलील करते हैं, तो बापू समझाने के लिए खूब बोलते हैं। आज तो आवाज बहुत ही धीमी हो गयी है। बापू के मुँह के पास कान लगाने पड़ते हैं। वे अनशन के बीच हजामत भी नहीं बनवाते, इसलिए हजामत बनवाते समय पाँच-दस मिनट सोया करते थे; वह भी बन्द हो गया।

मीठी चुटकी

बाथ से निकलकर बाहर धूप में बैठे। सरला को गीता सिखाने के लिए बापू ने मुझसे कहा। १० से १२ तक जवाहरलालजी, मथाई, षण्मुखम् चेट्टी और सरदार दादा (मन्त्रिमण्डल) के साथ बातचीत की। हम लोग मणिबेन के पास बैठे। उन्होंने बापू के बारे में अपनी चिन्ता व्यक्त की। सरदार दादा बहुत ही चिन्ताग्रस्त हो उठे हैं। वे जब तक भावनगर में रुकें, तब तक रोज पत्र द्वारा बापू की तबीयत का हाल सूचित करने के लिए उन्होंने मुझसे कहा है। कराची में तो बहुत ही आतंक है। १,५०० आदमी कल कत्ल हुए। फिर भी कोई राष्ट्रीय मुसलमान कुछ भी नहीं बोलता।

१२॥ बजे स्थानीय मौलाना लोग आये। उनके साथ एक हबीब-उल रहमान भी थे, जिन्होंने ११ तारीख को बापू से कहा था कि 'हमें विलायत भेज दीजिये'। बापू ने उनसे मीठी चुटकी लेते हुए, पर बड़े ही गम्भीर होकर कहा : "क्यों अब तो खुश हैं न? मैंने आपके लिए विलायत के टिकट की व्यवस्था कर दी है और मैं कहूँगा कि हिन्दुस्तान के बेवफा मुसलमान विलायत जा रहे हैं।"

वे भाई तो इस गजब के व्यंग्य पर क्या बोलते? इनमें से एक भाई बोले : "आपको दुःख हुआ हो, तो मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ।"

बापू ने कहा : "यह तो आप अंग्रेजी चाल चल रहे हैं—सता-सताकर फिर माफी माँगना ! आपको यह कहते शर्म आनी चाहिए कि अंग्रेजी हुकूमत अच्छी थी। यानी हम गुलाम थे, वह ज्यादा अच्छा था। इसलिए हम फिर अंग्रेजों से अपने ही भाइयों से रक्षा करने के लिए उनकी गुलामी की भिक्षा माँगते हैं—यह कितनी वाहियात बात है !

"लेकिन अब आपके मन में जो भरा है, वह दीख पड़ा। आप सोचिये—शुद्ध होकर सच्चे बनिये। अगर ऐसे ही रहेंगे, तो भारतीय कब तक सहन करेंगे ?"—बापू ने भी खरी-खरी सुना दी।

पौन बजे मिट्टी का प्रयोग किया। उसी समय मृदुला बहन का तार आया कि पाकिस्तान के मुसलमान पूछ रहे हैं कि गांधीजी का अनशन छुड़वाने के लिए हम लोग क्या करें ?"

बापू ने मुझसे कहा : "देख अगर फोन आये, तो कह देना कि आज के प्रार्थना-प्रवचन में मैं उस बारे में कहूँगा। फिर भी यहाँ के मुसलमानों से जो कहता हूँ, वही उन पर भी लागू है।"

दूसरी एक बात पर "मैं तो ईश्वर का कैदी हूँ। उसने जो अनशन करवाया, उसे कर रहा हूँ; जब वह छुड़वायेगा, तभी ये समाप्त होंगे। अगर इस कैद से जीवित निकला, तो नया जीवन प्राप्त होगा; तब पाकिस्तान जाऊँगा। नहीं तो मृत्यु को ही अपना मित्र मानता हूँ।' औसतन आज बापू प्रसन्न हैं और उन्होंने ठीक-ठीक काम किया है। आज मुलाकातों का तो अन्त ही नहीं रहा।

शाम को बापू पैदल प्रार्थना-स्थल तक गये और बोले भी। अन्दर आकर लेटने के बाद कहने लगे : "आज मैं बहुत तरोताजा हूँ।" सुशीला बहन ने पैदल चलकर जाने और बोलने से मना किया था। उसके उत्तर में बापू ने कहा : "मैं तो ईश्वर के ही हाथ में हूँ, और किसीके भी हाथ में नहीं।"

रात में यहाँ कितने ही सिख पंजाबी चिल्लाते हुए आये। बापू को गालियाँ भी दे रहे थे। दिल्ली में उन्हें कहीं काम में लगा दिया जाय, तो हो सकता है; लेकिन यह कोई आसान बात नहीं है।

सहानुभूति के तार

आज के प्रवचन में बापू ने कहा : "हिन्दुस्तान और विदेशों से मेरे पास तारों का ढेर लग गया है। कितने ही तारों में तो मेरे अनशन के निर्णय का स्वागत किया गया है और मुझे ईश्वर की गोद में रखा है। थोड़े-से लोग अनशन छोड़ने के लिए प्रेमपूर्वक दलील कर प्रार्थना करते हैं। तारों का ढेर बढ़ता ही जा रहा है। हर कौम और हर देश से तार आये हैं।

"पहले तो इन सभी भाई-बहनों ने मेरे लिए जो चिन्ता व्यक्त की है, उसके लिए मैं उनका अत्यन्त ऋणी हूँ। लाहौर से पाकिस्तान के गण्यमान्य मुसलमान मित्र भी मेरी तबीयत की फिक्र करने के साथ यह भी सूचित करते हैं कि हम लोग इसमें किस तरह मदद कर सकते हैं? इस सूचना से मैं खुश होता हूँ। मेरा यह अनशन तो जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, आत्मशुद्धि के लिए ही है। इसलिए जो लोग इस अनशन के प्रति सहानुभूति दिखलाते हों, वे सभी आत्म-शुद्धि करें, यही मेरी प्रार्थना है।"

पाकिस्तान के प्रति दो शब्द

"आज तो मैं पाकिस्तान से दो शब्द अदब के साथ कहना चाहता हूँ। पाकिस्तान को मैं अपना मित्र ही मानता हूँ; इसलिए मित्रता के नाते जो सच मालूम पड़े, उसे मुझे कहना ही चाहिए।

"पाकिस्तान में मुसल्मानों ने अपराध किया है और अभी भी वहाँ मारकाट चल रही है। हजारों हिन्दू, सिख लूटे जा रहे हैं और अब तो वहाँ कोई हिसाब ही नहीं रह गया है। कितनी ही लड़कियाँ भगायी गयी हैं। पंजाब के गुजरानवाला रेलवे-स्टेशन पर गाड़ी भी लूटी गयी। अगर पाकिस्तान में ऐसा ही चलता रहा, तो भारत कब तक सहन करेगा? और उसके बाद मेरे जैसा एक आदमी अनशन करे या १०० साधु भी अनशन करें, तो यह निश्चित है कि भारतीय जनता का रोष काबू में नहीं लाया जा सकता। इसलिए पाकिस्तान के मुसल्मानों को अब विचार कर सदाचरण करना चाहिए। साथ ही हिन्दू और सिखों को हिम्मत से विश्वास में लाकर उनसे कहना चाहिए कि अब हम आपको जाने न देंगे। अपनी जान-माल लगाकर भी आपकी रक्षा करेंगे। अगर आप ऐसा करेंगे, तो पाकिस्तान

सचमुच पाक और पवित्र बनेगा। पाकिस्तान ऐसा पाक होना चाहिए कि जिन्ना साहब की जान-माल जितनी सुरक्षित है, पाकिस्तान में रहनेवाले प्रत्येक मानव-मात्र की जान-माल उतनी ही सुरक्षित रहनी चाहिए। ऐसा पाकिस्तान कभी भी नहीं करेगा। तब पाकिस्तान को मैंने जो एक पाप के रूप में माना है, उसके विषय में भी मैं अपना खेद सचमुच घोषित कर दूँगा।

सदाचरण, सत्कर्म की माँग

"आज तो मैं हिम्मत के साथ कहता हूँ कि पाकिस्तान एक 'पाप' ही है। मैं पाकिस्तान के नेताओं के लेख या भाषण देखना नहीं चाहता। मैं तो माँगता हूँ उनका सदाचरण, सत्कर्म! और यही देखने के लिए जीना भी चाहता हूँ। अगर ऐसा होगा, तो भारत के लोग अपने-आप सुधर जायँगे।

"आज मुझे शर्म के साथ कहना पड़ता है कि हम लोग सचमुच पाकिस्तान की बुराइयों की ही नकल कर रहे हैं। अगर इन बुराइयों की जड़ गहरी पहुँचेगी, तो भविष्य में भारत का क्या होगा, इसकी कल्पना करना ही कठिन है।

ध्येयपूर्ति के लिए मदद की याचना

"बचपन से ही मुझे हिन्दू-मुसलिम एकता का अनुपम शौक रहा है। मेरी जीवन-उषा की वह उत्कण्ठा जीवन-संध्या में पूर्ण होगी, तो मैं एक नन्हें बच्चे की तरह नाच उठूँगा और प्रसन्न होऊँगा। १२५ साल जीने की मेरी इच्छा, जो अभी मर गयी है, पुनः जाग्रत हो उठेगी। मेरा वह स्वप्न सफल होने पर ही आपको सच्चा स्वराज्य प्राप्त होगा। भले ही पाकिस्तान और भारत भौगोलिक दृष्टि से अलग रहें, पर दिल से एक होंगे, तो यह ध्येय आपके और मेरे लिए बड़ा ही आदर्शमय और भव्य है। जब तक यह कार्यरूप में परिणत नहीं होता, तब तक किसी प्रसिद्ध चित्रकार के चित्र के बालक की तरह मुझे जरा भी सन्तोष न देगा। इससे कम सिद्धि के लिए मैं जीना नहीं चाहता और अभी जिन्दा हूँ, तो भी मरा हुआ ही मानिये। इसलिए पाकिस्तान के मेरे मुसलिम मित्र मुझसे जो सलाह माँगते हैं, उनसे कहूँगा कि मेरा यह ध्येय पूरा करने में वे मदद दें।

ईश्वरेच्छा बलीयसी

"सन् १८९६ में मैं एक बार दिल्ली और आगरे का किला देखने गया था,

तो उसके एक दरवाजे पर इस आशय की कविता पढ़ी कि 'दुनिया में जो कुछ स्वर्ग हो, वह यहीं है।' अपना इतना वैभव होते हुएभी यह किला मेरी दृष्टि में स्वर्ग जैसा तो नहीं ही लगा। किन्तु अगर पाकिस्तान इसके योग्य बने और उसके दरवाजे-दरवाजे ऐसी कविताएँ लिखी जायँ, तो सचमुच ही मुझे अत्यधिक सन्तोष होगा, भले ही ऐसा स्वर्ग भारत में हो या पाकिस्तान में। इस स्वर्ग में कोई गरीब न होगा, कोई पूँजीपति न होगा। कोई कारखाने का करोड़पति न होगा, तो कोई आधा-पेट काम करनेवाला मजदूर भी न होगा। सबको समान और खुद कमाई की रोटी खाने को मिलेगी। स्त्री और पुरुष समान हक और समान रहन-सहन से रहेंगे और ऊपर लिखे अनुसार अपनी स्त्री को छोड़ सभी स्त्रियाँ अपनी माँ, बहन या लड़कियाँ ही होंगी। ऐसे देश में अस्पृश्यता नहीं रहेगी। 'सर्वधर्म समभाव' भरपूर रहेगा। जो कोई मेरी इस भव्य कल्पना को पढ़े या सुने, वह—इस काल्पनिक आनन्दभरी मेरी कल्पना में आज मैं बह गया—इसके लिए मुझे माफ करेगा। लेकिन जो लोग 'ऐसा होगा या नहीं' ऐसी शंका रखते हों; उन सबको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा अनशन जल्दी टूटे, इसका मुझे जरा भी उत्साह नहीं। मुझ जैसे बेवकूफ और··· तरंगी···लोगों की तरंग में दीखनेवाले सब्जबाग कभी न फलें, तो उसमें मुझे जरा भी घबड़ाहट नहीं। समय की प्रतीक्षा करने का धैर्य मुझमें है। लेकिन सिर्फ मुझे बचाने के लिए ही अगर कोई मुझे ठगेगा, तो उससे मेरा दुःख और भी बढ़ जायगा। ईश्वर की इच्छा पर ही मैंने अनशन शुरू किया है और उसकी इच्छा होगी, तभी वह टूटेगा। उसकी इच्छा के बगैर एक पत्ता भी हिल नहीं सकता। उसकी इच्छाएँ कोई टाल न सका और न भविष्य में ही टाल सकता है।''

शारीरिक स्थिति और स्वास्थ्य

३॥ बजे बापू जगे। दतवन कर १५ मिनट बातें कीं। लेटे ही लेटे देवदास काका का पत्र पढ़ा। ३॥। बजे प्रार्थना—आध घंटे। ४। बजे सादा गरम पानी ७ औंस। ५-२५ बजे सोये। आधे घंटे तक पत्र और नोट लिखवाये। ७॥। बजे सादा गरम पानी ६ औंस। ८ बजे मालिश के लिए गये। उससे पहले 'फूट बाथ' याने गरम पानी में पैर डुबोये। ४० मिनट टेबुल पर मालिश और अखबार पढ़ा। ८॥। बजे बाथ में गये। अखबार सुना। राजकुमारी बहन और मेरे साथ बातें कीं। ९॥। बजे बाथ से लौटे। ९-५५ बजे सादा गरम पानी आठ औंस। १० से १२

तक मन्त्रिमण्डल की बैठक। ११ बजे ८ औंस सादा गरम पानी। १२-१० बजे सादा गरम पानी ८ औंस। १२॥ बजे लेटे-लेटे ही अखबार पढ़ा। पैरों में घी मला। १-५५ बजे श्री वी० पी० मेनन। १-२० बजे मिट्टी का प्रयोग। २-५ पर मिट्टी उतारी। २-२५ बजे जगे। २-५० पर सादा गरम पानी आठ औंस। ३॥ बजे लेटे-लेटे लिखाया। ३॥। बजे महाराज पटियाला के साथ। ४-२५ पर गुरुवचन सिंहजी के साथ। ४-२५ गरम सादा पानी आठ औंस। ४-३४ पर सुचिता बहन के साथ। ४-३५ पर सरदार भगतसिंह के साथ। ४-४६ पर सुहरावर्दी साहब के साथ बातें। ५ बजे प्रार्थना। ५-४५ बजे श्री मेहरचन्द खन्ना, पेशावर का डेपुटेशन, १५ मिनट बातचीत, जयराम दासजी तथा मणि बहन। ६-२० बजे सरदार सोहनसिंहजी, ६-४० बजे गुलाम मुहम्मद बक्शी साहब, ७-५ पर सुचिता बहन, ७-२० पर मौलाना साहब, जवाहरलालजी और सरदार दादा। ८-५ बजे तक लेटे बातें कीं। ९-१० पर सभी चले गये, राजकुमारी बहन। ९-४० पर बाथ-रूम में गये, पैर दबाये। १० बजे बिस्तर पर लेट गये। १० बजे रात वजन लिया गया—१०९ पौण्ड हुआ। दो पौंड वजन घटा। ब्लड प्रेशर अधिक रहता है। सुशीला बहन का कहना है कि इसी कारण बापू को कदाचित् शक्ति मालूम पड़ती हो।

हाथ-पैर बहुत ही ठंडे रहते हैं। आवाज अपेक्षाकृत अधिक धीमी पड़ गयी है। इस समय तो मानसिक स्थिति भी काफी अच्छी है। यहाँ हम लोग सितम्बर से आये हुए हैं। इस बीच मैं देखती हूँ कि बापू सर्वथा प्रफुल्लित और पूर्णतः चिन्तामुक्त तो कल से ही मालूम पड़ते हैं। आज तो अत्यन्त प्रसन्न हैं, क्योंकि अब चाहे जो हो, एक परिणाम तो दो दिनों में दिखाई ही पड़ जायगा। प्रभो! सभीको सन्मति दो, यही प्रार्थना है!

आजकल तो यह सब लिखते-लिखते, और पू० बापू की तबीयत का हाल जानने के लिए रात में आने-जानेवाले बाहरी लोगों से बातचीत करने में मुझे रोज ही सोने के लिए बारह या साढ़े बारह तो बज ही जाते हैं। लार्ड माउण्टबैटन साहब का बीकानेर का कार्यक्रम बहुत दिन पहले ही तय हो गया था। उन्हें बापू के अनशन के कारण जाने की तो इच्छा ही नहीं हो रही थी। लेकिन उनका यह कार्यक्रम अगर रद्द हो जाय, तो उससे बापू को दुःख ही होगा। इसलिए उन्होंने जाना निश्चित

ही रखा। फिर भी उन्होंने पूज्य बापू के इस अनशन के सम्मान में राजकीय भोज रद्द कराया—ऐसी खबर रात में गवर्नमेण्ट हाउस से मिली। ● ● ●

पत्रकारों को संदेश : १६ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१५-१-'४८

राम का कराया उपवास

रात ठीक बीती। दो बजे बापू जग गये और रात में जिन प्रश्नों पर वक्तव्य देना था, उसे लिखने बैठ गये। भाई साहब से बिजली जलाने के लिए कहा। मुझसे कहा कि अभी सोती ही रह और प्रार्थना के समय उठ, पर नींद आने जैसा वातावरण ही न था। मुन्नालालभाई (आश्रमवासी) आये, तब बापू सोये हुए थे।

३॥ बजे प्रार्थना। प्रार्थना के बाद बा को मैं भीतर ले गयी और उनके पास बैठ गयी। पैर दबाये। रात २॥ बजे से जो वक्तव्य लिखना शुरू किया था, उसे पुनः लिखने लगे; लेकिन बीच में कमजोरी के कारण आँखें मूँद ली थीं।

सात बजे बापू बिस्तर पर लेटे। बिरलाजी के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा : "मैं राम का कराया उपवास कर रहा हूँ। जब आप सबके साथ दलील करता हूँ, तो मेरा मन मुझसे कहता है कि 'रे जीव! तू क्यों दलील करता है? क्या तुझे ईश्वर पर श्रद्धा नहीं?' अगर मेरी मृत्यु हो जाय और दुनिया में अशान्ति फैले, तो भी अच्छा ही है। इसलिए आप सब मेरी चिन्ता छोड़ अपना-अपना काम कीजिये। सरदार को दुःखी होने की कोई भी बात नहीं। मेरा ही आग्रह था कि उन्हें भावनगर जाना जरूर चाहिए। फिर वे जहाँ रहेंगे, आखिर मेरा ही काम करनेवाले हैं न?"

अन्त में बिरलाजी ने कहा : "आप तो किसीकी भी माननेवाले नहीं हैं। आप ईश्वर के हाथ में हैं, यह तो हम लोग मानते ही हैं।"

८॥ बजे बापू मालिश के लिए गये। ८॥ बजे गरम पानी से उनके पैर धोये गये।

आत्मशुद्धि की अपेक्षा

…ने बापू को कड़ी चिट्ठी लिखकर अपने अन्तर की पीड़ा उँड़ेल दी है। उन्होंने लिखा है कि 'उनके हट जाने से सारी व्यवस्था सुधरती हो, तो वे मंत्रिमण्डल में रहने के लिए जरा भी तैयार नहीं।' पत्र एक दृष्टि से हृदयद्रावक भी है।

बापू जब बाथ में आये, तो गरम पानी का बाथ लेते-लेते सुशीला बहन ने कुछ कटिंगें पढ़ सुनायीं। फिर बापू ने प्रार्थना में सुनायी जानेवाली प्रश्नोत्तरी प्यारेलालजी से लिखवाना शुरू किया। बापू जो बोलते थे, प्यारेलालजी को उसे नोट करना मुश्किल हो रहा था; क्योंकि आज तो आवाज बहुत ही धीमी पड़ गयी है। बाथ में उन्हें चक्कर भी आ रहे थे; इसलिए तुरत ठंडे पानी में बिठाकर पकड़ रखना पड़ा। बाद में कुर्सी पर ही बाहर धूप में लाया गया। आज तो बाथ में मैं अकेली ही रही और बापू को चक्कर आ रहे थे, इसलिए बहुत डर लग रहा था। सुशीला बहन को संकेत कर रोका था, इसलिए उनकी सहायता से मैंने बापू का शरीर तत्काल ही पोंछ डाला।

२ बजे एनिमा तैयार कराया। उसे तैयार करने में १५-२० मिनट तो सहज लगते ही हैं, इतने में बापू नाराज हो गये; पर तुरत ही मानो अपने से भूल हो गयी हो, इस तरह कहने लगे : "मैं इतना अधीर कैसे हो सकता हूँ? अभी भी मुझमें इतनी खामी रह गयी है। यह मिट जायगी, तभी मैं हिन्दुस्तान के लोगों से आत्म-शुद्धि की अपेक्षा रख सकता हूँ। तब तक मैं उसकी अपेक्षा कैसे करूँ? इसका पता भी ऐसी परीक्षा याने अनशन करने से ही चलता है।" इतना कहते हुए वे थक गये।

मैंने कहा : "बापू, मेरी भी भूल थी न? आपका अनशन शुरू हुआ, तभी से मुझे रोज गरम पानी तो कम-से-कम सदा तैयार रखना ही चाहिए था। फिर चाहे वह काम में आये या न आये।" इस पर कहने लगे : "नहीं-नहीं, इस तरह व्यर्थ आग जलाने से मुझे उलटा अधिक दुःख ही होगा। तेरी गलती है ही नहीं, क्योंकि मुझे तुमसे आध घंटा पहले कहना चाहिए था या जब कहा, तब से तैयार होने तक धैर्य रखना चाहिए था।" मैं चुप हो गयी; क्योंकि हम एक वाक्य कहें, तो बापू को चार कहने पड़ते हैं और उनकी उतनी ही शक्ति क्षीण होती जाती है।

मनु के प्रति

एनिमा में मल काफी निकला। वापू को यह पसंद भी आया। लेकिन वहुत ही थक गये। वापू की हालत ऐसी हो गयी है कि उन्हें देखते-देखते कदाचित् ही किसी पाषाणहृदय मानव की आँखों में आँसू न आये। उसमें भी विशेषतः वाथ, एनिमा जैसे थकावट वढ़ानेवाले काम भी खास तौर पर वे मेरे द्वारा ही करवाते हैं। अतः उस समय तो वापू सफेद पूनी की तरह हो जाते हैं। उसमें भी मैं घवड़ा जाऊँ या मुझे रोना आ जाय, तो मेरी पूरी आफत ही समझिये। कलकत्ते के अनशन की अपेक्षा यहाँ काफी लोग होने पर भी न जाने क्यों, मुझे इस आखिरी कसौटी में घड़ी-घड़ी और पल-पल डर लगता है। कई वार सोचती हूँ कि कहीं मेरे नसीव में कलंक का टीका तो नहीं वदा है? वापू विस्तर पर लेटे रहते हैं, तव उनके लिए सभी काम आसान होते हैं, लेकिन जव वे उठते-वैठते हैं, तव उन्हें चक्कर आता है, कमजोरी मालूम पड़ती है और सफेद पड़ जाते हैं। फिर किसीको वुलाने भी नहीं देते और यही कहते हैं कि "राम को मेरी जरूरत होगी, तो वही रखेगा। मैं उसीके करवाये अनशन करता हूँ। इस यज्ञ में तेरे सिवा और कोई हिस्सेदार नहीं है" आदि।...वापू कहते ही रहते हैं। भगवान् इस मँझधार से नाव पार लगा दे, तो वस!

एनिमा के वाद विधान वावू और डॉक्टर गिल्डर साहव आये। वापू कहने लगे: "एनिमा नम्वर वन और एनिमा नम्वर टू आये।"

आज से वापू की तवीयत की वुलेटिन प्रकाशित हुआ करेगी। ४॥ वजे वापू ने प्रार्थना के लिए जो लिखवाया था, उसका हम लोगों ने अनुवाद किया। हम सभी प्रार्थना के लिए गये। वापू प्रार्थना-सभा में आये नहीं थे। घर से ही खाट पर लेटे-लेटे उन्होंने अत्यधिक थकी आवाज में रेडियो-माइक पर और रेकार्ड करने के लिए निम्नलिखित भाषण किया:

मृत्यु अपरिहार्य

"भाइयो और वहनो! मेरे लिए यह एक नया अनुभव है। मुझे इस तरह लोगों को सुनाने का कभी अवसर नहीं आया और न मैं चाहता ही था। मैं इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है, वहाँ जा नहीं सकता। इसलिए प्रार्थना में जो

लोग आये हैं, वहाँ तक आप लोगों तक, जिधर आप बैठे हैं—मेरी आवाज पहुँच सके, तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझे भी बड़ा आनन्द होगा। मैंने लोगों के सामने कहने के लिए जो तैयार किया है, उसे तो लिखवा दिया है। ऐसी हालत कल रहेगी या नहीं, मैं नहीं जानता।

"आप लोगों से मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हरएक आदमी दूसरे क्या करते हैं, इसे न देखे और स्वयं जितनी आत्मशुद्धि कर सके, करे। मुझे विश्वास है कि जनता बड़े परिमाण में आत्मशुद्धि कर लेगी, तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा, हिन्दुस्तान का कल्याण होगा और सम्भव है कि जो यह उपवास चल रहा है, उसे मैं जल्दी से छोड़ सकूँ। मेरी फिक्र कोई न करे, फिक्र अपने लिए ही की जाय। हम कहाँ तक आगे बढ़ रहे हैं और देश का कल्याण कहाँ तक हो सकता है, इसका ध्यान रखें। आखिर में सभी इन्सानों को मरना है। जिसका जन्म हुआ है, उसे मृत्यु से मुक्ति नहीं मिल सकती। ऐसी मृत्यु का भय ही क्या? और उसका शोक भी क्या करना? मैं समझता हूँ कि मृत्यु हम सबके लिए आनन्ददायक मित्र है। वह हमेशा धन्यवाद के लायक है, क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुःखों से हम एक बार तो बच ही जाते हैं।"

बापू इतने शब्द बोले। फिर सुशीला बहन ने बापू से लिखवाये हुए प्रवचन का अनुवाद पढ़ सुनाया। वह लिखित सन्देश इस प्रकार था:

पत्रकारों को उत्तर

"कल शाम की प्रार्थना के दो घण्टे बाद अखबारवालों ने मुझे सन्देश भेजा कि उन्हें मेरे भाषण के बारे में कुछ बातें पूछनी हैं। वे मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैंने दिनभर काम किया था, प्रार्थना के बाद भी काम में फँसा रहा; इसलिए थकान और कमजोरी के कारण उनसे मिलने की मेरी इच्छा नहीं हुई। मैंने प्यारेलालजी से कहा कि उनसे कहो कि वे मुझे माफ करें और जो सवाल पूछने हों, वे लिखकर कल सुबह ९ बजे के बाद मुझे दे दें। उन्होंने ऐसा ही किया है।"

पहला सवाल यह है कि "आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है, जब कि भारत के किसी हिस्से में कुछ झगड़ा हो ही नहीं रहा है!"

बापू: "लोग जबर्दस्ती मुसलमानों के घरों का कब्जा लेने की बाकायदा,

निश्चयपूर्वक कोशिश करें, क्या यह झगड़ा नहीं कहा जायगा ? यह झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि फौज को इच्छा न रहते हुए भी अश्रुगैस इस्तेमाल करनी पड़ी और भले ही हवा में हो, मगर कुछ गोलियाँ भी चलानी पड़ीं। तब कहीं लोग हटे। मेरे लिए यह सरासर बेवकूफी होती कि मैं मुसलमानों का ऐसे टेढ़ी तरह निकाला जाना आखिर तक देखता रहता। इसे मैं सुला-सुलाकर मारना कहता हूँ।"

सरदार के लिए अनशन ?

प्रश्न : "आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डर की और असुरक्षा की कहानी लेकर आपके पास आते हैं, तो आप उन्हें कोई जवाब नहीं दे सकते। उनकी शिकायत यह है कि सरदार, जिनके हाथों में यह विभाग है, मुसलमानों के खिलाफ हैं। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी हाँ में हाँ मिलाते थे, 'जी हुजूर' कहलाते थे। मगर अब ऐसी हालत नहीं रही। इससे लोगों के मन पर यह असर होता है कि आप सरदार का हृदय पलटाने के लिए अनशन कर रहे हैं। आपका अनशन गृह-विभाग की नीति की निन्दा करता है। अगर आप इस चीज को साफ करेंगे, तो अच्छा होगा।"

बापू : "मैं समझता हूँ कि मैं इस बात का साफ जवाब दे चुका हूँ। मैंने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है, वह तो मेरी कल्पना में भी नहीं आया। अगर मुझे पता होता कि इसका ऐसा अर्थ भी किया जा सकता है, तो मैं पहले ही इस चीज को साफ कर देता।

"कई मुसलमान दोस्तों ने शिकायत की थी कि सरदार का रुख मुसलमानों के खिलाफ है। मैंने कुछ दुःख से उनकी बात सुनी, मगर कोई सफाई पेश न की। अनशन शुरू होने के बाद मैंने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगा दी थी, वह चली गयी। इसलिए आलोचकों से कहा कि सरदार को मुझसे और पण्डित नेहरू से अलग करके तथा मुझे और नेहरू को खामख्वाह आसमान पर चढ़ाने की गलती करते हैं, इससे उन्हें फायदा नहीं पहुँच सकता। सरदार के बात करने के ढंग में एक तरह का अक्खड़पन है, जिससे कभी-कभी लोगों का दिल दुख जाता है। मगर सरदार का इरादा किसीको दुःखी करने का नहीं होता। उनका दिल बहुत बड़ा है, उसमें सबके लिए जगह है। सो मैंने जो कहा, उसका मतलब यह था कि अपने जीवनभर के वफादार

साथी को एक बेजा इलजाम से बरी कर दूँ। मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले यह न समझ बैठें कि मैं सरदार को अपना 'जी हुजूर' मानता हूँ। सरदार को प्रेम से मेरा 'जी हुजूर' कहा जाता था, इसलिए मैंने उनकी तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्तिशाली और मन के मजबूत हैं कि किसीके 'जी हुजूर' हो ही नहीं सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे, तब वे ऐसा कहने देते थे, क्योंकि जो कुछ मैं कहता था, वह अपने-आप उनके गले उतर जाता था, जो अपने क्षेत्र में बहुत बड़े थे।

सरदार के प्रति

"अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी में उन्होंने शासन चलाने में बहुत काबलियत दिखायी थी। मगर वे इतने नम्र थे कि उन्होंने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। उन्होंने इसका कारण मुझे बताया था कि जब मैं हिन्दुस्तान में आया और उन दिनों यहाँ जिस तरह का राज-काज चलता था, उसमें हिस्सा लेने का उनका मन नहीं होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले में आ पड़ी, तब उन्होंने देखा कि जिस अहिंसा को वे आज तक सफलतापूर्वक चला सके, अब नहीं चला सकते। मैंने कहा कि मैं समझ गया हूँ कि जिस चित्र को मैं और मेरे साथी 'अहिंसा' कहा करते थे; वह सच्ची अहिंसा नहीं थी। वह तो नकली चीज थी, जिसका नाम है, 'मन्द विरोध!' हाँ, किसीके द्वारा मन्द विरोध किसी काम की चीज हो सकती है? जरा सोचिये तो सही कि एक कमजोर आदमी जनता का प्रतिनिधि बने, तो वह अपने मालिकों की हँसी और बेइज्जती ही करवा सकता है। मैं जानता हूँ कि सरदार कभी उन्हें सौंपी हुई जिम्मेदारी को दगा नहीं दे सकते। वे उसका पतन बरदाश्त नहीं कर सकते।

इन्सान खुद जिम्मेदार!

"मैं उम्मीद करता हूँ कि यह सब सुनने के बाद कोई ऐसा खयाल नहीं करेगा कि मेरा अनशन गृह-विभाग की निन्दा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करता है, तो मैं उससे कहना चाहता हूँ कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने आपको नुकसान पहुँचाता है, मुझे या सरदार को नहीं। मैं जोरदार लफ्जों में कह चुका हूँ कि कोई बाहरी ताकत इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती, इन्सान को नीचे

गिरानेवाला इन्सान खुद ही वन सकता है। मैं जानता हूँ कि मेरे जवाव के साथ इस वाक्य का कोई ताल्लुक नहीं है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि हर मौके पर दोहराया जा सकता है।

"मैं साफ लफ्जों में कह चुका हूँ कि मेरा अनशन भारत के मुसलमानों के लिए है, इसलिए वह भारत के हिन्दू और सिखों तथा पाकिस्तान के मुसलमानों के सामने है। इस तरह यह अनशन पाकिस्तान की असलियत के खातिर भी है। जो विचार मैं पहले समझा चुका हूँ, उसे यहाँ थोड़े में दोहराने की कोशिश कर रहा हूँ।

"मैं यह आशा नहीं रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सान का फाका दोनों तरफ की असलियतों को सव तरह के खतरों से पूरी तरह वचाने की ताकत रखे। फाका सवकी आत्मशुद्धि के लिए है। उसकी पवित्रता के वारे में किसी तरह का शक करना गलत होगा।"

फाका : पागलपन छुड़ाने के लिए

प्रश्न : "आपका अनशन ऐसे वक्त शुरू हुआ है, जव कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-समिति वैठनेवाली है। साथ ही अभी कराची में फसाद हुआ है। हम नहीं जानते कि विदेश के अखवारों में इन वाकयात की तरफ कहाँ तक ध्यान दिया गया है। इसमें शक नहीं कि आपके अनशन के सामने ये वाकयात छोटे लगने लगे हैं। पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के पिछले कारनामों से हम समझ सकते हैं कि वे जरूर इस चीज का फायदा उठायेंगे और दुनिया से कहेंगे कि गांधीजी अपने हिन्दू अनुयायियों से—जिन्होंने हिन्दुस्तान में मुसलमानों की जिन्दगी आफत में डाल रखी है—पागलपन छुड़वाने के लिए अनशन कर रहे हैं। सारी दुनिया में सच्ची वात पहुँचने में तो देर लगेगी, इस दरमियान आपके अनशन का यह नतीजा आ सकता है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ पर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।"

वापू : "इस सवाल का लम्बा-चौड़ा जवाव देने की जरूरत थी। दुनिया की हुकूमतों और दुनिया के लोगों पर, जहाँ तक मैं मानता हूँ—यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि उपवास का असर अच्छा ही हुआ है। वाहर के लोग जो हिन्दुस्तान के वाकयातों को निष्पक्ष भाव से देख सकते हैं, मेरे फाके का उल्टा अर्थ नहीं लगायेंगे। फाका भारत और पाकिस्तान के रहनेवालों से पागलपन छुड़वाने के लिए है।

"अगर पाकिस्तान में मुसलमानों की अफसरियत सीधी तरह न चले, वहाँ के मर्द और औरतें शरीफ न बनें, तो भारत के मुसलमानों को बचाया नहीं जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बहन के सवाल पर से ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के मुसलमानों की आँखें खुल गयी हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे हैं।

"संयुक्त राष्ट्रसंघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करने में मदद देगा, ताकि वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का उचित पथ-प्रदर्शन कर सके।"

प्रार्थना के बाद लोगों को बापू का दर्शन करने की उत्कट इच्छा होना स्वाभाविक ही था। खाट बरामदे में रखी गयी। पहले बहनें और बाद में भाई लोग दर्शन करते गये। बापू इस समय सो गये थे। चेहरा अत्यन्त शान्त, तेजस्वी और दयनीय मालूम पड़ता था। मुट्ठीभर हड्डियों का यह मानव सिर्फ मानवता के सुख के लिए ही एकता की रट लगाने के निमित्त जूझ रहा है, फिर भी मानव नहीं समझता! थोड़ी देर में बापू जागे। सामने हाथ जोड़कर लेटे रहे। यह दृश्य भी अद्भुत रहा।

हम लोग खा-पीकर काकी के पास बैठे। सभी लिखते हैं कि रोज एक चिट्ठी सिर्फ बापू की तबीयत के बारे में ही लिखिये। लेकिन मन ही कहीं नहीं लगता और अभी तो दिल्ली का यह हाल है, मानो कुछ हो ही नहीं रहा है। कलकत्ते में तो अनशन के पहले ही दिन से सभी जाग्रत हो गये थे। जो न हो, वही थोड़ा है!

शारीरिक स्थिति और प्रवृत्ति

बापू ने रात २॥ बजे पेशाब की; लेटे-लेटे ही लिखा। ३॥ बजे दतवन और प्रार्थना की तैयारी। ४॥ बजे प्रार्थना; सादा गरम पानी ८ औंस; प्यारेलालजी को लिखवाया। ६॥ बजे सोये। ७। बजे जगे। ७-३५ बजे उठकर तकिया लगाकर बैठे। ७-४० बजे पेशाब की। ७-४२ बजे गरम पानी ८ औंस। अखबार सुने। ७-५५ पर घनश्यामदासजी बिरला के साथ बातें। ८-५ तक अनशन के बारे में। ८-३५ बजे पुनः उठ बैठे। उठते समय सहारा देना पड़ता है। ८-४० बजे पेशाब की। ८-४५ बजे मालिश की तैयारी। उस समय मालिश के टेबल पर बैठे-बैठे ८ औंस गरम पानी पिया और 'फूटबाथ' किया। राजकुमारी बहन आयी थीं। डॉ० जीवराज काका, डॉ० विधान बाबू और और डॉ० सुशीला बहन ने बापू की परीक्षा की। ९-३५ बजे चलकर बाथरूम में आये (मालिश के लिए चलते हुए

ही गये थे)। पाखाना या पेशाव नहीं हुआ। वाथ में चक्कर आने लगा। कुर्सी पर बैठे। १०-४० वजे बाथरूम से बाहर आये। वजन १०७ पौण्ड हुआ, ब्लड-प्रेशर ९८।१००; इस समय पंडितजी भी थे। वापू का वजन पण्डितजी ने ही किया। १०॥। वजे गरम सादा पानी ८ औंस। ११। वजे जवाहरलालजी गये। स्थानीय मौलाना लोग आये। मौलाना हिफ्ज़ुल रहमान, मौलाना हवीवुल रहमान, डॉ० जाफरी १८ मिनट रहे। ११-३३ वजे गये। ११-३५ वजे पण्डित सुन्दरलाल के साथ वार्ता। १२। वजे गोस्वामी गणेशदत्त। लेटे-लेटे ही तार सुने। इसी वीच लेटे-लेटे घी मलवाया। १२-२५ वजे उठ बैठे। सुशीला वहन को भाषण लिखवाया। तुरत ही वी० टी० कृष्णमाचारी, कस्तूरभाई, लालभाई और घनश्यामदासजी, ब्रजमोहनजी विरला आये। ये सभी सिर्फ वापू को देखने आये। १२॥। सोये और १-१० वजे जगे। १-३५ वजे गरम पानी ८ औंस। २॥। वजे एनिमा लिया। मेरे साथ वातें कीं। ३ वजे मिट्टी का प्रयोग किया और ४ वजे उसे उतारा। ४ वजे गरम पानी सादा ८ औंस। डॉ० विधानवावू, शंकररावजी, आचार्य जुगलकिशोरजी, खेर साहव, महाराज देवास, राजेन्द्र वावू, उनकी पत्नी और वच्चे, खुरशेद अहमद रुगर और उनकी पत्नी, स्विस मिनिस्टर, तोकिले और डॉ० गिल्डर साहव गये। डॉक्टर जीवराज काका वड़े कड़े चौकीदार हैं। इनकी आज्ञा पाने पर ही भीतर जाया जा सकता है और वे वातें करने की मनाही की शर्त करवाकर ही भीतर जाने देते थे।

वापू ५ वजे प्रार्थना में नहीं जा सके। लेटे-लेटे ही रेडियो पर वोले। सुशीला वहन ने वापू का सन्देश पढ़ सुनाया। फिर सभी भाई-बहन कतार वाँध शांति से वापू का दर्शन करते हुए लौटे। १५ मिनट सोये। ५-५० वजे गरम पानी ८ औंस पीया। शाहनवाज साहव आये। ६। वजे से ७-५५ तक सोये। ७ वजे देवदास काका और काकी आयीं। जयरामदासजी, राजकुमारी वहन, जवाहरलालजी, नियोगी और षण्मुखम् चेट्टी भी आये। ९-१० वजे तक मीटिंग हुई। ८ वजे सादा गरम पानी चार औंस पीया। ९॥। वजे पेशाव करने के वाद उठकर विस्तर तक गये।

कुल पानी ६८ औंस, पेशाव २८ औंस—इस तरह वापू की शारीरिक स्थिति है। पानी पीने के अनुपात से पेशाव नहीं होती, इससे सवको वहुत चिन्ता है।

बापू का वजन पहले साधारणतः १०८ पौण्ड के आसपास रहता था। लेकिन कलकत्ते के उपवास के बाद १११, ११२ तक भी हो जाता था। इसका कारण भी यही है कि गुर्दे में दोष होने से पानी पेट में भरा रहता है। ○ ○ ●

महायज्ञ का प्रभाव : १७ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

१६-१-'४८

बचपन के संस्मरण

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। बापू प्रार्थना के लिए एकदम अपने-आप ही उठ गये। प्रार्थना के बाद भी रोज की तरह ही वे भीतर के कमरे में अपनी बैठक में चलकर गये। बापू को ओढ़ाकर हम सब वहीं बैठ गये। बापू ने कहा : "आज मुन्नालाल (आश्रमवासी) प्रार्थना में क्यों नहीं आये ? क्या वे यहाँ नहीं सोये थे ? कल्याणम् (टाइपिस्ट) भी नहीं था। तो, क्या वह बहुत देर से सोया है ?"

...ने कहा कि "वह तो हमेशा देर से ही सोता है। कोई काम न हो, तो आखिर वह गुजराती ही लिखने बैठ जाता है।"

बापू ने कहा : "मुझे पता नहीं कि यह भी जवाहर जैसा बड़ा आदमी हो गया है। कलकत्ते में तो इन लड़कियों के साथ यह भी मेरे पास ही सोता था और वह मुझे अच्छा भी लगता था। अगर ३॥ बजे उठ जाता है, तो प्रार्थना में क्यों नहीं आता ? मैं तो अपने ही बारे में सोचता हूँ कि मुझमें कुछ ऐब होगा। नहीं तो अत्यन्त तीव्र इच्छा से यहाँ आये हैं, फिर भी प्रार्थना जैसे कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं होते, तो बात क्या है ?" बोलते-बोलते बापू थक गये। दो मिनट चुप रहे। फिर हम लोगों की ओर देखकर कहा : "आप लोग सो जाइये।" ...इस तरह सबकी चिन्ता करते ही रहते हैं।

७ बजे बापू जगे। जागकर अखबार सुना। लगभग एक घंटा सोये। अखबार के लिए एक तार भेजना था, पर वह रह गया। इस पर बापू नाराज हो गये। १५ मिनट तक बड़े दुःख के साथ कहने लगे : "इसमें मैं सूक्ष्म असत्य देखता हूँ। लेकिन

आप अकेले ऐसा करते हैं, यह कहना नहीं चाहता। सारी दुनिया ऐसा करती है। यह आपका ऐब निकालने के लिए नहीं कहता। मैंने भी ऐसे बहाने किये ही हैं बचपन में और इंग्लैण्ड में।" फिर अपनी माता को एकपत्नीव्रत और मांस न खाने के जो वचन दिये थे, उसके बारे में चर्चा की। अन्त में कहने लगे : "मैं बहुत ताजा हूँ, इसलिए इतना कहा। ईश्वर की कृपा है। अगर ऐसा ही रहा, तो मैं बहुत दिन बिता सकूँगा। इस बीच अगर लोग लड़ेंगे, तो मरना है और एक हो जायँगे, तो खाना है। 'एक होंगे' का मतलब यह है कि अगर पाकिस्तान से मुसलमान यहाँ आयें, तो हिन्दुस्तान द्वारा अत्यधिक मूर्खता बरतने के बावजूद वे उसे भूल जायँगे और यह कहने लगेंगे कि विभाजन तो हुआ सही, लेकिन ये लोग विभक्त जैसे कुछ भी दिखाई नहीं देते।"

बापू मालिश के लिए कुर्सी पर बैठकर ही गये। पैर नहीं धुलवाये। बापू की जाँच की गयी। कमजोरी तो बढ़ती ही जा रही है। ९॥। बजे बाथ में पहुँचे। बाथ में गिरे, तो सिर पर ठंढे पानी का टावेल रखा गया। अब से बाथ में हम दो-दो व्यक्ति साथ रहते हैं। पहले मैं और भाई साहब थे, फिर सुशीला बहन आयीं। बापू कह रहे थे कि कल जैसे चक्कर नहीं आते। सिर ठंढा रखने के कारण ही ऐसा हुआ हो। वजन किया, तो १०७ ही हुआ, क्योंकि अब पानी पेट में ही रह जाता है।

पचपन करोड़ देना तय

स्थानीय मुसलमान भाइयों ने बताया कि शहर की हालत सुधर रही है। बापू ने कहा : "जो कुछ करें, सोच-समझकर ही करें और वैसा ही कहें। मुझे फुसलाने के लिए कुछ भी न करें।" बापू यह भी कह रहे थे कि मुझे कल की अपेक्षा आज बहुत अच्छा लगता है।

यह भी खबर मिली कि मन्त्रिमण्डल ने पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया देना तय कर लिया है।

आज तो एनिमा की पहले से ही तैयारी कर रखी थी, जिससे बापू जब कहें, तभी तुरत वह दिया जा सके और उन्होंने ठीक २ बजे एनिमा लेने को कहा भी।

लगभग सारा दिन बापू के आसपास ही बीता है। ४ बजे हम लोग भाषण का अनुवाद करने के लिए गये। बिरलाजी ने कहा कि "आज के भाषण का सन्तोष-

जनक उत्तर नहीं मिल सकता। जो कुछ हो रहा है, सिर्फ बापू को खुश करने के लिए ही। मैं तो बापू से कहता ही हूँ कि मैं सिर्फ आपको खुश करने के लिए ही खादी पहनता हूँ। खादी में मेरी निष्ठा नहीं; अगर निष्ठा रखता, तो मिल क्यों चलाता ?"

शहर में विभिन्न स्थानों में सभाएँ हो रही हैं। आज र्थना के समय में और सुशीला बहन र्थना-प्रवचन का अनुवाद करती रहीं, इसलिए हम लोग प्रार्थना में पाँच मिनट देर से पहुँचे। प्रार्थना तो अन्य लोगों ने शुरू कर ही दी थी।

यज्ञ का स्पष्टीकरण

प्रार्थना के बाद बापू खाट पर लेटे ही लेटे बोले। वह र्थना-स्थल तक सुनायी पड़ता रहा। बापू ने निम्नलिखित भाषण किया :

"भाइयो और बहनो! मुझे आशा नहीं थी कि आज भी मैं बोल सकूँगा। लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाज में जितनी शक्ति थी, आज उससे ज्यादा शक्ति महसूस करता हूँ। इसका मतलब तो यही लगाया जायगा कि ईश्वर की बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझमें–जब-जब मैंने फाका किया है–इतनी शक्ति नहीं रहती; लेकिन आज तो है। मुझे उम्मीद है कि अगर आप सब लोग आत्मशुद्धि का यज्ञ करते रहेंगे, तो बोलने की मेरी शक्ति आखिर तक बनी रह सकती है। मैं इतना तो कहूँगा कि मुझे किसी प्रकार की जल्दी नहीं है। जल्दी करने से हमारा काम नहीं बनता। मैं परम शान्ति में हूँ। मैं नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा काम जब ठीक होगा, तभी सारे हिन्दुस्तान में ठीक होगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि अब इर्द-गिर्द में, सारे हिन्दुस्तान में और सारे पाकिस्तान में शान्ति नहीं हुई, तो मुझे जिन्दा रहने में दिलचस्पी नहीं है। यही इस यज्ञ का अर्थ है।"

बापू ने इतने शब्द कहे। आवाज बहुत ही क्षीण थी और एक-एक शब्द पर श्वास चढ़ रहा हो, ऐसा मालूम पड़ता था।

हिन्दुस्तान का कदम

बाद का भाषण सुशीला बहन ने पढ़ सुनाया। बापू ने इसे अंग्रेजी में लिखवाया था, जिसका यों अनुवाद है :

"किसी जिम्मेदार हुकूमत के लिए सोच-समझकर किये हुए अपने किसी फैसले को बदलना आसान नहीं होता। फिर भी हमारी हुकूमत ने—जो हर माने में जिम्मेदार हुकूमत है—सोच-समझकर और तेजी से अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है। उसे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और कराची से लेकर आसाम की हद तक सारे मुल्क को मुबारकबादी देनी चाहिए।

"मैं जानता हूँ कि दुनिया के सभी लोग कहेंगे कि ऐसा बड़ा काम हमारी हुकूमत जैसी बड़े दिलवाली हुकूमत ही कर सकती थी! इसमें मुसलमानों को सन्तुष्ट करने की बात नहीं है। यह तो अपने-आपको सन्तुष्ट करने की बात है। कोई भी हुकूमत, जो बहुत बड़ी जनता की प्रतिनिधि है, बेसमझ जनता से तालियाँ पिटवाने के लिए कोई कदम नहीं उठा सकती। जहाँ चारों तरफ पागलपन फैला हुआ हो, वहाँ आपके बड़े-से-बड़े नेता बहादुरी से अपना दिमाग ठंडा रखकर जो जहाज चला रहे हैं, उसे क्या वे डूबने से न बचायें?

"हमारी हुकूमत ने यह कदम क्यों उठाया? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवास से उनकी विचारधारा ही बदल गयी। उपवास के बिना वे, कानून उनसे जितना करवाता—उतना ही करानेवाले थे। मगर हिन्दुस्तान की हुकूमत का यह कदम सच्चे मानों में दोस्ती बढ़ाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तान की भी परीक्षा हो जायगी।

"नतीजा यह आना चाहिए कि न सिर्फ कश्मीर का, बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने मतभेद हैं, उन सबका बा-इज्जत आपस में फैसला हो जाय। आज की दुश्मनी की जगह दोस्ती ले ले। न्याय कानून से बढ़ जाता है।

"अंग्रेजी में एक घरेलू कहावत है कि जहाँ मामूली कानून काम नहीं देता, वहाँ न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नहीं हुआ, जब कानून और न्याय के लिए वहाँ अलग-अलग कचहरियाँ हुआ करती थीं।

"इस तरह देखा जाय, तो इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान की हुकूमत ने जो किया है, वह सब तरह से ठीक है। अगर मिसाल की जरूरत है, तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्ड का निर्णय नहीं, बल्कि सारे ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल का और दूसरी गोलमेज परिषद् के अधिकतर सदस्यों का

भी निर्णय था। मगर यरवदा के उपवास ने रातोरात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया है कि मैं भारत की हुकूमत को इस बड़े काम के लिए समझाऊँ।

मौत से भय नहीं

"मैं जानता हूँ कि जैसे-जैसे मेरा उपवास लम्बा होता जाता है, वैसे ही वैसे उन डॉक्टर लोगों की चिन्ता बढ़ती जाती है, जो स्वेच्छा से काफी त्याग करके मेरी देख-भाल करते हैं। मेरे गुर्दे ठीक तरह से काम नहीं करते। उन्हें इस चीज का खतरा नहीं है कि मैं आज मर जाऊँगा। मगर उपवास लम्बा चला, तो हमेशा के लिए शरीर की मशीन को जो नुकसान पहुँचेगा, उससे वे डरते हैं।

"मगर डॉक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हों, मैंने उनकी सलाह से उपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है। वह कभी गलती नहीं करता। वह सर्वशक्तिमान् है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीर से कुछ और काम लेना होगा, तो डॉक्टर लोग कुछ भी न कहें, वह मुझे बचा लेगा। मैं ईश्वर के हाथों में हूँ, इसलिए ऐसी आशा करता हूँ। आप विश्वास रखें कि मुझे न मौत का डर है और न अपंग होकर जिन्दा रहने का।

"मगर मुझे लगता है कि अगर देश को मेरा कुछ भी उपयोग है, तो डॉक्टरों की इस चेतावनी के परिणामस्वरूप लोगों को तेजी के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनत से आजादी पाने के बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग जिन पर दुश्मनी का शक होता है, उन पर भी विश्वास रखते हैं। वे अविश्वास को अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। अगर दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान और सिखों में ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बाकी हिस्सों में आग भभके, तब भी दिल्ली शान्त रहे, तो मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो जायगी।

दोस्ती जरूरी

"खुशकिस्मती से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—दोनों तरफ के लोग अपने-आप समझ गये हैं कि उपवास का अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशों में ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्म के लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरे के आ-जा सकें और रह सकें। आत्मशुद्धि के लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

"हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए दिल्ली पर वहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। भारत के रहनेवाले भी तो आखिर इन्सान हैं। हमारी हुकूमत ने लोगों के नाम से एक वहुत वड़ा उदार कदम उठाया है और उसे उठाते समय उसकी कीमत का खयाल तक नहीं किया। इसका जवाव पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो, तो रास्ते वहुत हैं। मगर क्या इरादा है?"

प्रार्थना के वाद वापू खाट पर लेटे हुए थे और कल के जैसे ही आज भी लोग कतार वाँध दर्शन कर लौटते रहे। वापू सी० एच० भाभा के साथ वातें कर रहे थे।

संखिया लूँ तो?

वापू को पेशाव नहीं होती, इसलिए मौलाना साहव ने जरा हिम्मत करके कहा कि "पानी के साथ ज़रा मोसम्बी का रस लें, तो?..."

"ऐसे में नहीं ले सकता। जरा मोसम्वी के रस के वदले संखिया लूँ, तो क्या होगा? सिर्फ खट्टे नीवू के सिवा कुछ भी नहीं लिया जा सकता। मैं तो कभी से समझ गया हूँ कि शरीर में कुछ दरार पड़ गयी है। इतना राम-नाम कच्चा नहीं है।"

विरलाजी कहने लगे: "दूसरे अनशनों की अपेक्षा इस वार आपकी तवीयत अच्छी लगती है। इसका कारण तो दिल्ली है।"

वापू ने कहा: "नहीं, राम-नाम है।"

आज वापू को पानी नहीं भाता। आज से उनका स्वास्थ्य चिन्ताजनक हो गया है।

हिन्दू, सिख वापू के पास आये, पर उनका असर वापू पर कुछ हुआ हो—ऐसा नहीं दीखता। जवाहरलालजी, जयप्रकाशजी, सुचिता वहन—सभी कहने लगे कि "वातावरण वदल गया है। वहुत-सी सभाएँ हो रही हैं।"

लोहियाजी से वापू ने कहा: "आप सभी सच्चे दिल से काम करें। मैं कोई इस तरह मर जानेवाला नहीं। लेकिन जो काम करें, ठोस होना चाहिए।"

रात ९ वजे वापू विस्तर तक चलते हुए पहुँचे। वापू की पेशाव की परीक्षा हर घंटे करते रहने की डॉक्टरों ने सलाह दी।

शारीरिक प्रवृत्ति

सुबह ३॥ बजे जगे। दतवन और प्रार्थना। ३-३५ बजे पेशाव। ४। बजे सादा गरम पानी आठ औंस। ५॥। बजे सोये। ···को चिट्ठी लिखायी। ७ बजे सोये और जगे भी। लेकिन ७। बजे ठीक-ठीक सोये। ८-१० बजे जागे। बातें कीं, बंगाली लिखा। ८॥। बजे मालिश के लिए गये। डॉक्टरों ने जाँच की। ब्लडप्रेशर १७०।१०० है। ९-४० बजे बाथरूम में नहाने के लिए पहुँचे। पाखाना नहीं हुआ। पेशाब हुई। गरम पानी का बाथ लिया। उस समय सिर पर ठंडे पानी का कपड़ा रखा। ठंडे पानी में बैठे। चक्कर नहीं आ रहे थे। १०॥ बजे बाथरूम से बाहर आये। वजन लिया गया, १०७ पौण्ड हुआ। १०-३५ बजे सादा गरम पानी आठ औंस। घनश्यामदासजी बिरला के साथ १० मिनट बातें। १०-४० बजे देशबंधु गुप्तजी। १०-५५ बजे राजेन्द्रलालजी आये। ११ बजे लेटे-लेटे ही अखबार पढ़ा। ११-५ बजे गोस्वामी गणेशदत्तजी, महाराजा धोलपुर, नाभा और पन्ना सिर्फ दर्शनार्थ आये। इस बीच १२ से १ बजे तक पैर में घी मलवाया। २-२० बजे डॉ० ढड्ढा ने 'कारडियो ग्राम' दिया। १२। बजे गरम सादा पानी आठ औंस। १२-३५ बजे मौलाना हिफ़्ज़ुल रहमान, अहमद सैय्यद, डॉ० जाफरी और एस० एस० अब्दुल्ला। १-४० बजे मिट्टी का प्रयोग, १-५५ बजे उसे उतारा। २ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। १-२० बजे जवाहरलालजी आये और १-५५ बजे लौटे। २ बजे मृदुला बहन १० मिनट। २-२० बजे एनिमा लिया, दस्त साफ हुआ। २-५० बजे मौलाना साहब, जयप्रकाशजी, प्रभावती बहन, होशियारी बहन (एक आश्रमवासी बहन)। ३॥। बजे सादा गरम पानी। ३॥ बजे सुशीला बहन को लेटे-लेटे लिखाया। ४-४० बजे गरम पानी। गरम और ठंढे पानी का सेंक पेट और गुर्दे पर, पेशाब लाने के लिए शंकरनजी ने प्रयत्न किया; लेकिन सफलता नहीं मिली। ५ बजे प्रार्थना, फिर बापू बाहर से भीतर आये। प्रार्थना लेटे हुए सुन सकें, इसकी व्यवस्था की गयी थी। ५-५० बजे भाभा के साथ १० मिनट। ६ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। ६-५ बजे से गोस्वामी गणेशदत्तजी और पंजाब-दिल्ली के ३५ भाइयों के साथ १५ मिनट बातें। ६-२० जवाहरलालजी, जयरामदासजी, राजकुमारी बहन। १५ मिनट जवाहरलालजी के साथ, १० मिनट राजकुमारी बहन और उसके बाद खेर साहब और महाराज फरीदकोट।

७-१० बजे लेटे। ८-१० बजे गरम सादा पानी आठ औंस, 'साइस्ट्रेड' की एक पुड़िया १० ग्रेन की ली। ८ बजे शंकररावजी, राममनोहर लोहिया। ८-१० बजे सुचिता बहन और शाहनवाज़ साहब। ९ बजे बिस्तर पर लेटे। तेल मलवाया। इस तरह दिन तो बीता।

फिर भी तबीयत तो अच्छी है ही नहीं, हृदय भी बिगड़ने लगा था। कदाचित् आज रात से खतरनाक हालत शुरू हो जाय, तो कुछ कहा नहीं जा सकता। प्रभु को जैसा मंजूर होगा, वैसा ही होगा!

सिख-प्रतिनिधि-मण्डल

७ बजे शाम को सिखों का जो प्रतिनिधि-मण्डल लेकर गोस्वामी गणेशदत्तजी आये थे, उनके साथ निम्नलिखित बातें हुईं। गोस्वामीजी ने कहा: "जो दो दिनों में वातावरण में फर्क हो गया है, वह केवल आपकी तपश्चर्या है। ये सब आपकी सेवा में हाजिर हैं। सबका कहना है कि हम वाणी और कर्म से ईश्वर को साक्षी करके कहते हैं कि हम मिलकर रहेंगे, किसी प्रकार की अशान्ति नहीं होने देंगे। करोलबाग के आर० एस० एस० के नेता भी आये हुए हैं। अब आप व्रत पूर्ण कीजिये।"

बापू: "आप कहते हैं, वह लिख दें और दस्तखत दे दें, इतना ही कहूँगा।"

आत्मासिंहजी (सिख): "हमारी खुशकिस्मती है कि आपका जन्म हमारे यहाँ हुआ है। अगर हमारे मुल्क में कुछ भी हो जाय और हमें अपनी जिन्दगी भी देनी पड़े, तो भी इस कलंक को नहीं लगने देंगे। जो सेवा आप माँगेंगे, हम देंगे।"

बापू: "मुझसे कहते हो कि छोड़ो, लेकिन एकाएक यह व्रत नहीं छोड़ूँगा। बहस करना नहीं चाहता। इस तरह सब लोग आते ही रहते हैं। देखता हूँ, आपको धीरज रखना है। ईश्वर मुझे बचाना चाहेगा, तो कोई नहीं उठा सकता। मुझे अभी असर नहीं होता कि अभी छोड़ूँ। मैं पानी तो खाता ही हूँ। पानी की इतनी बरदाश्त करें, तो बड़ा खुराक है। मैं शांति से पड़ा हूँ। अभी ज्यादा बहस करना नहीं चाहता।"

०००

मृत्युशय्या के वचन : १८ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१७-१-'४८

व्यर्थ न बैठें !

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना से पहले दतवन आदि तो रोज की तरह ही हुए। प्रार्थना के बाद बापू चलकर ही भीतर आये। वे कह रहे थे: "आज तो कल से भी अधिक शक्ति मालूम पड़ रही है। आप लोगों की अपेक्षा कितना सारा खाता हूँ ? पानी में भी एक तरह का खुराक ही रहता है।"

अन्दर शंकरनजी, होशियारी बहन और मुन्नालाल भाई बैठे थे। ये सब तनकर बैठे थे, इसलिए बापू कहने लगे: "लगता है, तीनों महर्षि बैठे हैं।" होशियारी बहन से कहने लगे: "कभी भी व्यर्थ नहीं बैठना चाहिए। आखिर हाथ तो हिलाना ही चाहिए।"

बिरलाजी को आशीर्वचन

बापू ने हम लोगों से सोने के लिए कहा, क्योंकि रात में जागना पड़ता है। वे सुबह खुशमिजाज ही थे। रिचर्ड को पत्र लिखवाया और फिर सो गये। फिर ८ बजे घनश्यामदासजी आये। उनके साथ स्फूर्ति के साथ बातें कीं।

घनश्यामदासजी: "मुझे बंबई जाना है। लेकिन जैसे यमराज ने सावित्री को आशीर्वाद दिया कि 'पुत्रवती भव', वैसे ही आप भी मुझे यह आशीर्वाद दीजिये कि 'तुम्हारी वाणी सच्ची हो'।"

बापू: "सर्वथा निर्दोष तो ईश्वर ही हो सकता है। और उपवासों में तो लगता था कि कब छूटें। कलकत्ते में भी कुछ ऐसा हो था, फिर भी मैं निश्चल आदमी हूँ, सो वैसा करता तो नहीं। मगर ऐसा लगता था कि यह आदमी आया, कुछ खबर लाया होगा, तो उपवास छूट सकता है। लेकिन इस वक्त ऐसा नहीं लगता। छूटेगा, तो अच्छा लगेगा, आखिर उपवास करने में कुछ मजा तो है नहीं। पर मन में यह नहीं होता कि चलो, घनश्यामदास आया है, उपवास छूटने की कुछ बातें

लाया है क्या ? मृदुला आयी थी और पूछती थी कि 'पंजाब में क्या करूँ ?'' मैंने कहा, वहाँ सबसे कहो कि इस तरह यह उपवास छूट नहीं सकता। सबको समझा दो कि हम अच्छे रहेंगे, तो बाकी सब अच्छा हो जायगा। दिल्ली को काफी साफ होने की जरूरत है। दिल्ली में कुछ (पुलिस का बन्दोबस्त) करना ही न पड़े, तो बड़ा आसान हो जायगा। आज हिन्द का कारोबार सूख गया है। मुझे अटूट धैर्य है। काम भी काफी कर लेता हूँ। अभी-अभी 'हरिजन' के लिए लिखवाया।''

घनश्यामदासजी : ''रंधावा (आई० जी० पी०) से कल बातें हुईं। उन्होंने कहा कि कल से शहर का वातावरण काफी बदल गया है।''

बापू : ''रंधावा से कहो कि वह बिना पक्षपात से काम ले, तो बहुत ऊँचा उठेगा। सबको शक है कि वह पक्षपात से काम लेता है। यह बात सच्ची है या नहीं, मैं नहीं कह सकता।''

बिरलाजी : ''आज किसीको भी निष्पक्ष कहना कठिन ही है। मेरे दिल की भी यही हालत है। इतना दर्द हुआ है, पाकिस्तानवाले इतनी गालियाँ देते हैं कि कानों में से कीड़े निकल पड़ें। उन पर से लोगों का विश्वास ही उठ गया है। गुस्से में कुछ विचार ही नहीं सूझता।''

बापू : ''तो क्या पंजाब में जो होता है, वह निष्पक्ष है ?''

बिरलाजी : ''कुर्बान अली का आज का······निष्पक्षपात है। अपने भले के लिए भी जातिवाद बुरा है। सोचने पर सब कुछ समझ में आता है, गुस्से में नहीं।''

बापू : ''तो ठीक है। आपको भी करना चाहिए। उपवास बुरा है, पर परिणाम अच्छा आ रहा है। मैं इसे छोड़ दूँ, तो यह परिणाम यहीं रुक जायगा।''

बिरलाजी : ''मैं तो अपने मन की बातें कहता हूँ। यह बीमार मन की एक स्थिति है। हम ऐसे ही चलें, तो कामयाब हो ही सकते हैं। यह सफाई हमें आगे बढ़ाती है।''

बापू : ''वह भी तभी हो सकता है, जब मेरी अपनी काफी सफाई हुई हो।''

बिरलाजी : ''वह भी तभी, जब शरीर होता है।''

बापू : ''ऐसा लगता है कि अभी शरीर को रहना है। डॉक्टरों की दृष्टि में पेशाब कम होना और नींद का बढ़ जाना अच्छा नहीं है। फिर बिलकुल न सोऊँ,

तो वह भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। मगर मैं भगवान् पर कितना भरोसा रखता हूँ! अगर हृदय से नाम लेता हूँगा, तो गुर्दे का कार्य अपने-आप सुधर जायगा।"

विरलाजी : "मेरा दिल तो यहीं पड़ा है। यहीं रहना भी चाहिए। कल श्यामाप्रसाद ने कहा, तो यह विचार हुआ कि जाऊँ—वादा किया था, इसलिए और सरदार का चेहरा—उस दृढ़ आदमी का चेहरा—दीन हो गया, इसलिए उन्होंने भी फोन से कहा कि आ सकते हो, तो आ जाओ। दुःख तो भरा ही था! कहा, 'अभी भी उपवास क्यों चलता है?' मैंने कहा : 'उपवास लंबा नहीं चलेगा, ऐसा मानता हूँ, तो भी यहाँ रहना अच्छा लगता है'।"

विचार-शुद्धि बड़ा काम

बापू : "यही एक चीज थी, जिसका पाकिस्तान गलत फायदा उठा सकता था। ५५ करोड़ देने से भारत की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी है। अब उन्हें लड़ना हो, तो एक मासूम बच्चा भी समझेगा कि वे भारत के पैसे से लड़ रहे हैं। आखिर कितने दिन लड़ेंगे?

"तुम जाओ, यहाँ ब्रजमोहन तो है ही। काम चलता रहेगा। जहाँ जाओ, वहाँ शुद्धि का काम तो होता ही है। नहीं तो विचार करने की बात है ही नहीं। विचार-शुद्धि भी बड़ा काम है।"

विरलाजी : "काम तो ईश्वर करता ही है। वह अपने-आप होता रहता है। मगर मनुष्य को लगता है कि मैं भी कुछ करता हूँ।"

विरलाजी ने नचिकेता और यमराज की कथा बतलाते हुए कहा कि "नचिकेता उसके दरवाजे पर अनशन कर रहा था, तो उससे यमराज भी घबरा उठे। फिर एक महात्मा जिसके यहाँ अनशन करते हों, बतलाइये, उसे कितनी चिन्ता होगी?"

इसी तरह बातचीत चल रही थी कि राजकुमारी बहन आयीं, जिससे बातें बंद हो गयीं। मालिश के बीच विधान बाबू, डॉ० जीवराज काका, डॉ० कर्नल ढड्ढा वगैरह ने बापू की जाँच की। उनका कहना था कि "बापू सिर्फ दो औंस संतरे का रस लें, तो काफी है। अब शहर की हालत भी सुधर गयी है।"

बापू ने कहा : "ऐसा करूँ, तो मुझे २१ दिन बिताने की इच्छा है।" सुशीला बहन ने इनकार किया। अगर रस लेने के लिए लोग विवश करें, तो कदाचित् बापू आमरण अनशन ही शुरू न कर दें।

१०॥ बजे बापू बाथ में आये। मैंने और भाई साहब ने उन्हें स्नान कराया। बाथ में सुशीला बहन ने (बिरला-हाउस में रिचर्ड नामक एक यूरोपियन रोगी को टाइफाइड होने पर उन्हें बापू की सेवा-शुश्रूषा में जिस कमरे में रखा था, वह) एक कमरा बिरलाजी के पास से माँगने की बापू से आज्ञा चाही। बापू ने कहा: "हम तो इतने हिस्से से आगे बढ़ ही नहीं सकते।" १०॥। बजे बापू धूप में आये। सुशीला बहन कार्यव्यस्तता के कारण कभी-कभी पेशाब मापना या जाँचना भूल जातीं। लेकिन बापू उन्हें समय-समय पर याद दिला देते थे।

शुभ लक्षण

स्थानीय मौलाना लोग आये। उन्होंने कहा: "शहर की हालत बहुत ही सुधर गयी है। यहाँ के जो मुसलमान भागकर कराची चले गये हैं, उनका तार आया है कि हम प्रार्थना करते हैं, आप सफल हों। हम लोग वहाँ आने के लिए छटपटा रहे हैं। कब आयें?"

बापू ने कहा: "इसे बहुत अच्छा लक्षण माना जा सकता है। अगर ये लोग दिल्ली आकर रह सकें, तो मैं उसे सच्ची परीक्षा समझूँगा।"

१२ बजे मिट्टी का प्रयोग किया। फिर एनिमा की तैयारी की गयी। बापू ने आज एनिमा लिया। आज अधिक मल नहीं निकला। गर्म और ठंडे पानी से सेंक किया गया। मौलाना साहब आये थे। वे कह रहे थे कि आज शाम तक अनशन छुड़वाना है। शहर की हालत काफी सुधर गयी है। बापू ने सात शर्तें रखी हैं। इन पर सभी प्रतिनिधि हस्ताक्षर कर दें, तभी अनशन टूट सकता है। बापू को आज अत्यन्त बेचैनी है।

काँटों का ताज

सब्जी मण्डी के व्यापारी आये। उन्होंने कहा: "हम लोगों ने अपनी दूकानों पर से मुसलमानों का फल लेना रुकवा दिया था। किन्तु आज से हम लोग अपनी दूकानें सभी के लिए खोल दे रहे हैं, जो चाहे, वह आकर ले जाय।"

इसी समय एक करुण दृश्य उपस्थित हो गया। क्षणभर मुझे अपने प्रति तिरस्कार हुआ कि अगर मैं चित्रकार या फोटोग्राफर होती तो? उस समय जवाहरलालजी आये हुए थे। बापू की (मन और शरीर की) बेचैनी देख इनकी

आँखों से आँसुओं की धाराएँ वह पड़ीं। चुपके से दूसरी ओर मुँह करके उन्होंने उन्हें छिपा लिया—पोंछ लिया। उनकी छत्रछाया में आजाद हिंद में आजादी लानेवाले की यह दशा देखना उनके लिए असह्य ही हो उठा होगा। वातावरण इतना करुण था कि उसके लिखने के लिए शब्द ही नहीं हैं। 'काँटों का ताज' कहा जाता है, वह सचमुच ठीक ही है।

मन सर्वोपरि

चार बजे बापू ने भाषण लिखवाना शुरू किया। ४॥ बजे अन्दर आये। राजेन्द्रबाबू आये। उनके साथ निम्नलिखित बातें हुईं: "जितने प्रतिनिधि हों, मुझे सही करके दें। मैं उन्हें घोषित कर दूँगा। जबानी बात मैं निकम्मी समझता हूँ, लिखी हुई चीज को ही मानता हूँ। मान लीजिये कि वहाँ के आश्रित लोग आयें और बीच में ही मार डाले जायँ तो? अगर वे दिल्ली आ सकते हैं, तो बाहर क्यों न जायँ? आज जब मुसलमानों को टिकट नहीं दिया जाता, इससे ज्यादा मैं क्या समझूँ? पाकिस्तान में पागलपन हो रहा है, तो क्या हम भी पागल बनें? मुझे मरना होगा, तो मरूँगा। मन की सादी स्थिति डॉक्टर नहीं जान सकते। मन सर्वोपरि है। मेरी परवाह किसीको नहीं करनी चाहिए। हम सही करते हैं या नहीं, इतना ही देखना है। हम शुद्धि करते हैं या नहीं? फाका का अर्थ हम जाग्रत् बनें, यही है। अवश्य ही अब डॉ० विधान घबरा गया है सही। उसने मौलाना को कह दिया है। मगर मैं नहीं चाहता कि कोई अपने को धोखे में डालकर फाका छुड़वाये। अगर ऐसा होगा, तो हालत और भी बिगड़ जायगी।"

इसके बाद हम लोगों ने प्रार्थना-प्रवचन का अनुवाद किया।

५ बजे प्रार्थना हुई। इस बीच सभी नेता विभिन्न दलों को समझा रहे हैं, सभाएँ हो रही हैं। बेचारे राजेन्द्रबाबू कांग्रेस के प्रधान हैं, इसलिए उन्हें इतना सारा काम और चिन्ता रहती है कि खुद उनकी तबीयत खराब होने लगी है। फिर भी वे पू० बापू के अनन्य भक्त हैं। अतः चूँकि बापू ने दलील करने के लिए मना कर दिया है, इसलिए अब वे स्वयं काम कर दिखलायेंगे, तभी चैन लेंगे।

पाँचवाँ दिन

पाँच बजे बापू ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही प्रार्थना सुनी। फिर स्वयं वहीं ही धीमी आवाज में तीन मिनट तक निम्नलिखित भाषण किया:

"भाइयो और बहनो ! ईश्वर की कृपा है कि आज उपवास का पाँचवाँ दिन है, तो भी मैं बगैर परिश्रम के आपको दो शब्द कह सकता हूँ। जो मुझे कहना है, वह तो लिखवा दिया है। उसे प्रार्थना-सभा में सुशीला बहन सुना देंगी।

"मुझे इतना ही कहना है कि जो भी कुछ आप करें, उसमें परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर वह नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि इसे कैसे जिन्दा रखा जाय, तो बड़ी भारी गलती करेंगे। मुझे जिन्दा रखना या मारना किसीके हाथ में नहीं है। वह सिर्फ ईश्वर के हाथ में है। इसमें मुझे शक नहीं और किसीको भी नहीं होना चाहिए।

अहिंसा के नियम

"इस उपवास का मतलब यह है कि अन्तःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो—ऐसा करें। तभी सबकी भलाई है। मुझ पर दया करके आप कुछ न कीजिये। जितने दिन उपवास के काट सकता हूँ, काटूँगा। ईश्वर की इच्छा होगी, तो मर जाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मेरे बहुत-से मित्र दुःखी हैं और सभी कहते हैं कि आज ही उपवास क्यों न छोड़ा जाय? किन्तु आज मेरे पास ऐसा कारण नहीं है। वह मिल जाय, तो न छोड़ने का आग्रह न करूँगा। अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए। अभिमान नहीं करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसमें अभिमान नहीं है, शुद्ध प्यार से कह रहा हूँ। ऐसा जो जानता है, वही रहनेवाला है।"

कहते-कहते जो थकान बढ़ रही थी, वह भी माइक पर स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी। बाद का लिखित सन्देश इस प्रकार है :

आध्यात्मिक उपवास का लक्ष्य

"मैं पहले भी कह चुका हूँ और आज फिर दोहराता हूँ कि फाके के दबाव से कई बातें कही जाती हैं और फाका खतम होने के बाद मिट भी जाती हैं। अगर ऐसा कुछ हुआ, तो बहुत बुरी बात होगी। ऐसा कभी होना ही नहीं चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है और वह है, दिल की सफाई। मगर दिल की सफाई ईमानदारी से की जाय, तो जिस कारण से वह की गयी, उसके मिट जाने पर भी सफाई नहीं मिटती। किसी प्रियजन के आगमन के उपलक्ष्य में कमरे

में सफेदी की जाती है, तो उसके आकर चले जाने पर भी वह मिट नहीं जाती। यह तो जड़ वस्तु की बात है। कुछ अर्से बाद सफेदी मिटने लगती है और फिर से उसे करवाना पड़ता है। लेकिन दिल की सफाई तो एक दफा हो गयी, तो मरने तक कायम रहती है। फाके का दूसरा कोई योग्य मकसद नहीं हो सकता।

दिल की बात

"राजा-महाराजा और आम लोगों के तारों का ढेर बढ़ता जा रहा है। पाकिस्तान से भी तार आ रहे हैं। वे अच्छे हैं, मगर पाकिस्तान के दोस्त और शुभचिन्तक की हैसियत से मैं पाकिस्तान के रहनेवालों और जिन्हें पाकिस्तान का भविष्य बनाना है, उनसे कहना चाहता हूँ कि अगर उनका विवेक जाग्रत न हुआ और अगर वे पाकिस्तान के गुनाह को कबूल नहीं करते, तो वे पाकिस्तान को कभी कायम नहीं रख सकेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के दोनों टुकड़े अपनी-अपनी खुशी से फिर से एक हों। मगर मैं यह साफ करना चाहता हूँ कि जबर्दस्ती से उसे मिटाने का मुझे खयाल तक नहीं आ सकता। मैं उम्मीद रखता हूँ कि मृत्युशय्या पर पड़े मेरे ये वचन किसीको नहीं चुभेंगे।

"मैं उम्मीद रखता हूँ कि सब पाकिस्तानी समझ जायेंगे कि अगर कमजोरी की वजह से या उनका दिल दुखाने के डर से मैं उनके सामने अपने दिल की सच्ची बातें न रखूँ, तो मैं अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित हो जाऊँगा। अगर मेरे हिसाब में कुछ गल्ती हो, तो मुझे बताना चाहिए। मैं वादा करता हूँ कि अगर मैं गलत समझा होऊँ, तो अपना वचन वापस ले लूँगा। मगर जहाँ तक मैं जानता हूँ, पाकिस्तान के गुनाह के बारे में दो विचार हो ही नहीं सकते।

अन्तरात्मा की आवाज

"मेरे उपवास को किसी तरह भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अन्तरात्मा की जबर्दस्त आवाज के जवाब में 'धर्म' समझकर किया गया है। महान् यातना भुगतने के बाद मैंने फाका करने का फैसला किया है। दिल्ली के मुसलमान भाई इस बात के साक्षी हैं। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिनभर की रिपोर्ट देने आते हैं। इस पवित्र मौके पर मेरा उपवास छुड़वाने के हेतु मुझे धोखा देकर राजा-महाराजा, हिन्दू-सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेंगे और न

हिन्दुस्तान की। वे सब समझ लें कि मैं कभी इतना खुश नहीं रहता, जितना कि आत्मा के लिए उपवास करते वक्त रहता हूँ। इस फाके में मुझे हमेशा से ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसीको इसमें विघ्न डालने की जरूरत नहीं है। विघ्न इसी शर्त पर डाला जा सकता है कि ईमानदारी से आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझकर शैतान की तरफ से अपना मुँह फेर लिया है और आप ईश्वर की तरफ चल पड़े हैं।"

प्रार्थना के बाद बहनें तो शान्ति से बापू के दर्शन करके लौट रही थीं, लेकिन भाइयों ने धूम मचानी शुरू कर दी। लोग एक के ऊपर एक गिर रहे थे। आज तो बेहद भीड़ थी। सभीने स्वयंसेवकों का काम किया, बहनों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़कर घेरा डाला और हम लोग खड़े रहे।

हिन्दू-मुसलिम भाई-भाई !

शान्ति होने के बाद बापू को बरामदे से कमरे में लाया गया। सुशीला बहन ने कहा कि बापू को पेशाब नहीं होती, इसलिए कैथिंग की जाय। बापू को यह पसन्द नहीं पड़ा। उन्होंने कहा : "आप लोगों का प्रेम मैं जानता हूँ। जो होना होगा, होगा। मुझे पड़ा रहने दो।" सुशीला बहन ने कहा कि "लेकिन यह भी एक तरह का शक ही है।"

बापू : "ऐसा करते-करते ही मानव गिरता है। मुझे तो मिट्टी और बाथ भी अधिक मालूम पड़ते हैं। मैं तो इन्हें भी छोड़ना चाहता हूँ।"

शाम को लगभग एक लाख आदमियों की भीड़ आयी, जो ये नारे लगा रही थी : 'हिन्दू-मुसलिम भाई-भाई, गांधीजी जिन्दाबाद !' हम लोग बाहर देखने के लिए गये। वहाँ दो पार्टियाँ बन गयी थीं। एक 'भाई-भाई' की थी, तो दूसरी 'मारो, काटो' कहती रही। झगड़ा हुआ। हम लोग बरामदे में आ गये। पंडितजी ने अपनी लाक्षणिक शैली में रसभरा और चुभता हुआ भाषण दिया।

सात बजे लार्ड माउण्टबैटन लेडी माउण्टबैटन के साथ आये। उन्हें देख बापू ने बड़ी कठिनाई से हाथ जोड़कर उनका स्वागत किया और अत्यन्त धीमे स्वर में बोले : "तुम्हें मेरे पास लाने के लिए उपवास आवश्यक है (It takes a fast to bring you to me.)।"

उनके साथ वातचीत ठीक हुई, लेकिन अगर वापू की सात शर्तें मंजूर हों, तभी वे उपवास छोड़ने को राजी हैं।

सभी जान दे देंगे

आज तो वापू की बेचैनी बढ़ती ही जा रही है। उन्होंने भजन गाने के लिए कहा। 'श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन' और गीता का १२ वाँ अध्याय भी सुनने की इच्छा व्यक्त की। इसलिए वह भी सुनाया गया। यह सब हो जाने के वाद दो मिनट जयरामदासजी के साथ वातें कीं।

९ वजे विस्तर पर लेटे। तेल की मालिश हुई। आज राजेन्द्रवावू वहाँ बड़ी मेहनत से लोगों को समझा रहे हैं। वापू ने हम लोगों को सूचित कर दिया था कि राजेन्द्रवावू के यहाँ से कुछ भी सन्देश आये, तो चाहे जब मुझे जगाओ। प्यारेलालजी आये, तो वापू गाढ़ निद्रा में थे। उन्होंने कहा : "सभीने वापू की सात शर्तों पर हस्ताक्षर करना मंजूर कर लिया है और अगर कुछ हुआ, तो सभी अपनी जान दे देंगे।" लेकिन वापू ने अभी धैर्य रखने के लिए कहा और सो गये।

आज के वातावरण से ऐसा लगता है कि अव वापू का अनशन अधिक लम्बा न होगा। कदाचित् कल सुवह तक अनशन छूट जाय। लेकिन अव तो घड़ी-घड़ी, पल-पल जी घवड़ा रहा है।

आज वापू ने नींद में ही वेचैन होते हुए कहा : "चलो, अव विस्तर पर लेटें।" रात में घड़ी-घड़ी थूकना पड़ता था।

शारीरिक स्थिति तथा प्रवृत्ति

३॥ वजे वापू जग गये। दतवन किया, पेशाव की। प्रार्थना और फिर सुशीला वहन को लिखवाया। आश्रम के पत्र पढ़े। ४॥ वजे गरम सादा पानी आठ औंस। ५-२४ वजे सोये। ६-५५ वजे जगे। लेटे-लेटे ही मृदुला वहन के साथ वातें कीं। ७-२० वजे उठे। नाक साफ की। ७-२५ वजे गरम सादा पानी आठ औंस। फिर विशेन भाई को लिखवाना शुरू किया। ७॥ वजे तक लिखवाया। ७-४५ के वाद सोये और ८-२५ वजे जागे। घनश्यामदासजी, व्रजमोहनजी विरला के साथ वातें कीं। ८-५५ वजे राजकुमारी वहन आयीं। ९ वजे गरम सादा पानी आठ औंस। फिर मालिश के लिए उठे। ९। वजे विधान वावू, डॉ० जीवराज काका, डॉ० कर्नल

डड्डा और सुशीला बहन ने जाँच की। ब्लडप्रेशर १८४।१०४ था। १०-३५ बजे मालिश के बाद बाथ में गये। ११-५ बजे स्नान पूरा हुआ। वजन लिया गया, १०७ पौण्ड हुआ। ११-७ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। ११-२७ बजे नवाब सद्यमिन और नवाब सिदाक्तअली खाँ आये। ११-३८ बजे सर पद्मसिंहजी आये। ११॥। बजे मिट्टी का प्रयोग, घी मलवाया। १२॥ बजे मिट्टी उतारी। बहावलपुर की बहनों, राममनोहर लोहिया और वासुदेव खन्ना एक हजार हस्ताक्षर लेकर आये। १॥। बजे गरम सादा पानी आठ औंस। २-२८ बजे पेशाब की। २॥। बजे जाँच के लिए रक्त लिया गया। २-५० बजे मौलाना साहब, बारदोलोई, विरंदिवी आर्यी। ३ बजे गरम पानी आठ औंस 'साईट्रेड' के साथ। ३-५ बजे जवाहरलालजी आये। ३॥ बजे पेशाब के लिए उठे। ४-४० बजे भीतर आकर सो गये। ४-५० बजे गरम पानी आठ औंस। ५ बजे लेटे-लेटे ही बोले। आवाज कमजोर थी। ५-५० बजे गरम पानी सादा आठ औंस—दो चार बूँद नीबू के साथ। इसके बाद राजेन्द्र बाबू, शंकररावजी, सत्यनारायण सिनहा आये। पेशाब की। ८-३५ बजे गरम पानी नीबू के बूँदों के साथ आठ औंस। उससे पहले आर्थर मूर, किदवई, उनकी भाभी, लड़कियाँ वगैरह आयी थीं। ६-५५ बजे रंधावा आये। ६॥ बजे जवाहरलालजी आये। ७-५ बजे लार्ड और लेडी माउण्टबैटन आये। ८-३५ बजे भजन गवाया और गीता के १२वें अध्याय का पाठ कराया। ९ बजे बिस्तर पर पहुँचे। तेल मलवाया। बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी। ● ● ●

क्रोध नहीं, मोह नहीं! : १९ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

१८-१-'४८

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना के बाद बापू बिस्तर से कमरे तक चलकर ही गये। अन्दर आकर गरम पानी लिया और लिखवाना शुरू किया, जो निम्नलिखित है। बीच-बीच में थक जाते थे, इसलिए आँखें बन्द कर पड़े रहते थे। लेख का शीर्षक है—'क्रोध नहीं, मोह नहीं!'

'हरिजन'

एक भाई लिखते हैं : "उर्दू हरिजन के बारे में आपका लेख देखा। यदि वह आपका लेख न होता, तो मैं यही समझता कि किसीने बहुत ही क्रोध में लिखा है। जीवनजी भाई ने जो कुछ लिखा है, उससे सिर्फ यही साबित होता है कि लोगों को उर्दू लिपि में हरिजन की जरूरत नहीं है। पर आप उसके कारण 'नागरी हरिजन सेवक' को क्यों बन्द करें ? क्या आप समझते हैं कि पहले 'हिन्दी नवजीवन' निकालते थे (उर्दू नहीं), तो कोई गुनाह करते थे ? उसके बाद भी 'नागरी हरिजन सेवक' निकलता रहा। पर आपने 'उर्दू हरिजन' उस समय नहीं निकाला।

"अगर आपने 'उर्दू' और 'नागरी' 'हरिजन' केवल हिन्दुस्तानी का प्रचार करने के लिए निकाले होते, तो बात ठीक भी थी। पर नागरी 'हरिजन सेवक' पहले से ही निर्बल रहा है। उसमें घाटा हो, तो आप भले ही बन्द करें। आपने 'नागरी हरिजन' बन्द करने की जो चेतावनी दी है, उसमें मुझे एक प्रकार का बलात्कार दीखता है।

"क्या 'अंग्रेजी हरिजन' से भी ज्यादा 'नागरी हरिजन सेवक' ने गुनाह किया है ? सच बात तो यह है कि पहले अंग्रेजी का 'हरिजन' बन्द हो जाना चाहिए। पर होता यह है कि अंग्रेजी के 'हरिजन' को जितना महत्त्व मिलता है, उतना दूसरे संस्करणों को नहीं।

"यह कितने बड़े दुःख की बात है कि आप अपने प्रार्थना-प्रवचन हिन्दुस्तानी में देते हैं, पर उनका सारांश आपके दफ्तर में अंग्रेजी में रहता है। फिर उसका उल्था नागरी और उर्दू 'हरिजन' में छपता था—यह कहकर कि अंग्रेजी से अब तो यह नहीं लिखा रहता, शायद अब सीधा हिन्दुस्तानी में ही लिया जाता हो।

"आपने कई वर्ष पहले लिखा था कि जहाँ तक सम्भव हो, आप केवल गुजराती में या हिन्दुस्तानी में ही लिखेंगे और उसका अनुवाद अंग्रेजी में होगा। पहले ऐसा चला भी, लेकिन बाद में यह सिलसिला शिथिल हो गया।

"मैं फिर आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप 'अंग्रेजी हरिजन' बन्द कर दें और दूसरे संस्करण जारी रखें।"

शब्द का सही प्रयोग

बापू: "जो बात वाकई सही है, वह अगर कही जाय, तो उसे क्रोध मानना, शब्द का सही प्रयोग नहीं होगा। क्रोध में आदमी बेतुका काम कर लेता है। अगर 'उर्दू हरिजन' बन्द करना पड़ा, तो साथ-साथ नागरी भी बन्द करना लाजिमी यानी आवश्यक हो जाता है। लाजिमी बात करने में क्रोध कैसा? जिसे मैं लाजिमी समझूँ, उसे दूसरे न भी समझें—जैसे इस पत्र के लेखकों पर—इससे मुझे क्या? हम जिसे लाजिमी मानें, वही सारा जगत् भी माने—ऐसा होना जरूरी नहीं। हर चीज के कम-से-कम दो पहलू होते ही हैं।

नागरी के साथ उर्दू

"अब यह बताना रहा कि एक को छोड़ूँ या दोनों को? यह ठीक है कि जब मैंने नागरी में 'नवजीवन' निकाला और 'हरिजन' निकालना शुरू किया, तब दो लिपियों की चर्चा नहीं थी। अगर थी, तो मुझे उसका पता नहीं था।

"बीच में स्व० भाई जमनालालजी की इच्छा से हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा कायम हुई। इससे 'उर्दू रिसाला' निकालना लाजिमी हो गया। अब माना कि 'उर्दू रिसाला' बन्द हो और नागरी निकलता रहे, तो यह मेरी निगाह में बड़ा ही अनुचित होगा। क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की हिन्दुस्तानी का अर्थ यह है कि वह जैसी नागरी लिपि में लिखी जाती है, वैसे ही उर्दू लिपि में भी लिखी जा सकती है।

"इसलिए जो अखबार दोनों लिपियों में निकलना था, उसे वैसे ही निकलना चाहिए। वह भी एक ऐसे मौके पर, जब कि हिंद के लोग चारों ओर से कह रहे हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है और वह नागरी लिपि में ही लिखी जाय। यह विचार ठीक नहीं है—यह बताना मेरा काम हो जाता है। यह दलील अगर ठीक है, तो मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं नागरी लिपि के साथ उर्दू लिपि भी रखूँ; और न रख सकूँ, तो मुझे उर्दू 'हरिजन-सेवक' के साथ नागरी 'हरिजन-सेवक' का भी त्याग करना चाहिए।

नागरी सर्वोत्तम

"लिपियों में मैं सबसे आला दरजे की लिपि नागरी को ही मानता हूँ। यह कोई छिपी बात नहीं है। यहाँ तक कि मैंने दक्षिण अफ्रिका में गुजराती लिपि के

वदले में नागरी लिपि में गुजराती खत लिखना शुरू किया था। इसे मैं समय के अभाव में आज तक पूरा न कर सका। नागरी लिपि में भी सुधारने की गुंजाइश है, जैसे कि करीव-करीव सव लिपियों में है। लेकिन यह दूसरा विषय हो जाता है। यह इशारा जो मैंने किया है, सो यह वताने के लिए कि नागरी लिपि का विरोध मेरे मन में जरा भी नहीं है। लेकिन जव नागरी के पक्षपाती उर्दू लिपि का विरोध करते हैं, उसे दूसरी लिपियों के मुकावले में वतलाते हैं और अन्त में उसका साम्राज्य होने की वातें करते हैं, तो मुझे यह कहना पड़ता है कि वह पूर्ण है। इस दृष्टि से देखा जाय, तो मेरा फैसला निर्दोष लगना चाहिए और जरूरी भी।

जीत हिन्दुस्तानी की

"हिन्दुस्तानी के वारे में मेरा पक्षपात सही है। मैं मानता हूँ कि नागरी और उर्दू लिपियों के वीच अन्त में जीत नागरी लिपि की ही होगी। इसी तरह लिपि का खयाल छोड़कर भाषा का ही खयाल करें, तो जीत हिन्दुस्तानी की होगी, क्योंकि संस्कृतमय हिन्दी विलकुल वनावटी है और हिन्दुस्तानी विलकुल स्वाभाविक। इसी तरह फारसीमय उर्दू अस्वाभाविक और वनावटी है। मेरी हिन्दुस्तानी में फारसी लब्ज वहुत कम आते हैं, तो भी मेरे मुसलमान दोस्तों और पंजावी तथा उत्तर के हिन्दुओं ने मुझे सुनाया है कि मेरी हिन्दुस्तानी समझने में उन्हें दिक्कत नहीं होती।

दुखदायी स्मरण

"हिन्दी के पक्ष में मैं तो वहुत कम दलील पाता हूँ। खूबी यह है कि पहले-पहल जव हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मैंने हिन्दी की व्याख्या की, तव उसका विरोध नहीं के वरावर था। विरोध कैसे शुरू हुआ, इसका इतिहास वड़ा करुणाजनक है। मैं उसे याद भी नहीं रखना चाहता। मैंने वहीं तक वताया था कि 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' नाम ही राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए सूचक नहीं था और न वह आज भी है।

"लेकिन मैं साहित्य के प्रचार की दृष्टि से अध्यक्ष नहीं वना था। स्व० भाई जमनालालजी और दूसरे अनेक मित्रों ने मुझे वताया था कि नाम चाहे कुछ भी हो, उन लोगों का मन साहित्य में नहीं था और इसीलिए मैंने दक्षिण में राष्ट्रभाषा का प्रचार वड़े जोर से किया।

"प्रातःकाल उपवास के छठे दिन प्रार्थना के बाद लेटे-लेटे मैं यह लिखवा रहा हूँ। कितने ही दुःखदायी स्मरण ताजे होते जा रहे हैं, पर उन्हें और बढ़ाना मुझे अच्छा नहीं लगता।

नाम नहीं, काम

"नाम का झगड़ा मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। नाम कुछ भी हो, लेकिन काम ऐसा हो, जिसमें सारे राष्ट्र का, देश का कल्याण हो। उसमें किसी भी नाम का द्वेष होना ही नहीं चाहिए।

क्या कहूँ ?

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—इकबाल के इस वचन को सुनकर किस हिन्दुस्तानी का दिल न उछलेगा ? अगर न उछले, तो उसे कमनसीब समझूँगा। इकबाल के इस वचन को मैं हिन्दी कहूँ, हिन्दुस्तानी कहूँ या उर्दू कहूँ ? कौन कह सकता है कि इसमें राष्ट्रभाषा नहीं भरी है ? इसमें मिठास नहीं है ? विचार की बुजुर्गी नहीं है ? भले ही इस विचार के साथ आज मैं अकेला होऊँ। साफ है कि जीत कभी भी संस्कृतमय हिन्दी की होनेवाली नहीं है, न फारसीमयी उर्दू की। जीत तो हिन्दुस्तानी की हो हो सकती है। जब हम अंदरूनी द्वेषभाव को भूलेंगे, तभी हम इस बनावटी झगड़ों को भूल जायँगे, उससे शर्मिन्दा होंगे।

हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा, अंग्रेजी विश्वभाषा !

"अब रही 'अंग्रेजी हरिजन' की बात। इसे मैं छोटी बात मानता हूँ। अंग्रेजी 'हरिजन' को छोड़ नहीं सकता। क्योंकि अंग्रेज लोग और अंग्रेजी के विद्वान् हिन्दुस्तानी लोग मानते हैं कि मेरी अंग्रेजी में कुछ खूबी है। पश्चिम के साथ का मेरा सम्बन्ध भी बढ़ रहा है। मुझमें अंग्रेजों का या दूसरे पश्चिमी लोगों का द्वेष न कभी था, न आज है। उनका कल्याण मुझे उतना ही प्रिय है, जितना हमारे देशवासियों का। इसलिए मेरे छोटे-से ज्ञान-भंडार में से अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार कभी न होगा। मैं उस भाषा को कभी भूलना नहीं चाहता और न चाहता हूँ कि सारा हिन्दुस्तान अंग्रेजी भाषा को छोड़े या भूल जाय। मेरा आग्रह हमेशा अंग्रेजी को उसकी योग्य जगह से बाहर न ले जाने का रहा है। वह कभी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती और न हमारी तालीम का जरिया ही। ऐसा करके हमने अपनी भाषाओं को कंगाल बना रखा है।

विद्यार्थियों पर हमने बड़ा बोझ डाला है। यह करुण दृश्य—जहाँ तक मुझे इल्म है—सिर्फ हिन्दुस्तानी में ही देखा जाता है। भाषा की इस गुलामी ने हमारे करोड़ों लोगों को बहुतेरे ज्ञान से बरसों तक वंचित रखा है, इसको हमें न समझ है, न शर्म और न पछतावा ही। यह कैसी बात है? यह सब साफ-साफ जानते हुए भी मैं अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार नहीं कर सकता। जैसे तमिल आदि प्रान्तीय भाषाएँ हैं और हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा, ठीक उसी तरह अंग्रेजी विश्वभाषा है, जगत् की भाषा है—इससे कौन इनकार कर सकता है? अंग्रेजों का साम्राज्य जायगा, क्योंकि वह दूषित था और है। लेकिन अंग्रेजी भाषा का साम्राज्य कभी नहीं जा सकता।

"मुझे ऐसा लगता है कि गुजराती भाषा में या अंग्रेजी भाषा में कुछ भी लिखूँ, तो भी अंग्रेजी 'हरिजन' और गुजराती 'हरिजन-बंधु' अपने पैरों पर खड़े रहेंगे।"

५॥। बजे तक इतना लिखवाया।

सात शर्तें

बापू ने अपना अनशन छोड़ने की निम्नलिखित सात शर्तें रखी हैं :

१. महरौली में ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार की मजार है, वह मुसलमानों के लिए बिल्कुल सुरक्षित होनी चाहिए। दरगाह के खिदमतगारों को जान का कोई खतरा न हो। सात-आठ दिनों में वहाँ मुसलमानों का जो उर्स का मेला लगनेवाला है, उसमें वे बिना किसी खतरे के आ-जा सकें। महरौली के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलायें कि वहाँ मुसलमानों की जान का कोई खतरा नहीं होगा।

२. दिल्ली की ११७ मसजिदें, जिन पर हाल के उपद्रवों में हिन्दू और सिख शरणार्थियों ने कब्जा किया है या जिनको मन्दिर बना लिया गया है, स्वेच्छा से मुसलमानों को वापस लौटा दी जायँ और उनमें उनको इबादत करने दी जाय। जिन-जिन इलाकों में मसजिदें हैं, वहाँ के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलायें कि ये मसजिदें दंगों से पहले जैसी थीं, वैसी ही रहेंगी।

३. करौलबाग, सब्जीमंडी और पहाड़गंज में मुसलमान आजादी से आ-जा सकें और उनकी जान को वहाँ कोई खतरा न हो।

४. दिल्ली के जो मुसलमान तंग आकर पाकिस्तान चले गये हैं, वे अगर वापस आकर यहाँ वसना चाहें, तो हिन्दू और सिख उनका रास्ता न रोकें।

५. रेलों में मुसलमान विना किसी खतरे के सफर कर सकें।

६. मुसल्मान दूकानदारों का बहिष्कार न किया जाय।

७. दिल्ली शहर के जिन हल्कों में मुसलमान रहते हैं, उनमें हिन्दुओं और सिखों के वसने का प्रश्न वहाँ के मुसलमानों की रजामंदी पर छोड़ दिया जाय।

मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब ने करीब तीन लाख हिन्दू-सिखों की विराट् सभा के समक्ष इन सात शर्तों की घोषणा की। राजेन्द्रबाबू उस सभा के अध्यक्ष थे। इसलिए उसका प्रभाव भी काफी अच्छा पड़ा होगा।

आज सुबह से शुभ शकुन ही दीख रहे हैं। मालूम पड़ता है कि कदाचित् दोपहर तक अनशन छूट ही जाय। ८॥ बजे बापू मालिश के लिए गये। वहाँ डॉ० विधानबाबू, डॉ० जीवराज काका और सुशीला बहन ने बापू की परीक्षा की। बापू आज पेट दुखने की शिकायत कर रहे थे और सिर भी भारी लग रहा था। विधान-बाबू ने पुनः रस लेने के लिए दलील शुरू की। लेकिन बापू ने कहा कि फिर तो उसी क्षण से पुनः २१ दिनों का अनशन करेंगे, चाहे शान्ति हो या न हो। इसे सभी ने इनकार कर दिया। देखें, आज का दिन कैसा बीतता है!

यह सब तो ठीक है। लेकिन अभी भी जिन्ना साहब एक भी शब्द नहीं बोले, यह आश्चर्य की बात है।

आज सुशीला बहन मालिश में नहीं थीं। राजेन्द्रप्रसादजी के यहाँ सभा में गयी थीं। बाथ में बापू काफी बेचैन थे। वहाँ एक घंटा बीता। वजन १०७ पौण्ड ही रहा, जरा भी कम-बेशी नहीं हुआ। इस कारण सभी काफी फिक्र में पड़े हैं। आज वजन के समय पंडितजी आ पहुँचे थे। उन्होंने ही वजन लिया। वे तो इतने अधिक खिन्न हैं कि मुझे बापू को देख जितना दुःख नहीं होता, उतना पंडितजी को देखकर होता है।

प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर

आज तो असंख्य लोग आते-जाते रहे। कहीं भी स्नान-घर खाली न थे। मैं तो ऊपर नहाने चली गयी। नीचे आयी, तो बापू के कमरे में सौ से अधिक लोग

जमा थे। जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, हिन्दू, सिख, मुसलमान, रंधावा। फोटोग्राफरों की तो भीड़ ही उमड़ पड़ी थी। वातावरण कुछ उत्साहभरा मालूम पड़ा। इसलिए मैं तो, कहीं खड़े रहने की भी जगह न होने पर भी, धीरे-धीरे बापू के पास ही जाकर इसलिए घुसकर बैठ गयी कि लिखना न छूट जाय।

प्रमुख व्यक्तियों में—जवाहरलालजी, शंकररावजी, पकवासा वगैरह मन्त्रिमण्डल, हिन्दू महासभा और आर० एस० एस० के लाला हरिश्चन्द्र, अनेक हिन्दू और मुसलमान भाई, पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जनाब जहीद हुसेन भी थे। राजेन्द्रबाबू ने सबकी ओर से कहा :

"पिछली रात को सब लोग मेरे घर पर इकट्ठे हुए थे और पूरी चर्चा के बाद सबने तय किया कि उसी वक्त और वहीं प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये जायँ। चूँकि कुछ संस्थाओं के प्रतिनिधि उस बैठक में उपस्थित न थे, इसलिए हमने महसूस किया कि हस्ताक्षर किया हुआ प्रतिज्ञा-पत्र लेकर आपके पास तुरन्त न पहुँचा जाय; बल्कि जब तक बाकी के हस्ताक्षर न हो जायँ, तब तक रुका जाय। इसके मुताबिक सवेरे फिर हमारी बैठक हुई और पिछली रात की बैठक में जो लोग अनुपस्थित थे, उन्होंने भी इस बैठक में शामिल होकर अपने हस्ताक्षर कर दिये।

"सवेरे की बैठक के दौरान में देखा गया कि पिछली रात को जिन लोगों के दिलों में थोड़ी हिचकिचाहट थी, वे भी पूरे आत्मविश्वास के साथ कहते थे कि हम पूरी जिम्मेवारी की भावना से गांधीजी से अनशन छोड़ने के लिए कह सकते हैं। उन लोगों ने एक साथ और अलग-अलग जो गारण्टी दी, उसे ध्यान में रखकर मैंने कांग्रेस के सभापति के नाते उस मसविदे पर हस्ताक्षर किये। उसके बाद दिल्ली के चीफ कमिश्नर जनाब खुरशीद और डिप्टी कमिश्नर श्री रंधावा ने—जो वहाँ हाजिर थे—शासन की ओर से उस पर हस्ताक्षर किये। यह तय किया गया है कि इस प्रतिज्ञा-पत्र पर अमल करने के लिए कुछ कमेटियाँ कायम की जायें। मुझे उम्मीद है कि अब आप अपना अनशन छोड़ देंगे।"

चालीस करोड़ के नाथ

इसके बाद लाला देशबन्धु ने कहा : "आज सुबह मुसलमान भाइयों का जुलूस हिन्दू महल्लों में पहुँचा था और वहाँ हिन्दुओं ने बड़े प्रेम से उन्हें फल दिये और

नाश्ता कराया। इन सबसे मालूम पड़ता है कि लोगों के दिल बदल गये हैं। आप भारत की ४० करोड़ जनता के नाथ हैं। इसलिए अनशन छोड़िये, यही प्रार्थना है।"

तो यह दगा होगा

इस तरह विभिन्न प्रतिनिधियों के भाषणों के बाद बापू अत्यन्त क्षीण आवाज में बोले। उसे लिख लेने के बाद प्यारेलालजी सबको जोर से पढ़ सुना देते थे। बापू की आवाज बड़ी मुश्किल से सुनी जा सकती थी। मैं तो बिलकुल बापू के मुँह के पास ही कान लगाकर लिखती रही, इसलिए ठीक लिखा जाता था और फिर प्यारेलालजी को देती जाती थी। वे उसे सबको सुना देते थे। यह सारा कार्यक्रम ११॥ बजे शुरू हुआ।

बापू ने इस प्रकार कहा : "यह मुझे अच्छा तो लगता है, मगर एक बात अगर आपके दिल में न हो, तो यह सब निकम्मा समझिये। इस मसविदे का अगर यह अर्थ है कि दिल्ली को आप सुरक्षित रखेंगे और बाहर चाहे जितना भी आग जले, उसकी आपको परवाह न होगी, तो आप बड़ी गल्ती करेंगे और मैं भी उपवास छोड़कर मूर्ख बनूँगा। इलाहाबाद में क्या हुआ, सो तो आपने अखबार में पढ़ा ही होगा। न पढ़ा हो, तो पढ़िये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू महासभा भी इस समझौते में शामिल हैं—ऐसा मैं समझा हूँ। अगर यहाँ के लिए वे इस समझौते में शामिल हैं और दूसरी जगह के लिए नहीं, तो वह भी बड़ा दगा होगा। मैं देखता हूँ कि ऐसा दगा आज हिन्दुस्तान में बहुत चलता है।

"दिल्ली तो हिन्दुस्तान का दिल है—पायतख्त है। यहाँ हिन्दुस्तान के बड़े लोग इकट्ठे हुए हैं। भले ही मनुष्य जानवर बनें, मगर यहाँ जो हैं, वे दूध की मलाई जैसे हैं। वे अगर सारे हिन्दुस्तान को इतना भी न समझा सकें कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे सब धर्मों के लोग भाई-भाई हैं, तो यह दोनों उपनिवेशों के भविष्य के लिए बुरा होगा। अगर हम आपस में लड़ते रहे, तो हिन्दुस्तान का क्या होगा ?..."

मुख भगवान् की तरफ

इतना कहते-कहते बापू बहुत ही थक गये। मानव-दुःख की इस अपार वेदना से वे काँपने लगे। हृदय रो रहा था। प्यारेलालजी भी बोल नहीं पाते थे, इसलिए

सुशीला बहन ने ही पद सुनाया। दो मिनट बाद पुनः भाषण शुरू करते हुए बापू ने कहा :

"मैं घबड़ाहट में पड़ गया। थकान है, इसलिए अपनी बात पूरी न कर सका। हम ऐसा कोई काम न करें, जिसके लिए बाद में हमें पछताना पड़े। हमें आले दर्जे की बहादुरी दिखानी है। हम यह कर सकेंगे या नहीं, सो तो देखना है; अगर नहीं कर सकते, तो मुझे फाका छोड़ने को न कहिये। आपको और सारे हिन्दुस्तान को यह करना है। इसका यह मतलब नहीं कि यह आज के आज हो जायगा। मुझमें वह ताकत नहीं। मगर इतना कहूँगा कि आज तक हमारा मुँह शैतान की तरफ रहा, अब भगवान् की तरफ रहेगा। अगर जो बात मैंने आपके सामने रखी है, उसे आप दिल से मंजूर नहीं करते या आपने यह मान लिया है कि वह आपके काबू के बाहर है, तो आपको साफ-साफ यह बात मुझे बता देनी चाहिए।

समझकर निर्णय लें !

"यह कहना कि हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही है और पाकिस्तान सिर्फ मुसलमानों के लिए ही—तो इससे बड़ी बेवकूफी क्या हो सकती है ? शरणार्थी यह समझें कि पाकिस्तान का उद्धार भी दिल्ली के ही मार्फत होगा।

"मैं फाके से डरनेवाला आदमी नहीं हूँ। मैंने बहुत बार फाके किये हैं और जरूरत हुई, तो फिर भी कर सकता हूँ। इसलिए आप जो भी करें, बार-बार सोच-समझकर करें।

दृढ़ निर्णय सर्वथा सम्भव

"जो मुसलमान भाई हमेशा मेरे पास आते और ऐसी बातें करते हैं कि अब दिल्ली ठीक हो गयी है और हिन्दू-मुसलमान साथ रह सकेंगे, उनके दिल में अगर कुछ भी खलबला है—मन में ऐसा लगे कि आज तो मजबूरन साथ रहना है, न रहें तो जायें कहाँ ? लेकिन आखिर कभी-न-कभी अलग होंगे ही—तो उन्हें यह बात मुझे साफ-साफ कह देनी चाहिए। सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को ठीक करना बड़ी मुश्किल बात है। मगर मैं तो बड़ी उम्मीद रखनेवाला इन्सान हूँ। सोचता हूँ, जो बात ठान ली, वह क्यों न हो सकेगी ? हिन्दुओं और मुसलमानों का समझौता आज

आप कहते हैं। मगर हिन्दू मानें कि मुसलमान तो यवन हैं, असुर हैं, ईश्वर को पहचान ही नहीं सकते और मुसलमान हिन्दुओं के बारे में ऐसा ही मानें, तो इससे बढ़कर कुफ्र नहीं।

एक को दगा, सबको धोखा

"पटने में मुझे एक मुसलमान बड़े प्रेम से एक किताब दे गया था। लिखने-वाला बड़ा मुसलमान है। उस किताब में लिखा है : "खुदा फरमाता है कि एक काफिर—और हिन्दू काफिर है—एक जहरी जानवर से भी बदतर है। उसे मार सकते हैं। उसे धोखा देना फर्ज है। उसके साथ शराफत क्या करना ?" यह चीज अगर मुसलमानों के दिल में छिपी-छिपी भी पड़ी है, तो यह कहना कि 'हम अच्छे रहेंगे', हिन्दुओं के साथ धोखेबाजी है। एक को धोखा दिया, तो सबको दिया।

"मैं अगर सच्चे दिल से पत्थर की पूजा करता हूँ, तो उसमें किसीको धोखा नहीं देता। मेरे उस पत्थर में भगवान् हैं। मैंने सोचा, अगर दोनों के दिलों में कुफ्र ही भरा है, तो मैं जीकर क्या करूँ ?

"आज जो तार आये हैं, उनमें बड़े-बड़े मुसलमानों के भी तार हैं। उनसे मुझे खुशी होती है। ऐसा लगता है कि वे समझ गये हैं कि राज चलाने का यह तरीका नहीं।

यहाँ के बाद पाकिस्तान

"यह सब सुनकर भी आप मुझे फाका छोड़ने को कहेंगे, तो मैं छोड़ूँगा। पीछे आप मुझे रिहाई दे देंगे। आज तक तो दिल्ली में ही रहकर करने-मरने की बात थी। यहाँ अगर काम हो गया हो, तो मैं पाकिस्तान चला जाऊँगा और वहाँ के मुसलमानों को समझाऊँगा। दूसरी जगह कुछ भी हो, यहाँ के लोग शान्त रहें। यहाँ के शरणार्थी समझ लें कि अगर पाकिस्तान से दिल्ली के कोई लोग वापस आते हैं, तो उन्हें अपना भाई समझकर रखना है। वहाँ वे परेशान पड़े हैं। मुसलमान जो काम कर रहे थे, वह सब हिन्दू सीख नहीं गये हैं, तो अच्छा है, वे आ जायँ। भले-बुरे सबमें हैं। यह सब सोच-समझकर आप सब मुझे कह दें कि फाका छोड़ो, तो मैं छोड़ूँगा। मगर हिन्दुस्तान वैसा-का-वैसा रहे, तो यह खेल-सा हो जायगा। इससे बेहतर है कि मुझे आप फाका करने दें। ईश्वर को उठाना होगा, तो मुझे उठा लेगा।"

मौलाना के उद्‌गार

बापू के बाद मौलाना साहब ने कहा : "महात्माजी ने जो पूछा है, उसका साम्प्रदायिक शान्ति की गारण्टी से ताल्लुक है। वह दिल्ली के नागरिकों के प्रतिनिधियों द्वारा ही दी जा सकती है। किताब के बारे में कहूँगा कि इसलाम के नाम पर यह कलंक है। इसलाम को बदनाम करनेवाली यह किताब है। इसलाम के पैगम्बर साहब ने 'कुरानशरीफ' में एक ऐसी उम्दा आयत बतलायी है कि तमाम इसलाम भाई-भाई हैं, फिर वह किसी भी जाति का या मजहब का क्यों न हो। महात्माजी ने इन मुसलमान दोस्तों के जिन विचारों का जिक्र किया है, वे इसलाम की सीख के बिलकुल खिलाफ हैं। वे सिर्फ उस पागलपन को जाहिर करते हैं, जो थोड़े समय पहले कुछ वर्ग के लोगों पर सवार था।"

वफादारी का फरमान

उनके बाद स्थानीय मुसलमान भाई हबीब-उल रहमान ने फरमाया : "दो ही बातें ऐसी हैं, जिनके मुताबिक कह सकता हूँ। एक तो यह बिलकुल गलत है कि मेरे धर्म-भाई हिन्दुस्तान को अपना मुल्क नहीं मानते। हम यहाँ पाँच बजे आते थे, हमने ३० साल से कांग्रेस के झण्डे के नीचे काम किया है। जब हमसे हिन्दुस्तान की तरफ अपनी वफादारी दोहराने के लिए कहा जाता है, तो हम इसे अपनी राष्ट्रीयता का अपमान समझते हैं। मुझे याद है कि हाल के दंगों में एक मौके पर हमारे कांग्रेसी दोस्तों और साथियों ने हमें दिल्ली के बाहर एक सुरक्षित जगह देने की बात कही थी। क्योंकि उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि वे हमें दंगाइयों से अच्छी तरह बचा सकेंगे। लेकिन हमने उस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया और भगवान् पर भरोसा रखकर शहर में रहना और घूमना पसन्द किया।

"जहाँ तक जमीयतुल उलेमा का सम्बन्ध है, मैं कह सकता हूँ कि उसके मेम्बर मौलाना आजाद साहब के और कांग्रेस के पक्के अनुयायी हैं। जो पाकिस्तान चले गये हैं, वे सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए और दूसरी बदतर बातों के डर से ही वहाँ गये हैं। हम सब हिन्दुस्तान के नागरिकों की तरह आत्मसम्मान और इज्जत से हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं, न कि दूसरों की दया पर। मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान पर हमला हुआ, तो हम सब अपने मुल्क हिन्दुस्तान

के आखिरी आदमी तक हिफाजत करेंगे। हमने बार-बार साफ लफ्जों में कहा है कि जो ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, उन्हें हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले जाना चाहिए।

शुभ शकुन

"आज की परिस्थिति जो बदल गयी है, इसे हम बहुत ही अच्छा शकुन समझते हैं। हमें सन्तोष है कि प्रवाह बदल गया है और अब वह फिरकेवालों के मेल-जोल और शान्ति की तरफ बह रहा है, जब कि पहले कड़ुवाहट की तरफ बह रहा था। जब कि पहले कड़ुवाहट और नफरत की वजह से दंगे हो रहे थे, अब चूँकि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा दिये गये आश्वासनों पर हुकूमत की तरफ से दस्तखत हो गये हैं, हमें सन्तोष है कि इन आश्वासनों पर अमल होगा। अब मैं अपने पूज्य महात्माजी से फाका तोड़ने की प्रार्थना करता हूँ।"

इसके बाद गोस्वामी गणेशदत्तजी ने कहा कि "श्री महाराज ने इतनी तपश्चर्या की है, तो बहुत परिवर्तन हुआ है। रात को ७५ प्रतिशत हृदय-परिवर्तन था, मगर अब ९० प्रतिशत हो गया है। तो, हम आपकी आज्ञा का सम्पूर्ण पालन करेंगे।"

घर-घर रोना

आर० एस० एस० के श्री हरिश्चन्द्रजी ने कहा : "हम सब आपके सामने शपथ लेते हैं कि आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेंगे। आपके अनशन से घर-घर रोना मच गया है। हम शपथ लेकर कहते हैं कि पूर्ण शान्ति रहेगी। हम मकान नहीं माँगेंगे और न नौकरी ही माँगेंगे। ईश्वर जैसे रहने देगा, वैसे रहेंगे।"

पाकिस्तान की बेचैनी

पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जाहिद हुसेन साहब ने कहा : "मैं इसलिए हाजिर हूँ कि पाकिस्तान के लोग बेचैन हैं। सब पूछते हैं कि आपकी हालत कैसी है। इस बारे में हम जो मदद कर सकें, करने को तैयार हैं।"

आज्ञा पालन करेंगे!

सिखों के प्रतिनिधि श्री दरबसन सिंहजी ने, जो दिल्ली निवासी हैं, कहा : "आज गुरु गोविन्दसिंह का जन्म-दिन है। मैं गुरुद्वारे से आ रहा हूँ। वहाँ आपके लिए प्रार्थना की गयी है। वहाँ सबको आपका सन्देश सुनाया गया। मुझे कोई सिख

ऐसा नहीं मिला, जो मुसलमानों को मारना चाहता हो। बल्कि सब यही कहते हैं कि हमें महात्माजी की जान बचानी है। आप व्रत का पारणा कर दें। जो सिख यहाँ हैं, वे पूरी तरह आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

श्री रंधावा

डिप्टी कमिश्नर श्री रंधावा ने कहा : "टाउनहाल में जलसा हुआ था, तो मैंने प्रार्थना की थी कि जितनी जल्दी हो सके, हम अब महात्माजी को बचाने के लिए प्रयत्न करें। मुझे खुशी है कि पिछले तीन-चार दिनों से दिल्ली की हुकूमत जो पहले थी, आज नहीं है। जो आपकी सात शर्तें हैं, हम अपनी तरफ से (हुकूमत की ओर से) उनका संपूर्ण पालन करेंगे। हम पूरी मुहब्बत से रहेंगे।"

राजेन्द्रबाबू ने पुनः कहा : "मैंने तो प्रजा की तरफ से दस्तखत दिये ही हैं। अब आप उपवास छोड़ें।"

यह सारा सुनने के बाद बापू ने कहा : "मैं फाका छोड़ूँगा। ईश्वर की मर्जी होगी, वह होगा। आप सब साक्षी बनते हैं, तो बनें।"

हे गोविन्द राखो शरण !

बापू ने पहले प्रार्थना करने के लिए कहा और वातावरण में उत्साह की एकदम अनोखी झलक दीख पड़ी। सारा कमरा पवित्र उत्साह से भर गया। सभी हम लोगों की प्रार्थना में शामिल हो गये।

पहले 'नम्यो हो रेंगे क्यों' यह बुद्ध मंत्र पढ़ा गया। फिर दो मिनट शान्ति! उसके बाद उर्दू प्रार्थना—'अईज बिल्लाह' और जरथुस्त की 'मज्दा' हुई। फिर 'ईशावास्य', 'वण्ड्स कोस' और अन्त में 'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।'

और—

'हे गोविंद राखो शरण, अब तो जीवन हारे!
नीर पिवन हेतु गयो सिंधु के किनारे
सिंधु बीच बसत ग्राह चरण धरि पछारे!
'हे गोविंद राखो शरण...
चार पहर युद्ध भयो, ले गयो मझधारे
नाक कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे!

द्वारका में शब्द गयो, शोर भयो भारी
शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ ले सिधारे।
सूर कहे श्याम सुनो, शरन है तिहारे
अबकी बार पार करो, नंद के दुलारे!'

इस भजन के समय तो हरएक की आँखों में आँसू और गला रुँध जाय, ऐसे हर्षाश्रु भर आये। मानो सचमुच भगवान् कृष्ण इस मँझधार दरिया के तूफान के समय ही उपस्थित न हुए हों! इस दृश्य का वर्णन शब्दों में करना कठिन है। बापू की आँखें बंद थीं। चेहरे पर अनुपम तपश्चर्या का तेज चमक रहा था। चाहे कितना ही पापी आदमी अगर इस समय की बापू की झाँकी देख ले, तो सचमुच उसका सारा पाप धुल ही जाय। यह इतना पवित्र अवसर रहा। कलकत्ते के अनशन की अपेक्षा इस बार की यह झाँकी कुछ अजब ही है!

उसके बाद रामधुन और फिर १२ औंस ग्लूकोज मिले रस का गिलास मौलाना साहब ने बापू के हाथ में थमाया। फोटोग्राफर दनादन अपनी मशीनें दबाने लगे। १२-२५ बजे अनशन छूटा। पूरे बिरला-भवन में आनन्द छा गया। जवाहरलालजी के चेहरे का वर्णन करना असंभव ही है। आनन्द हो तो वह स्वाभाविक है, पर वह होते हुए उन्हें यह ग्लानि भी थी कि मेरे प्रधानमंत्रित्व में सिर्फ छह महीनों के भीतर ही बापू को ऐसी कसौटी से पार करवाना पड़ा! मानो इसके लिए वे स्वयं को भयानक अपराधी न मानते हों! उनके चेहरे से यही भावना टपक रही थी कि इतना आनन्द रहते हुए भी उनसे भूतकाल भुलाया ही नहीं जा रहा हो। इसके बाद बापू ने सभीको केला और संतरे का प्रसाद बाँटा।

सच्ची बहादुरी

रस पीने के बाद बापू ने गुरुद्वारे में होनेवाली गुरु गोविन्दसिंह-जन्मोत्सव की विराट् सभा के लिए निम्नलिखित सन्देश लिखवाया, जिसकी सिखों ने माँग की थी : "सिख भाइयों ने बड़ी बहादुरी दिखायी है कि वे अपना गुस्सा पी गये। यही तो सच्ची बहादुरी है। गुरु महाराज ने भी यही सिखाया है। 'एक सिख सवा लाख के सामने खड़ा रह सके' इसका अर्थ यही है कि 'सिखों की जय हो'!"

मुसलिम बहनें

लगभग बुरकेवाली सौ मुसलिम बहनें बापू का अनशन छुड़वाने के लिए आयी थीं। लेकिन बापू का कमरा ठसाठस भरा हुआ था, इसलिए वे सब आ न सकीं।

बापू बहुत ही ज्यादा थके हुए थे। सभी को हाथ जोड़े और बोले : "मेरे पास कोई बुरका रख ही नहीं सकती। मैं तो आपका भाई-बाप हूँ, तो मेरे सामने पर्दा ही क्या है? हृदय का पर्दा होना चाहिए।" बहनों ने तुरत पर्दा निकाल फेंका।

"क्या कोई हिन्दू, सिख दिक तो नहीं करते न? आप सब बहनों की दुआ होगी, तो मैं जैसा था, वैसा ही हो जाऊँगा। दुआ का जवाब खुदा देगा।"

चिरञ्जीवी भव !

इस बीच इन्दिरा बहन ने खबर दी कि "पंडितजी भी अनशन कर रहे हैं।" बापू में अभी जरा भी शक्ति हो ही कैसे सकती है? खूब बोले, सुना और दर्शनार्थियों की भी अपार भीड़!···बापू तत्काल खड़े हो गये। अपने हाथ से पंडितजी को सुन्दर पत्र लिख भेजा :

"चि० जवाहरलाल,

अनशन छोड़ो। साथ में पा० पंजाब के स्पीकर के तार की नकल भेज रहा हूँ। जहीद हुसेन ने, मैंने तुमसे कहा, वही कहा था। बहुत वर्ष जियो और हिन्द के जवाहर बने रहो।

१२-१-'४८ —बापू के आशीर्वाद"

अनशनों का दौर

सब चले जाने के बाद हम लोग भी बापू को प्रणाम कर खाने के लिए गये।

आर्थर मूर भी अनशन कर रहे थे। वे बापू की तबीयत का हाल जानने के लिए आये थे। .२॥ बजे उन्होंने अपना अनशन छोड़ा। बापू ने कहा : "मेरे शरीर को तो खासकर ग्लूकोज की जरूरत थी। वह मिल गया, इसलिए अब ठीक है।"

वावेल-कैण्टीन के निर्वासितों ने अनशन शुरू किया है। उन्होंने तो बापू का दर्शन करने के बाद ही खाने का निश्चय किया है।

आज तो बापू काफी थके हुए हैं। हम लोगों का समय भी इस तरह आने-जाने में ही बीता। प्रार्थना में बहुत-से लोग थे। रिम-झिम, रिम-झिम मेह बरस रहे थे। मानव-हृदय के आनन्दित हृदय-पटल के साथ प्रकृति की भी आनन्दित सहानुभूति थी। आज आवाज (शोर) भी खूब हो रहा था। बापू का प्रवचन लगभग २० मिनट तक चला। रोज की तरह बिस्तर पर से ही माइक पर बोले और बाकी तो रोज की तरह ही लिखवा दिया था :

आजादी खो देंगे

"आज का दिन मेरे लिए तो मंगल है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कितना अच्छा है कि आज ही गुरु गोविन्दसिंह की जन्मतिथि है। इसी शुभ तिथि पर मैं आप लोगों की दया से फाका छोड़ सका हूँ। जो दया आप लोगों से —दिल्ली के निवासियों से, दिल्ली में जो दुःखी शरणार्थी पड़े हैं, उनसे और यहाँ की हुकूमत के सब कारबार से—मुझे मिली है, उसे, मुझे लगता है कि, मैं जिन्दगीभर भूल न सकूँगा। कलकत्ते में ऐसे ही प्रेम का अनुभव मैंने किया। यहाँ मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि शहीद साहब ने कलकत्ते में बड़ा काम किया। अगर वे मदद न करते, तो मैं यहाँ ठहरनेवाला न था। शहीद साहब के लिए हम लोगों के दिल में अभी भी बहुत शक है। उससे हमें क्या ? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उसके साथ हमें दोस्ताना तौर पर काम करना है। हम किसीके साथ, किसी हालत में दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान यूनियन में पड़े हैं। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं नहीं। वैसे ही सब हिन्दू और सिख भी फरिश्ते थोड़े ही हैं ? हममें अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी। हमारे यहाँ जिन्हें हम जरायमपेशा जातियाँ कहते हैं, वे लोग भी पड़े हैं। उन सबके साथ मिल-जुलकर हमें रहना है। मुसलमान बड़ी कौम है। यहीं नहीं, सारी दुनिया में मुसल्मान पड़े हैं। अगर हम ऐसी उम्मीद करें कि सारी दुनिया के साथ हम मित्रभाव से रहेंगे, दोस्ती के तौर से रहेंगे, तो क्या वजह है कि हम यहाँ के मुसलमानों से दुश्मनी करें ? मैं भविष्यवक्ता नहीं हूँ। फिर भी ईश्वर ने मुझे अक्ल दी है, दिल दिया है। उन दोनों को टटोलता हूँ और आपको भविष्य सुनाता हूँ कि अगर किसी-न-किसी

कारण एक-दूसरे से दोस्ती न कर सके, वह भी यहाँ के ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान के और सारी दुनिया के मुसलमानों से हम दोस्ती न कर सके, तो हम समझ लें—इसमें मुझे कोई शक नहीं—कि हिन्दुस्तान हमारा न रहेगा, पराया हो जायगा। गुलाम हो जायगा—पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पायी है, उसे हम खो बैठेंगे।

"आज मुझे इतने लोगों ने आशीर्वाद दिये हैं, सुनाया है, यकीन दिलाया है कि हम सब हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी भाई-भाई बनकर रहेंगे, किसी भी हालत में कोई कुछ भी कहे, दिल्ली के हिन्दू, सिख और मुसलमान, पारसी, ईसाई—सब जो यहाँ के बाशिंदे हैं, और सब शरणार्थी भी दुश्मनी नहीं करनेवाले हैं, यह छोटी बात नहीं है। इसके मानी यह है कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने लोग पड़े हैं, वे सब मिलकर रहेंगे। हमारी कमजोरी के कारण हिन्दुस्तान के टुकड़े हो गये, लेकिन वे भी दिल से मिलते हैं। अगर इस फाके के छूटने का यह अर्थ नहीं है, तो मैं बड़ी नम्रता से कहूँगा कि फाका छुड़वाकर आपने कोई अच्छा काम नहीं किया।

इन्सान का फर्ज

"दिल्ली में और दूसरी जगह में भेद क्यों हो? जो दिल्ली में हुआ और होगा, वही सारे यूनियन में होगा, तो पाकिस्तान में भी होना चाहिए। उसमें आप शक न रखें। आप डर न करें। एक बच्चे को भी डरने का काम नहीं है। अब तक मेरी निगाह में हम शैतान की तरफ जाते थे। आज से मैं उम्मीद करता हूँ कि हम ईश्वर की ओर जाना शुरू करते हैं। लेकिन हम तय करें कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुँह ईश्वर की ओर घुमाया, तो वहाँ से कभी नहीं हटेंगे। ऐसा हुआ, तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनों मिलकर हम सारी दुनिया को टेक सकेंगे—सारी दुनिया की सेवा कर सकेंगे और सारी दुनिया को ऊँचा उठा सकेंगे। मैं और किसी कारण जिन्दा रहना नहीं चाहता। इंसान जिन्दा रहता है, इन्सानियत को ऊँचा उठाने के लिए। ईश्वर और खुदा की तरफ जाना ही इंसान का फर्ज है। जबान से ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल—कुछ भी नाम लो, वह सब झूठा है, अगर दिल में वह नाम नहीं

है। सब एक ही हस्ती है, तो फिर कोई कारण नहीं कि हम उस चीज को भूल जायँ और एक-दूसरे को दुश्मन मानें।

सर्व-धर्म-समभाव

"आज मैं आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नहीं हूँ। लेकिन आज के दिन से हिन्दू निर्णय कर लें कि हम लड़ेंगे नहीं। मैं चाहूँगा कि हिन्दू कुरान पढ़ें, जैसे कि वे भगवद्गीता पढ़ते हैं। सिख भी वही करें। और मैं चाहूँगा कि मुसलिम भाई-बहन भी अपने घरों में ग्रन्थ साहब पढ़ें, उनके अर्थ समझें। जैसे हम अपने धर्म को मानते हैं, वैसे ही दूसरों के धर्म को भी मानें। उर्दू-फारसी—किसी भी जबान में बात लिखी हो, अच्छी बात तो है। जैसे कुरान शरीफ, वैसे ही गीता और ग्रन्थ साहब हैं। मेरा मकसद यही है, चाहे आप मानें या न मानें। अभी तक मैं ऐसा करता रहा हूँ। मैं आपको दावे के साथ कहूँगा कि मैं पत्थर की पूजा नहीं करता। अगर मैं सनातनी हिन्दू हूँ, मैं पत्थर की पूजा करनेवाले से नफरत नहीं करता। खुदा पत्थरों में भी पड़ा है। जो पत्थर की पूजा करता है, वह उसमें पत्थर नहीं, खुदा देखता है। पत्थर में ईश्वर न मानें, तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह क्यों माना जायगा? क्या वह बुत-परस्ती नहीं है?

ईश्वर सद्बुद्धि दे!

"दिलों में भेद न रखें, तो हम यह सब सीख सकते हैं। ऐसा हो, तो फिर यह नहीं होगा कि यह हिन्दू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई-भाई हैं, सब मिल-जुलकर काम करनेवाले हैं। पीछे ट्रेनों में आज जो अनेक किस्म की परेशानियाँ होती हैं—आदमी फेंक दिये जाते हैं, लड़कियों को फेंक दिया जाता है, औरतें फेंक दी जाती हैं—वह सब मिट जायगा। हर कोई आसानी से हर जगह रह सकेगा, कहीं किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा बने, पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। तभी मुझे शान्ति मिलेगी। तब तक मुझे परम शान्ति नहीं मिलनेवाली है, जब तक यहाँ के शरणार्थी, जो पाकिस्तान से दुःखी होकर आये हैं, अपने घरों को वापस न जा सकें और जो मुसल्मान यहाँ से हमारे डर से तथा मार-पीट से भागे हैं एवं वापस आना चाहते हैं, वे आराम से यहाँ न रह सकें।

"बस, इतना ही कहूँगा। ईश्वर हम सबको और सारी दुनिया को अच्छी अक्ल

दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी तरफ खींच ले, जिससे हिन्दुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो ।"

अनशन सत्य के नाम पर

इतना बोलने के पश्चात् बापू का निम्नलिखित सन्देश पढ़ सुनाया गया : "मैंने सत्य के नाम पर यह उपवास शुरू किया, जिसका जाना-पहचाना नाम ईश्वर है। जीते-जागते सत्य के बिना ईश्वर कहीं नहीं है। ईश्वर के नाम पर हम झूठ बोलते हैं, हमने बेरहमी से लोगों की हत्याएँ की हैं और इसकी भी परवाह नहीं की कि वे अपराधी हैं या निर्दोष, मर्द हैं या औरतें, बच्चे हैं या बूढ़े। हमने भी ईश्वर के नाम पर लड़कियाँ और औरतें भगायी हैं। जबरन् धर्म पलटवा दिया है। मैं नहीं जानता कि किसीने ये काम सत्य के नाम पर किये हों। उसी नाम का उच्चारण करते हुए मैंने अपना उपवास तोड़ा है। हमारे लोगों का दुःख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू १०० आदमियों को लाये, जिनमें हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों के प्रतिनिधि थे; हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतिनिधि थे तथा पंजाब सरहदी सूबे और सिंध के शरणार्थियों के प्रतिनिधि भी थे। इन्हीं प्रतिनिधियों में पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जहीद हुसेन साहब थे, दिल्ली के चीफ कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर थे तथा आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि जनरल शाहनवाज भी थे। मूर्ति की तरह मेरे पास बैठे हुए पंडित नेहरू और मौलाना साहब भी थे।

"राजेन्द्रबाबू ने इन प्रतिनिधियों के दस्तखतवाला एक दस्तावेज पढ़ा, जिसमें मुझसे कहा गया था कि मैं उन पर ज्यादा चिन्ता का बोझ न डालूँ और अपना उपवास छोड़कर उनके दुःख को दूर करूँ। पाकिस्तान से और यूनियन से तार पर तार आये हैं, जिनमें मुझसे उपवास छोड़ने की अपील की गयी है। मैं इन सारे दोस्तों की सलाह का विरोध नहीं कर सका कि हर हालत में हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों, पारसियों और यहूदियों में पूरी-पूरी दोस्ती रहेगी—ऐसी दोस्ती, जो कभी न टूटेगी। उस दोस्ती को तोड़ने का मतलब राष्ट्र को तोड़ना, खतम करना होगा।

मानव-प्रतिज्ञा की सेवा

"जब मैं यह लिखवा रहा हूँ, मेरे पास सेहत और दीर्घ-जीवन की कामनावाले

तारों का ढेर लग रहा है। भगवान् मुझे ऐसा विवेक दे कि मैं मानव-प्रतिज्ञा की सेवा कर सकूँ। अगर आज का दिया हुआ पवित्र वचन पूरा हो जाय, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मैं चौगुनी शक्ति से भगवान् से प्रार्थना करूँगा कि मैं अपनी पूरी जिन्दगी जी सकूँ और जीवन के आखिरी पल तक मानव-समाज की सेवा कर सकूँ। विद्वानों का कहना है कि आदमी की पूरी जिन्दगी १२५ बरस की है। कोई उसे १३३ बरस की बताते हैं। दिल्ली के नागरिकों के साथ हिन्दू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सद्भावना से मेरी प्रतिज्ञा के शब्दों का तो आशा से जल्दी पालन हो गया है।

उपवास में भगवान् का हाथ

"मुझे पता चला है कि कल से हजारों शरणार्थी और दूसरे लोग उपवास कर रहे हैं। ऐसी हालत में इससे दूसरा नतीजा हो ही नहीं सकता था। हजारों लोगों की तरफ से मुझे लिखित रूप में दिली दोस्ती के वचन मिल रहे हैं। सारी दुनिया से मेरे पास आशीर्वाद के तार आये हैं। क्या इस बात का इससे अच्छा कोई सबूत हो सकता है कि मेरे इस उपवास में भगवान् का हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञा के शब्दों के पालन के बाद उसकी आत्मा भी है। उसके पालन के बिना शब्दों का पालन बेकार हो जाता है। प्रतिज्ञा की आत्मा है—यूनियन और पाकिस्तान के हिन्दू, सिख और मुसलमानों में सच्ची दोस्ती! अगर पहली बात का यकीन दिलाया जाता है, तो उसके बाद दूसरी बात आनी ही चाहिए, जैसे रात के बाद दिन आता ही है। अगर यूनियन में अँधेरा हो, तो पाकिस्तान में उजाले की आशा रखना मूर्खता है। लेकिन अगर यूनियन में रात के मिटने में कोई शक नहीं रह जाता, तो पाकिस्तान में भी रात मिटकर ही रहेगी। उस तरह के निशान भी पाकिस्तान में दिखाई देने लगे हैं। पाकिस्तान से बहुत-से सन्देश आये हैं, उनमें से एक में भी इस बात का विरोध नहीं किया गया है। भगवान् ने, जो सत्य है, जैसे इन छह दिनों में हमें जाहिरा तौर पर रास्ता दिखाया है, वैसे ही वह आगे भी हमें रास्ता दिखाये।"

अद्भुत दृश्य

बापू को कमजोरी तो बहुत ही आ गयी। ज्यों ही प्रवचन पूरा हुआ, त्यों ही—कठघरे में बंद लोगों को छोड़ देने का हुक्म मिलने पर वे जैसे भाग निकलते

हैं, वैसे ही—सभी लोग एकाएक, एक साथ बापू के दर्शनार्थ दौड़ पड़े। बापू को कुर्सी पर बिठाया गया। वे बरामदे में से ऊँचे.... जिससे नन्हे-से-नन्हा बच्चा भी उन्हें देख सके। यह दृश्य तो इतना अद्‌भुत, आनन्ददायक और भव्य था कि मुझे रामायण के उत्तरकांड का एक छंद याद आ जाता है। भगवान् रामचन्द्र चौदह वर्षों का वनवास और विरह सहकर अयोध्या पधारे हैं। लोग आनन्दोत्सव मनाते हैं और वनवास दिलाने का प्रायश्चित्त कर वरदान माँग रहे हैं कि "प्रभो! एक ही वरदान चाहिए और वह है, भक्ति!" आज लोगों और बापू के बीच का चित्र भी हूबहू वैसा ही खड़ा हो जाता है। मानो अनेक कठिनाइयाँ सहकर इस तपश्चर्या से बापू उबरे हैं। यह संध्या कभी भी भूल नहीं सकती। मैं मन ही मन यह छंद गाती रही :

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनम् ॥
अवधेस सुरेस रमेस विभो। सरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग वरं ॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥
मन जात किरात निपात किये। मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥
इति नाथ अनाथनि पाहि हरे। विषया बन पावँर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हये। भवदंघ्रि निरादर के फल ये ॥
भवसिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्हके पद पंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्हकें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्हके ॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्हकें सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये। पद पंकज सेवत सुद्ध हिये ॥
सम मानि निरादर आदर ही। सब संत सुखी बिचरंति मही ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुवीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महामद मान अरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल विलोकय दीन जनं ॥

इतना तो जानिये कि बापू के कार्य की स्तुति प्रजा कर रही हो और फिर माँग कर रही हो कि—

वार-वार वर माँगऊँ, हरपि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग ॥

रामदास काका आये थे। डॉ० मेहता, जहाँगीरजी और जनशेदजी भी आये। इन सबके साथ बापू ने बातचीत की। बापू ने कताई शुरू कर दी। आज के दिन न कातने के लिए बहुत समझाया, पर बापू ने कहा कि "यज्ञ किये बिना खाना चोरी का अन्न कहा जाता है। मैंने अब खाना शुरू कर दिया है, तो मुझे यज्ञ करना ही चाहिए।"

१० बजे बापू बिस्तर पर लेटे।

आज की स्थिति

३॥ बजे जागे। दतवन, पेशाब ६ औंस। ३॥। बजे प्रार्थना। ४। बजे गरम पानी, एक चम्मच नीबू का रस और नमक। ५॥। बजे 'हरिजन' के लिए लिखवाना शुरू किया। सो गये। ८॥ बजे जाग गये। ९-५ बजे पेशाब की। ९। बजे मालिश के लिए गये। १०-२० बजे बाथ में आये। वजन १०७ रहा।

११ बजे गरम पानी आठ औंस। फिर तो असंख्य लोगों का आवागमन शुरू हो गया। इनके साथ बातें। १२। बजे अनशन छूटा।

अनशन के बाद का खुराक: आठ औंस संतरे का रस, दो टेबल स्पुन ग्लूकोज के साथ। १ बजे मुनक्का का पानी १२ औंस। ३॥ बजे गरम पानी शहद के साथ और नीबू। ८ बजे आठ औंस दूध, ४ औंस गरम पानी के साथ मिलाकर, चार संतरे। ८॥ बजे गरम पानी शहद के साथ आठ औंस।

इस तरह आज का दिन बिताया। अब रात के १२ बज रहे हैं। यह सब लिखकर, सबको''चिट्ठियाँ लिखकर सोने के लिए जा रही हूँ। ● ● ●

वीती ताहि विसारि दे ! : २० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१९-१-'४८

मौन दिन

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना। फिर वापू रोज की तरह भीतर बैठे और काम किया। आज तो मौन का दिन है, इसलिए खास और कोई वात रहेगी ही नहीं। मालिश और वाथ भी नियमानुसार हुए। डॉ० दिनशाहजी ने हजामत वनायी। मैंने वापू को वाथ कराया। वापू का वजन किया गया, १०६ पौंड हुआ। एक पौण्ड घट गया। फिर जमशेदजी, जहाँगीरजी पटेल और डॉ० दिनशाहजी के साथ वातें कीं। उन्होंने जो वातें कहीं, वापू उनका जवाव देनेभर का ही लिखते थे। जमशेदजी और मेहता कराची (सिन्ध) की करुण कहानी सुना रहे थे। वे रहने-वाले भी हैं। अन्त में इन लोगों ने वापू से पाकिस्तान आने की प्रार्थना की। वापू ने लिख वताया कि "मैं पाकिस्तान आना चाहता ही हूँ, लेकिन आपने जो-जो वातें कही हैं, उन्हें लिख दीजिये, जिससे मैं उनके वारे में उचित व्यवस्था करूँगा।"

इन लोगों के जाने के वाद वापू सो गये। हम लोगों का समय लगभग वापू के साथ ही वीता। वापू ने रेंडी का तेल लिया था, लेकिन जुलाव नहीं हुआ। खाना तो अभी खाया ही नहीं। मुनक्का का पानी, मोसम्बी का रस, वार्ली और हर वार ग्लूकोज लेते हैं। पेशाव अच्छी तरफ साफ होने लगी है। आज प्रार्थना में कुर्सी पर ही आये। आज के प्रवचन में, लिखित सन्देश में वताया :

आभार-प्रदर्शन

"मेरे पास देश-विदेश से मेरी तवीयत के वारे में पूछताछ के और उपवास छोड़ने की खुशी के तारों का ढेर लग गया है। अभी भी तार आ ही रहे हैं। उन सवके प्रति व्यक्तिशः आभार-प्रदर्शन सम्भव नहीं। इसलिए आप सवके समक्ष उन सवका हृदयपूर्वक आभार मानता हूँ। इन तारों पर से तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरा यह कार्य किसी भी तरह अनुचित था ही नहीं। लेकिन इन तारों में से दो तार आपको पढ़ सुनाने हैं—एक तो पश्चिम पंजाव के मुख्य मन्त्री का और दूसरा भोपाल के नवाव साहव का है। इन दोनों के वारे में लोग वहम रखते हैं, इसलिए

तार सुनाकर जाहिर करता हूँ। हमें तो जो कोई कुछ कहे, उस पर विश्वास करना चाहिए। अगर उनके हृदय दूसरे तरह के होते, तो ऐसे तार क्यों भेजते? तार निम्नलिखित हैं:

दो ऐतिहासिक तार

"नवाब साहब सूचित करते हैं: 'आपने सभी जातियों के हृदयों को जोड़ने के लिए जो अपील की है, उसे भारत और पाकिस्तान के सभी भले आदमियों का अवश्य ही समर्थन प्राप्त होगा। पिछले वर्ष हम लोग सभी जातियों के भीतर प्रेम, मैत्री और सद्भाव की भावना फैलाने का प्रयत्न करते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप भोपाल राज्य की शान्ति में बाधा डालनेवाली कोई भी अवांछनीय घटना नहीं घट सकी। हम आपको इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि मैत्री की इस भावना का और अधिक विस्तार करने में हम अपनी पूरी शक्ति लगाने में कोई कमी न करेंगे।'

"और अब यह देखिये पश्चिमी पंजाब के मुख्य मन्त्री का तार: 'पश्चिमी पंजाब का मन्त्रिमण्डल महत्त्वपूर्ण लक्ष्य के प्रसार के लिए आपके बड़े कदम की सराहना और प्रशंसा करता है। हमारा मन्त्रिमण्डल अल्पसंख्यकों के जीवन, सम्मान और सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए और उन्हें नागरिकता के समान अधिकार प्रदान करने के लिए सदा ही प्रयत्नशील रहा है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारा मन्त्रिमण्डल इस नीति के पालन में अब पहले से भी दूनी शक्ति लगायेगा। हम इस बात के लिए उत्सुक हैं कि सारे भारतवर्ष की स्थिति में तत्काल सुधार होगा, जिससे आप अपना अनशन भंग कर सकें। इस प्रान्त में आप सरीखे अमूल्य जीवन की रक्षा करने के लिए कोई भी उपाय उठा नहीं रखा जायगा'।"

बापू की चेतावनी

आगे बापू ने कहा: "मुझे आप लोगों को एक और चेतावनी देनी है कि अभी-अभी लोग बिना सोचे, और चाहे जो आदमी चाहे जब अनशन कर रहा है। देखना है कि थोड़े ही समय में, इस तरह फल की अपेक्षा रखकर किये गये अनशनों से कदाचित् निराशा ही हाथ लगे। अलावा इसके अनशन जैसे अमोघ इलाज का इस तरह दुरुपयोग हो, तो उसका असर भी रह ही नहीं जायगा। अनशन करनेवाले

को खूब विचार करना चाहिए। अगर ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा न हो और अपना स्वार्थ हो, तो उस अनशन की कौड़ी भी कीमत नहीं। उसके लिए दृढ़ ईश्वरीय आदेश होना चाहिए।

बीती ताहि बिसारि दे !

"अब दिल्लीवासियों और निर्वासितों पर असीम उत्तरदायित्व आ पड़ा है। सभी को एक-दूसरे के प्रसंग में कभी-कभी मिलते-जुलते रहने का यत्न करना चाहिए। बीती बिसार देनी चाहिए। कल बहुत-सी मुसलिम बहनें मुझसे मिलने आयी थीं। उनमें से कितनी तो परदा रखती थीं। लेकिन मेरे पास उन्होंने परदा छोड़ दिया। उन सब बहनों से मिलकर मुझे संतोष हुआ। अब हम लोग यह भली-भाँति समझ लें कि हम कानून अपने हाथ में न लेंगे। अन्याय का बदला हम न लेंगे, बल्कि वह काम सरकार के सिपुर्द कर देंगे। साथ ही शान्ति-समिति जाग्रत रहे।"

प्रार्थना के बाद शाम को ६॥ बजे जमशेदजी, जहाँगीरजी और दिनशाह मेहता के साथ बातें हुईं।

जिन्ना का हृदय-परिवर्तन ?

…बापू कहने लगे : "मुझ पर पाकिस्तान के बारे में क्या असर हुआ, वह बतलाता हूँ। आप कहते हैं कि जिन्ना साहब का हृदय-परिवर्तन हो गया है; लेकिन इसका सबूत क्या है ? फिर वे अब भी सरदार के लिए चाहे जैसा बोल रहे हैं। इनकी दलील झूठी है। अपने यहाँ कहावत है न कि 'नाच न आवे, आँगन टेढ़' !"

जहाँगीरजी ने दलील की कि "बंबई में गांधी-जिन्ना की भेंट के समय की स्थिति भिन्न थी और आज भिन्न है।"

बापू : "मेरी दृष्टि से जरा भी भिन्न नहीं। फिर मैं तो काम को मानता हूँ, बातों को नहीं। जैसा वे कहते हैं, वैसा ही हो, तो सरदार के बारे में ये सब अफवाहें क्यों उड़ाते हैं ?"

जहाँगीर पटेल : "ये लोग समझते हैं कि आपको काफी गलतफहमी होती है। गुलाम मुहम्मद का वक्तव्य पढ़ा ?"

बापू : "मुझे अच्छा नहीं लगा।"

जहाँगीरजी : "उसने तो कहा कि मुझे तो मंत्री की हैसियत से जवाब देना चाहिए।"

बापू : "इसीके वक्तव्यपर ही सरदार के सामने मैंने जवाब दिया है और उसमें जवाहरलालजी भी थे ही। भाषा का चाहे जितना दोष निकालना हो, निकालते हैं। फिर भी अब अदालत को ही सौंपने की बात है। ५५ करोड़ तो क्या, पर दूसरे पाँच-दस करोड़ की बातें करते हैं। रिजर्व बैंक से इन लोगों ने कहा है और बातें ऐसी करते हैं कि हमने उससे कहा नहीं है। मैं किसी दिन गुलाम मुहम्मद से मिलूँगा, तो पहला ही यह सवाल पूछनेवाला हूँ।"

जहाँगीरजी पटेल : "लेकिन वे मानते हैं कि आप सत्य के पुजारी हैं। स्वयं भी साधु जैसे हैं और आपके प्रति भी उनकी हार्दिक सहानुभूति है।"

बापू : "ऐसे लोग मैंने बहुत-से देखे हैं। लेकिन वे आचरण और काम में साधु नहीं होते।"

जहाँगीरजी : "आपके अनशन के समय मुझसे जिन्ना साहब ने पूछा कि तार करें? मैंने कहा कि आपके दिल में बैठता हो, तभी तार करें। गांधीजी की हालत खराब है ही। सिर्फ पानी ही ले रहे हैं। इस तरह सब समझाया।"

बापू : "उसकी तो मुझे कुछ भी जरूरत नहीं और न उसकी कुछ परवाह ही है।"

पाकिस्तान का आन्तरिक अभिप्राय

जहाँगीरजी : "वे अब काफी सुधर गये हैं। अब्दुल निश्तर तो वकील है। उसने कहा है कि 'अथारिटी' के बगैर आयें, तो कुछ भी नहीं हो सकता।"

बापू : "वह भी शांति तो पसंद करता है, पर अपनी शर्तों पर। वह किस काम की?"

जहाँगीरजी : "यह कहने से पहले उसे समझना चाहिए। फिर भारत सरकार उसे आर्थिक दृष्टि से कमजोर बनाना चाहती है। तब अगर आप उसके साथ सचाई से बात करेंगे, तो वे आपके वफादार रहेंगे और मारकाट करेंगे, तो वे भी मारेंगे। यही मुसलमानों का और पाकिस्तान का आन्तरिक अभिप्राय है।"

बापू : "इससे बढ़कर और कोई असत्य क्या हो सकता है ? आप देखिये तो सही कि भारत के लोग—हिन्दू और सिक्ख, कितने दब गये हैं ? इसमें भी निर्वासितों और सिक्खों ने तो गजब की बहादुरी दिखाई है और इतने-इतने दुःख झेलते हुए भी समता बरतने का वचन दिया है। यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं कही जा सकती। सात दिनों में इतने गजब के परिवर्तन को आप और पाकिस्तान छोटी-मोटी बात समझते हैं ?"

कोई भरोसा नहीं !

मुझे लगा कि सरदार दादा डॉ० दिनशाहजी और जहाँगीर पटेल पर नाराज हैं, वह सोलहो आने सच ही है। बापू इतने थके हुए थे और सभी व्यर्थ की, निस्तत्त्व दलील कर रहे थे। अच्छा हुआ कि ये बातें चल रही थीं कि इसी बीच जवाहरलालजी आ खड़े हुए। बापू ने उनसे ये बातें कहीं :

"इसमें मुझे कुछ नहीं लगता। मैं कितनी दफे मिल चुका हूँ। चीज तो वही है। जिन्ना साहब की मार्फत अब कोई फैसला हो ही नहीं सकता। किसीको वहाँ जाना ही नहीं चाहिए। मुझे व्यक्तिशः भी नहीं जाना चाहिए। यहाँ लियाकत आयेगा, तो मैं जाऊँगा या नहीं, पता नहीं। मैं थक गया हूँ। हमारी हर बात का वे फायदा उठाते हैं और उसका मेरे दिल में कोई भरोसा नहीं है !" ● ● ●

हत्या का षड्यंत्र : २१ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२०-१-'४८

असंख्य पत्र

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना। प्रार्थना में श्री जमशेदजी मेहता भी उपस्थित थे। उन्हें मेरे साथ गीता के श्लोकों को कहते हुए देख प्रार्थना के बाद बापू ने उनसे गीता के विषय में पूछा। उनके साथ बातचीत की। आयी हुई डाक भी देखी। डाक में अभी तो खासकर बापू के अनशन त्यागने पर उस बारे में मुबारकबादी के ही पत्र आते हैं। डॉ० दिनशाहजी को बातचीत करनी थी, इसलिए मालिश और बाथ

उन्होंने ही कराया। आज बापू का वजन १०७ हुआ। एक पौंड और बढ़ गया। बाकी सब कल की तरह ही खाने-पीने में तरल पदार्थ ही लिये। मिट्टी और कताई, मुलाकातें आदि नियमानुसार ही चल रहे हैं। ४ बजे एनिमा दिया गया। एनिमा लेने के बाद कमजोरी मालूम पड़ी। अभी चलने में सीधे पैर नहीं रख पाते। कमजोरी तो बहुत ही है। लगभग पूरा दिन बापू के पास ही बीतता है। जो कोई बापू की तबीयत का हाल पुछवाता है, तो उन सबको चिट्ठी से जवाब देना पड़ता है। असंख्य लिफाफे और पोस्टकार्ड तो ऐसे आते हैं कि उनमें जवाब के लिए टिकट भी होते हैं। इसलिए जवाब देने का काम मेरे जिम्मे है।

भावनगर का उत्तरदायी शासन

एक समाचार मिला है कि भावनगर के उत्तरदायी शासन बनने के बाद सभी राजा लोग एकत्र होकर काठियावाड़ को एक बनाने के निर्णय पर लगभग पहुँच गये हैं। बापू भावनगर में उत्तरदायी शासन सौंपते समय, अपने अनशन के कारण, व्यक्तिगत रूप से कुछ भी सन्देश नहीं भेज सके। इसलिए आज प्रार्थना में उसका उल्लेख करने का नोट मुझे लिखाया।

जोर का धड़ाका

प्रार्थना में जाते समय ग्वालियर से बापू के नाम एक तार आया है कि वहाँ मुसलमानों को लूट लेने और मारने के यत्न चल रहे हैं। इस पर से मालूम पड़ता है कि अभी देश में अन्दर-अन्दर आग धधक ही रही है।

आज बापू प्रार्थना-सभा में कुर्सी पर ही गये थे। प्रवचन चल रहा था, वहाँ कहीं एकाएक इतनी जोर का धड़ाका हुआ कि कान बहरे ही हो जायँ। अभी बापू की आवाज बहुत ही धीमी हो जाने से मैं तो बिलकुल उनके पास बैठकर लिखती रही और इस धड़ाके से इतनी डर गयी कि एकदम बापू के पैर ही पकड़ लिये। प्रार्थना की···भीड़ के लोग भी जहाँ-तहाँ भाग गये। बापू लोगों को शान्त करने के लिए प्रवचन देने लगे। हाथ से बैठ जाने का संकेत करने लगे। लेकिन कौन कहाँ मानता है? मुझसे कहने लगे : "क्यों डर गयी? अरे! कोई सैनिक लोग गोलीबार की तालीम ले रहे होंगे। यह तो ठीक, लेकिन तुझे और मुझे अगर कोई सचमुच गोली मारने के लिए आये, तो क्या करेगी?" लोगों से भी बापू ने यही कहा कि "कोई सैनिक लोग तालीम लेते होंगे" और प्रवचन जारी रखा।

मुसलमान का दुश्मन हिन्दुस्तान का दुश्मन

आज के प्रवचन में बापू ने कहा कि "अब दिल्ली में भलीभाँति शान्ति स्थापित हो गयी है। इसलिए मुझे आशा है कि परिणाम अच्छा ही होगा। लेकिन कलकत्ते से मुझे चेतावनी दी गयी है कि परमेश्वर को उसमें कुछ भी भेद नहीं होगा (आर० एस० एस० के प्रतिनिधि की तरफ से कोई भेद नहीं होगा)। यहां आये हुए हजारों भाई-बहनों के दुःख का पारावार नहीं है। लेकिन वे भी शान्ति की इस अपील में शामिल हुए हैं। इसलिए इतनी अच्छी दिल्ली सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को बचाकर दिली दोस्ती करने के काम में बेजोड़ रूप में आगे रहेगी। हमारे नेता सरदार और जवाहर अलग नहीं हैं। अलग हो ही नहीं सकते। दोनों की बात एक ही है। कदाचित् कहने के ढङ्ग में अन्तर हो। सरदार कोई मुसलमानों के दुश्मन नहीं हैं। हाँ, अगर उन्हें कोई बनाने का यत्न करे, तो वह उसके सामने टिक नहीं सकता। आप सबको समझ लेना चाहिए कि जो मुसलमान का दुश्मन है, वह सारे हिन्दुस्तान का दुश्मन है। अमेरिका में आज भी हब्शियों को गुलाम के तौर पर हैरान कर छोड़ते हैं और फिर न्याय की लम्बी-चौड़ी बातें बघारते हैं। फिर भी उन्हें वैसा करने में कुछ भी अनुचित नहीं मालूम पड़ता। लेकिन हम लोग उनके इस काम को गलत ही बताते हैं। हमारे अखबारवाले भी इस कुकृत्य की सर्वत्र निन्दा करते रहते हैं। इसलिए हम लोगों ने ईश्वर को साक्षी रखकर जो उम्दा निर्णय किया है, उससे चिपके रहेंगे, तो बहुत ही ऊँचे चढ़ जायेंगे।"

पाकिस्तान जाने की व्यग्रता

[बापू ने इतना कहा, तो इसी बीच वहाँ एकाएक धड़ाका होने से अत्यन्त अशान्ति छा गयी, जिसमें दस मिनट बीत गये। फिर शान्ति होने पर पुनः प्रवचन जारी करते हुए बापू ने कहा :]

"जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, कदाचित् अब पाकिस्तान जाने के लिए चल पड़ूँ। यहाँ की सरकार और डॉक्टर लोग मुझे आज्ञा दें, तो तत्काल ही चल पड़ूँगा, अभी मैंने अनाज नहीं शुरू किया है। उसे शुरू करने में अभी करीब पन्द्रह दिन लग जायेंगे।

जवाहर : अनमोल रत्न

"हमारा सौभाग्य है कि हमारे प्रधान मन्त्री सचमुच ही नाम जैसे गुण से भी अनमोल रत्न हैं। हिन्दुस्तान की इस रमणीय भूमि में जवाहर तो सचमुच ही 'रत्न' पैदा हुआ है। इनका मकान मेहमानों से भरा रहता है। फिर भी अपने इस मकान में उन्होंने निर्वासितों के लिए दो कमरे अलग रखे हैं। उन पर आज इतनी सारी चिन्ताएँ हैं कि उनके पास गीला और सूखा दो बिस्तर होंगे, तो खुद गीला बिस्तर काम में लेंगे या अपना शरीर कसरत करके गर्म रखेंगे। अगर समझदार वर्ग और बड़े-बड़े पूँजीपति इसका अनुकरण करें, तो देश के कितने ही प्रश्न अपने-आप हल होकर ही रहेंगे।

बनावट से पेट क्यों भरना ?

"दूसरी, मुझे यह खबर दी गयी है कि मेरे अनशन से लाभ उठाकर कितने ही आलसी लोगों ने करेन्सी नोट निकालना शुरू किया है। मैं पूछता हूँ कि इस तरह बनावट करके पेट क्यों भरना पड़ता है ? क्या पेट का गड्ढा भरने का दूसरा कोई सच्चा मार्ग नहीं मिल पाता ?

कश्मीर की समस्या

"लाहौर से 'कश्मीर फ्रीडम लीग' के प्रधान का मेरे नाम एक तार आया है। वे सूचित करते हैं कि जब तक कश्मीर का प्रश्न हल नहीं होता, तब तक कोई काम सफल नहीं होगा। भारत सरकार को चाहिए कि कश्मीर से अपनी सेना वापस बुला ले और कश्मीर जिसका हो, उसे सौंप दे।

"इस पर मैं पूछता हूँ कि जब तक कश्मीर के प्रश्न का निर्णय नहीं होता, तब तक क्या वहाँ के हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के दुश्मन बनकर ही रहेंगे ? फिर जब कश्मीर के महाराज और शेख अब्दुल्ला ने भारत-सरकार के पास सेना माँगने की विनती की, तभी वहाँ सेना पहुँची है। कश्मीर जिसका है, उसे सौंप देने की बात तो ठीक है। लेकिन किसे सौंपा जाय ? बाहर से जो लोग वहाँ घुस गये हैं, वे पहले चले जायँ। फिर कश्मीर जिसका होगा, उसे सौंपने में किसीको भी कदाचित् ही कुछ हरकत हो। मैं तो अभी-अभी अनशन कर चुका हूँ। मैं किसीका भी दुश्मन नहीं हूँ और न किसीको अपना दुश्मन ही मानता हूँ। इसलिए तार भेजनेवाले भाई से प्रार्थना करता हूँ कि वे यहाँ आयें और अपनी बात मुझे समझायें।

ग्वालियर की हैरानी

"मैं यहाँ आ रहा था, तो ग्वालियर के मुसलमानों का मेरे नाम यह सन्देशा आया है कि वहाँ मुसलमानों को बेहद हैरानी भुगतनी पड़ रही है। आपकी मार्फत मैं वहाँ के लोगों को सूचित करता हूँ कि इस तरह करने से हम लोग यहाँ किये हुए अपूर्व कार्य पर पानी फेर देंगे।

"मुझे ऐसे समाचार मिले हैं कि काठियावाड़ में छोटे-बड़े लगभग २०२ देशी नरेश हैं। उन सभी नरेशों ने मिल-जुलकर यह निर्णय किया है कि एक राज्य बनाया जाय। अगर यह निर्णय सच हो, तो स्वागताई है और एक भव्य काम वे कर दिखायेंगे। भावनगर राज्य ने अपना राज्य स्वेच्छा से, त्यागमय रीति से प्रजा को सौंप दिया है। इसलिए मैं वहाँ के महाराज और प्रजा को हार्दिक धन्यवाद और मुबारकबादी आपकी मार्फत भेज रहा हूँ।"

हत्या का षड्यंत्र

प्रार्थना से जब हम लोग अन्दर गये, तो पता चला कि यह तो बापू को मार डालने का एक षड्यंत्र था। मदनलाल नामक एक निर्वासित युवक बापू को मारने की कुछ फिराक में ही था। उसका विचार तो यह था कि हम लोग जहाँ बैठते हैं, उसके पीछे बिरलाजी का नौकर रहता है और वहाँ से बम फेंककर एक साथ हजारों का खातमा कर दिया जाय। लेकिन सौभाग्य से बिरलाजी के नौकर ने स्पष्ट कह दिया कि जैसे सब बैठते हैं, वैसे ही प्रार्थना-सभा में बैठिये न? इसलिए उसने इस तरह बम फेंका। वह बम फेंककर भाग रहा था कि एक पंजाबी बहन ने बहादुरी के साथ उसे पकड़ रखा और पुलिस के हवाले कर दिया।

बहादुरी कब?

यह समाचार देखते-देखते दिल्लीभर फैल गया और मुबारकबादी के टेलीफोन पर टेलीफोन आने लगे। हम लोग फोन उठाते-उठाते थक गये। आखिर रिसीवर नीचे ही रख दिया। लेडी माउन्टबैटन भी यह समाचार सुनकर बापू के पास दौड़ी आयीं। बापू बच गये, इसके लिए उन्हें मुबारकबादी दी। लेकिन तब तक बापू ने तो यही कहा कि "कहीं निकट में सैनिक अभ्यास ही होता होगा।" और…के बारे

में वापू ने कहा कि "इसमें कुछ भी वहादुरी नहीं। जब मुझे सचमुच कोई मारनेवाला सामने हो आये और मैं उसका वार हँसते-हँसते झेलूँ और मन में 'राम' रटता रहूँ, तभी मुवारकवादी के लायक माना जाऊँगा।"

मदनलाल का वयान

हम लोग तो इस आदमी की जिस कमरे में जाँच चल रही थी, वहीं थे। जहाँ वापू बैठते हैं, वहाँ से ७५ फुट दूर यह वम फेंका गया। मदनलाल की उम्र अन्दाजन २५ साल की होगी। वह हिम्मत के साथ सारा वयान दे रहा था और कह रहा था कि महात्मा गांधी को मार डालने के लिए ही मैंने यह वम फेंका है। उसकी जेब में से और भी हाथ से वनाये वम के गोले भी निकले। जमशेदजी भी आये हैं। वापू ने शाम को ७॥ वजे का समय उन्हें दिया था। उन्हें तो कुछ पता ही न था। विरला-भवन में खूब भीड़ और धाँधली देख वे जिस किसी तरह भीतर तो आ पाये। वे कहने लगे: "कराची में ऐसे लड़कों से तो इसी तरह के काम लिये जाते हैं। मैंने तो यह सब वहुत देखा है। इन लोगों को यह तालीम दी रहती है कि अगर पकड़ लिये जायँ, तो किसी भी तरह का उत्तर नहीं देना और हँसते ही रहना चाहिए।" मदनलाल ने तो एक ही जवाब दिया कि "हमें गांधीजी की सुलह-शान्ति पसन्द नहीं पड़ी, इसलिए हमने ऐसा किया है।"

रात को जवाहरलालजी, राजकुमारी वहन वगैरह सभी एक के वाद एक आते-जाते रहे। खुरो वापू को सिन्ध वुलाने के लिए राजी हैं, यद्यपि पण्डितजी को उनके इस कहने में विशेष तथ्य नहीं दीखता।...१० वजे वापू सोये।...का चित्र अभी डगमगा रहा है।...से वापू ने कहा: "ऐसा करने में महान् पाप देख रहा हूँ। उसकी अपेक्षा...मुझे छोड़े या राजकोट चली जाय या राष्ट्रीय पाठशाला में संगीत भी सीखेगी। क्योंकि इस वारे में कनु और नारायणदास एक ही विचार रखते हैं। लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा है कि अव नारायणदास जैसे या कनु जैसे भी कुछ निर्णय पर नहीं पहुँचते। इसलिए जो होना चाहिए, वह नहीं हो पाता।"

● ● ●

जाको राखे साइयाँ ! : २२ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२१-१-'४८

डरूँ क्यों ?

नियमानुसार प्रार्थना। रात में तो मेरे मन में लगातार, मदनलाल ने बापू को मारने के लिए जो षड्यन्त्र रचा था, उसीके विचार घूमते रहे। इस अशुभ कल्पना का चित्र आँखों के सामने ही घूम रहा था। अगर कुछ हो जाता, तो क्या हाल होता ? 'जाको राखे साइयाँ' यह कहावत सर्वथा सत्य है। इन लोगों का कितना बड़ा षड्यन्त्र होगा ? बापू ने तो सबको एक ही जवाब दिया कि "भगवान् को मेरी जरूरत होगी, तब तक मुझे रखेगा और जरूरत न होने पर उठा लेगा। मैं तो उसका दास हूँ, सेवक हूँ। मैं क्योंकर चिन्ता करूँ ?"

कल शाम को ही बिरला-भवन में मिलिटरी रखी गयी। यों तो एक सुझाव यह भी दिया गया था कि प्रार्थना में आनेवालों की तलाशी ली जाय, लेकिन साफ-साफ इसे इनकार कर दिया और काफी वाद-विवाद के बाद सरदार दादा के सन्तोष के लिए इतना पहरा रहने दिया।

प्रार्थना के बाद बिरलाजी ने कहा भी कि "मुझे तो डर था कि आप इतनी पुलिस को कैसे रहने देंगे ?"

मेरा रक्षक राम !

बापू ने कहा : "आपको जितनी दहशत लगती है, उतनी मुझे नहीं। फिर भी मैं इसे 'ना' कह दूँ, तो सरदार और जवाहर की इन सब चिन्ताओं में एक मेरी भी चिन्ता बढ़ जायगी। आज इन लोगों पर असीम जिम्मेदारी है और मैं तो मानता हूँ कि मेरा रक्षण करनेवाला राम ही है। उसे मुझे उठा लेना हो, तो लाखों मनुष्यों का चाहे जितना रक्षण हो, फिर भी कोई मुझे बचा ही नहीं सकता। लेकिन शासकों की मेरी इस अहिंसा पर श्रद्धा नहीं है। उनकी यही श्रद्धा है कि मुझे पुलिस का यह पहरेदार बचा सकेगा। तब भले ही वैसा किया जाय। इन दिनों अहिंसा को माननेवाला कदाचित् एक मैं ही हूँ। ईश्वर से एक ही प्रार्थना है कि ऐसी अहिंसा

कम-से-कम अकेला मैं ही दिखा सकूँ, ऐसी शक्ति दे। इसलिए मेरी रक्षा के लिए यहाँ पुलिस हो या न हो, सेना के बड़े-बड़े लोगों का सरंजाम रहे या न रहे, मेरे लिए सब समान ही है। कारण मेरा रक्षक तो राम है। बाकी सब बेकार ही हैं, इस विचार पर मैं अत्यन्त दृढ़ होता जा रहा हूँ।"

आज युधिष्ठिर कहाँ?

नियमबद्ध सारा दैनिक कार्यक्रम चलता है। अभी कमजोरी तो रहेगी ही, लेकिन मालिश के लिए धीमे-धीमे पैर रखते हुए चलकर जाना शुरू कर दिया है। बम के इस धड़ाके के बाद शायद बापू अपने बारे में और भी अधिक बेखबर न बन गये हों? हर बारे में और हर मौके पर वे यही कहते हैं कि "मेरी क्या बात है? ईश्वर को अभी मुझसे काम लेना होगा, इसीलिए उसने बचाया है। यों तो मानव ने जिस दिन जन्म लिया, उसी दिन से मृत्यु उसके साथ लगी है। उसकी चिन्ता हम लोग क्यों करें?"

एक बातचीत में—अभी-अभी...के बीच अमुक विषयों में एक विचार नहीं हैं। उसे...यह बापू से कहा: "बापू! आप ऐसा क्यों नहीं सोचते कि किसीमें अमुक शक्ति कम होती है, तो किसीमें अधिक! किसी शक्कर में मीठा कम होता है, तो किसीमें अधिक। आप जब शुद्ध धर्म की बातें करते हैं, तब दूसरे आपद्धर्म की बातें करते हैं। युधिष्ठिर का जब स्वर्गारोहण हुआ, तो आगे ही आगे बढ़ते गये और उन्हींके सगे भाई एक के बाद एक गिरते गये।" बीच में ही एक व्यक्ति बोल उठा: "लेकिन युधिष्ठिर के साथ कुत्ता भी तो था न? और आपके दृष्टान्त के अनुसार स्वर्ग पहुँचानेवाला आज ऐसा कुत्ता भी कौन है? फिर वह तो पशु था, जब कि यहाँ मैं मानव की बात कर रहा हूँ—ऐसा कोई मानवीय व्यक्ति तो नहीं है न?" इस पर बापू ने कहा: "लेकिन आज ऐसा युधिष्ठिर भी कहाँ है?" और सब हँस पड़े!

दुश्मनी नहीं, दोस्ती

सिखों के एक प्रतिनिधि-मंडल के साथ वार्तालाप में ज्ञानी करतारसिंह ने सिखों पर हुए अत्याचारों का वर्णन किया।

बापू ने एक बात नोट करते हुए कहा: "मैं जानता हूँ कि वहाँ क्या हो रहा है। मगर इस तरह बुजदिली करके हमारा काम बननेवाला नहीं है। मैंने आज एक बात

सुनी कि इन दिनों यू० पी० में हिन्दुओं को ऐसा लगता है कि अगर हम दाढ़ी रखेंगे, तो बहादुर बन जायेंगे। लेकिन इस तरह बहादुर थोड़े ही बनते हैं? मैं आपका ग्रन्थ साहब पढ़ता हूँ, तो आपको खुश रखने के लिए थोड़े ही पढ़ता हूँ या आपको पूछकर थोड़े ही पढ़नेवाला हूँ। मगर ऐसा कहें कि 'दाढ़ी रखो, कृपाण रखो और अमुक-अमुक रखो', तो यह सब गुरु साहब ने कहीं नहीं लिखा है। 'मुसलमान हिन्दुओं को जहरी साँप मानते हैं', तो आपको फाका छुड़वाने की कोशिश नहीं करनी थी। अगर ऐसा है, तो मुझे खाना जहर-सा लगेगा। मुझे पता चले कि सब दगा ही दगा है, तो निकम्मा है—यह मैंने मुसलमानों से साफ-साफ कह दिया था।

"आज का नजारा आले दरजे की बहादुरी है। अब बदला दुश्मनी का नहीं, दोस्ती का लेना है। आपकी बात मुझे मान्य है। अच्छा हुआ कि आपने सब बातें बतायीं। अब दिल्ली में पूरी शान्ति है, तो मैं कौन-सी सिक्युरिटी माँगनेवाला था! मगर दगा होगा, तो मुझे यह सन्तरे का प्याला जहर जैसा लगेगा। अभी तो यह तीसरा दिन (उपवास छोड़कर) है। जब मैं तैयार हो जाऊँगा, तब जो कहना चाहें, कहें और करें।"

गांधी आप जैसा ही

ज्ञानी करतारसिंहजी : "दुःखी आदमी की अक्ल ठिकाने नहीं रहती। सभी महात्मा गांधी तो नहीं हो सकते।"

बापू : "महात्मा गांधी न फरिश्ता है और न शैतान। वह सिर्फ आप जैसे इन्सान ही हैं।"

सिख भाई : "नहीं, हमारे महात्मा गांधी तो एक ही हैं।"

बापू : "क्या आप दो हैं?"

सिख भाई : "दुनिया के कोने-कोने में आपकी आवाज पहुँचती है।"

बापू : "ठग भी दुनिया में बहुत हैं न? (हँसी)। शेखूपुरा में जो कत्लेआम हुआ, वह तो नादिरशाही से भी ज्यादा हुआ। रावलपिंडी में भी यही था। इसलिए अब मैं शेखूपुरा का नाम क्या लूँ? किसने ज्यादा और किसने कम काटा, यह कहने का अब कोई मतलब नहीं है। सिखों ने तो इस वक्त ऐसी बहादुरी बताई है कि मैं [illegible]

उनका एहसान मानता हूँ। इतना दुःख होते हुए भी मेरा फाका छुड़वाने के लिए उन सबने तमाम शर्तें मंजूर कर रखी हैं, यह कोई कम नहीं है। मगर एक इन्सान जितना ज्यादा-से-ज्यादा कर सकता है, उतनी कोशिश मैं कर रहा हूँ।

जिन्ना का हुक्म

"मेरे पास तीन पारसी आये हैं। वे लोग जिन्ना साहब और पाकिस्तान के नेताओं से मिलकर आये हैं। उन्होंने कहा कि कराची में बहुत ज्यादा लोगों को परेशानी तो जरूर हुई। मगर कराची में सब शरमिन्दे भी हुए हैं। कोई ऐसा नहीं कहता कि हमारी गलती नहीं हुई। अब जिन्ना साहब ने हुक्म दिया है कि एक भी आदमी इस तरह गुनहगार होगा, तो उसे कड़ी सजा होगी। लूट का माल अफसरों के घरों में से निकाला गया है। इसलिए मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मुझसे जितनी सेवा हो सकेगी, उतनी करनेवाला ही हूँ। आखिर मुझे तो करना है या मरना है। कल ही आपने देखा होगा, मगर मैं मानता हूँ कि राम को अभी भी मेरे पास से कुछ काम लेना ही है, तो मुझे करना ही है।"

प्रार्थना-सभा में पहुँचने में दस मिनट देर हुई। बापू ने सबसे माफी माँगी और अपने प्रवचन में कहा :

सौभाग्य की प्रतीक्षा

"कल जो धड़ाका हुआ और उसके बावजूद मैंने जो शान्ति रखी, इसलिए बहुत-से लोग मुझे शाबासी देते हैं। मुबारकबादी के तार और टेलीफोन तथा चिट्ठियाँ लिख रहे हैं। लेकिन वस्तुतः देखा जाय, तो इसमें किसी तरह की बहादुरी की, यह कहा ही नहीं जा सकता। जब बम का धड़ाका हुआ, तब मुझे यही लगा कि आसपास कहीं सैनिक लोग अभ्यास करते होंगे। लेकिन बाद में ही यह खबर लगी कि यह तो मुझे मारने का षड्यन्त्र ही था। सच्ची बहादुरी तो तभी कही जायगी, जब मेरे सामने ही बम फूटे और मैं न डरूँ और आप देख सकें कि उस समय भी मैं हँसता हुआ ही आपसे विदा लूँ। इस सौभाग्य की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। लेकिन आज लोग जो मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, मैं उसके योग्य हूँ ही नहीं।

भगवान् दण्ड देगा

"आप सबसे मेरी यह विनम्र प्रार्थना है कि जिस भाई ने यह काम किया है,

उसको कोई भी नफरत से न देखे और न उसका तिरस्कार ही करे। उस बेचारे को यह लगता होगा कि मैं हिन्दू-धर्म का दुश्मन हूँ। इस युवक पर तो मुझे दया ही आती है। फिर भी उसने बड़ी बहादुरी के साथ पुलिस को बयान दिया है। हम सब जिसे दुष्ट मानते हों, उसे सजा देने का हमारा अधिकार नहीं। जो सचमुच दुष्ट होगा, उसे सजा देने के लिए भगवान् बैठा ही है। फिर भी इस तरह हिन्दू-धर्म को बचाया ही नहीं जा सकता। मैं बचपन से ही सर्वधर्मों के प्रति समादर दिखाता आ रहा हूँ। अगर मेरे हाथों हिन्दू-धर्म का रक्षण होना हो, तो ईश्वर मुझे यह भावना सभीमें प्रकट करने के लिए निमित्त बनायेगा।

प्रेम से जीतें !

"कल सिख भाई मुझसे कह गये कि इस काम में उनमें से किसीका हाथ नहीं है। वह एक सिख या मुसलमान चाहे जो हो, उससे क्या ? मैं यही प्रार्थना करूँगा कि भगवान् उसे सन्मति दे। मैंने आई० जी० पी० से भी कह ही दिया है कि उसे कोई सताये नहीं, इसका ध्यान रखें। उसे प्रेम से जीतने का यत्न करना चाहिए। अगर उसे यह प्रायश्चित्त हो कि ऐसा करके मैंने किसीकी भी सेवा नहीं की, तो वह दया का पात्र ही है। लेकिन अगर आपके मन में...भी यह लगता हो कि बूढ़े ने व्यर्थ ही अनशन किया और चूँकि अनशन में मर जाय, तो कलंक का टीका लगेगा, इसलिए...मुझे जिलाने के लिए ही यह प्रयत्न हुआ, तो आप भी गुनहगार हैं। लेकिन अगर आपको यह लगता हो कि दिल्ली में अशान्ति करने में हम लोगों की ही बदनामी है, तो वातावरण का असर उस भाई पर अवश्य ही होनेवाला है। दुनिया में कहीं ठिकाना ही नहीं रहता।

"इस प्रार्थना-सभा में ही आप सब भगवान् का नाम लेने और उसका काम समझने के लिए एकत्र हुए हो, ये चारों ही तरफ घूमनेवाले पुलिसवाले और कोई आपकी मदद के लिए न पहुँचे, गोलियाँ दनादन छूटती हों और फिर भी मैं मुक्त मन और मुक्त कंठ से रामनाम लेता तथा लिवाता रहूँ—जब ईश्वर मुझे ऐसी शक्ति देगा, तब मैं सचमुच धन्यवाद का पात्र हो सकूँगा।

"मैं यह जानकर खुश हुआ कि बम फेंकनेवाले को एक अबला बहन ने हिम्मत के साथ पकड़ रखा। मैं मानता हूँ कि बलवान् हो या निर्बल, गरीब हो या

पूँजीपति, लेकिन जिसका मन साफ है, उसके पास सभी कुछ है। चाहे जो हो, लेकिन आप सबका मेरे प्रति जो अपार प्रेम है, मैं उसके लायक बनूँ, यही भगवान् से प्रार्थना है।

पाक सरकार से प्रार्थना

"बहावलपुर के भाई अत्यधिक घबरा उठे हैं। आज ही मेरे नाम वहाँ के नवाब साहब ने तार भेजा है कि उनसे जितनी बनेगी, पूरी मेहनत करेंगे। बम्बई से सिख भाइयों का तार है कि सिंध में दस-पन्द्रह हजार सिखों का जान-माल भारी संकट में पड़ गया है। मैं यहाँ से पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना करता हूँ कि वे सिखों को विश्वास दिलायें कि "आप यहाँ रहें, तो हम आपकी रक्षा करेंगे।" अगर ऐसा न कह सको, तो सभी सिखों को एक जगह इकट्ठा कर पूरी सुरक्षा के साथ यहाँ भेज दें। सिखों जैसी बहादुर जनता पर और उसकी इज्जत-आबरु पर हाथ डालने की किसीकी ताकत नहीं देखता। सिख जनता धैर्य रखे। मैंने हालत देखने के लिए आज ही अपने तीन निजी पारसी भाइयों को भेजा है।

बयालीस का ही परिणाम

"एक भाई ने १९४२ के और अभी के मेरे अनशन की तुलना करते हुए लिखा है कि अगर आपका शरीर छूट जायगा, तो और भी अधिक हिंसा फूट पड़ेगी आदि।

"यह सच है कि १९४२ में मेरे जेल जाने के बाद हिंसा फूट पड़ी। आज हम उसीके कारण भुगत रहे हैं। अगर उस समय सारा देश अहिंसक बना रहता, तो आज हमारी यह दशा कभी भी न होती। मुझे बचाना होगा, तो भगवान् ही बचायेगा। अगर अहिंसा से भरा मानव मरता है, तो भी नुकसान नहीं होगा। मैं तो गरीब मनुष्य हूँ। मुझे किसी बात की बिसात नहीं है। ईश्वर तो बिना बिसात के गरीब मानव को निमित्त बनाकर स्वयं जो चाहता है, करने में समर्थ ही होता है।

"दिल्ली में अब हिन्दू-मुसलिम दंगे नहीं होते, यह सुनकर मुझे सन्तोष हुआ। मुसलिम बहनें भी अब खुलेआम घूम-फिर रही हैं, इससे भी मुझे सन्तोष होता है। हम अपने हृदयों, अपने दिलों को भगवान् का मन्दिर बनायें, यही प्रार्थना है।"

खतरा मिटा नहीं

प्रार्थना के बाद बापू कुर्सी पर ही भीतर गये। मुलाकातों का ताँता हो लगा हुआ है। आने के बाद प्रवचन देखा। सिन्ध की यह असह्य कहानी सुनकर सभीका हृदय द्रवित हो उठता था। देखें, अब बापू कौन-सा नया कदम उठाते हैं?

रात में पण्डितजी के साथ घण्टेभर बातचीत की। अवश्य ही यह अनशन और बम की घटना भयानक थी। लेकिन मालूम पड़ता है कि अभी बापू पर से खतरा नहीं मिटा। फिर भी उनके लेखों, विचारों और प्रवृत्तियों से अभी भी कुछ नया ही या जनता को चमका देनेवाला कृत्य करने का रंग-ढंग दीख रहा है। दो दिनों में कार्यसमिति की बैठक भी होने जा रही है। उसमें क्या होता है, देखें। अभी तो दबी आग जैसा ही लगता है। शान्ति का कोई असर नहीं दीखता।

पाप को किसीका सहारा नहीं

९॥ बजे सोने की तैयारी हुई। मैं तो भाई साहब के साथ बातें करने और लिखने में रोक ली गयी। अब सबको समझ में आने लगा है और सभी एक ही बात कहते हैं कि "अब पता चलता है कि सभी बापू के कितने वफादार हैं।" सस्ती कीर्ति मिल जाती है, इसलिए सभी बापू के पास पहुँचते हैं। लेकिन बापू कितने उदार हृदय हैं कि सभीका कितने प्रेम से स्वागत करते हैं।

मेरे मन में विचार आया कि नारायणदास काका जैसे और जितनों को बना, सबको भाई ने उपदेशात्मक पत्र तो लिखे, पर उन्होंने जुदी बात नहीं पायी। लेकिन अब तो मुझे सब पर अपार दया आती है। उनमें एक बंगाली बहन, जो नोआखाली से आयी हैं, भी चर्चा की विषय बन गयी हैं। उनकी अपेक्षा...विवाह ही कर लें, तो सभीके लिए शोभास्पद होगा, यही दीखता है। बापू मुझसे कहते : "सभी जैसे हैं, अपने-आप दीख पड़ेंगे। उन्हें वैसा दिखलाने में कोई निमित्त न बने, इसीमें लाभ है। मैंने आज ही प्रार्थना में कहा है न कि पाप को किसीका भी सहारा नहीं होता। इसी कारण सभीको बैठाकर इतने भारी विरोध के बीच भी तुझे तार कर महुवा से ठेठ नोआखाली तक बुलवाने का यही उद्देश्य था। उनकी दृष्टि से ही...इन सबको देखने दो। हम लोग कहाँ हैं, कहाँ थे और कहाँ जायेंगे?"—पैर धोते हुए बापू ने ये शब्द कहे।

● ● ●

विस्फोट : जाग्रति का शुभ लक्षण : २३ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२२-१-'४८

'बा' के श्राद्ध पर उद्गार

आज बड़ी बा के मासिक श्राद्ध के निमित्त गीता-पारायण हुआ। आधा पारायण सुनने के बाद बापू बीच में ही सो गये। अभी कमजोरी तो है ही।

प्रार्थना के बाद मेरे साथ रात की सारी बातें कीं : "मुझे लगता है कि जिन लोगों को धिक्कार सहना पड़ा है, उन्हें चाहे जब अपना हृदय अपने-आप खोलना ही पड़ेगा।"···नोआखाली से···अपने साथ लायी हुई 'दीदी' के बारे में बातें कहते हुए बापू कहने लगे : "यह भी मेरी आँखों से ओझल नहीं है। लेकिन मैं अब किसीका काजी क्यों बनूँ ? सभी खुद ही अपने काजी बनें और समाज में जिस तरह रहना हो, उस तरह रहें। कांग्रेस, भारत और पाकिस्तान के विषय में भी मेरी यही नीति है। कल की कौन जानता है ? लेकिन अब जब तक अपने जीवन का अन्तिम श्वास चले, तब तक पूरी सचाई से ही रहना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि अपने विचारों को माननेवाला मैं अकेला ही हूँ, लेकिन अब उनमें परिवर्तन नहीं हो सकता। जैसे हो जैसे मैं सोचता हूँ, वैसे ही वैसे अत्यन्त दृढ़ होता जा रहा हूँ। किन्तु जिनका मेरे विचारों के साथ प्रहारभरा विरोध है, उन्हें अपनी छाती पर हाथ रखना होगा। मैं मानता हूँ कि बम का धड़ाका अनिवार्य रहा। मेरी जाग्रति के सुलक्षण ही भगवान् ने भेजे हैं। आज इस यज्ञ की और अपनी अत्यन्त कसौटी में अगर तू शुद्धता के के साथ टिक पायी है, तो कदाचित् इसी तरह आगे भी टिक सकेगी। क्योंकि तू मेरे पास स्वेच्छा और निःस्वार्थ भाव से आयी है। लेकिन और सब लोगों की अधिक कसौटी जो मैंने नहीं की, उसे अब करना नहीं चाहता। उसकी कसौटी समाज करेगा ही। उसीमें समाज और साथियों का भला है। मुझे तुझसे यह बात कहानी ही थी।

तेरी सच्ची माँ हूँ !

"आज बा की मरण-तिथि के उपलक्ष्य में गीता-पारायण चल रहा था, तो उस

समय में गहरे विचार में था कि···के जैसों का यह हाल ? इस बंगाली महिला के पीछे यह भावना ?···के जैसी इतना झूठ बोल सकती है ? नोआखाली से या राजकोट से···ये दोनों आज चुप बैठे हैं ? लेकिन भगवान् कहता है कि तुझे मैं एक के बाद एक सभीका असली रूप दिखला दूँ। इसीलिए यह धड़ाका भी किया। इस धड़ाके के पीछे भारी गंभीरता भरी हुई है और उसे कोई पहचान नहीं सकता। लेकिन अब इस चर्चा में आज तुझे फँसाने में कोई लाभ नहीं है। मैं अत्यन्त दबा ही हुआ हूँ और इस तरह तुझे तो मुझे समझाना ही चाहिए। तू अपना तो बेड़ा पार ही समझना। और जैसा कि मैंने कल की प्रार्थना-सभा में कहा, मुँह में राम का नाम हो, तेरी गोद हो और हँसते-हँसते ही किसीके छुरें या बंदूक की गोली का वार झेलता रहूँ। इसलिए दुनिया कहे या न कहे—क्योंकि वह दुरंगी है—पर मैं तुझसे कहता हूँ कि तू मानना कि मैं तेरी सच्ची माँ हूँ। सच्चा महात्मा हूँ। अगर ऐसा ही कुछ हो, तो अब मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। अब जा और बिसन को भेज दे, 'हरिजन' की तैयारी करनी है।···"

बहुत दिनों बाद बापू ने इस तरह की बातें कहीं। इन्हें तुरन्त लिख रही हूँ। बापू डाक देख रहे हैं। उनके पास 'हीटर' रखा हुआ है।

क्षणभर तो बापू ने कही हुई बात के चित्र की कल्पना की। लेकिन ऐसा तो वे कहते ही रहते हैं। मैं तो मानती हूँ कि बापू का अपघात ही टल गया। अब कुछ भी नहीं होगा और बापू १२५ वर्ष तक जियेंगे ही। लेकिन वे 'दीदी' की बात पर कहते थे, इसलिए उनके हृदय में···साथियों की ठगी के बारे में कदाचित् वेदना भरी हो। इसीलिए बड़े ही गंभीर दिल और चेहरे से कह रहे थे। मैंने इस बारे में उनके सामने कुछ भी नहीं कहा, क्योंकि सुबह-सुबह बापू का व्यर्थ समय खराब होगा और वे थक जायेंगे। और किसीकी नाराजगी उठानी पड़े, लेकिन बापू के पास सभीके···पेश ही हो गये और मुझे खासकर लिख लेने के लिए कहा है। इसमें कुछ आन्तरिक हेतु होना चाहिए। देखें, क्या गुल खिलता है ? मुझे हर घड़ी डर लगता है कि इतने शिष्य, साथी और विद्वानों के रहते इन दिनों बापू के निकट मेरा स्थान इतना प्रमुख हो गया है। वे मुझे ऊँची दृष्टि से देखते हैं, सिखलाते हैं, तो कदाचित् कहीं गहरी खाई में गिरने का मौका न आ जाय। इसलिए बापू जब-जब मुझे किसीके

बारे में कहते या लिखते हैं, तो अच्छा ही नहीं लगता। कहीं इतना ऊँचा चढ़ाते हैं, तो कभी गिरने का समय न आ जाय। इसकी अपेक्षा बीच की स्थिति ही ठीक है।

दूसरा जवाहर नहीं

रामदास काका १२ बजे आये थे। वे आज नागपुर जानेवाले हैं। बापू सुशीला बहन को बहावलपुर भेजनेवाले हैं।···एक बात की खोज के लिए। बापू कहने लगे : "···की जवाहर के साथ तुलना हो ही नहीं सकती। इस परिवार की शिक्षा ही अलग है। भारत में बैरिस्टरों या धनवानों की कमी नहीं। मुझे बता कि क्या भारत में दूसरा भी कोई जवाहर है ?"

बापू का और सब तो नियमानुसार ही चला करता है। भोजन में अभी अनाज शुरू नहीं किया है। वजन १०८ पर पुनः स्थिर है। अब तो मुसलमान कोई खास शिकायत नहीं करते। दिल्ली में भलीभाँति शान्ति दीख रही है।

सब कुछ भगवान् के हाथ

आज बापू धीरे-धीरे प्रार्थना-सभा तक चलकर ही गये। उनके पैरों में अभी ताकत नहीं आयी। खंभे तक हाथ था, तब साधारण तबीयत से बापू के टेकने का वजन मालूम नहीं पड़ता था। लेकिन आज हाथ के टेकने का वजन मालूम पड़ता था। यही बताता है कि अभी बापू को कमजोरी तो है ही।

फिर भी यह सच है कि चलते हुए जाते देख सभी को बहुत आनन्द हुआ। बापू ने आज के प्रवचन में कहा : "आप देख सकते हैं कि ईश्वर धीरे-धीरे मेरे शरीर में ताकत भर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि अब जल्दी ही पहले जैसा हो जाऊँगा। लेकिन आखिर सब कुछ भगवान् के ही हाथ में है।

"एक भाई का अभी मुझे एक लिखित सन्देश मिला है कि जवाहरलालजी और अन्य मंत्रियों या अधिकारियों ने अपने-अपने घरों में रहने की व्यवस्था कर दी है। लेकिन उनमें कितने समा सकते हैं ? और बड़े लोग तो बातें ही करना जानते हैं।

"यह सवाल लिखनेवाले भाई की बात यों तो सच्ची है कि इतने भर से शरणार्थियों को पोसा नहीं जा सकता। लेकिन ऐसा करने से एक प्रकार का आदर्श

उपस्थित हो जाता है। इसी तरह दुखियों पर उनके प्रति दिखाई हुई सहानुभूति का असर भी पड़ता है।

स्पर्धा : देश की मृत्यु

"दूसरी एक बात यह आयी है कि लोग कहते हैं : 'पहले कांग्रेस को एक लाख रुपये जुटाने में बड़ी ही मुश्किल पड़ती थी। लेकिन आज हम लोगों के पास करोड़ों रुपये तो आये ही हैं, पर इनके सिवा और भी इतने रुपये उगाहने हों, तो कोई कठिनाई नहीं होगी।' पैसा इकट्ठा करने की ताकत हममें आयी, यह ठीक ही है। पर मैं देखता हूँ कि खर्च तो अंग्रेजों के जमाने में चलता था, वैसा ही चल रहा है। इस नाजुक समय में शौक के खातिर तो पैसा खर्च किया ही नहीं जा सकता। हम सोचें कि अमुक बारे में हमें विलायत के साथ स्पर्धा करनी है, तो ऐसा करने में भले ही आज हमें कोई रोक नहीं सकता। लेकिन इतना याद रखना चाहिए कि वहाँ की अपेक्षा यहाँ प्रति व्यक्ति हमारी आय बहुत ही कम मानी जायगी। अगर हम जैसा गरीब देश खर्च करने के बारे में विदेशों के साथ स्पर्धा करने लगे, तो देश की मृत्यु ही समझिये। यह बात विदेशों में जानेवाले हमारे प्रतिनिधियों पर भी लागू होती है। हम कांग्रेसी ही कहा करते थे कि हमारा राज्य होने पर हम यह सब (फिजूलखर्ची) बन्द कर देंगे। तब फिर अब अमेरिका से स्पर्धा करके खाने-पीने, पार्टी या मौज-शौक के पीछे व्यर्थ पैसे का अपव्यय करना छोड़ देना चाहिए। किन्तु आज मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि हम अभी ऐसा नहीं कर पाये हैं। मनुष्य को आत्म-शुद्धि का प्रयास करना चाहिए। पैसे से या पैसा बिगाड़ने से किसीकी कीमत नहीं बढ़ती।

आत्मशुद्धि-यज्ञ में समान भाग

"मैंने कुछ दिन पूर्व आपसे ग्वालियर के दंगे की बात कही थी। लेकिन आज एक खुशखबरी सुना रहा हूँ कि ग्वालियर के महाराज ने अपनी प्रजा को उत्तरदायी शासन सौंपना तय कर लिया है। प्रजामण्डलवाले यह शासन-सत्ता भले ही स्वीकार करें, यह तो प्रसन्नता की ही बात है। लेकिन साथ ही साथ उसमें अगर हिन्दू-मुसलिम-वैमनस्य घुस जाय, तो बड़ी कठिनाई हो जायगी। महाराज को तो प्रजा का सेवक बनकर रहना है। आज की आत्म-शुद्धि के यज्ञ में क्या राजा और क्या

प्रजा, सभीको समान रूप से ही अपना भाग अर्पण करना होगा। तभी आज की दुनिया की इस कठिन परिस्थिति से उद्धार पा सकते हैं।"

प्रार्थना के बाद बापू घूमने नहीं गये। धीरे-धीरे आये। डॉक्टर और सभी मुलाकाती बैठे ही हुए थे। आकर उनसे बातचीत की। वर्किंग कमेटी में पेश किये जानेवाले मुद्दों पर चर्चा हुई। पण्डितजी आये। उसके बाद प्रवचन लिखकर सोने की तैयारी हुई।

असीम वात्सल्य

मैं मालिश कर रही थी, तो पुनः मुझसे कहा : "मैंने सुबह तुझे जो-जो बातें कही हैं, उन्हें नोट कर कल मुझे देना। उस बारे में अभी किसीसे चर्चा करने की जरूरत नहीं। तुझे तो मुझे बतलाना ही चाहिए। अगर न बताऊँ, तो मेरा धर्म भ्रष्ट हुआ माना जायगा। इसीलिए तुझसे कहा। तू सुखी और स्वस्थ रहेगी, तो मैं जीत गया।"

बापू के अपार प्रेमभरे वात्सल्य की तो सीमा ही नहीं! इतनी-इतनी कठिन समस्याएँ रहने पर भी इनकी सावधानता और कार्यदक्षता को कदाचित् ही कोई उपमा दी जा सकती है। कुछ अजीब ही लेना ले रही हूँ।

मैं भी बातचीत कर और अपना काम पूरा कर ११ बजे सोयी। आज बापू के लिए दतवन कूचने में काफी देर हो गयी। कहाँ कूचा जाय, जिससे बिरला-भवन में सोये हुए लोगों को शोर न हो। आखिर दरवाजे पर जाकर कूचा। पुलिस का पहरा है, इसलिए कम्पाउण्ड और बँगला काफी सजग है। ● ● ●

अहिंसक साम्राज्य का अवसर : २४ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

२३-१-'४८

सेवा सफल हो!

नियमानुसार प्रार्थना के बाद बापू ने मेरी डायरी ही माँग ली, उसे देखा और उसके बारे में अपना निम्नलिखित अभिप्राय लिखवाया :

"चि० मनुड़ी,

तेरी डायरी बहुत दिनों बाद देखी। बहुत ही प्रसन्न हुआ। तेरी परीक्षा तो पूरी हो गयी है। तूने मेरी सेवा में अद्भुत भक्ति दिखलाई। परिवार और उससे बाहर अब तक मुझे ऐसी शुद्ध छोकरी नहीं मिली। इसीलिए किसीकी भी माँ न बनकर तेरी माँ बना हूँ। फिर तेरे नोट में तेरे मन की अस्वस्थता क्यों दीख पड़ती है? और वह मुझे बतायी क्यों नहीं?...की या किसीकी तुझे किस बात की दरकार करनी चाहिए? यह लड़की मुझे छल रही है। लेकिन सच पूछो तो छला जानेवाला छला जाता है। इस महायज्ञ में तेरी अद्भुत सेवा की मेरे मन में अपार कीमत है। लेकिन तेरा अपराध इतना ही है कि तूने अपना शरीर सर्वथा बिगाड़ डाला। उसमें तेरी शारीरिक मेहनत की अपेक्षा तुझे तेरा संकोच मारे डालता है। कौन जानता है कि फिर बम फूटे और कदाचित् मैं राम-नाम लेता-लेता तेरे पास से चला न जाऊँ? अगर ऐसा हो, तो तू शत-प्रतिशत जीत गयी। यह देखने के लिए मैं जीवित न रहूँगा! लेकिन ये अक्षर और तू तो जीवित रहेंगे न? और मैं तो तभी विजयी माना जाऊँगा, जब कि तू ७० वर्ष की बुढ़िया के बदले, जैसी कि अभी दीखती है, १७ वर्ष की खिलती बालिका बन जायगी। तू देख कि ईश्वर कितनी सहायता कर रहा है? सभी जैसे हैं, वैसे अपने-आप दीख पड़ रहे हैं न? लेकिन क्या कांग्रेस में भी ऐसा ही अन्धेर है? आज यह लंबी चिट्ठी लिखी है। इसकी नकल जयसुखलाल को भेज देना।

२३-१-'४८ —बापू के आशीर्वाद।"

[इस प्रकार मेरी डायरी में, लेटे-लेटे ही कमजोरी के कारण मेरे हाथ से ही लिखवाया और अपना हस्ताक्षर, यह लिखकर कर दिया कि "तेरी सेवा सफल हो", बापू के आशीर्वाद। न०...दि०..., बिरला-भवन। फिर छह बजे]

इसके बाद दूसरे नोट में...की आयी चिट्ठी का उत्तर दिया।...इस भाई ने यह लिखा था :

"परम पूज्य बापू की सेवा में,

दोपहर को पता चला कि आपका अनशन शुरू हुआ है। अनशन के बीच आपको कष्ट देना नहीं चाहता। लेकिन आज तो यह बिना लिखे नहीं रहता—

दोस्ती असम्भव

(१) आपके अनशन के पाँच-सात दिनों के भीतर हिन्दू-मुसलमानों के बीच दिली दोस्ती हो जाय, यह असंभव है। हाँ, ऐसी एकता हो गयी है, इसे दिखलानेवाले जुलूस और सभाओं के प्रदर्शन काफी होंगे। वे हों, यह ठीक ही है। फिर भी पूरी तरह हृदय की एकता के सबूत के तौर पर नहीं। इसीलिए आपका अनशन टूट जाय, तो इस भ्रम में न रहें कि हृदय की एकता भी आ गयी है। कलकत्ते की शान्ति को मैं हृदय की एकता नहीं मानता। लेकिन आपके अनशन से इतना हो सकता है कि हिन्दू अपना गुस्सा काबू में रखकर निर्दोष मुसलमानों का कत्ल न करें। मैं मानता हूँ कि आपके अनशन टूटने के लिए इतना काफी होगा।

गृह-युद्ध की सूचना

(२) आपने अपनी तपस्या से जनता के हृदय में अपूर्व स्थान पाया है। दूसरी ओर लोगों में शरीर मरे, तो उसकी चिन्ता ही क्या है ? आत्मा अमर है, ऐसा ज्ञान पैदा नहीं हुआ है। इसलिए आपका शरीर क्षीण होता हुआ देखने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। फलतः इस शरीर को बचाने के लिए लोग अपना गुस्सा और तिरस्कार दबा देंगे। दबा क्रोध मौका पाकर भभक उठता है। मुझे लगता है कि इसी विचार के कारण अपने देश के सामने भारत का विभाजन करने की अपेक्षा 'सिविल वार' ही पसंद करने की सूचना पेश की हो।

केन्द्रित उत्पादन क्यों ?

(३) अगर लोगों के दिलों से द्वेप और क्रोध निकाल फेंकना हो, तो सरकार को चाहिए कि उन्हें अपना जीवन रचनात्मक कार्यक्रम पर ही रचने की शिक्षा देनी चाहिए। लेकिन आज तो मैं अखबारों में पढ़ता हूँ कि थोड़े ही दिनों में ६०० ट्रैक्टर और ६००० से अधिक आमोनियम सल्फेट खाद विदेश से यहाँ आनेवाली है। देश की सुरक्षा के लिए देश के औद्योगीकरण की बात तो ठीक है। लेकिन जीवन की मुख्य आवश्यकताओं—अन्न और वस्त्र—को केन्द्रित उत्पादन का सिद्धान्त क्यों लगाया जाता है, यह समझ में नहीं आता। जहाँ आज अमेरिका में लोग प्राकृतिक खाद की ओर आकृष्ट हो रहे हैं, वहीं हम लोग रासायनिक खाद की शुरुआत करते हैं।

मुसलमान पूर्ण निर्दोष नहीं

(४) भारत के मुसलमान हमें जितने निर्दोष दीख पड़ते हैं, उतने नहीं हैं। यह बात मैं अपने निजी अनुभव से कह रहा हूँ। फिर दिल्ली के मुसलमान आपसे अपनी जो करुणाजनक स्थिति बताते हैं, उससे यह न समझ लें कि हिन्दुस्तान के सभी मुसलमान या उनमें अधिकतर निर्दोष हैं और दयनीय स्थिति में जी रहे हैं। इसके विपरीत बहुत बड़ा भाग यह आशा लगाये बैठा है कि कब पाकिस्तान चढ़ाई कर देता है और हम अपना सौभाग्य प्राप्त करते हैं। कितने ही गाँवों के लोगों की कल्पना नहीं करता, लेकिन ये लोग भी बच्चों की छोटी लकड़ी का काम करेंगे। इसलिए मैं मानता हूँ कि आज पाकिस्तान जो अपनी मर्यादा नहीं समझता, उसका कारण यह है कि उसका पूरा विश्वास है कि भारत के मुसलमान हमारे ही हैं। वे हमारी हस्ती से पूरा लाभ उठायेंगे। सिवा इसके पीछे किन्हीं स्वार्थी राष्ट्रों की मदद भी है ही, ऐसा मैं मानता हूँ।

(५) इन सभी विचारों के आधार पर मैं मानता हूँ कि आपका अनशन हिन्दुओं से कुछ संयम रखने की ही अपेक्षा रखता है।

(६) मैं मानता हूँ कि मुसलमानों का झगड़ा दो ही तरह से शान्त हो सकता है। एक तो अगर हिन्दू शुद्ध हृदय बन जायँ तो, लेकिन यह आशा तो कब से निष्फल हो गयी है।

निर्बलों की अहिंसा

आपने ही कहा है कि आज तक की कांग्रेस की लड़ाई दुर्बलों की अहिंसा थी। इसलिए जब सत्ता हाथ लगी है, तो यह संस्था दूने जोर से हिंसा के रास्ते ही चलेगी। आजकल की कांग्रेसी सरकार का रुख देखते हुए यह बात प्रमाणित हो सकती है। दूसरा रास्ता यही है कि भारत-सरकार दृढ़ता से काम ले। मुझे लगता है कि वह अभी ऐसा नहीं करती और जितने अंशों में वह आपके असर और अपनी ढिलाई की आभारी है, उतने अंशों में देश की हानि है।"

इस पत्र का उत्तर बापू ने निम्नलिखित दिया :

जातीय एकता : स्वतन्त्रता का स्तम्भ

"ऊपर का पत्र विचारणीय होने से प्रकाशित किया गया है। क्षण में हृदय-

परिवर्तन के उदाहरण दीख सकते हैं। ऐसे परिवर्तन टिक नहीं पाते, यह कहना अधिक उपयुक्त है। अनशन छूट गया। स्थायी परिणाम क्या आता है, यह देख रहा हूँ। यह कहकर मैं ऊपर के पत्र का मूल्य कम नहीं करना चाहता। हिन्दू, सिख, मुसलमान—सभी को इससे शिक्षा लेनी है। कौमी एकता नयी वात नहीं। इसका प्रयास हमेशा चलता रहा है। हिन्दुस्तान की आजादी का यह एक स्तंभ है। यह न हो, तो आजादी टिक नहीं सकती। इसे स्वयंसिद्ध वचन मान लेना चाहिए। वीच का समय वीता (अगर वीत गया हो, तो)। उसे हमारी वेहोशी का समय माना जायगा। इसलिए दिल्ली में हुई एकता टिकने या चिपकी रहने की आशा की जा सकती है।

रचनात्मक कार्यक्रम अपनायें !

'एकता टिकने का आधार रचनात्मक कार्यक्रम है', यह वचन याद कर लेने योग्य है। यह कैसे संभव होगा, यह खोजना होगा। हर सेवक को, जो यह वात मानता है, अपने जीवन में उसे उतारना और अपने पड़ोसी को समझाना चाहिए। उसका शास्त्र समझने से उसे सरस वनाया जा सकता है। जड़वत् नकल करने से वह वात आगे वढ़ नहीं सकती, यह हम प्रतिदिन ही अनुभव करते हैं।

रासायनिक खाद घातक

ट्रैक्टर और रासायनिक खाद घातक है, इस वारे में मुझे जरा भी सन्देह नहीं। भारत के सभी मुसलमान निर्दोष हैं, ऐसा मैं नहीं मानता। पाकिस्तान वनने पर यहाँ वे अकल्पित कठिन स्थिति में रखे गये हैं, ऐसा मैं मानता हूँ। वहुसंख्यकों को चाहिए कि उनके साथ शुद्ध न्याय करें। वहुसंख्यक अपने मन में यह मानें कि अल्पसंख्यकों को पीस सकते हैं और हिन्दू-राज्य हो सकता है, तो मैं उसमें वहुसंख्यकों एवं हिन्दू-धर्म का नाश देखता हूँ। यह अवसर ऐसा है, जव शुभ और सतत प्रयत्न से दोनों के हृदय से मैल और अज्ञान मिट सकता है।

पाँचवीं धारा, अगर गुजराती ठीक समझ पाया होऊँ, तो कुछ अस्पष्ट मालूम पड़ता है। मेरा अनशन सभी की शुद्धि होकर, सवसे—हिन्दू, सिख, मुसलमान और अन्य सभी से—शुद्धि की आशा रखता था और है।

अहिंसा का सच्चा मौका

छठी धारा में सिर्फ वुद्धिवाद (कोरा तर्क) है। उसमें हृदय को स्थान नहीं

दिया गया है। स्वतंत्रता की लड़ाई के बीच जो नहीं हो पाया, वह अब नहीं ही होगा—ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। अहिंसा का साम्राज्य दिखलाने का आज सच्चा मौका है। यह सच है कि जनता सभीको सशस्त्र बनाने के वहम में पड़ गयी है। अगर इस वहम से कुछ भी बच जायँ, तो वह वीरों की अहिंसा से बचे माने जायँगे। वे भारत के सर्वोपरि सेवक माने जायँगे। जब तक यह बुद्धि या तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सकता और अनुभव में नहीं आता, तब तक श्रद्धा की ही शरण लेनी होगी। वह न हो, तो अनुभव कहाँ से होगा ?

दूसरा रास्ता नहीं

स्वतन्त्र सरकार को दृढ़ता और हिम्मत से काम लेना चाहिए। इसके सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। जो सरकार कमजोर हो, किसीकी भी···बिना समझे काम करती हो, तो वह शासन करने योग्य ही नहीं। पण्डित नेहरू और सरदार ढीले पड़ते हैं, यह कहना और मानना उनसे परिचित न होना सिद्ध करता है। मेरे स्पर्श का यह असर हो, तो मुझे शर्म लगेगी और देश की भी हानि होगी।"

मालिश, बंगाली पाठ, बाथ वगैरह नियमानुसार हुआ। बीच में पन्तजी आ गये। उनकी···बहुत अच्छी नहीं दीखी। आज बाथ में हजामत करवाते समय बापू सो गये।

मैं राम का दास नहीं

···को लिखा : "अनशन टूटा, इससे उत्तरदायित्व कम नहीं हुआ, बढ़ ही गया है। मुझे धीरे-धीरे शक्ति आ रही है। दिल्ली में किया तो माना जायगा और मुझे २० तारीख को मरना भी था। लेकिन रामजी को अभी काम लेना होगा, इसीलिए बचा लिया। किन्तु इसी तरह हँसते-हँसते मर पाऊँ, तो मुझ पर ईश्वर की अपार कृपा ही मानी जायगी। क्या मैं ऐसी भव्य कृपा का पात्र बन सकूँगा ? ऐसी मृत्यु का पात्र बनने का प्रयत्न तो मेरा है ही। इतना ही नहीं, वह बढ़ता ही जा रहा है। आज सुबह ही बहुत दिनों बाद चि० मनुड़ी के साथ भलीभाँति बातें कीं। मैं तो रामजी का दास हूँ। उनका हुक्म होगा, तब तक काम करूँगा। जब हुक्म हो जायगा, तब चला भी जाऊँगा। दोनों तरह से तैयार ही हूँ। लेकिन सिर्फ

अहिंसा को अपनेभर भी पहचान सकूँ और पहचनवा सकूँ, ऐसी शक्ति भगवान् मुझे दे, यही प्रार्थना है। इस प्रार्थना में तू भी साथ देना।

—बापू के आशीर्वाद।"

सुभाष-जन्मतिथि पर

बापू खुराक में अभी तरल पदार्थ ही ले रहे हैं। दोपहर को भलीभाँति सोये। जाड़ा अभी खूब ही है। दिन में जहाँ तक बनता है, धूप में ही रहते हैं और सिर पर नोआखालीवाली टोपी ही पहनते हैं।

जूनागढ़ अब शान्त हो गया, ऐसा दीखता है। बापू तो कहते ही हैं कि अगर नवाब साहब भाग न गये होते, तो उनका उचित सम्मान तो होता ही। उन्हें आर्थिक दृष्टि से हैरान न होना पड़ता। लेकिन पाकिस्तान की चढ़ाई के कारण ही ऐसा हुआ। इस बीच···यहाँ आते थे। उसमें भी बापू को कुछ रहस्य मालूम पड़ता है। कदाचित् उन्हें पैसा भी छीनना हो। बलवन्त भाई के आने पर उनके बारे में पूछताछ करने के लिए बापू ने मुझसे कहा है। कार्यसमिति होने से अब आयेंगे ही।

पण्डितजी, सुचिता बहन, कृपालानीजी और अन्य स्थानीय नेता तो आया-जाया ही करते हैं। लेडी माउण्टबैटन भी कभी-कभी बापू की तबीयत का हाल पुछवा लेती हैं। शैलन भाई ने खबर दी कि आज नेताजी (सुभाष बाबू) का जन्म-दिवस है, इसलिए बापू प्रार्थना में उनके बारे में कुछ कहें।

'सन्त हंस गुण गहहिं पय'

आज प्रार्थना में बहनें बहुत शोर-गुल कर रही थीं। इस कारण लिखने में कठिनाई पड़ रही थी। रेकार्ड में भी आवाज आया ही करती है।

बापू ने कहा : "आज सुभाष बोस का जन्म-दिवस है। यद्यपि मैं किसीका जन्म-दिवस कदाचित् ही याद रखता हूँ, फिर भी आज मुझे इसकी याद करायी गयी, इसलिए खुश हूँ।

"सुभाष बाबू हिंसा के पुजारी रहे और मैं अहिंसा का! लेकिन उससे क्या? तुलसीदासजी ने रामायण में लिखा है :

'सन्त हंस गुण गहहिं पय, परिहरि बारि बिकारि।'

हंस जैसे पानी छोड़ दूध पी जाता है, वैसे ही मानव में गुण-दोष होते ही हैं; पर हमें तो गुणों का ही पुजारी बनना चाहिए। सुभाष बाबू कितने देशभक्त थे, इसका वर्णन करना असामयिक होगा। उन्होंने देश के लिए जिन्दगी का जुआ खेलकर दिखा दिया। कितनी बड़ी सेना खड़ी की और वह भी किसी भी तरह के जात-पाँत के भेदभाव के बगैर। उनकी सेना में प्रान्तीय भेदभाव भी नहीं था और न रंगभेद ही था। स्वयं सेनापति होने के बावजूद यह बात न थी कि स्वयं विशेष सुख-सुविधा भोगें और दूसरे कम। सुभाष बाबू सर्व-धर्म-समभाव रखते थे, इसी कारण उन्होंने सारे देश के भाई-बहनों के हृदय जीत लिये थे। स्वयं निर्धारित काम पूरा किया। उनके इन गुणों को याद रखकर हम उन्हें अपने जीवन में उतारें, यही उनकी स्थायी स्मृति होगी।

मुसलमान भाइयों से

"मुझे ग्वालियर से तार मिला है कि वहाँ किसी गाँव में भीतर-ही-भीतर कुछ झगड़ा चल रहा था। हिन्दू-मुसलमान के बखेड़े की बात ही न थी। इस समाचार से मुझे प्रसन्नता हो रही है। दो शब्द मुसलमान भाइयों से कहना चाहता हूँ। मैं तो जो बात मेरे पास पहुँचती है, उसे जनता के सामने रख देता हूँ और इस रेडियो द्वारा वह तत्काल वहाँ पहुँच जाती है। लेकिन जो मुसलमान भाई इस तरह बनावटी बातें करेंगे या पूर्वग्रह रखकर झूठी-झूठी कल्पनाएँ करेंगे, तो उनके प्रति सम्मान या प्रेम नहीं रहेगा। उनके बारे में अन्यथाभाव उत्पन्न हो जायगा। इसलिए कोई भी बात बढ़ा-चढ़ाकर कहनी ही नहीं चाहिए। हमेशा अपनी भूलों को पहाड़-सी बतलाने और पराये की भूलों को राई जैसी माननेवाला ही आगे बढ़ सकता है। खुदा के दरवाजे पहुँचने की यह एक बड़ी आसान तरकीब है।

"मैसूर के बारे में मैंने वहाँ की सरकार को लिख दिया है कि घटना की सच्ची रिपोर्ट दीजिये। जूनागढ़ के मुसलिम भाइयों के तार आये हैं कि जब से सरदार साहब की देखरेख में जूनागढ़ का कारोबार चलने लगा है, तब से हमें न्याय मिलने लगा है। अब जूनागढ़ में कोई फूट नहीं डाल सकता। यह सुनकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ।

विश्वास आवश्यक

"मेरठ के मुसलमान भी कहते हैं कि 'मेरे अनशन का परिणाम अच्छा ही हो रहा है। आज जो सरकार है, वही हमें चाहिए'।

"सरकार बदलने का प्रश्न कहाँ से उठा होगा, यह भगवान् ही जाने। लेकिन अगर आपको ये लोग ठीक न पड़ते हों, तो इन्हें बदलना भी आपके हाथ में ही है। लेकिन मुझे कहना होगा कि आज की स्थिति में उनके बगैर इतना ज्यादा उलझा हुआ राज्य चलाना बड़ी ही कठिन बात है। आज का राजकाज अविश्वास से निभ नहीं सकता। न्याय करने का काम सरकार का है। वह उसे ही सौंप देना चाहिए।

"मेरे नाम मेरी तबीयत की पूछताछ के कई तार आते हैं। सभीको व्यक्तिगत रूप में उत्तर तो दे पाना सम्भव नहीं। लेकिन उन सबके आशीर्वाद सफल हों, यही प्रार्थना करता हूँ।"

प्रार्थना के बाद एक चक्कर आ गया। अभी पूरी ताकत तो आयी ही नहीं है।

प्रार्थना के बाद भाषण लिखा। पण्डितजी से बातें कीं। बापू स्वयं ही कांग्रेस की नीति के बारे में मसविदा बना देंगे, ऐसा कहा। वे पण्डितजी के आग्रह के कारण ही ऐसा करेंगे।

९। बजे सोने की तैयारी हुई। कदाचित् हमें वर्धा जाना पड़े। वहाँ जमनालालजी की पुण्यतिथि के निमित्त गोपुरी में कार्यकर्ताओं की एक बैठक बुलाने का विचार हो रहा है। सेवाग्राम-आश्रम में बापू का स्थिर रूप में रहना तय नहीं। इसलिए अब ये सारी संस्थाएँ किस तरह चलायी जायँ, इस बारे में भी विचार करना होगा। फिर इस बहाने दिल्ली की परीक्षा भी हो जायगी कि बापू की अनुपस्थिति में कितनी शान्ति बनी रहती है? अगर वैसा होगा, तो वे पाकिस्तान जाना भी सोच रहे हैं।

तेल मलते समय बापू ने मुझसे कहा : "मैं चाहता हूँ कि हम लोग पाकिस्तान जायँ, इससे पहले जयसुखलाल आ सकें, तो आकर मिल लें।" मैंने कहा : "मैं नहीं लिखूँगी। आपको लिखना हो, तो लिखिये। क्योंकि मेरे लिखने से वे नहीं आयेंगे।" उन्होंने कल सुबह लिखने के लिए याद दिलाने के लिए कहा है।

● ● ●

कथनी मीठी खाँड़-सी : २५ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२४-१-'४८

जयसुखलालजी को पत्र

नियमानुसार प्रार्थना ! फिर बापू ने भीतर जाकर पहले मेरे पिताजी के नाम पत्र लिखवाया। मुझे उन्हें स्मरण नहीं कराना पड़ा।

"चि० जयसुखलाल,

बहुत दिनों बाद आपको यह चिट्ठी लिखवा रहा हूँ। इस बीच चि० मनु आपको लिखती रही और आप उसे। इसलिए हम एक-दूसरे की हाल-चाल से परिचित तो हो ही जाते हैं।

कहा जा सकता है कि दिल्ली में कुछ कर पाया। लेकिन वह कब तक चलेगा, यह तो भगवान् ही जाने। अनशन के बाद अब भी कमजोरी तो है, पर ईश्वर मेरी शक्ति तो रोज-रोज बढ़ाता ही रहता है। गुर्दा और 'लीवर' ठीक-ठीक काम नहीं कर पाते।

यह चिट्ठी लिखने का खास कारण तो यह है कि आपने चि० मनुड़ी को मेरे पास और इस यज्ञ में गत एक वर्ष से होम ही दिया है। मुझे आपको लिखना चाहिए कि उसे कसौटी पर कसने में मैंने कितनी ही बार क्रूरता ही बरती होगी। अगर ऐसा कहूँ, तो वह झूठ न होगा, यद्यपि इस क्रूरता पर भी मनु की क्रूरता की अपेक्षा कृपा ही काफी मिली, यह माना जायगा। लेकिन यह···बगैर अडिग रहकर, संतोषजनक ढंग से···निकल पड़ी, यही माना जायगा। मैंने स्वयं श्रीरामपुर में कहा था कि इस यज्ञ में तो करना होगा या मरना ! यहाँ ये दोनों बातें चल रही हैं। २० तारीख को बम का धड़ाका हुआ, उस समय मनुड़ी मेरे पास ही और लोगों के साथ बैठी थी। इसलिए मरते, तो हम दोनों मरते। लेकिन राम बचाता है, तो उसे कौन मार सकता है !

शर्त-पूर्ति

कल मैंने मनु के साथ खूब बातें कीं। कहा कि जयसुखलाल को छुट्टी दो, तो

तू लिख दे कि वे सेवाग्राम या यहाँ आ सकते हैं। जमनालालजी की पुण्यतिथि के निमित्त कदाचित् वर्धा जाना पड़े। कुछ तय नहीं है। मुझे तो ऐसा नहीं दीखता कि दिल्ली को छोड़ पाऊँगा। लेकिन इस पर चि० मनु ने कहा कि मैंने ही यज्ञ में शर्तें रखी थीं, इसलिए मुझे ही आपको लिखना चाहिए। अतएव यह लिखवा रहा हूँ। आप अखबारों में देखकर इस तरह आ सकें, तो सचमुच मुझे अच्छा लगेगा। तब आप देखेंगे कि मैंने अपने ऊपर का कर्ज चुकता कर दिया है। आपको वह (मनु) अपनी डायरी तो भेजती ही है। उसमें भी इसने काफी प्रगति की है। उसे नोट करने में बड़ा ही रस आता है। जब यह देखता हूँ, तब महादेव का चेहरा मेरी आँखों से हटता ही नहीं।

यह पत्र प्रार्थना के बाद तुरन्त ही लिखवा रहा हूँ। अपनी चिट्ठियों का ढेर लगा हुआ है। ईश्वर मिलायेगा, तो हम लोग थोड़े दिनों में अवश्य मिलेंगे। तब बाकी रूबरू बातें होंगी। चि० मनुड़ी मजे में है। उसे मोटा करने की कोई कीमिया आपके पास हो, तो मुझे बतलाइये। लड़कियाँ ससुराल में मजे में ही होंगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

...को बापू ने लिखवाया : "यहाँ की हालत तो ठीक चल रही है। मगर दूसरी जगह गोलमाल तो है ही। सिन्ध और सरहद का मामला बिगड़ रहा है। मैंने जहाँगीर पटेल और दिनशाह मेहता को जिन्ना साहब, लियाकत अली आदि से सलाह-मशविरा करने के लिए भेजा तो है। उम्मीद है कि मुझे पाकिस्तान लिवा जाने में सुहरावर्दी साहब की काफी मदद मिलेगी। लेकिन ये सब आसमानी सुलतानी बातें हैं।

मनचाही मृत्यु का स्वागत

"खुदा की कृपा से मुझमें आहिस्ता-आहिस्ता शक्ति आ रही है। मैं तो राम का दास हूँ। उनकी मर्जी होगी, वहाँ तक उनका काम करूँगा। अपने जीवन से सत्य-अहिंसा की सफलता बता सकें—ऐसी मौत खुदा देगा, तभी कामयाब हो सकता हूँ। बीस तारीख को जो हुआ, उसमें मेरी कुछ बहादुरी है ही नहीं। मैंने तो माना था कि कोई लश्करी तालीम ले रहा है। अगर मौत की खबर होती, तो मैं क्या

करता ? इसलिए अभी तो मैं महात्मा नहीं हूँ। लोगों ने महात्मा बना दिया, तो उससे क्या ? अभी तो एक मामूली-सा आदमी हूँ। हाँ, अगर मैंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, आदि व्रतों का संपूर्ण पालन किया होगा और ईश्वर को साक्षी रखकर किया होगा, तब तो वैसी ही मृत्यु आयेगी, जैसी मैं चाहता हूँ और प्रार्थना-सभा में कहा भी है कि 'मुझे कोई मारते हों, फिर भी मैं उन पर जरा-सा भी गुस्सा न करूँ और राम का नाम लेता-लेता ही मरूँ'।

"आज अभी प्रार्थना के बाद एक खत मनु के पिता को लिखा और दूसरा यह है। खतों का तो ढेर ही लगा है। आज से 'वर्किंग-कमेटी' भी चलेगी। इसलिए डाक का काम सुबह प्रार्थना के बाद ही होता है।

"वहाँ का हाल लिखा करो। सेवाग्राम आने का अभी कोई निश्चय नहीं है।"

ये दोनों पत्र लिखवाकर बापू थोड़ी देर सो गये। मालिश, स्नान वगैरह नियमानुसार ही चला। आज थकान अधिक मालूम पड़ रही थी, इसलिए सुबह से मौन ही रखा है। फिर दोपहर को वर्किंग-कमेटी भी थी, इसीलिए ऐसा किया। खुराक में अभी तरल पदार्थ ही चल रहा है। सुशीला बहन तो बहावलपुर में हैं। प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद तो मेरे हिन्दी के नोटों पर से चाँदवानीजी करते हैं। लेकिन बापू को उसे अच्छी तरह जाँचना पड़ता है।

चाँद बहन के गाल पर कुछ... होने के कारण उन्होंने एक छोटा ऑपरेशन कराया। उन्हें भी कमजोरी तो है ही। इन्हें ट्रेन से फेंक दिया था, उसका असर तो अभी तक बना हुआ है। दोपहर में चाय पीने से उन्हें उलटी हुई। बापू उनका बहुत ध्यान रखते हैं और हर संभव उपाय करते ही हैं। इस तरह अपने उपवास की कमजोरी और काम का असह्य बोझ, साथ ही देश-विदेश की भरपूर मुलाकातों के बीच भी सबकी देखभाल में बापू तनिक भी कमी नहीं आने देते। दोपहर में तो वर्किंग-कमेटी बैठी थी। उसके बाद बापू तुरन्त प्रार्थना में गये।

विलंब अशोभनीय

आज प्रार्थना-सभा में अच्छी भीड़ रही और शोरगुल भी खूब चलता रहा। काश्मीर का प्रश्न भी अब अधिक उग्र हो गया है।

आज के सन्देश में बापू ने कहा : "यह तय हुआ था कि दोनों प्रदेश (हिन्द और पाकिस्तान) अपने कैदियों की अदला-बदली कर लें और भगायी गयी स्त्रियों

को यथास्थान पहुँचा दिया जाय। लेकिन अभी इस पर अमल खटाई में पड़ गया है। पश्चिमी पंजाब की सरकार ने यह एक नयी माँग खड़ी कर दी है कि दूसरे कैदियों के साथ पूर्वी पंजाब के देशी राज्यों के कैदियों को भी लौटाया जाय। इस पर पूर्वी पंजाब सरकार का कहना है कि समझौते के समय पश्चिमी पंजाब की सरकार के साथ ऐसा किसी भी तरह का स्पष्टीकरण नहीं हुआ था। अब आज ये लोग नयी-नयी शर्तें घुसेड़ते जा रहे हैं। यह ढंग ठीक नहीं कहा जा सकता। मैं व्यक्तिशः यह सलाह दूँगा कि पश्चिमी पंजाब हमें १० लड़कियाँ लौटाये, तो हम भी १० ही लौटायेंगे, १० से ११ नहीं करेंगे, ऐसा किसने कहा है? ऐसी बातों में शर्तों की बात ही क्या है? यदि मेरी यह आवाज पश्चिम पंजाब की हुकूमत तक पहुँच पाये, तो मैं उससे यही कहूँगा कि कहीं कम अपराध हुआ हो, तो कहीं अधिक। लेकिन यदि इरादा सौजन्यपूर्ण है, जब कि दोनों की भूलें समान ही हैं, तो ऐसे सुन्दर कामों में तथा अदला-बदली में विलम्ब का जो कारण बताया गया, वह न तो शोभनीय है और न सबल ही है। जब लोग मुँह से तो कहते एक हैं और करते कुछ हैं, तो मुझे लगता है कि अपना अनशन छोड़ने में कदाचित् मैं उतावली कर गया। मेरे शब्दों का पालन मात्र करने को बात नहीं, उसका रहस्य भी समझना चाहिए।" बहनों का शोरगुल इतना अधिक हो गया कि बापू को बोलने और श्रोताओं को उसे सुनने में भी तकलीफ हो रही थी।

वर्किंग-कमेटी में भी अदला-बदली पर चर्चा हुई।

प्रार्थना के पश्चात् पण्डितजी आये थे। वे निश्चित समय तक बैठे। अब वातावरण इस प्रकार का हो गया है कि २७ तारीख से मरौली में उर्स का मेला शान्तिपूर्वक लग सकता है। दिल्ली में तो प्रायः शान्ति ही है, लेकिन सिन्ध सता रहा है और उसका प्रभाव पुनः यहाँ न दिखाई पड़े, यही खैरियत होगी।

महत्ता की कसौटी

कताई, मालिश आदि काम नियमानुसार हुए। ९। बजे के बाद सोने की तैयारी हुई।

...जिस बहन को नोआखाली से ले आये हैं, मालूम पड़ता है कि उसके साथ शादी कर लेना चाहते हैं, यद्यपि सुशीला बहन यह मंजूर नहीं करेंगी। सचमुच

बापू की विशाल शक्ति का दर्शन तो उनके ऐसे ही विविध ढंगों के दरबार में हुआ करता है। इस दरबार में रहना पूरी कसौटी है। जिस पर ईश्वर की कृपा हो, वही पार पा सकता है। बहुतों को लगता है कि महान् व्यक्ति के पास भी ऐसे व्यक्ति हुआ करते हैं और इसीके बीच उनकी महत्ता की कसौटी हुआ करती है।

● ● ●

हृदय की वेदना : २६ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२५-१-'४८

अशान्त वातावरण

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। दतवन करते हुए बापू ने कहा: "देख रहा हूँ कि कांग्रेस, देश और दिल्ली का तथा खुद हमारा भी वातावरण अभी शान्त नहीं हो पाया है। आज भी उसमें मुझे बादल नजर आ रहे हैं। मेरे अनशन के पीछे सिर्फ कौमी शुद्धि ही नहीं रही। बल्कि हम सभी समझदार लोगों को अपने मानस की शुद्धि करनी थी।...नोआखाली में कच्चा ही खाना तय किया है।...को और ...को स्पष्ट बता देना चाहिए। यहाँ आयी हुई बंगाली बहन को भी 'वे क्या चाहते हैं' इसकी ममतापूर्वक पूछताछ करनी चाहिए। लोग कहते हैं कि कांग्रेस ठग रही है, जिन्ना साहब मुझे ठग रहे हैं। लेकिन मैं समझता हूँ कि मुझे ठगनेवालों में आप जैसे मेरे अपने ही लोग हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि ऐसे काम करने की अपेक्षा बेहतर है कि आप सबको ऐसा उचित मालूम पड़े, (फेंर्डा) नोच खाइये और मुझे अकेले ही रहने दें। इसीमें मेरा, आपका और समाज का विशेष कल्याण है। मैं सोचता हूँ कि...को भी यह स्पष्ट कर ही देना चाहिए कि उसे क्या करना है। नहीं तो उसे जो करना हो, वह करे, तो अधिक योग्य हो। मैं नहीं चाहता कि...को नाराज कर कुछ भी करूं। यह कोई मेरी सेवा का अंश नहीं। मनु और...मेरी दृष्टि में जरा भी जुदे नहीं हैं। फिर भी मनु का तनिक भी उत्तरदायित्व...पर या...पर न तो कभी था और न है ही। फिर भी लोगों ने उस उत्तरदायित्व को उठा

लिया। लेकिन ये···तो···के ससुर हैं और वह उसका पति है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि सभी एकदम चुप कैसे बैठे हैं! इसी तरह···है। यह सच है कि मेरे हृदय में मनु मेरी पौत्री ही है। फिर भी दूसरी लड़कियाँ नहीं, ऐसा कदापि नहीं। इसका साक्षी तो परमात्मा ही है। सभी लड़कियाँ मेरी पौत्री जैसी हैं और मेरी पौत्री सभी लड़कियों जैसी है। फिर भी यह सच है कि मनु इन सबसे विशिष्ट बन गयी है। कारण वह खुले दिल से इस जलते हुए अग्नि-कुण्ड में कूद पड़ी। इसने उससे सफलतापूर्वक टक्कर ली है। फलस्वरूप मैं जीता रहा और मेरी तबीयत भी ठीक रही। अगर लोगों में सन्मति, सुबुद्धि हो, तो आप सभी देखेंगे कि इस यज्ञ का इतिहास भावी पीढ़ी को एक नयी ही प्रेरणा देता रहेगा। आज मैं मर जाऊँ या जीवित रहूँ, फिर भी मुझे अपने सिद्धान्त और जीवन का तलपट निकालने का अगर कहीं कुछ अवसर मिला, तो वह मेरा यह अन्तिम यज्ञ ही है। भले ही आज किसीको इस यज्ञ का मूल्य न मालूम पड़े। कदाचित् मनु को भी न मालूम पड़े, क्योंकि वह इतनी छोटी है कि वह भविष्य की आशा रखकर मुझसे निश्चिन्त होकर बैठ ही नहीं सकती। फिर भी गहराई से विचार करने पर मुझे यह प्रकाश प्राप्त होता है कि मैं अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण कार्य, जो कि पूर्ण रूप से स्थितप्रज्ञ होना है, लगभग पूरा कर चुका हूँ।"

दतवन करते हुए बापू ने बड़ी ही गंभीरता के साथ ये बातें कहीं।

कर्तव्य-पालन करें!

प्रार्थना के बाद अन्दर आकर उन्होंने मुझसे कहा : "अभी भी मैं यह अनुभव नहीं कर पाता कि परस्पर प्रेम का वातावरण बन गया है। बापू को अमुक बात पसन्द नहीं पड़ती, इसीलिए कुछ लोग उससे बचते हैं। लेकिन यही मुझे अच्छा नहीं लगता। आज 'वर्किंग-कमेटी' में भी यही ढंग चलता रहा। इसमें मैं अपनी हिंसा ही देखता हूँ। बापू को पसन्द न होने के कारण ही किसी बात से बचने में न तो बापू का कोई लाभ है, न देश का और न हमारा खुद का ही। वास्तव में यही देखना चाहिए कि हमारा अपना क्या कर्तव्य है? सूक्ष्म दृष्टि से मेरे उपवास का लक्ष्य मुझे अपने ही अन्तःकरण की जाँच करना था और है। मैंने जो कुछ कहा, उसमें मेरे हृदय की वेदना भरी हुई है। मैं स्वयं तो अब दिन-प्रति-

दिन निःस्पृह ही होता जा रहा हूँ, यह कहूँ तो चल सकता है। यही कारण है कि व्रजकिशोर जब मुझसे कहता है कि 'अमुक-अमुक बातें जवाहरलाल से कहें और अमुक-अमुक सरदार से कहकर काम करा लें', तो मैं साफ-साफ इनकार कर देता हूँ कि 'अगर वे लोग मेरे सामने बात चलायेंगे, तभी कहूँगा, अन्यथा नहीं'।"

आज सुबह से ही वातावरण कुछ गंभीर ही है। यद्यपि बापू का सारा कार्य-क्रम अपने निश्चित ढंग से ही चल रहा है, फिर भी दीखता है कि वे कुछ गंभीर विचार में उलझे हुए हैं। दोपहर में···के साथ एक छोटी-सी घटना हो गयी थी। मैं वर्किंग-कमेटी के समय तकिया रख रही थी कि बापू ने कहा : "···से कह दे कि···यहाँ शान्ति से रह सकें, तो रहें। इतना अधिक क्रोध कर मेरी सेवा न करें।" बापू दुःख और नाराजगी से यह कह रहे थे। इसी बीच बलवन्त राय मेहता आ गये और बापू के चरण छूने के लिए आगे बढ़े। इसलिए बात वहीं रुक गयी, यह अच्छा ही हुआ। मुझे लगा कि मैं व्यर्थ ही धर्म-संकट में आ पड़ी। लेकिन बापू कहते : "सभीको सच्ची बात कहने की अब भी मुझमें हिम्मत नहीं आयी, तो कब आयेगी ?" आखिर मुझे बापू का सन्देश जहाँ का तहाँ पहुचाना ही पड़ा। २ बजे से ५ बजे तक वर्किंग-कमेटी की बैठक हुई। काठियावाड़ के राज्यों का एकीकरण प्रायः पूर्णतः तय ही हो गया है। वहाँ के राजा लोग समझ गये हैं कि अब हम ऐसे नहीं रह सकते। यह भी अच्छा ही है कि वे समझ-बूझकर राज्य सौंपें, इससे परस्पर सम्बन्ध भी अच्छे रहेंगे।

कांग्रेस की वर्तमान अवस्था के विषय में बापू 'हरिजन' में कुछ लिखेंगे। उन्होंने लोगों का मार्गदर्शन करना भी स्वीकार कर लिया है। बापू ने दिल्ली छोड़ने की इच्छा भी व्यक्त की, लेकिन नेतागण मानते हैं कि अभी यहाँ बापू की आवश्यकता है। कश्मीर में अब तो जरा भी नरमाई बरती ही न जाय, यह भी स्पष्ट हो गया। अभी आबादी की अदली-बदली के बारे में पाकिस्तानी नीति में किसी भी तरह का सुधार नहीं हुआ है। सरदार दादा के शब्दों में 'दूध में से सूक्ष्मतम जीव' निकालने जैसा ही उसका इस दिशा में काम चलता है। 'भाषावार प्रान्त' के प्रश्न पर भी चर्चा हुई।

अपनी डायरी के साथ···को भी रोज डायरी लिख देती हूँ। क्योंकि···से गुजराती में अधिक लिखते नहीं बनता।

रात ९॥ बजे बापू बिस्तर पर लेटे। उन्होंने मौन ले लिया है। मैं भी आज विचारों में खूब ही उलझी हुई थी। मुझे नये-नये अनुभव प्राप्त होते हैं और उनसे मुझे खुद को तो अपार लाभ है। लेकिन जब कभी किसीके लिए बापू का कोई दुःखद सन्देश पहुँचाना पड़ता है, तब तो कँपकँपी ही छूट पड़ती है। भगवान् से यही मनाती हूँ कि "प्रभो! मुझे किसीके दुःख का निमित्त न बनाओ!"

हिन्दू रक्षक बनें

आज के प्रवचन-सन्देश में बापू ने कहा : "मेरे पास हिन्दू और मुसलमान आया करते हैं। वे सभी अब एक ही बात कहते हैं कि अब दिल्ली में पूर्ण शान्ति है। हम लोग समझ गये हैं कि लड़ते ही रहेंगे, तो कोई भी काम न होगा। इसलिए अब आप इस बारे में बिलकुल बेफिक्र हो जायँ।

"मरौली में जो दरगाह है, वहाँ कल से उर्स का मेला लगनेवाला है। ऐसी सुन्दर कारीगरी की दरगाह हम लोगों ने तोड़ डाली। लेकिन अब कुछ सुधार-कार्य हुआ है। इसलिए वहाँ प्रतिवर्षानुसार मेला लगेगा। इस मेले में हिन्दू और मुसलमान सभी एक साथ जाया करते थे। अब भी उसी तरह जाइये। लेकिन हिन्दुओं से प्रार्थना करूँगा कि आप लोग वहाँ जायँ, तो इस तरह का कोई भी वातावरण पैदा न करें, जिससे मुसलमानों को डर लगे। पुलिस-रक्षण के बदले आप लोग ही उनके रक्षक बनें।

"अब एक दूसरी बात कह रहा हूँ कि दो फरवरी को मुझे कदाचित् वर्धा जाना पड़े। राजेन्द्र बाबू तो मेरे साथ जायँगे ही और जहाँ तक होगा, जल्दी ही लौटूँगा। लेकिन मेरा जाना तो तभी हो सकता है, जब कि आप सब मुझे आशीर्वाद दें कि 'अब आप निश्चिन्त हो जहाँ जाना चाहें, जा सकते हैं।' इसके बाद मैं पाकिस्तान भी जाना चाहता हूँ। मैं वहाँ जाऊँ, इससे पहले पाकिस्तान-सरकार को ही मुझसे कहना पड़ेगा कि यहाँ आइये और प्रसन्नता के साथ अपना काम कीजिये।

भाषावार प्रान्त-रचना

"जब-जब यहाँ मेरे पास वर्किंग-कमेटी होती है, तब-तब कुछ तो जानने योग्य समाचार मुझे मिल जाते हैं। मैं हमेशा उन्हें आपको बताता रहता हूँ। आज इसी तरह की एक बात भाषावार प्रान्त-रचना सम्बन्धी चर्चा हुई। कांग्रेस का यह प्रस्ताव

कोई आज का नहीं। बीस वर्ष पहले से ऐसे प्रस्ताव होते ही आ रहे हैं। आज देश में नौ से दस प्रान्त हैं और सभी केन्द्र के अधीन हैं। फिर, और भी अगर प्रान्त बनें तथा वे दिल्ली-शासन के अन्तर्गत रहें, तो कदाचित् ही कुछ हानि हो सकती है। लेकिन यदि सभी प्रान्त स्वतन्त्र रहने की माँग करें और किसीको भी उत्तरदायी न मानें, तो पुनः प्रान्त-रचना सम्प्रति भूल होगी। अलग-अलग प्रान्त बनने के बाद बम्बई को ऐसा न मालूम पड़ना चाहिए कि अब महाराष्ट्र के साथ मेरा कुछ भी लेन-देन नहीं और न महाराष्ट्र को ही ऐसा लगे कि मेरा कर्नाटक के साथ कोई ताल्लुक, नाता नहीं। यदि ऐसा हुआ, तो हमारा काम बिगड़ जायगा। सभी एक-दूसरे के पूरक बनकर यदि भाषावार प्रान्त बनाये जायँगे, तो प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति होगी, प्रगति होगी। एक दूसरी बात भी वहाँवाले कहते हैं कि प्रान्त के लोगों को हिन्दुस्तानी के माध्यम से ही शिक्षा दी जाय। यह बात भी बिलकुल वाहियात है। अंग्रेजी का माध्यम तो सर्वथा बुरा ही है।

"सीमा-पंच बनाने की बात भी मेरे गले नहीं उतरती। हर प्रान्त के लोग अपने नजदीक के प्रान्तों के साथ हिल-मिलकर रहें। इसीको 'सच्चा लोकतन्त्र' कहते हैं। यदि सरकार सब कुछ खुद ही करेगी, तो लोग पंगु बन जायँगे।"

प्रार्थना के बाद से आज बापू ने मौन ले लिया।

● ● ●

स्वाधीनता-दिवस पर बापू के उद्गार : २७ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२६-१-'४८

हरिजन-मंदिर-प्रवेश

नियमानुसार प्रार्थना। आज मौन का दिन है, इसलिए प्रार्थना के बाद बापू को भीतर पहुँचाकर मैं सो गयी।

बापू ने आज 'हरिजन' सम्बन्धी काम शुरू किया। हरिजन-मन्दिर-प्रवेश के बारे में एक पत्र भगवानजी भाई का वढवाण से आया था। उन्होंने लिखा था कि "हरिजनों का हवेली-प्रवेश ट्रस्टियों की मर्जी के विरुद्ध कराया जा रहा है। किन्तु

अन्य मन्दिरों में याने दा० त० जैन, स्वामीनारायण आदि सम्प्रदायों के मन्दिरों में, जिन्हें हरिजन विशेप नहीं मानते, वलात् प्रवेश कराने का कोई अर्थ नहीं।" इसके उत्तर में वापू ने सूचित किया कि "इस पत्र में पत्र लिखनेवाले ने जो विभाग किये हैं, उनमें मुझे कोई वास्तविकता माल्म नहीं पड़ती। स्वामीनारायण के मन्दिर, जैन-मन्दिर आदि में हर कोई हिन्दू जा सकता है और जाता भी है। अतः उनमें हरिजन भी जाने चाहिए। हरिजन और ब्राह्मण दोनों को समान हक है, यह सिद्ध करने की हलचल वर्षों से चली आ रही है। उसमें अधिकांश सफलता प्राप्त है। अव तो वम्बई-प्रदेश में कानून भी वन गया है। अगर वह लोकतन्त्र के विरुद्ध होगा, तो उसका अमल धीमा-धीमा होगा। लोकतन्त्र में कानून का अमल वलात् नहीं हो सकता। उसमें सदा विवेक की जरूरत हुआ करती है। सुधारक उसकी मदद समझदारी से ले, तो सफल हो सकता है। अगर वह उतावली करता है, तो कानून व्यर्थ हो जाता है।

"ट्रस्टी लोग मन्दिर के मालिक नहीं हैं। मन्दिर के वनानेवाले जव उन्हें आम जनता के लिए वना देते हैं, तो उनकी मालकियत खतम हो जाती है। फिर उन मन्दिरों के मालिक भक्त हो जाते हैं। भक्त वे ही हैं, जो उनमें पूजा करने या पूजा का दिखावा दिखाने जाते हैं। इस दृष्टि से जैन, स्वामीनारायण आदि मन्दिर हिन्दुओं के माने जाते हैं। इन मन्दिरों में मैं खुद हो आया हूँ। मुझे या मुझ जैसे सैकड़ों को कोई नहीं पूछता कि आप कैसे हैं? हिन्दू जैसा दीख पड़ूँ, तो उतना ही काफी है। इसलिए जहाँ हिन्दू जायँ, वहाँ हरिजन भी जायँ। हरिजनों जैसी अलग जाति आज नहीं है। उसका समावेश चार या अठारह वर्णों में हो जाता है। जाग्रत जनमत यही कहता है। उसे सम्मान देनेवाला कानून यही कहता है। उसके समक्ष आनेवालों का जनमत आज चल नहीं सकता। देवताओं में प्राण भरनेवाले भक्त हैं। वे अच्छे, तो भगवान् भी अच्छा!"

आग्रह भक्ति नहीं

एक और पत्र है, जिस पर लिखनेवाले का नाम नहीं है। अक्षर वनाकर लिखे गये हैं और भाषा भी अलग ही है। उन्होंने सूचित किया है कि "उन्हें संक्रान्ति के दिन स्वामीनारायण का दर्शन करने जाना था, लेकिन वहाँ तो सुवह ८ वजे से ही

ताला लगा हुआ था। यदि स्वतन्त्रता के युग में हमें मन्दिर में जाने का अधिकार न मिलेगा, तो कब मिलेगा? फिर कांग्रेसियों से बहुत कुछ कहा जाता है, तो वे दस-पाँच मिनट आकर चले जाते हैं। वे कुछ भी प्रयत्न नहीं करते। बेचारे हरिजन सर्दी और धूप में सत्याग्रह करके बैठे हैं। अतः इस बारे में क्या किया जाय?"

बापू: "यह पत्र मेरे मतानुसार दृढ होने के बावजूद हरिजनों का आग्रह मैं समझ नहीं पाता। जो आग्रह करके बैठे हैं, वे सच्चे भक्त नहीं हैं। उन्हें देवदर्शन की तो पड़ी नहीं है, वे तो अपने हक के पीछे पड़े हैं और इसी कारण धर्म से दूर हट रहे हैं। वे लिखते हैं कि इसमें हम हस्ताक्षर नहीं करते। इसी तरह वे अपनी ओर से दूसरे से लिखवाते हैं। सच्चा भक्त तो नन्दनार का अनुसरण करता है। नन्दनार के पीछे ईश्वर के सिवा कोई नहीं था। उस नन्दनार को स्वयं को ऊँचा माननेवाला ब्राह्मण आज शौक से पूजता है। हरिजनों में स्वेच्छा से बने हरिजन नन्दनार का दर्शन करना चाहते हैं और जन्म से हरिजन माने जानेवाले भी चाहते हैं। अगर हरिजनेतर हिन्दू-समाज को गरज हो, तो हरिजन हिन्दू को आग्रहपूर्वक ले जाय। यदि ऐसा न हो, हरिजन हिन्दू को घर बैठे गंगा लाये, तो उसमें स्नान करे। उसे किसी मन्दिर के सामने जाकर अनशन करने की कोई आवश्यकता नहीं। इसे मैं अधर्म मानता हूँ। ऐसे अनशन को हिन्दी में…बैठना कहते हैं। गुजराती में 'लंघन' कहेंगे। 'त्रागुं' या हठ कहा जायगा। इससे पुण्य तो होता ही नहीं, पाप ही होता है। ऐसे पाप से सभी सौ योजन दूर रहें।"

सुबह आराम के समय अन्य चिट्ठी-पत्रियाँ देखीं।

स्वाधीनता-दिवस

आज स्वाधीनता-दिवस होने के कारण बापू के निकट बहुतों का आना-जाना जारी है। सभी नेता लोग तो आये ही, उनके सिवा गोपीचन्द भार्गव, प्रफुल्ल बाबू और अन्नदा बाबू भी आये थे। आज पण्डितजी के घर पर भी स्वाधीनता-दिवस के निमित्त पार्टी थी। बापू का वजन १०९ पौण्ड ही है। अभी शाक, दूध, सूप और गुड़ ही एक-एक दिन खाने के लिए लिया करते हैं। भेंट-मुलाकातें भी बेहद बढ़ गयी हैं। अनशन से पहले जितना कामकाज करते थे, वह पुनः शुरू कर दिया है। आज दिन में २॥ बजे से ५ बजे तक वर्किंग-कमेटी हुई। सरदार दादा की अनुप-

स्थिति बड़ी ही सूचक थी। ''ने कहा कि''मन्त्रिमण्डल से अलग होना चाहते हैं। वापू उन्हें समझाने का यत्न करेंगे।

'''की घूसखोरी की बातें भी सप्रमाण वापू के पास पहुँच गयी हैं। वम्बई में ये कांग्रेस के चोटी के नेता माने जानेवाले लोग अपने पिता या और किसी दूसरी पहुँच से इस तरह कमाया करें, यह बात वापू के लिए अत्यन्त कष्टप्रद हो गयी है। देखना है, और नया गुल क्या खिलता है? आज कदाचित् महुआ में भाई साहब को वापू की चिट्ठी पहुँच गयी हो और सम्भव है, कदाचित् वे वहाँ से चल भी पड़े हों।

स्वतंत्रता में ही सम्भव

आज का प्रार्थना-सन्देश तो प्यारेलालजी ने खुद ही हिन्दी में अनुवाद कर सुनाया : "आज स्वाधीनता-दिवस है। जब तक हम लोग परतंत्र थे, तब तक इस उत्सव को मनाया करते थे। आज हम लोग स्वतंत्र भी हो गये हैं। 'एक दिन हम लोग स्वतन्त्र हो जायेंगे' यह मान्यता अभी तक केवल भ्रम के रूप में ही थी, किन्तु आज उसे हम प्रत्यक्ष साकार देख रहे हैं। तब हम इस उत्सव को क्यों मनायें? क्या हम जिसे भ्रम कहते थे, वह झूठ हो गया, इसलिए? आज हम यह उत्सव इसीलिए मना सकते हैं कि हमारी अनेक नयी आशाएँ परिपूर्ण हों। अब भारत के सात लाख गाँव स्वतंत्र होकर यह दिखायें कि भारत का सच्चा सोना और खमीर तो हम ही हैं। यह नूर दिखाना स्वतंत्रता में ही संभव है।

न्याय के लिए पूरा अवकाश

"हम सबको इस भूमि को सर्व-धर्म-समानता की भावना के साथ आजादी के रास्ते ले जाने का जी-तोड़ श्रम करना होगा। लेकिन मैं तो आज इससे विपरीत ही स्थिति देख रहा हूँ। हम लोग बात-बात में हड़तालें करते हैं। अपने लिए अशोभनीय काम किया करते हैं। यही बताता है कि हमें अपनी आशा पूरी करने के लिए काफी श्रम उठाना पड़ेगा। खासकर मजदूर-वर्ग को अब अपना गौरव पहचानना चाहिए। मजदूर-वर्ग की शक्ति और गौरव हमारी जनता में जो व्याप्त है, उसके समक्ष पूँजीपति हतप्रभ हो जाते हैं। लेकिन वे अपने-आपको पहचान पायें, तो सुघड़ और सुव्यवस्थित समाज में अन्याय का न्याय पाने का उन्हें पूरा अवकाश बना

हुआ है। आज कोयले की खानों और दैनिक जीवन के आवश्यक पदार्थों के उत्पादक कारखानों में हड़तालें देख मुझे दुःख होता है। इससे सारे समाज को और स्वयं हड़तालियों को भी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। यहाँ एक बात का स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक समझता हूँ। हड़ताली लोग कहेंगे कि आप खुद ही बड़ी-बड़ी हड़तालें कराते थे और आज हमें यह लम्बा-चौड़ा व्याख्यान देने बैठे हैं? इनसे मैं बता देना चाहता हूँ कि उन दिनों हम लोग दास थे, साथ ही आज जैसी न्याय पाने की स्थिति न थी। लेकिन यह सब देखकर सचमुच मुझे यही लगता है कि पूर्व और पश्चिम के देशों में सत्ता पर कब्जा पाने के लिए जो दाँव-पेच खेले जाते हैं और जिस तरह की राजनीति खेली जाती है, क्या उन दुर्गुणों से हम बच सकते हैं? फिर भी मैं आशा करता हूँ कि भौगोलिक दृष्टि से विभाजन होने के बावजूद हम लोग दिल के टुकड़े न होने देंगे और दुनिया के समक्ष अन्ततः एक ही होकर खड़े रहेंगे।

कण्ट्रोल

"कण्ट्रोल उठा लेने के बाद चारों ओर से इसके लिए काफी स्वागत हुआ है। लेकिन मेरे मन में यह सन्देह ही नहीं है कि जिस देश में इतनी अधिक रुई पैदा होती हो, जहाँ इतने अधिक बुनकर और कातनेवाले मौजूद हों, वहाँ कपड़े की तंगी हो सकती है। उसके बाद इंधन पर से भी कंट्रोल उठ गया है। इसलिए भी लोगों को काफी राहत मिल गयी है। गुड़ भी अब तो बाजार में देखते हैं, उससे अधिक सस्ता मिल जाता है। फिर भी एक भाई अपने गाँव के बारे में लिखते हैं कि माल के हेरफेर की अव्यवस्था के कारण ही उसकी यह तंगी मालूम पड़ रही है।

वे भी उतने ही अपराधी

"वि···अप्रामाणिकता और घूसखोरी की बात कोई नयी नहीं है। लेकिन उसके लिए उच्च प्रकार के राजकीय अमल की जरूरत हुआ करती है। जब तक प्रत्येक व्यक्ति स्वयं यह न समझेगा कि हम देश के लिए काम कर रहे हैं, तब तक हम लोग ऊपर नहीं उठ सकेंगे। भले ही कुछ लोग स्वयं घूसखोरी और लगाव-बझाव में न फँसे हों, लेकिन उसमें फँसे हुए लोगों को जानते हुए भी उसके प्रति उदासीनता बरतते हैं, वे भी उतने ही अपराधी हैं।"

आज की प्रार्थना-सभा में···बम्बई के···नेताओं की जो बातें बापू के पास

पहुँची थीं, उसी पर से इन्होंने यह वात संदेश में भी कही।···अगर समझ जाय, तो अच्छा है। नहीं तो बापू उसकी गहराई में उतरेंगे और कदाचित् जाहिर भी कर दें, तो···का तो बुरा हाल हो जायगा। लेकिन उतना समाज में भी एक········· रूप बनेगा। कारण बापू अब किसीकी परवाह न करेंगे।···प्रार्थना के बाद···के साथ खूब बातें कीं। बापू ने···से पुनः नोआखाली जाने की बात भी कही।

● ● ●

कांग्रेस की नीति : २८ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२७-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना के बाद तत्काल ही आज की कांग्रेस की अवस्था के विषय में स्वयं लिखा और लिखाया। फिर उसे शीर्षक दिया: 'Congress Position' (कांग्रेस की स्थिति)। इसे मैं उनके ही शब्दों में उद्धृत कर रही हूँ:

हम ईश्वर के सेवक !

"The Indian National Congress which is the oldest national political organization and which has after many battles fought her non-violent way to freedom can not be allowed to die. The Congress can only die with the nation. A living organism ever grows, or it dies. The Congress has won political freedom but it has yet to win economic freedom, social and moral freedom. These freedoms are harder than the political, if only because they are constructive, less exciting and not spectacular. All-embracing constructive work evokes the energy of all the units of the millions.

The Congress has got the preliminary and necessary part of her freedom. The hardest has yet to come in it's difficult ascent to democracy, it has inevitably created rotten boroughs, leading to corruption and creation of institutions popular democratic, only in name. How to get out of the weedy and unwieldy growth ?

The Congress must do away with its special register of the members, at no time exceeding one crore, not even then easily identifiable. It had an unknown register of millions, who could never be wanted. It's register should now be co-extensive with all the men and women on the voters', rolls in the country. The Congress business should be to see that no false name gets in and no legitimate name is left out. On it's own register, the Congress will have a body of the servants of the nation, who would be workers doing the work allotted to them from time to time.

Unfortunately for the country, they will be drawn chiefly for the time being from the city-dwellers, most of whom would be required to work for and in the villages of India. The ranks must be filled in increasing numbers from villagers.

These servants will be expected to operate upon and serve the voters, registered according to law, in their own surroundings. Many persons and parties will woo them. The very best will win.

Thus, and in no other way can the Congress regain its fast ebbing unique position in the country. But yesterday, the Congress was unwittingly the servant of the nation, it was Khudai Khidmatagar—God's servant. Let the Congress now proclaim to itself and the world that it is only God's servant—nothing more, nothing less. If it engages in the ungainly skirmish for power it will find one fine morning that it is no more. Thank God, the Congress is now no longer in sole possession of the field.

I have only opened to view the distant scene. If have the time and health, I hope to discuss in these columns what the servants of the nation can do to raise themselves in the estimation of their masters, the whole of the adult population, male and female."

···को लिखा : "जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः, जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः— इस वाक्य को यदि मैं खुद के लिए ही झूठा बना सकूँ, तो काफी मानूँगा। लेकिन यह तो तभी संभव है, जब कि गोलियों की बौछार प्रसन्नता के साथ खुशी-खुशी से सहता रहूँ। इसलिए २० तारीख की घटना के बारे में खुद को मुबारकबादी के योग्य नहीं समझता। वह तो भगवान् की कृपा ही मानिये। लेकिन मेरी पूरी तैयारी है कि जब हुक्म आयेगा, तभी तैयार रहूँगा। दूसरी को वर्धा जाने की बात तो चला रहा हूँ, लेकिन मुझे खुद ही नहीं लगता कि जा पाऊँगा। कल का कौन जानता है?

"···आज ही मैंने कांग्रेस की नीति के बारे में लिखा है, वह तुम देखोगे ही। ···को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ।···कहते हैं कि मुझे···के बिना नहीं चलेगा। और···कहते हैं कि मुझे···के बिना नहीं चलेगा। अगर एक इत्तिफाक की बात करता है, तो···वह तो तैयार ही है। कश्मीर के बारे में मैं मानता हूँ कि हमें लेकसक्सेस तक जाने की कोई जरूरत नहीं। फिर भी देखें, क्या होता है?

"यहाँ करने या मरने का संकल्प किया था। कुछ काम तो बन गया है, ऐसा दीखता है। फिर भी बहुत सँभालना होगा ही।

"आज महरौली जानेवाला तो हूँ।"

बापू का 'पिनकुशन'

बापू कातते हैं, तो उनके सूत के जो टुकड़े-टुकड़े निकलते हैं, उन्हें वे इकट्ठा किया करते हैं और उसे भरकर वे अपने पुराने रूमाल की चौकोर थैली सी लेते हैं। फिर उसे पिन रखने के लिए 'पिनकुशन' बनवाया। आज महरौली से आकर यही काम किया।

औलिया की दरगाह और बापू

दस बजे हम लोग कुतुबुद्दीन औलिया की दरगाह का उर्स देखने महरौली गये। वहाँ हिन्दू, सिख, मुसलमान हजारों की संख्या में जुटे थे। किसीको जरा भी आशा न थी कि यहाँ इतना सुन्दर मेला लग सकेगा। मोती मसजिद में संगमरमर की पत्थर की जालियाँ तोड़ डाली गयीं। कब्र के पास कुरान शरीफ की आयत पढ़ी। फिर मौलवी साहबों ने बापू के प्रति बड़ी ही कृतज्ञता व्यक्त की। बापू की तन्दुरुस्ती के लिए दीर्घायु बख्शी। फिर बापू से दो शब्द कहने की प्रार्थना की। बापू ने कहा :

"भाइयो और बहनो !

"बहनों से मेरी प्रार्थना है कि वे बिलकुल खामोश हो जायँ। चन्द मिनट मुझे दे दें। मेरे मन में जरा भी यह नहीं था कि यहाँ मुझे बोलना होगा। मैं तो एक यात्री की हैसियत से आया हूँ। मैंने कुछ दिन पहले सुना था कि हर साल जैसा इस साल मेला नहीं होगा। अगर ऐसा होता, तो मुझे भारी दुःख होता। आज तो मेरी आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि अगर हम हिन्दू, सिख, मुसलमान यहाँ सच्चे दिल से आये हैं, तो हम इस पाक जगह पर ऐसा निश्चय कर लें कि अब कभी भी झगड़ा नहीं होने देंगे। हम लोग दोस्त बनकर, एक होकर भाई-भाई बनकर रहेंगे। तब तो दुनिया यही कहेगी कि दो भाई लड़ते थे, मगर आखिर एक-दूसरे के दुश्मन नहीं बने। भले ही हम ऊपर से जुदे-जुदे रहें, मगर आखिर एक पेड़ की ही पत्तियाँ हैं। शैतान की बंदगी करनेवाले की बात नहीं करता। मेरी जिन्दगी तो चलती आयी है। कोई चीज नयी नहीं है। अभी भी हम कहीं-न-कहीं

तो लड़ते ही हैं। आज ही पढ़ा कि सरहद में हिन्दू काटे गये। इसके लिए यहाँ के सब मुसलमानों को दुःख होना चाहिए। हम अपना दिल साबित रखें और सोचें कि जो वहाँ मारे गये, वे वापस तो नहीं आयेंगे। इसलिए हम वहाँ चिट्ठी लिखें, तो यही लिखें कि हम इसका बदला किसीकी कतल करके नहीं लेंगे, बल्कि और पाक करेंगे व मुहब्बत करेंगे। जब हम यह समझ लेंगे, तभी हिन्द के लिए खैर है। फाका छोड़ने का यही मतलब था कि दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान पाक बनें। अगर सिर्फ मुझे जिन्दा रखने के लिए ही फाका छुड़वाया हो, तब तो वह गलत ही है।"

नाक काटने की तैयारी

१२ बजे हम लोग वहाँ से लौटे, तो बापू कह रहे थे कि "यहाँ इतना हुआ है, फिर भी मेरा विश्वास है कि पाकिस्तान में इससे भी ज्यादा हुआ होगा। इससे कम तो नहीं ही। पेशावर में १२० काटे गये, यह तो वहाँ की सरकार कहती है। लेकिन मेरा विश्वास है कि इससे कहीं अधिक काटे गये होंगे। फिर भी अभी यहाँ का एक भी मुसलमान यह नहीं कहता कि यह सब बन्द होना ही चाहिए। सिखों से तो जो आशा रखी गयी थी, उससे बहुत अधिक बहादुरी उन्होंने दिखाई है, यह मुझे कबूल करना ही होगा। फिर पेशावर में जो हुआ, वह किसी कारण के बगैर ही हुआ माना जायगा। 'यू० एन० ओ०' वाले तो सोलहों आने सफेद झूठ पर उतर पड़े हैं। ये जवाहर की नाक काटने की तैयारी करते हैं। जवाहरलाल की इतनी सारी मेहनत पर पानी फिर जायगा, अगर वे चतुराई से काम न लें।"

बापू थक गये थे। घर पहुँचने पर उन्होंने पैर धुलवाये। मिट्टी का प्रयोग किया। हम लोग भी आकर जुट गये।

दोपहरभर मुलाकातें ही चलती रहीं। मिलनेवालों में निम्नलिखित नाम उल्लेख्य हैं : सर्वश्री पन्तजी, मौलाना साहब, विजयानगरम् के महाराजकुमार, जस्टिस रामलालजी, मेहरचन्द खन्ना, पण्डितजी, रामेश्वरी बहन आदि। श्री मेहरचन्द खन्ना ने सीमाप्रान्त की घटनाएँ बतलाते हुए उन पर असह्य दुःख व्यक्त किया।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा कि "आज यहाँ जितने मुसलिम भाई और बहनें हैं, वे हाथ उठायें।" किन्तु एक ही हाथ ऊपर उठा।

घोर जंगलीपन

फिर उन्होंने महरौली की चर्चा की। सभा में वहाँ के हिन्दू और सिख भी अधिक संख्या में उपस्थित थे : "बड़े दुःख की बात है कि यह दरगाह तो बादशाही जमाने की है। यहाँ मुख्यतः नक्काशी का काम रहा। पुराने जमाने का इतना सुन्दर नक्काशी-काम तोड़-फोड़ डालना कोई समझदारी की बात नहीं। उस औलिया की टूटी-फूटी भव्य कब्र देख मेरे मन में यह प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या हम लोग इतने नीचे उतर आये हैं ? मान लीजिये, पाकिस्तान में इससे भी अधिक भयंकर और बीभत्स काम हुए हों। लेकिन क्या बुरे कामों में भी प्रतियोगिता की जा सकती है ? दूसरी बात यह कि आज मुझे यह खबर मिली है कि सीमाप्रान्त और पाकिस्तान में एक जगह, एक साथ १२० हिन्दू और सिख काट डाले गये। फिर लूट-पाट जो हुई, वह तो घलुए में है। मैं पूछता हूँ कि आखिर इन सबको किसने मारा ? इसी तरह मरनेवालों का कुछ अपराध था, यह भी कोई कह नहीं सकता। लेकिन यदि आप लोग वहाँ के इस भयंकर काण्ड का यहाँ बदला लें, तो निश्चय ही वह जंगलीपन कहा जायगा। अतः इस पर पूरा ध्यान रखें कि ऐसा कोई भी अनुचित काम आज के शान्तिमय वातावरण में न हो पाये। पाकिस्तान में जो भी कुछ सत्यानाशी चल रही है, उसके विषय में तो हमारी सरकार सतर्क है ही।

स्वतंत्रता का मूल्य

"राजकुमारी अमृतकौर अभी-अभी मुझसे मिलने आयी थीं। वे अजमेर होकर आ रही हैं। उन्होंने बताया कि वहाँ के हरिजनों से जो काम करवाया जाता है, वह सब तो वे करते ही हैं। लेकिन वे जहाँ बसते हैं, वहाँ की गन्दगी की तो पूछिये ही नहीं। आखिर वहाँ तो हमारी सरकार का ही शासन चल रहा है। इसलिए वहाँ के हिन्दू-सिख अधिकारी एक दिन उस बस्ती में जाकर देखें, तभी उन्हें पता चलेगा। वे बेचारे हरिजन हैं, इसीलिए उन्हें इस तरह सड़ते हुए रखा जा रहा है ! दिल्ली में भी जब मैं भंगी-बस्ती में था, तो उनका यही हाल देखा। लेकिन अजमेर तो उससे भी बढ़ा-चढ़ा निकला। हम लोगों ने स्वतन्त्रता तो पायी, लेकिन उसके साथ ही अगर ऐसी-ऐसी बुरी दशाओं में सुधार न करेंगे, तो उस स्वतन्त्रता का मूल्य दो कौड़ी का हो जायगा। हम लोग आज ईश्वर को भूल गये हैं। एक-दूसरे का ऐब देखने से हमें फुर्सत ही नहीं मिल पाती।

किससे क्या कहूँ !

"आज मेरे पास मीरपुर के लोग आये थे। बेचारे हमलावरों के शिकार हुए हैं। हमलावर उनकी बहनों और बूढ़ों को उठा ले जाते और उनकी आबरू लूटते हैं।"

"मैं किससे क्या कहूँ ? इतना ही कहता हूँ कि आखिर ऐसे कुकृत्यों की कोई सीमा भी है या नहीं ? फिर भी कहते हैं कि आजाद कश्मीर के लिए हम लोग ऐसा काम करते हैं। यदि खाने-पीने के लिए न मिले, तो लूट-पाट की बात समझ में भी आ सकती है। लेकिन छोटी-छोटी छोकरियों की आबरू लेना, उन्हें खाना-कपड़ा न देना—क्या यह सब इसलाम-धर्म और कुरान शरीफ में लिखा हुआ है ?

"बेचारे मीरपुर के लोग मेरे पास आये थे। हृष्ट-पुष्ट थे, पर बेचारे शरमाते रहे। जवाहरलालजी को इस बात का गहरा दुःख है। वे पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उससे जिन्होंने जान-माल खोया है, उनका समाधान कैसे हो सकता है। आज जो भाई मेरे पास आये थे, अभी उनके करीब पन्द्रह लोग हमलावरों के हाथों में पड़े हुए हैं। सारी दुनिया के नाम और ईश्वर के नाम पर वहाँ जो हमलावर चढ़ आये हैं, उनसे और उनके पीछे रहनेवाली पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना करता हूँ कि किसीकी भी कैसी ही माँग हो, उससे पहले खुद ही समझ-बूझकर अपनी इज्जत बचायें और बहनों को वापस लौटा दें। मैंने भी इसलाम-धर्म का अध्ययन किया है। उसके बारे में काफी पढ़ा है। इसलाम या दुनिया का और भी कोई धर्म यह हर्गिज ही नहीं सिखलाता। इसलिए इसमें ईश्वर या खुदा नहीं, वरन् शैतान की ही भक्ति कही जायगी। इसे छोड़ देने में ही आपका और सबका भला है।"

प्रार्थना के बाद बापू घूमे। घूमते समय मिस्टर सिआम (Mr. Sheeam) साथ थे। उनसे आजाद-कश्मीर के विषय में बातें हुईं। शाहनवाज साहब भी थे। वे कश्मीर जाने के लिए तैयार हैं। बाद में पण्डितजी आये थे। उन्होंने भी आज मीरपुर की घटना के बारे में बातचीत की। वे कल माउण्टबैटन के साथ भी इस बारे में सलाह-मशविरा करेंगे।

९॥। बजे सोने की तैयारी हुई। ● ● ●

दुखिया-सुखिया के आधार : २९ :

विरला-भवन, नयी दिल्ली
२८-१-'४८

गुण ही अपनायें

मालिश के समय बापू ने बंगाली-पाठ किया। स्नान के समय वे बाथ में आँखें बन्द करके ही पड़े रहे। मैंने भाई साहब को चिट्ठी भेज दी या नहीं और वे यहाँ कब आयेंगे, इस बारे में पूछताछ की। उसके बाद दक्षिण अफ्रीका की समस्या खड़ी होने के तार और पत्रों में छपे हुए समाचार पढ़ सुनाये।

बाथ के बाद लगभग घण्टेभर से ऊपर राजेन्द्र बाबू से बातचीत की।···की घूसखोरी की बातों के बारे में बापू आज प्रार्थना में चुटकी लेंगे।

···को ऐसा लगता है कि बापू मेरे और···के बारे में पक्षपात करते हैं। बापू कहते हैं : "यों तो मैं किसीका भी पक्षपात नहीं करता। फिर इसमें तो कौन-सी पक्षपात की बात है? कदाचित् सम्भव है कि मैं अपना दोष न देख पाता होऊँ। मेरे जो दोष हों, उन्हें फेंक दिया जाय और जो गुण हों, उन्हें ही ग्रहण किया जाय।"

बापू भी हम जैसे नन्हें बच्चों को भी इस तरह जवाब देते हैं कि आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। खुरशीद बहन आयी थीं, इसलिए उनके साथ पाकिस्तान संबंधी बातें कीं। सर सुलतान अहमद के साथ भी सरहद के बारे में बातचीत की।

सरकार मेरे हाथ में नहीं

दो बजे सेण्ट्रल रिलीफ कमेटी मिलने आयी। लोगों को दिये जानेवाले अनाज के बारे में उन लोगों ने बातचीत कर बापू से प्रार्थना की कि "वे इस बारे में ध्यान देने के लिए सरकार से कहें।" बापू ने कहा : "सरकार मेरे हाथ में नहीं है। मैं तो आप जैसी ही उसे प्रार्थना करके देखूँगा। भावनगर के वंशीधरजी मूँगफली की फसल के बारे में बातचीत करके गये। बापू मानते हैं कि मूँगफली की फसल पर भी सरकार को यह नियन्त्रण रखना चाहिए कि इतने भाग में अत्यावश्यक रूप में अनाज की फसल होनी ही चाहिए।"

आज किसीने दो आने के लिफाफे में हजारों रुपये भेजे हैं। किसकी ओर से आये हैं, यह कोई भी नहीं जानता। किसन भाई ने वापू से कहा कि "आप इस वारे में प्रार्थना-सभा में दो शब्द कहें, क्योंकि इसी तरह दो आने के लिफाफे में हजारों के नोट भेजने पर वे कभी गायब भी हो सकते हैं।"

करके बताइये

हैदरावाद के नवाव जंग सादिक अली खान आये हुए हैं। उन्होंने तो वापू से यह कहा कि "हमारे सिर पर तो आपका ही छत्र है।" वापू ने कहा: "मुझे यह लिखकर दीजिये और करके बताइये। सरहद, वहावलपुर, सिंध आदि स्थानों में जहाँ-जहाँ हिन्दुओं पर हमले हों, हैदरावाद की जनता और खासकर मुसलमान भाइयों का कर्तव्य है कि उनकी जोरदार शब्दों में निन्दा करें।"

वहावलपुर के भाइयों से वापू मिल न पाये, क्योंकि इसी बीच पंडितजी आ गये। वापू ने भाई साहव से कहा कि "उनसे बातें समझ लो।" प्रार्थना में भी उसके विषय में कहा। सचमुच वापू सभी सुखिया और दुखिया लोगों के आधार हैं। उनसे मुलाकात का समय भी भरपूर रखा जाता है। दुखियों से न मिल पाना उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे कहते हैं: "आखिर मैं दिल्ली में इसीलिए तो रह रहा हूँ। इनका दुःख दूर करनेवाले अलग हैं, लेकिन इनकी बातें समाधानपूर्वक सुनने के लिए भी समय न दे सकूँ, तो मैं किस काम का रहूँगा?"

यही कारण है कि आज प्रार्थना-सन्देश में उन्होंने आरम्भ में ही कहा:

"वहावलपुर के भाइयों से मिल नहीं पाया, इसके लिए मुझे खेद है। उन लोगों को वचन देता हूँ कि उनसे मिलने के लिए किसी भी तरह समय निकाल दूँगा। लेकिन उनके लिए हर सम्भव मदद देने के लिए मैं पूरा यत्न कर रहा हूँ। यही कारण है कि मैंने डॉ० सुशीला नायर को वहावलपुर भेजा है।

"ईश्वर की कृपा से तीनों जातियों के बीच यहाँ जो एकता स्थापित की जा सकी है, वह चल ही रही है। इस सहयोग के लिए आप सव लोगों का मैं आभारी हूँ।

अफ्रीकी सरकार को संदेश

"आज मुझे आपसे दक्षिण अफ्रीका के वारे में कुछ बातें कहनी हैं। हमारे यहाँ चाहे जो जनता आकर रह सकती है। चाहे जहाँ जमीन लेकर रहा जा सकता

है। यह हक कोई नहीं छीनता, यद्यपि यह सच है कि हम लोग हरिजनों के साथ दुराव करते हैं।

"लेकिन दक्षिण अफ्रीका में तो काले आदमी को अमुक रास्ते से भी जाने नहीं देते, तो फिर अन्य अधिकारों की बात ही क्या है? इसका साक्षी स्वयं मैं हूँ। यही कारण है कि हमारे लोग वहाँ लड़ाई लड़ रहे हैं। लड़ने के तो अनेक रास्ते हैं, लेकिन वहाँ के प्रवासी भारतीयों ने तो इस लड़ाई को सत्याग्रह का ही नाम दिया है। वहाँ की सरकार उन्हें एक शहर से दूसरे शहर में भी जाने नहीं देती। जैसे—नेटाल, ट्रान्सवाल, हिलस्टेट, केपकॉलनी आदि। अफ्रीका खण्ड तो बहुत बड़ा खण्ड है। वहीं के वहीं एक जगह से दूसरी जगह जाना हो, तो पासपोर्ट लेना पड़ता है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। अतएव कुछ लोग नेटाल से कूचकर ट्रान्सवाल पहुँच गये। मुझे कहना चाहिए कि वहाँ की सरकार ने इतना विवेक और सौजन्यता दिखलायी है कि अभी उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया। बल्कि वहाँ लोगों ने इस कूच का काफी स्वागत भी किया। यह एक बहुत ही बहादुरी का काम माना जायगा। फिर वहाँ तो हिन्दू, मुसलमान भी हैं। वे सब हिल-मिलकर ही अपना काम करते हैं। जब तक गिरफ्तार न होंगे, तब तक ये अपने कूच में आगे बढ़ते जायँगे। आगे चलकर कदाचित् हम उन्हें इस बहादुरी के लिए धन्यवाद भी दें। अगर भारतीय अपनी जगह पर जिम्मेदारी के साथ रहते हैं, तो गोरों को उसके लिए दुःख होने की क्या बात है? जैसे वे स्वतन्त्र हैं, वैसे ही हम भी स्वतन्त्र हैं। इसलिए यहीं से मैं दक्षिण अफ्रीका की सरकार को भी यह सन्देश देना चाहता हूँ कि जो कोई जहाँ भी रहे, वहाँ अपना समझकर रहना हो, तो उसकी दृष्टि में वह स्थान अपना ही है। मैं बीस वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका में रह चुका हूँ। इसलिए मैं उस देश को भी भारत की तरह अपना ही देश मानता हूँ।

"मैसूर के मुसलमानों ने मुझे तार भेजकर अपनी परेशानियाँ बतायी हैं। इस सम्बन्ध में कानून और व्यवस्था-विभाग के प्रधान का मेरे पास तार आया है, जिसमें वे लिखते हैं कि मैसूर के मुसलमानों की भलीभाँति देखभाल की जा रही है। इस सम्बन्ध में मुझे वहाँ के मुसलमानों से कहना है कि अगर आप अपना भला चाहते हों, तो किसी भी तरह की अतिशयोक्ति न करें।

ऐसी भूल न करें

"अब हम लोगों के भोलेपन की भी एक बात सुन लें। कितने ही लोग मुझे दान में पैसे भेजते हैं। बेचारों को समझ में ही नहीं आता कि किस तरह पैसे भेजे जायँ। इसलिए वे दो आने के लिफाफे में उसे पोस्ट कर देते हैं। वे यही सोचते होंगे कि लिफाफा कौन खोलेगा ? इस प्रसंग में मुझे अपने बचपन का एक किस्सा याद आ रहा है। मेरे पिताजी के पास एक कीमती जवाहिरात था और उसे उन्होंने इसी तरह लिफाफे में पोस्ट कर दिया। समय पर उस पत्र की पहुँच न आने पर वे बड़ी ही चिन्ता में पड़ गये और उसका पता लगाने के लिए उन्हें तार करना पड़ा। इसलिए इस तरह किसीके हाथ में पत्र लग जाय और रुपये गलत जगह पहुँच जायँ, तो दाता का दान भी व्यर्थ चला जायगा और दरिद्रनारायण की पूँजी भी चली जायगी। इसलिए कभी भी कोई ऐसी भूल न करे।"

प्रार्थना के बाद राजकुमारी बहन के साथ बातचीत की। "अब प्रार्थना-सभा में आवाज होती है या नहीं", यह पूछने पर "Were there any noises in your prayer meeting today Bapu ?" बापू ने उनसे कहा : "No. But does that question mean that you are worrying about me ? If I am to die by the bullet of a mad man I must do so smiling. There must be no anger within me. God must be in my heart and on my lips. And any thing happens, you are not to shed one tear......"

इसके बाद मन्त्रिमण्डल के विषय में बातचीत हुई। फिर पैर धोकर और कसरत करके सोने की तैयारी की।

शाम को भाई साहब का तार आया है कि वे ३१ तारीख को सुबह यहाँ पहुँचेंगे। बापू ने कहा : "ठीक है, अगर यहीं आता है तो, क्योंकि वर्धा जाना अभी अनिश्चित ही कहा जायगा। फिर यदि जाना ही हो, तो हमारे साथ वर्धा चल सकते हैं। फिर वहाँ से उन्हें महुवा जाना हो, तो जा सकते हैं। वर्धा जाने की आशा में वर्धा न पहुँचकर यहीं आ रहे हैं, यह उनकी बुद्धिमानी ही मानता हूँ।"

मालिश हुई। आज तो सारा बहुत ही छिछला लिखा गया है।

९॥। बजे सोने की तैयारी हुई। सब कुछ निपटाकर मैं १०॥। बजे सोने गयी। जाड़ा तो कम हो ही नहीं रहा है। ● ● ●

बापू का वसीयतनामा : ३० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२९-१-'४८

मृत्यु सच्चा मित्र

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना !···प्रार्थना के समय जगी नहीं थीं। बापू ने उन्हें जगाने से रोक दिया था। मुझसे उन्होंने कहा : "अब मैं किसीका काजी बनना नहीं चाहता। सभी अपने इच्छानुसार ही अपना-अपना धर्म पाले। इसीमें मेरा और आप सबका भला है। तुझे अब···से कुछ भी न कहना चाहिए।"

फिर चाँदवानीजी के लिखे पत्रों का संशोधन किया। वे बेचारे हिन्दी समझ नहीं पाते और न बापू की अंग्रेजी ही पढ़ पाते हैं। बापू इतना कम लिखते हैं कि दो लकीरों में ही सब कुछ समझ में आ जाय। लेकिन चाँदवानीजी का लेख तो लम्बा होता है। वे कल ही मुझसे कह रहे थे कि "बापू के साथ रहने का मतलब है—तलवार की धार पर रहना।"

फिर सेवाग्राम के लिए सुलोचना बहन की मृत्यु के बारे में उसके पिता के नाम पत्र लिखा :

"तुम्हारी पुत्री सुलोचना के स्वर्गवास की खबर चि० किशोरलाल ने दी। मुझे कुछ भी पता नहीं था। मैं क्या लिखूँ ? तुम्हें आश्वासन क्या दिया जाय ? मृत्यु सच्चा मित्र है। हमारा अज्ञान ही हमें दुःख देता है। सुलोचना की आत्मा तो कल थी, आज है और भविष्य में भी रहेगी। शरीर तो जाना ही है। सुलोचना अपने दोष लेकर और गुण रखकर गयी है। उसे हम न भूलें। फर्ज अदा करने में और सावधान बनो।

—बापू के आशीर्वाद।"

"चि० किशोरलाल,

आज प्रार्थना के बाद का समय पत्र लिखने में ही दे रहा हूँ। शंकरजी की कन्या की मृत्यु का समाचार आपने ठीक ही दिया। उसे पत्र लिख दिया है। मेरी वहाँ आने की बात हवाई ही समझिये। यों तो ३ से १२ तारीख तक वहाँ रहने की बातचीत चल रहा हूँ। लेकिन दिल्ली में निश्चित क्या कहा जाय? अतः प्रतिज्ञा का पालन करने का प्रश्न नहीं। कारण यह यहाँ के साथियों पर ही निर्भर है। कदाचित् कल निश्चय हो सके। मुझे ताकत आ रही है। इस समय 'किडनी' और 'लीवर' दोनों बिगड़े हैं। इसका कारण मेरी दृष्टि में रामनाम की कमी है।

—बापू के आशीर्वाद।"

जयप्रकाश और बापू

५-४० बजे बापू चिट्ठियों का काम पूरा करके सो गये। फिर जयप्रकाशजी और प्रभावती बहन अन्तिम बार, दिल्ली छोड़ने से पहले मिलने के लिए ही आये। बापू ने उनके समक्ष अपना दुःख व्यक्त किया। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि "समाजवादी लोग जिस तरह आजादी के लिए एकदिल होकर अंग्रेजों के साथ लड़े, उसी तरह आज आजादी के जमाने में भी साथ दें, तभी 'समाजवाद' सच्चे अर्थ में निखर उठेगा।" उनकी ओर से भी यह वचन दिया गया कि "जब तक बापू जीवित हैं, तब तक तो वे बापू का हुक्म हमेशा सिर चढ़ायेंगे।" किन्तु बापू 'हुक्म' नहीं, 'फर्ज' को मानते हैं। फिर भी जयप्रकाश जैसे वफादार और बुद्धिमान् लोग हैं कहाँ? बापू तो गुणपूजक हैं, इसीलिए वे इन्हें संगृहीत किये हुए हैं।

चाय के समय बापू ने हम सबके बारे में बातें कीं। मैंने कहा: "···से मैं उम्र में छोटी हूँ। इसलिए उनके बारे में आप मुझसे कुछ भी कहते हैं, तो···को अच्छा नहीं लगता।···को अकेले बातचीत के लिए समय मिलना चाहिए।" बापू ने कहा: "मैं उम्र का छोटा या बड़ापन देखता ही नहीं। लेकिन···से काम लेना बड़ा कठिन है। आज उसे समय दूँगा। वह खुद ही मुझसे क्यों नहीं कहती?"

भोजन के समय पौन घंटा···के साथ एकान्त में बातचीत हुई। १०॥ बजे पद्मजा बहन, कृष्णा बहन हठीसिंह, इन्दिरा बहन गांधी और तारा बहन (श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित की कन्या) आयी थीं। बापू ने उनके साथ विनोद करते हुए

कहा : (सभी नेहरू-परिवार के स्त्री-सदस्य होने के कारण) "आइये, क्या ये रानियाँ मुझसे मिलने आयी हैं?" सभी खिलखिलाकर हँस पड़ीं। बापू ने कहा कि सभी लोग जहाँ चाहें, बैठें। बापू जाड़े के कारण धूप में नोआखालीवाला हैट पहनकर बैठे थे। इन चारों बहनों के परिवारों की हालचाल पूछी। पद्मजा बहन ने कहा : "बापू, क्या यह बर्मी हैट है?" बापू ने कहा : "सुन्दर बर्मी हैट तो अभी आनेवाला है। तब तो मैं बहुत ही सुन्दर दीख पड़ूँगा न?" सभीने खूब-खूब मजाक किया। आखिर बापू ने कहा : "अब तुम सब लड़कियाँ भाग जाओ। नहीं तो जो बाहर लोग हैं, वे तुम लोगों को गालियाँ देंगे।"

···ने बापू से एकान्त में मिलने के लिए समय माँगा, क्योंकि बहुत लोगों के बीच उन्हें बोलना पसन्द नहीं पड़ता। उन्होंने कहा : "हर बार एकान्त में मिलना अब कठिन हो गया है। अब तो आप लोगों की भीड़ में ही मिल सकते हैं।"

इसके बाद स्थानीय मौलाना आये। उनके साथ सरहद और सिन्ध के बारे में बातचीत की। अब दिल्ली में तो पर्याप्त शान्ति हो गयी है।

मिट्टी, कताई आदि सभी नियमानुसार ही चलता रहता है। सुधीरदास ने 'लन्दन टाइम्स' में छपे पण्डितजी और सरदार दादा के मतभेदों की खबर सुनायी। बापू तो यह समझ ही गये हैं कि कोई हम लोगों के बीच फूट डाल रहा है, लेकिन हम लोग इसके लिए इतना हायतोबा क्यों मचायें? बापू तो उन दोनों से यही बात कहनेवाले हैं। फिर ग्वालियर के दीवान और श्रीनिवासजी आये। श्रीनिवासजी ने मद्रास की अनाज की तंगी के बारे में बातचीत की।

मिस मार्गरेट के साथ बापू

श्रीमती राजेन नेहरू अमेरिका जा रही हैं, इसलिए बापू को प्रणाम करने आयी थीं। २॥ बजे मिस मार्गरेट आयी थीं। वे अमेरिका में रहती हैं। उन्होंने अपना परिचय एक सतानेवाली (Torturer) के तौर पर दिया। वे प्रेस-रिपोर्टर हैं। मुझे पहचानती थीं, क्योंकि वे नोआखाली आयी हुई थीं। उन्होंने 'ट्रस्टीशिप' के विषय में बापू के विचार पूछे। बापू ने इसके जवाब में यह कहा :

"A trustee is one who discharges the obligations of his trust faithfully and in the best interests of his words."

फिर उन्होंने पूछा कि "क्या भारत में ऐसा आदर्श रखनेवाला कोई आपके ध्यान में है ?" बापू ने कहा :

"No – though some instance my host Shri G. D. Birla. I hope he is not deceiving me. If I see him do so, I would not live under his roof."

उन्होंने बापू से एक दूसरा सवाल पूछा कि "आप १२५ वर्ष जीने की जो इच्छा रखते हैं, उस पर दृढ़ ही हैं ?"

बापू ने कहा : "I have lost that hope because of the terrible happenings of the world. I don't want to live in darkness."

उन्हें बापू ने सिर्फ दो मिनट ही समय दिया था। आज का समय तो काफी है। लेकिन उन्होंने खुद बापू के फोटो लिये थे। उन पर हस्ताक्षर करने के लिए उन्हें बापू के सामने रखा और साथ ही साथ बातचीत भी समाप्त करते हुए उनसे पूछ ही दिया कि "क्या बापू चाहते हैं कि अमेरिका को अणुबम नहीं बनाना चाहिए ?" उन्होंने कहा :

"Would you advise America to give up the manufacture of Atom bombs ?"

बापू ने जोर देकर कहा :

"Most certainly. As things are, the war ended disastrously and the victors are vanquished by jealousy and lust for power. Already a third war is being canvassed which may prove even more disastrous. Ahimsa is a mightier weapon by for then the Atom bomb. Even if the people of Hiroshima could have died in their thousands with prayer and good-will in their hearts, the situation would have been transformed as if by a miracle."

बापू को लगा कि इस बहन का लोभ मिट नहीं सकता। अतः अन्तिम फोटो पर सही करने के साथ ही घड़ी की ओर देखकर कहा : "आपके दो मिनट तो कबके हो गये। देखिये, दो मिनट पर कितने सेकण्ड हो गये हैं ?"

उसके बाद तुरत ही दूसरी अमेरिकन बहन भी मिलने आयी थीं। वे जनरल सेक्रेटरी आफ दि वर्ल्ड हेड क्वार्टर्स ऑफ दि वाई० डब्ल्यू० सी० ए० थीं। वे स्विट्जरलैण्ड में रहती हैं। इन दिनों भारत में आयी हैं। इन्हें भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक प्रश्नों में विशेष रुचि है। उन्होंने बापू से इस विषय में पथ-प्रदर्शन पाने की इच्छा व्यक्त की कि "हिन्दुस्तान की अच्छे-से-अच्छे रूप में किस तरह सेवा हो सकती है अथवा भारत को इस तरह देखना हो, तो उसके लिए क्या करना चाहिए ?" बापू ने कहा :

"American visitors should endeavour to see India could go round and offer friendly and constructive criticism but to describe its dirty spots as India would be a caricature."

बापू ने इसी प्रसंग में Emily Kinnaired की याद कराते हुए कहा कि "वे स्वेच्छा से बापू के पास आये थे और उनके साथ चलकर प्रार्थना-सभा में जाते थे। वे शुद्ध शाकाहारी थे। मरने तक उनके और मेरे बीच आत्मचिन्तन के विषय में बहुत ही अच्छा पत्र-व्यवहार चलता रहा।"

उसके बाद भारत के ईसाइयों के बारे में किये गये सवाल के जवाब में बापू ने कहा :

"The best course would be to leave them to their own resources, to help them settle down as sons of the soil."

ईश्वर की आवाज

उसके बाद अन्य लोग मिलने आये। वे बापू के निकट आश्वासन पाने के लिए पाकिस्तान से आये हुए थे। अन्त में बन्नू के लोग आये। वे अपनी करुण कहानी बड़ी ही नाराजगी और आवेश के साथ सुना रहे थे। एक बूढ़े भाई ने तो बापू को

हिमालय चले जाने के लिए कहा। लेकिन बापू ने उसे जरा कड़े स्वर में कहा कि "मेरा हिमालय तो यहीं है। आप लोगों का दुःख दूर करना, आपकी सेवा करते-करते मरना ही मेरे लिए हिमालय में जाने जैसा है।"

बापू को इन लोगों की बात इतनी चुभ गयी कि प्रार्थना के लिए उठते हुए उन्होंने मुझसे कहा: "इसे तू अपने और मेरे लिए एक नोटिस ही समझ। जो लोग मेरे एक-एक बोल को झेल लेते थे, सिर चढ़ाते थे, वे ही आज मुझे हिमालय चले जाने के लिए कह रहे हैं। इन दुःखी भाइयों के हृदय की यह चीत्कार इस यज्ञ में पड़े हम लोगों के लिए ईश्वर की आवाज ही समझ। यह बात तुझसे ही कह रहा हूँ, क्योंकि इस यज्ञ में यहाँ प्यारेलाल, सुशीला, आभा, चाँद, देव, बिसेन सभी होते हुए भी मेरे निकट कोई भी नहीं है। अकेली तू ही मेरे साथ बँधी हुई है। इसलिए आत्मा की आवाज तुझसे कैसे छिपायी जा सकती है?" बापू बड़े ही दुःखी दीख पड़े।

उसमें भी फिर...की घूसखोरी संबंधी अन्य बातें भी सामने आ गयीं।

आज का दिन तो इतना व्यस्त था कि श्वास लेने तक की फुर्सत नहीं मिली। बापू कांग्रेस के संविधान के विषय में लिख रहे हैं। प्रार्थना-प्रवचन को चाँदवानीजी ने खूब ही उलझा दिया था। अतः उसे सुधारने के लिए बापू को उसे फिर से लिखना पड़ा। इस कारण और भी ज्यादा मेहनत पड़ी। वे काफी थक गये हैं, लेकिन काम तो पूरा करना ही पड़ेगा।

[पूज्य बापू का आज का प्रार्थना-प्रवचन इस पृथ्वी पर का अन्तिम प्रार्थना-प्रवचन बन गया। इसी तरह कांग्रेस-संविधान संबंधी उनके विचार भी किसी अशुभ घड़ी में लिखे हुए अन्तिम विचार ही सिद्ध हुए। अतः उन दोनों को उन्हींके शब्दों में यहाँ दे रही हूँ।]

"कहने की चीजें तो काफी पड़ी हैं, मगर आज के लिए ६ चुनी हैं। १५ मिनट में जितना कह सकूँगा, कहूँगा। देखता हूँ कि मुझे यहाँ आने में थोड़ी देर हो गयी है, वह होनी नहीं चाहिए थी।

गलतफहमी की सफाई

"सुशीला बहन बहावलपुर गयी है, उस बारे में थोड़ी गलतफहमी हो गयी है।

वह वहाँ के दुःखी लोगों को देखने के लिए ही गयी है। दूसरा कोई अधिकार तो है नहीं और न हो सकता था। वह फ्रेण्ड्स-सर्विस के लेसली कोस साहब के साथ गयी है। मैंने फ्रेण्ड्स-यूनिट में से किसीको भेजने का सोचा था, ताकि वह वहाँ के लोगों को देखे, उनसे मिले और मुझे हालत बता दे। उस समय सुशीला बहन के जाने की बात नहीं थी, लेकिन जब उसने सुना कि वहाँ सैकड़ों आदमी बीमार पड़े हैं, तब मुझसे पूछा कि क्या मैं जाऊँ? मुझे बहुत अच्छा लगा। वह नोआखाली में काम करती थी, तभी फ्रेण्ड्स-यूनिट के साथ उसका संघर्ष था। आखिर वह कुशल डॉक्टर है और पंजाब के गुजरानवाला इलाके की है। उसने भी काफी गँवाया है, क्योंकि उसकी तो वहाँ काफी जायदाद है। वह उर्दू और अंग्रेजी भी जानती है। अतः वह कोस साहब को मदद दे सकती है।

"वहाँ जाने में खतरा अवश्य है। लेकिन उसने कहा: 'मुझे क्या खतरा है? ऐसे डरती, तो नोआखाली ही कैसे जाती? पंजाब में बहुत लोग मर गये हैं, बिलकुल मटियामेट हो गये हैं। लेकिन मेरा तो ऐसा नहीं। खाना-पीना मिलता है। सब कुछ ईश्वर करता है। सो आप मुझे भेजेंगे और कोस साहब ले जायँगे, तो मैं वहाँ के लोगों को देख लूँगी'।

"मैंने जब कोस साहब से भी पूछा कि क्या सुशीला को आपके साथ भेजूँ, तो वे खुश हो गये। कहने लगे: 'यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं उनकी मार्फत वहाँ के लोगों से अच्छी तरह बातचीत कर सकूँगा। साथ में कोई हिन्दुस्तानी जाननेवाला रहे, तो वह बहुत बड़ी बात हो जाती है। सुशीला बहन आयें, इससे बेहतर क्या हो सकता है?' कोस साहब 'रेडक्रास' के हैं। 'रेडक्रास' के माने यह है कि लड़ाई के मरीजों की दवा-दारू करना! अब तो वे लोग दूसरे-तीसरे काम भी करते हैं।

"अब यह सवाल है कि डॉक्टर सुशीला कोस साहब के साथ गयी है या कोस साहब डॉक्टर सुशीला के साथ? यह जरा पेचीदा हो जाता है, मगर पेचीदा नहीं है। वे दोनों दोस्त हैं। सेवा-भाव से गये हैं। पैसा कमाने की तो बात ही नहीं है। कोस साहब मेरे मित्र हैं और सुशीला तो मेरी लड़की है। मैं उसका बाप हूँ। तो, मैंने उसे ऊँचा उठाने के लिए नहीं भेजा। कोई ऐसा न सोचे कि वह तो डॉक्टर है

और कोस साहब दूसरे हैं। कोई ऊँच है और कोई नीच, ऐसा भेदभाव न करें। कोस साहब औरत साथ में हो, तो उसे ही आगे कर देते हैं और अपने को पीछे रखते हैं। मगर निःस्वार्थ सेवा में ऊँच-नीच का भेद नहीं होता। अगर कोई भेद है, तो कोस साहब बड़े हैं। सुशीला उनके साथ उनकी मदद के लिए गयी है। वे दोनों आकर मुझे वहाँ का हाल बतायेंगे।

"नवाब साहब ने लिखा है कि मुझे कई लोग झूठी बातें भी लिख देते हैं। उन्हें मान लेने का मुझे क्या अधिकार है? सो मैंने सोचा कि अब मुझे क्या करना चाहिए? इसीलिए कोस साहब और सुशीला बहन को मैंने बहावलपुर भेजा है। वहाँ के मुसलमानों का तार भी आ गया है कि वे वहाँ पहुँच गये हैं। वहाँ से लौटेंगे, तब मुझे सब सही हाल बता देंगे। वे तीन-चार दिनों में लौटनेवाले थे। मगर कुछ काम निकल आया होगा, इसलिए नहीं आये।

किसकी सुनूँ?

"अभी बन्नू के कुछ भाई-बहन मेरे पास आये थे। शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो थे, मगर ऐसी हालत नहीं कि चल न पाते हों। किसीकी उँगली में घाव थे, कहीं कुछ था, तो कहीं कुछ। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना हो, ब्रजकृष्णजी से कह दें। लेकिन इतना समझ लें कि मैं आप लोगों को भूला नहीं हूँ। वे सब भले आदमी थे। उनका गुस्से से भरा होना स्वाभाविक था। मगर वे मेरी बात मान गये। एक आदमी थे, मैं नहीं जानता कि वे शरणार्थी थे या अन्य कोई, और न मैंने उनसे यह पूछा ही, उन्होंने कहा : 'तुमने बहुत खराबी कर दी है। क्या और करते ही जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बड़े महात्मा हो, तो क्या हुआ? हमारा काम तो बिगड़ता ही है। तुम हमें छोड़ दो, हमें भूल जाओ, भागो।' मैंने पूछा : 'कहाँ जाऊँ?', तो उन्होंने कहा : 'हिमालय जाओ!' मैंने उन्हें डाँटा। वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं थे।

"वैसे तो वे बुजुर्ग हैं, तगड़े हैं—मेरे जैसे पाँच-सात आदमियों को चट कर सकते हैं। मैं तो महात्मा ठहरा! कमजोर शरीर! घबड़ा जाऊँ, तो मेरा क्या हाल होगा? इसलिए मैंने हँसते हुए कहा : 'क्या मैं आपके कहने से चला जाऊँ? किसकी बात सुनूँ? कोई कहता है, यहीं रहो, तो कोई कहता है, जाओ। कोई

डाँटता है, गाली देता है, तो कोई तारीफ करता है। तब मैं क्या करूँ? इसलिए ईश्वर जो हुक्म करता है, वही मैं करता हूँ। आप कह सकते हैं कि हम ईश्वर को नहीं मानते। तो कम-से-कम इतना तो करें कि मुझे अपने दिल के अनुसार करने दें। यदि आप कहें कि 'ईश्वर तो हम ही हैं', तो परमेश्वर कहाँ जायगा? ईश्वर तो एक है। हाँ, यह ठीक है कि पंच परमेश्वर है। मगर यह पंच का सवाल नहीं। दुखियों का वली परमेश्वर है, लेकिन दुःखी खुद परमात्मा नहीं। जब मैं दावा करता हूँ कि हरएक स्त्री मेरी सगी बहन है, लड़की है, तो उनका दुःख मेरा दुःख है। आप यह क्यों मानते हैं कि मैं आपका दुःख नहीं जानता, आपके दुःखों में हिस्सा नहीं लेता, हिन्दुओं और सिखों का मैं दुश्मन हूँ और मुसल्मानों का दोस्त'?

ईश्वर की बात मानता हूँ!

"उस भाई ने तो मुझे साफ-साफ कह दिया। लेकिन कोई गाली देकर लिखते हैं, तो कोई विवेक से लिखते हैं कि 'हमें छोड़ दो, चाहे हम जहन्नुम में जायें। तुम्हें हमारी क्या पड़ी है? तुम भागो!' लेकिन मैं किसीके कहने से कैसे भाग सकता हूँ? किसीके कहने से मैं खिदमतगार नहीं बना और न किसीके कहने से मिट ही सकता हूँ। ईश्वर की इच्छा से जो मैं बना हूँ, बना हूँ। उसे जो करना होगा, करेगा। ईश्वर चाहे, तो मुझे मार सकता है। मैं समझता हूँ कि मैं ईश्वर की बात मानता हूँ। मैं हिमालय क्यों नहीं जाता? वहाँ रहना तो मुझे पसन्द पड़ेगा। ऐसी बात नहीं कि वहाँ मुझे खाना-पीना, ओढ़ना नहीं मिलेगा। वहाँ जाकर शान्ति मिलेगी। लेकिन मैं अशान्ति में से शान्ति चाहता हूँ। नहीं तो उसी अशान्ति में मर जाना चाहता हूँ। मेरा हिमालय यहीं है। यदि आप सब हिमालय चलें, तो मुझे भी अपने साथ ले चलें।

काम करके खायें!

"यहाँ शरणार्थियों की खिदमत करनेवाले लोगों ने मेरे पास लम्बी-चौड़ी शिकायतें लिखकर दी हैं, जो सही भी हैं। उनका कहना है कि यहाँ जो शरणार्थी पड़े हैं, उन्हें खाना, पीना, पहनना—जो कुछ हो सकता है, सब दिया जाता है। लेकिन वे मेहनत ही नहीं करना चाहते, काम ही करना नहीं चाहते। इस बारे में

मैं इतना ही कहना चाहता हूँ, जो कि पहले भी कह चुका हूँ, कि अगर दुखिया लोग अपना दुःख मिटाना चाहते हैं, दुःख से सुख निकालना चाहते हैं, दुःख में भी हिन्दुस्तान की सेवा करना चाहते हैं—उसके साथ अपनी सेवा तो हो ही जाती है—तो उन्हें काम करना ही चाहिए। दुःखी को यह हक नहीं कि वह काम न करे और मौज करे। गीता में तो कहा है कि यज्ञ करो और खाओ—यज्ञ करो और और जो फिर शेष रह जाता है, उसे खाओ। यह मेरे लिए है और आपके लिए नहीं, ऐसी बात नहीं। यह सबके लिए है—जो दुःखी है, उसके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाये—यह चल नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है—पृथ्वी पर भार है। हाँ, यदि कोई कोई लाचारी हो—पैर न चलते हों, कोई अन्धा हो या वृद्ध हो गया हो, तो वह अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा हो, वह काम क्यों न करे? इसलिए जो कोई काम कर सकते हों, अवश्य करें। शिविरों में जो तगड़े लोग पड़े हों, वे पाखाना भी उठायें, चरखा चलायें। जो काम कर सकते हों, करें। जो लोग काम करना नहीं जानते, वे लड़कों को पढ़ायें। इस तरह काम लें। लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिज में जैसी पढ़ाई होती थी, वैसी करायें—मैं और मेरे बाबा केम्ब्रिज में पढ़े थे, अतः लड़कों को भी वहीं भेजेंगे, तो यह कैसे हो सकता है? अन्त में मैं इतना ही कहूँगा कि जितने शरणार्थी हैं, वे काम करके खायें, उन्हें काम करना ही चाहिए।

भारत का गवर्नर जनरल किसान होगा

"आज एक सज्जन आये थे। उनका नाम तो मैं भूल गया। उन्होंने किसानों की बात की। मैंने कहा : "मेरी चले, तो हमारा गवर्नर जनरल किसान होगा, क्योंकि यहाँ का राजा किसान है। मुझे बचपन से सिखलाया गया था, एक कविता है :

'रे खेडूत! तुं खरे जगतनो तात गणायो!'

याने हे किसान, तू पादशाह है। किसान जमीन से पैदा न करे, तो हम क्या खायेंगे? हिन्दुस्तान का सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाये हुए हैं। आज किसान क्या करे? क्या एम० ए० बने? बी० ए० बने? ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नहीं चलायेगा। जो आदमी अपनी जमीन

से पैदा करता और खाता है, वही जनरल बने, प्रधान बने, तो हिन्दुस्तान की शक्ल ही बदल जायगी। आज जो वह सड़ता पड़ा है, वैसा नहीं रहेगा।

"मद्रास में खुराक की तंगी है। श्री जयरामदासजी के पास मद्रास-सरकार की ओर से एक दूत यह कहने आये थे कि वे वहाँ के सूखे के लिए अन्न देने का बन्दोबस्त करें। मुझे मद्रासवालों के इस सूखे से दुःख होता है। मैं मद्रास के लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि वे अपने ही सूबे में मूँगफली, नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थों के रूप में काफी खुराक पा सकते हैं। उनके यहाँ मछलियाँ भी काफी हैं, जिन्हें उनमें से ज्यादातर लोग खाते हैं। तब उन्हें भीख माँगने के लिए बाहर निकलने की क्या जरूरत है? उनका चावल का आग्रह रखना (वह भी पालिश किया हुआ, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते हैं) या चावल न मिलने पर मजबूरी से गेहूँ मंजूर करना ठीक नहीं है। चावल के आटे में वे मूँगफली या नारियल का आटा मिला सकते हैं। उन्हें जरूरत है, आत्मविश्वास और श्रद्धा की। मद्रासियों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह-कूच के वक्त उस प्रान्त की सभी भाषाओंवाले हिस्सों के लोग मेरे साथ थे। उन्हें रोजाना राशन में सिर्फ डेढ़ पौण्ड रोटी और एक औन्स शक्कर दी जाती थी। लेकिन जहाँ-जहाँ उन्होंने रात में डेरा डाला, वहाँ जंगल की घास में से खाने लायक चीजें चुनकर और मजे से गाते हुए उन्हें पकाकर मुझे अचरज में डाल दिया। ऐसी सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते हैं? यह सच है कि हम सब मजदूर थे और ईमानदारी से काम करने में ही हमारी मुक्ति और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भरी हुई है।"

आखिरी वसीयतनामा

प्रवचन अभी पूरा देखा, सुधारा नहीं गया था। इसी बीच बापू ने कांग्रेस के लिए पथ-प्रदर्शन लिखा। (वह भी अन्तिम ही बन गया, अतः उसे पू० बापू के शब्दों में ही दे रहा हूँ):

"Though split into two, India having attained the political independence through means devised by the Indian National Congress, the Congress, in its

present shape and form, i.e. as a propoganda vehicle and a parliamentary machine, has outlived its use. India has still to attain social, moral and economic independence in term of its seven hundred thousand villages as distinguished from its cities and towns. The struggle for the ascendency of civil over military power is bound to take place in India's progress towards its democratic goal. It must be kept out of unhealthy competition with the political parties and communal bodies. For these and other similar reasons, the all India Congress Committee resolves to disband the existing Congress organisation and flower into a Lok Sevak Sangh under the following rules with power to alter them as occasion may demand.

Every Panchayat of five adult men or women being villagers or village-minded shall form a unit.

Two such contiguous Panchayats shall form a working party, under a leader elected from among themselves.

When there are one hundred such Panchayats, the fifty first grade leaders shall elect, from among themselves a second grade leader. and so on, the first grade leaders in the meanwhile working under the second grade leader. Parallel groups of two hundred Panchayats shall continue to be formed, till they cover the whole of India, each succeeding group of Panchayats electing second grade

leader after the manner of the first. All second grade leaders shall serve jointly for the whole of India and severally for their respective areas. The second grade leaders may elect, whenever they deem necessary, from among themselves a chief who will during Leisure, regulate and command all the groups.

(As the final formation of provinces or districts is still in a state of flux, no attempt has been made to divide this group of servants into provincial or district councils and jurisdiction over the whole of India has been vested in the group or groups that may have been formed at any given time. It should be noted that this body of servants derive their authority or power from service ungrudgingly and wisely done to their master, the whole of India.)

1. Every worker shall be a habitual wearer of Khadi made from self-spun yarn or certified by the A. I. S. A. and must be a teetotaller. If a Hindu he must have observed untouchability in any shape or form in his own person or in his family and must be a believer in the ideal of inter-communal unity, equal respect and regard for all religions, equality of opportunity and status for all irrespective of race, creed or sex.

2. He shall come in personal contact with every villager with in his jurisdiction.

3. He shall enrol and train workers from amongst the villagers and keep a register of all these.

4. He shall keep a record of his work from day to day.

5. He shall organise the villages so as to make them self-contained and self-supporting through their agriculture and handicrafts.

6. He shall educate village folk in sanitation and hygiene and take all measures for prevention of ill health and disease among them.

7. He shall organise the education of the village folk from birth to death along the lines of the Nai Talim, in accordance with the policy laid down by the Hindustani Talimi Sangh.

8. He shall see that those whose names are missing on the statutory 'voters' roll are duly entered therein.

9. He shall encourage those who have not yet acquired the legal qualification, to acquire it for getting the right of franchise.

10. For the above purposes and others to be added from time to time, he shall train and fit himself in accordance with the rules laid down by the Sangh for the due performance of duty.

The Sangh shall affiliate the following autonomous bodies : 1. All-India Spinners' Association. 2. All-India Village Industries Association.

3. Hindustani Talimi Sangh. 4. Harijan Sevak Sangh. and 5. Go-seva Sangh.

FINANCE

The Sangh shall raise finances for the fulfilment of its mission from among the villagers and others, special stress being laid on collection of poor man's Pice."

भारत को, यद्यपि यह दो भागों में विभक्त हो गया है, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा वताये गये उपायों से राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर, कांग्रेस अपने वर्तमान स्वरूप और ढाँचे में अर्थात् प्रचार के साधन और संसदीय यंत्र के रूप में अपनी उपयोगिता खो वैठी है। भारत को अब भी नगरों और कस्बों के अलावा ७ लाख गाँवों के लिए सामाजिक, नैतिक और आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करनी है। भारत की अपने लोकतन्त्रात्मक ध्येय की ओर प्रगति में सैनिक शक्ति पर असैनिक शक्ति की श्रेष्ठता के लिए संघर्ष अनिवार्य है। इसे राजनीतिक दलों और साम्प्रदायिक संस्थाओं की अस्वस्थ प्रतियोगिता से अलग रखना है। इन तथा अन्य कारणों से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी वर्तमान कांग्रेस-संघटन को विघटित करने तथा निम्नलिखित नियमों के अन्तर्गत उनमें परिस्थितिवश संशोधन करने के अधिकार के साथ लोकसेवक-संघ के रूप में विकसित होने का निश्चय करती है।

'पाँच वयस्क व्यक्तियों (स्त्रियों या पुरुषों) की, जो ग्रामवासी या ग्राम-प्रवृत्त (विलेज-माइण्डेड) हों, प्रत्येक पंचायत एक इकाई वनेगी।

'दो निकटवर्ती पंचायतें आपस में एक नेता निर्वाचित कर उसके अधीन एक कार्यकारी दल संघटित करेंगी।

'जव इस प्रकार १०० पंचायतें हो जायँगी, तो पचास प्रथम श्रेणी के नेता आपस में द्वितीय श्रेणी का एक नेता चुनेंगे तथा प्रथम श्रेणी के नेता फिलहाल द्वितीय श्रेणी के नेता के अधीन कार्य करेंगे। दो सौ पंचायतों के समान दलों का इस प्रकार संघटन होगा कि वे समस्त भारत में फैल जायँगे तथा पंचायतों का प्रत्येक दल प्रथम श्रेणी के नेता के चुनाव की भाँति क्रमशः द्वितीय श्रेणी का एक नेता निर्वाचित

करेगा। द्वितीय श्रेणी के सभी नेता सम्मिलित रूप से सम्पूर्ण देश तथा व्यक्तिगत रूप से अपने-अपने क्षेत्र की सेवा करेंगे। द्वितीय श्रेणी के नेता आवश्यकता पड़ने पर अपने में से एक को प्रमुख नेता चुनेंगे, जो अपने इच्छानुसार सभी दलों का नियमन और संचालन करेगा।

'[चूँकि प्रान्तों और जिलों का अन्तिम पुनरसंघटन अभी अनिश्चित स्थिति में है, इसलिए सेवकों के इस दल को प्रान्तीय या जिला-परिषदों में बाँटने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है तथा समस्त भारत में कार्य करने का अधिकार उस दल या दलों में निहित है, जो किसी समय संघटित किये गये हों। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सेवकों की यह संस्था अपने स्वामी, अर्थात् समस्त भारत की सहर्ष और बुद्धिमत्तापूर्वक की जानेवाली सेवा से अपना अधिकार अथवा शक्ति प्राप्त करती है।]

'(१) प्रत्येक कार्यकर्ता आदतन, अपने हाथ से कते सूत की अथवा अखिल भारत चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी पहनेगा तथा मदिरा का कतई सेवन न करेगा। यदि वह हिन्दू हो, तो उसने व्यक्तिगत रूप से या परिवार में किसी भी रूप में अस्पृश्यता का भाव त्याग दिया हो तथा वह साम्प्रदायिक ऐक्य, सभी धर्मों के प्रति समान आदर और प्रतिष्ठा और बिना किसी जाति, धर्म या स्त्री-पुरुष के भेदभाव के सभीके लिए समान अवसर और स्थिति के आदर्श में विश्वास करता हो।

'(२) वह अपने कार्यक्षेत्र में स्थित प्रत्येक ग्रामवासी से व्यक्तिगत सम्पर्क रखेगा।

'(३) वह ग्रामवासियों में से ही कार्यकर्ताओं को भरती और प्रशिक्षित करेगा तथा उनका एक रजिस्टर रखेगा।

'(४) वह अपने प्रतिदिन के कार्य का लेखा रखेगा।

'(५) वह ग्रामवासियों को इस प्रकार संघटित करेगा कि वे अपनी खेती और दस्तकारी से आत्मनिर्भर और स्वयंपूरित हो जायँ।

'(६) वह ग्रामवासियों को सफाई और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करेगा तथा उनमें रोगों और अस्वास्थ्य के निवारण के लिए सभी उपाय बरतेगा।

'(७) वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार नयी

तालीम के आधार पर ग्रामवासियों की जन्म से मृत्युपर्यन्त शिक्षा का आयोजन करेगा।

'(८) वह इसके लिए भी सतर्क रहेगा कि जिन व्यक्तियों के नाम वैधिक निर्वाचक सूची (स्टैट्यूटरी वोटर्स रोल) में छूट गये हैं, उन्हें विधिवत् चढ़वाया जाय।

'(९) वह उन व्यक्तियों को, जिन्होंने मताधिकार प्राप्त करने के लिए अभी कानूनी योग्यता प्राप्त नहीं की है, उक्त योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

'(१०) उपर्युक्त उद्देश्यों तथा समय-समय पर इनमें जुड़नेवाले अन्य उद्देश्यों की दृष्टि से वह अपने कर्तव्य के समुचित पालन के लिए संघ द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार अपने को प्रशिक्षित करेगा और योग्य बनायेगा।

'संघ निम्नलिखित स्वायत्त संस्थाओं को सम्बद्ध करेगा :

'(१) अखिल भारत चरखा-संघ, (२) अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ, (३) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, (४) हरिजन-सेवक-संघ और (५) गो-सेवा-संघ।

'संघ अपने ध्येय की पूर्ति के लिए ग्रामवासियों और अन्य व्यक्तियों से धन-संग्रह करेगा, किन्तु निर्धन व्यक्तियों से पैसा इकट्ठा करने पर विशेष जोर दिया जाय।'

है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज !

शाम को मुलाकात करनेवालों में क्रमशः श्री सोहनसिंहजी, हैदराबाद के मुख्यमन्त्री आदि थे। मौलाना साहब के साथ भी काफी चर्चा हुई।

रात में अत्यन्त श्रान्त होने पर भी बापू ने कांग्रेस-संविधान का मसविदा पूरा करके छोड़ा। फिर नियमानुसार ९। बजे पैर धोने के लिए उठे और सीधे सोने के लिए जाने लगे। वे इतने श्रान्त थे कि कसरत करना भी भूल गये। जब याद दिलायी, तब उन्होंने कसरत की।

मैं बापू के सिर में तेल मलती रही। दो मिनट मौन रहकर वे बोले : "आज मुझे चक्कर आ रहा है।"···के लड़कों की घूसखोरी की बात चल पड़ी। कहने

लगे : "आखिर हम लोग कहाँ के रह जायँगे ? आजादी की लड़ाई में पूरा योग देनेवाले लोगों पर ही सारे राष्ट्र का आधार है। अगर वे ही इस तरह सत्ता का दुरुपयोग करें, तो हमें कहीं खड़े होने के लिए भी जगह न रह जायगी। इस तरह हम कब तक अपनी इज्जत सँभाल पायेंगे ? यों तो मैं इसे आजादी ही नहीं मानता, फिर भी बाह्य दृष्टि से जो आजादी प्राप्त हुई है, उसे भी हम ऐसी करतूतों से कलंकित ही कर रहे हैं। सोचता हूँ कि आखिर मैं कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ ? इस अशान्ति से शान्ति कैसे मिले ?

"है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज,
देख लो, जिसका तमाशा चन्द रोज।"

पाखण्डी अथवा सच्चा महात्मा ?

इतना कहते हुए बापू को खाँसी आने लगी। यह देख-सुनकर मेरी आँखें डबडबा उठीं—हाय ! बापू के हृदय की वेदना कितनी बढ़ती जा रही है ! मानो इस समय उनके लिए सिवा ईश्वर के कोई भी नहीं है। खाँसी आते समय मैंने धीरे से पूछा : "आप पेन्सिलिन की गोली ले लीजिये न, सुशीला बहन मुझे दे गयी हैं। अन्यथा अगर इन्फ्लुएञ्जा हो जाय तो ?"

मैंने कह तो दिया, पर बापू और भी दुःखी हो गये और कहने लगे : "इस यज्ञ में तो तू अकेली ही मेरी साझीदार है, मददगार है। आज तक मैंने किसीको भी ऐसी शिक्षा नहीं दी, जैसी कि माँ बनकर तुझे दी है। तेरे लिए ही मैं जूझता रहा। आखिर तू होम दी गयी और सही-सलामत बाहर निकली। मैंने तुझमें जो कुछ देखा, वह अन्य किन्हीं लड़कियों में नहीं। इसलिए आज एक बात तुझे कहना चाहता हूँ, जो कई बार कह भी चुका हूँ। यदि मैं किसी रोग से या छोटी-सी फुन्सी से भी मरूँ, तो तू ज़ोर-शोर से दुनिया से कहना कि यह दम्भी महात्मा रहा। तभी मेरी आत्मा को, भले ही वह कहीं हो, शान्ति मिलेगी। भले ही मेरे लिए लोग तुझे गालियाँ दें, फिर भी यदि मैं रोग से मरूँ, तो मुझे दम्भी-पाखण्डी महात्मा ही ठहराना ! और यदि गत सप्ताह की तरह धड़ाका हो, कोई मुझे गोली मार दे और मैं उसे खुली छाती झेलता हुआ भी मुँह से 'सी' तक न करता हुआ राम का नाम रटता रहूँ, तभी कहना कि यह सच्चा महात्मा था।···इससे भारतीय जनता का कल्याण ही होगा।"

राम-नाम का अभाव

मैं अकेली ही सिर में तेल मलती रही। नीरव शान्ति में बापू के मुँह से ये हृदयविदारक शब्द निकल रहे थे। आगे कुछ बोलने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई। हृदय भर आया और गला रुँध गया···रसोड़े में पानी लेने गये थे। इसी बीच आश्रम की···बहन आयीं। उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती, इसलिए वे अपने गाँव जानेवाली हैं। बापू ने कहा : "अगर तेरे हृदय में राम-नाम अंकित हुआ होता, तो तू बीमार ही न पड़ती। लेकिन इसके लिए श्रद्धा तो होनी ही चाहिए।" उसके लड़के को भी सूचना दी।

उन्होंने चाँद बहन की शादी के सम्बन्ध का उलझा हुआ सवाल पेश कर दिया। हम लोगों ने उस बहन को इशारे से कहा कि "बापू काफी थके हुए हैं, उन्हें चक्कर आ रहे हैं।" बापू से भी कहा गया, लेकिन वे तो सभी के बापू हैं न? उन्होंने एक न मानी और बातें जारी ही रखीं। अच्छा हुआ, जो देवदास काका और काकी आ गयीं। बापू ने उनसे विनोद किया और काकी ने भी। बापू ने रोज की तरह पूछा कि "कोई नया समाचार हो, तो कहो।" फिर तो काका और बापू दिल्ली की वर्तमान स्थिति के बारे में बातें करने लगे। इसीलिए मैं वहाँ से चली आयी और यह लिखने बैठी हूँ। खासकर इस समय सुशीला बहन या प्यारेलालजी कोई भी बापू के पास नहीं था। इसलिए काका को उनसे बातें करने का अच्छा अवसर मिला। काका की हमेशा की शिकायत है कि "सभी लोग बापू से जब चाहें और जैसे चाहें, मिल सकते हैं; लेकिन मुझे ऐसा समय मिलता ही नहीं और न मैं ऐसा समय लेना ही पसन्द करता हूँ।"

वर्धा जाने की बातें अखबारों में छप गयी हैं। बापू कहते हैं : "यह कौन बापू और कौन-सा गांधी होगा, मैं नहीं जानता। अखबारवालों से ही पूछिये। मैं नहीं जानता कि मैं वर्धा जानेवाला हूँ।"

बापू लगभग ११ बजे सोये। मैं भी अभी आध घंटे बाद सोने जाऊँगी। बापू पर यहाँ का साधारण बोझ नहीं है। लेकिन जब दरिया में ही आग लगी हो, तो हो ही क्या सकता है?

• • •

हेराम ! : ३१ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
३०-१-'४८

नियमानुसार बापू प्रार्थना के लिए जगे, मुझे भी जगाया।...बहन उठी नहीं। आजकल सुशीला बहन नहीं हैं, इसलिए गीता-पाठ मुझे ही करना पड़ता है। भाई साहब और प्यारेलालजी जागते रहते हैं, तो वे आवाज में आवाज ही मिलाते हैं।...तो गीता के श्लोक बोल ही नहीं पाते।...उठे नहीं, इसलिए बापू ने दतवन करते हुए आज भी एक बात कही : "मैं देख रहा हूँ कि मेरा प्रभाव मेरे निकट रहनेवालों पर से भी उठता जा रहा है। प्रार्थना तो आत्मा को साफ करने की झाड़ू है। मैं प्रार्थना में अटल श्रद्धा रखता हूँ। ऐसी प्रार्थना करना...जैसी को पसन्द नहीं पड़ता, तो फिर उसे चाहिए कि मेरा त्याग ही कर दे। इसीमें दोनों का भला है। यदि तुझमें इतनी हिम्मत हो, तो मेरी ओर से उसे यह कह देना। समझा देना कि ये सब बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं। यह सब देखने के लिए भगवान् अब मुझे अधिक न रखे, यही चाहता हूँ। आज मैं तुझसे यह भजन सुनना चाहता हूँ :

'थाके न थाके छताय हो,
मानवी न लेजे विसामो।'

आश्चर्य की बात है कि आज पहली बार बापू ने यह भजन पसन्द किया! मुझे खुद को बापू के बारे में कुछ विलक्षण-सा ही लग रहा है। कभी-कभी यह भी आशंका होने लगती है कि कदाचित वे पुनः अनशन तो नहीं करने जा रहे हैं? आज दोपहर को सरदार दादा विशेष रूप से मिलने के लिए आनेवाले हैं। वे और बापू एकान्त में बातचीत करेंगे। उसके बाद कल-परसों मन्त्रिमण्डल की बैठक बुलाकर सारा निर्णय किया जायगा। देखें, ईश्वर इसे कहाँ तक सफल करता है? कल सुबह भाई भी आ रहे हैं।

प्रार्थना के बाद में बापू को बरामदे से भीतर ले आयी। उन्हें कपड़ा ओढ़ाया। बापू कल रात तैयार किये हुए कांग्रेस-संविधान के मसविदे का संशोधन करने बैठ गये। नियमानुसार ४॥ बजे गरम जल, शहद और नीबू और ५॥ बजे सन्तरे का

रस १६ औंस लिया। अभी उपवास की कमजोरी तो है ही। लिखते-लिखते थक जाने से वापू बीच ही में सो गये और मैंने उनके पैर भी दवाये।

पू० किशोरलाल भाई को कल जो पत्र लिखा था, नकल न हो सकने के कारण वह वापू के कागजों में ही पड़ा रह गया। वापू को यह अच्छा नहीं लगा। मैंने सहज ही पूछा कि "इसमें एक पंक्ति यह लिख दूँ कि हम लोग दूसरी को वर्धा जानेवाले हैं?", तो वापू ने कहा : "कल की कौन जानता है? अगर जाना तय ही हो जायगा, तो आज प्रार्थना में कह दूँगा। फिर रात में रेकार्ड रिले होगा, तो उसमें वह आ ही जायगा। फिर भी इस तरह चिट्ठी पड़ी रहनी नहीं चाहिए थी। भले ही यह काम बिसेन का हो, लेकिन तू मेरे किसी भी काम से मुक्त नहीं हो सकती। दूसरों की गलती होने पर भी मैं उसे तेरी ही गलती मानता हूँ, अगर तू उसे स्वीकार करे।" मैंने कहा : "मुझे तो स्वीकार करना ही होगा।" वापू प्रसन्न हो गये।

टहलते समय श्रीमती राजेन नेहरू आयीं। मैं घूमने के लिए जानेवाली नहीं थी, पर मुझे जवर्दस्ती चलने के लिए कहा।

आठ बजे नियमानुसार मालिश और स्नान हुआ। मालिश के समय अखवार देखे। वंगाली पाठ किया। फिर मालिश के कमरे से वाथ रूम में लाया गया। उस समय उन्होंने प्यारेलालजी से कहा : "कल रात मैंने कांग्रेस का मसविदा (संविधान) 'हरिजन' में भेजने के लिए वना रखा है। उसे ठीक से देख लें और विचारों की जो कमी रह गयी हो, उसे पूरी कर दें। बहुत ही थके-माँदे मैंने उसे तैयार किया है।"

नियमानुसार मैं वापू को वाथ देती रही। मुझसे कहने लगे कि "तू हाथ की कसरत करती है या नहीं?" मैंने 'ना' कहा। इस पर कहने लगे : "यह तो मुझे जरा भी पसन्द नहीं।" मैंने कहा : "फिर तो करना ही होगा।" वापू ने कहा : "अवश्य! तेरा वजन नहीं बढ़ता और तबीयत नहीं सुधरती, इससे मुझे बहुत ही दुःख होता है। जब तू अपने वाप के यहाँ से नोआखाली आयी, तो कितनी तन्दुरुस्त थी! तेरा शरीर नहीं सुधरता, इसका कारण तेरा भावुक और संवेदनशील स्वभाव ही है। कभी किसीके दुःख से अधिक दुःखी या किसीके सुख

से अधिक प्रसन्न न होना चाहिए। दोनों में सन्तुलित स्वभाव रखने पर ही भगवान् का सान्निध्य पाना आसान होता है। यह कानून मेरा नहीं, अनादिकाल से चला आ रहा है और सभी धर्म-ग्रन्थों में लिखा है। स्थितप्रज्ञ होने के उपायों में इसे भी एक माना गया है। तू १८ वर्ष की उभरती छोकरी है। मैंने तेरा मन कितना गढ़ा है, इसका खयाल तुझे आज नहीं हो सकता। नोआखाली से लेकर आज तक मैंने तुझे खूब तपाया है और तरह-तरह के विलक्षण अनुभवों से गढ़ा है। भले ही आज तुझे इसका मूल्य न मालूम पड़े, लेकिन मेरे ये शब्द लिख रखो कि तेरे भावी जीवन के लिए यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा, कदाचित् मैं जिन्दा रहूँ या न रहूँ।

"तू जानती ही है कि···आज सुबह प्रार्थना के समय नहीं उठी। इसलिए मैं सोच रहा हूँ कि आखिर मुझमें कहाँ खामी है? दूसरी लड़कियाँ या और कोई इस यज्ञ में मेरा साझीदार नहीं। अकेली तू ही मेरी सेवा और मेरे कामों की जिम्मेदारी उठा रही है। इसमें तनिक भी भूल नहीं होने देती। लेकिन अपनी तबीयत सँभाल रखना भी मेरी सेवा का एक अंग है। अतः यह जिम्मेदारी भी तुझे अदा करनी ही चाहिए।"—बाथ के समय बापू ने बड़े ही प्रेम से ये बातें कहीं और मेरी पीठ सहलायी।

बाथ से निकलने के बाद वजन किया गया—१०९॥ पौण्ड हुआ। भोजन में उबाला हुआ शाक, बारह औंस दूध, एकआध मूली और करीब चार-पाँच पके टमाटर और चार सन्तरों का रस लिया। खाते समय प्यारेलालजी के साथ नोआखाली के विषय में बातें हुईं। उन्होंने आबादी की अदला-बदली के बारे में बापू से पूछा, जिस पर बापू ने साफ-साफ कह दिया :

"हम लोगों ने तो 'करेंगे या मरेंगे' यह मन्त्र लेकर ही नोआखाली का वरण किया है। भले ही आज मैं यहाँ बैठा हुआ हूँ, पर काम तो नोआखाली का ही चल रहा है। हमें जनता को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वह अपनी इज्जत और सम्मान बनाये रखने के लिए बहादुरी के साथ वहाँ रहे। भले ही अन्ततः वहाँ गिने-गिनाये लोग ही रह जायँ, लेकिन जहाँ दुर्बलता से ही सामर्थ्य पैदा करनी हो, वहाँ दूसरा उपाय ही क्या है? आखिर सशस्त्र युद्ध में भी साधारण सिपाहियों का

सफाया होता ही है। फिर अहिंसक युद्ध में उससे भिन्न और हो ही क्या सकता है?"—और उन्हें नोआखाली जाने का ही सुझाव दिया।

फिर पैरों में घी मलवाते हुए बापू ने थोड़ा आराम किया। थोड़ी देर सोकर पुनः उठे और बाथरूम में जाने के लिए बाहर के पटरे पर से आ रहे थे। मैंने कहा: "बापू! अकेले ही अकेले आ रहे हैं, तो कैसे लग रहे हैं?" (कमजोरी के कारण इधर वे बिना किसीका सहारा लिये चलते नहीं थे) बापू ने कहा: "क्यों, अच्छा दीखता है न? 'एकला चलो'!"

१२॥ बजे डॉ० भार्गव को नर्सिंग होम बनाने के लिए एक मकान चाहिए। यतीमखाने की बात कही गयी। बापू ने कहा कि "जब स्थानीय मुसलमान यहाँ आते हैं, तब मुझे इसके लिए याद दिलायें।" उन्होंने यह भी कहा कि "हुकूमत मुझसे डर-डरकर कब तक चलेगी? मेरे डर से नहीं, बल्कि अपने मन से करना चाहिए। जब नियोगी यहाँ आयें, तो पूछ देखें।" बापू के पास मुसलमान लोग आये, तो उन्हें याद दिलायी गयी। लेकिन उन्होंने कहा कि "अभी उसे न दिया जाय, तो अच्छा है।" बापू ने कहा: "अच्छा, मैंने तो वैसे ही पूछ लिया। इसके पीछे हमें वक्त देने की जरूरत ही क्या है?"

उसके बाद मौलाना रहमान ने सेवाग्राम के बारे में पूछते हुए कहा कि "आप वहाँ जा सकते हैं, पर १४ को वापस लौट ही आयें।" बापू ने कहा: "हाँ, चौदह को तो मैं यहीं रहूँगा। फिर यह सब तो खुदा के हाथ में है। वह तो आसमानी सुलतानी बात है।"

महादेव भाई की जीवनी लिखने का—डायरी-संपादन करने का काम व्यवस्थित होने जा रहा था। उस बारे में शान्तिकुमार भाई के साथ बातें कीं। शान्तिकुमार भाई की शिकायत थी कि "चन्द्रशंकर भाई और नवजीवन के बीच झगड़ा चल रहा है। अधिक पैसा लेने की बात है।"

बापू ने कहा: "जहाँ देखता हूँ, वहीं जैसे यादव आपस में कट मरे, वही स्थिति हमारी है। हम लोग आपस में झगड़ा कर समाज की कितनी हानि कर रहे हैं, इसका खयाल किसीको भी नहीं आता। इसमें आप या और कोई कर ही क्या सकता है? इन सबमें मेरी ही खामी है। ईश्वर ने ही मुझे अन्धा बना दिया हो,

तो कोई क्या कर सकता है ? फिर भी अपने जीते जी यह सब अपनी आँखों देखकर जितना सुधार सकूँ, उतना सुधार लूँगा; जिससे भावी पीढ़ी को गाली न खानी पड़े, इतना ही भगवान् का आभार मानिये ।

"यह काम मुझे ही करना चाहिए। डायरी को अच्छी तरह ग्रन्थरूप में बनाना ही होगा। नरहरि की तबीयत साथ नहीं देती और अब ?...इसने तो मेरे सभी कामों से छुट्टी पा ली है। लेकिन वह बिना समझे-बूझे ली है, यह कैसे कहा जा सकता है ? क्योंकि सभी अपने-अपने विचार के लिए स्वतन्त्र हैं। यदि चन्द्रशंकर यह बोझ उठाता है, तो वह अपनी कमाई खर्च करेगा। इन दोनों के अक्षरों में कितना साम्य है ? मैं उसे लिखूँगा।"

डॉ॰ सिल्वा और उसकी लड़की लंका में मुख्य प्रतिनिधि थे। उन्हें अपना आटोग्राफ दिया।

दोपहर में बिसेन भाई के साथ चिट्ठियों का रुका हुआ काम पूरा करने के लिए कहा। २ बजे मिट्टी ली। पैर दबाये। बापू ने मिट्टी उतारी। हम लोग बापू से छुट्टी लेकर शहर में एक सम्बन्धी के यहाँ मिलने गये। वहाँ से ४। बजे लौटे।

यदि जीवित रहा तो...

बापू और सरदार दादा बातचीत कर रहे थे।...काठियावाड़ के बारे में भी चर्चा हुई। इसी बीच काठियावाड़ के नेता रसिक भाई पारीख और ढेबर भाई भी आ गये। उन्हें बापू से मिलना था। लेकिन आज तो एक क्षण खाली नहीं है। फिर भी मैंने उनसे कहा कि "बापू से पूछकर समय तय किये देती हूँ।" बापू और सरदार दादा बातों में एकदम तल्लीन थे। मैंने पूछा तो कहने लगे : "उनसे कहो कि यदि जिन्दा रहा, तो प्रार्थना के बाद टहलते समय बातें कर लेंगे।" मैंने उनसे प्रार्थना के लिए रुक जाने को कहा। कारण यदि वे प्रार्थना के बाद तत्काल न मिल लेंगे, तो और कोई घुस ही जायगा और फिर बातें न कर पायेंगे। वे रुक गये और बापू के कमरे में आ बैठे।

[इसके बाद की डायरी में पहली फरवरी की रात में दो बजे बाद लिख रही हूँ। क्या लिखूँ। समझ में ही नहीं आता! पूरे बिरला-भवन में रोने के सिवा कुछ भी नहीं है। अरे! क्या बापू सोये हुए तो नहीं हैं ? मुझे इतनी देर तक लिखती

देख उलहना देने के लिए उठकर तो नहीं आयेंगे ? नहीं, नहीं, बापू ! आप मेरी भूल क्षणभर भी क्षमा नहीं करते थे और आज इतने उदार हो गये ? हाय, मुझ पर गजब ढा गया ! मुझसे कहते थे : "इस यज्ञ में तू और मैं दो ही हैं। तू मुझे छोड़ सकती है, पर मैं तुझे नहीं छोड़ सकता।" लेकिन आज तो बापू ! आप ही मुझे छोड़ गये ! भाई कल आनेवाले हैं। क्या मुझे सौंप देने के लिए ही तो चार दिन पहले उनको चिट्ठी नहीं लिखी ? कुछ भी नहीं सूझता !...पण्डितजी का यह पुक्का फाड़-फाड़कर रोना अच्छे-अच्छे धीर-गम्भीर लोगों का भी हृदय विदीर्ण कर देता है। नन्हा गोपू कह रहा है : "मनु बहन ! दादा क्यों सोये हैं ?"...]

थाके न थाके छतायें हो !

...बापू सरदार दादा के साथ बातचीत में इतने तन्मय हो गये थे कि दस मिनट देर हो गयी। इस गम्भीर वातावरण में उन्हें विक्षेप करने की किसीको भी हिम्मत नहीं हुई। आखिर मणि बहन ने हिम्मत की ही, क्योंकि यह सभी जानते थे कि यदि बापू को समय का ध्यान न कराया जाय, तो बाद में हम लोगों पर नाराज हो जायेंगे। बातें करते हुए ही बापू ने भोजन भी कर लिया। भोजन में चौदह औंस बकरी का दूध, चार औंस शाक का रस और तीन संतरे थे। बातें करते हुए उन्होंने कताई भी कर ली। बिना यज्ञ किये खाना चोरी का खाना माना जाता है। अतः वे बिना कताई किये रह ही कैसे सकते हैं ? आज ब्राह्म मुहूर्त में कभी न कहलवाया हुआ यह भजन कि 'थाके न थाके छतायें हो, मानवी न लेजे विसामों' मुझसे गवाया। क्या बापू उसे साकार करना चाहते रहे हैं ? चाहे जो हो, पलभर भी विश्राम लिये बगैर अपनी ज्वलंत प्रवृत्ति का वेग और भी बढ़ा दिया। वे एकदम उठ खड़े हुए।

नर्सों का धर्म

मैंने अपने हाथ में रोज की तरह कलम, बापू की माला, पीकदानी, नर्सों का केस और जिस पर प्रवचन लिखती हूँ, वह नोटबुक ले ली। दस मिनट देर हो जाने के लिए बापू ने रास्ते में नापसन्दगी जाहिर की : "आप लोग ही तो मेरी घड़ी हैं न ? फिर मैं घड़ी के लिए क्यों रुका रहूँ ?" खासकर आजकल बापू घड़ी देखते हैं

नहीं। समयानुसार एक के बाद एक सारा काम यों ही कर लिया करते हैं। घड़ी को चाभी भी हम लोगों में से ही कोई दे दिया करता था। इसीलिए उन्होंने यह कहा। मैंने कहा कि "बापू! आपकी घड़ी बेचारी उपेक्षा से दुबली होती होगी।" इसीके उत्तर में उन्होंने यह बात कही। विनोद तो किया ही, पर साथ ही यह भी कहा कि "मुझे ऐसी देरी बिल्कुल पसन्द नहीं।"

चाँद बहन को दिल्ली में ही रखने की बात कही। "अभी खुराक की मात्रा थोड़ी-सी ही बढ़ायी है।" यद्यपि अनशन के बाद अनाज तो अभी शुरू करना ही नहीं है, "पर अब प्रवाही (तरल खाद्य) कम करना है" ये बातें करते हुए प्रार्थना-स्थल की सीढ़ियाँ चढ़े। कहने लगे: "प्रार्थना में दस मिनट देर हो गयी, इसमें आप लोगों का ही दोष है।" सरदार दादा दो-चार दिनों बाद आये थे और ऐसे गम्भीर प्रश्नों पर चर्चा कर रहे थे कि टोकने की हिम्मत ही नहीं हुई, यह भी बापू को पसन्द नहीं पड़ा। उन्होंने कहा: "नर्सों का तो धर्म है कि साक्षात् ईश्वर भी बैठा हो, तो भी वे अपना धर्म, अपना कर्तव्य पूरा करें। किसी रोगी को दवा पिलाने का समय हो गया हो और किसी भी कारण यह विचार करते रहें कि उसके पास कैसे जाया जाय, तो रोगी मर ही जायगा। यह भी ऐसी ही बात है। प्रार्थना में एक मिनट की देर भी मुझे खल जाती है।"

यह नियम-सा बन गया था कि प्रार्थना में जाते समय हम लोग ही बापू की लकड़ी का काम करती थीं। कभी हम लोग नाराज हो जायँ और इस नियम के अनुसार लकड़ी बनना न चाहें, तो बापू हम लोगों को जबरदस्ती पकड़कर लकड़ी बना लेते थे। लौटते समय दूसरी लड़कियाँ रहती थीं।

हे राम!

बापू चार सीढ़ियाँ चढ़े और सामने देख नियमानुसार हम लोगों के कन्धे पर से अपने हाथ उठाकर उन्होंने जनता को प्रणाम किया और आगे बढ़ने लगे। मैं उनके दाहिनी ओर थी। मेरी ही तरफ से एक हट्ट-पुष्ट युवक, जो खाकी वर्दी पहने और हाथ जोड़े हुए था, भीड़ को चीरता हुआ एकदम घुस आया। मैं समझी कि यह बापू के चरण छूना चाहता है; रोज ऐसा ही हुआ करता था। बापू चाहे जहाँ जायँ, लोग उनका चरण छूने और प्रणाम करने के लिए पहुँच ही जाते थे। हम लोग भी

अपने ढंग से उनसे कहा करते कि बापू को यह ढंग पसन्द नहीं। पैर छूकर चरण-रज लेनेवालों से बापू भी कहा ही करते कि "मैं तो साधारण मानव हूँ। मेरी चरण-रज क्यों लेते हैं ?" इसी कारण मैंने इस आगे आनेवाले आदमी के हाथ को धक्का देते हुए कहा : "भाई ! बापू को दस मिनट देर हो गयी है, आप क्यों सता रहे हैं ?" लेकिन उसने मुझे इस तरह जोर से धक्का मारा कि मेरे हाथ से माला, पीकदानी और नोटबुक नीचे गिर गयी। जब तक और चीजें गिरीं, मैं उस आदमी से जूझती ही रही। लेकिन जब माला भी गिर गयी, तो उसे उठाने के लिए नीचे झुकी। इसी बीच दन-दन...एक के बाद एक तीन गोलियाँ दगीं। अन्धेरा छा गया ! वातावरण धूमिल हो उठा और गगनभेदी आवाज हुई। "हे रा—म ! हे रा..." कहते हुए बापू मानो सामने पैदल ही छाती खोलकर चले जा रहे थे। वे हाथ जोड़े हुए थे और तत्काल वैसे ही नीचे जमीन पर आ गिरे। कितने ही लोगों ने उस समय बापू को पकड़ने का यत्न किया। आभा बहन भी नीचे गिर गयीं। एकदम उन्होंने बापू का सिर अपनी गोद में ले लिया। मैं तो समझ ही नहीं पायी कि आखिर यह क्या हो गया ? यह सारी घटना घटते मुश्किल से ३-४ मिनट लगे होंगे। धुँआ इतना घना था। गोलियों की आवाज से मेरे कान बहरे से हो गये। लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

हम दोनों लड़कियों का क्या हाल हुआ होगा, यह तो शब्दों में लिखा ही नहीं जा सकता। सफेद वस्त्रों पर से रक्त की धार छूट पड़ी। बापू की घड़ी में ठीक ५ बजकर १७ मिनट हुए थे। मानो बापू जुड़े हुए हाथों से हरी घास में पृथ्वी माता की गोद में अपार निद्रा में सो रहे हों और हमारे अनुचित साहस पर नाराज न होने पर माफ कर देने के लिए न कह रहे हों।

उन्हें कमरे में ले जाने तक दस मिनट तो लग ही गये। दुर्भाग्य से वहाँ कोई डॉक्टर भी नहीं मिला। सुशीला बहन की प्राथमिक चिकित्सा (फर्स्ट एड) की पेटी में खोजने पर भी कोई खास दवा नहीं मिली। वे कहते ही थे कि "मेरा सच्चा डॉक्टर तो रामजी है।" हम अल्पात्मा लोग अपने स्वार्थ के लिए उन्हें जिलाने के निमित्त उनके अपने मात्र के लिए स्वीकृत इस सिद्धान्त को भ्रष्ट न कर दें, शायद इसीलिए हमें उस समय कुछ सूझ नहीं पाया हो। सरदार दादा तो अभी बापू पर

भी नहीं पहुँचे होंगे कि पीछे मुड़े । हम लोग तो पुक्का फाड़-फाड़कर रो रहे थे, पर बापू को आज दया नहीं आ रही थी ! किसी समय मुझ जैसी को उदास देखते, तो उसका कारण जानने के लिए पिल पड़ते और उसे जानकर ही छोड़ते थे । लेकिन आज तो बापू सब कुछ सहन किये जा रहे हैं !

सात बार की आटोमेटिक पिस्तौल की पहली गोली मध्य रेखा से साढ़े तीन इञ्च दाहिनी ओर नाभि से ढाई इञ्च ऊपर पेट में लगी । दूसरी मध्य रेखा से एक इञ्च दूर और तीसरी दाहिनी ओर छाती में मध्य रेखा से चार इंच दूर लगी थी । पहली और दूसरी गोली शरीर के आर-पार हो गयी थी और तीसरी फुफ्फुस में समा गयी थी । उसका ऊपर का कवच बाद में कपड़ों में मिला और आरपार निकली हुई गोलियाँ तो प्रार्थना-स्थल पर ही मिलीं । अत्यधिक रक्त बहने के कारण चेहरा तो करीब दस मिनट में ही सफेद पड़ गया ।

बापू नहीं रहे !

भाई साहब ने तो कलेजे पर पत्थर रखकर अस्पताल में फोन का ताँता ही लगा दिया । बाहर तो हजारों मानवों की भीड़ उमड़ पड़ी थी । भाई साहब बड़ी मुश्किल से सरदार के बंगले से होकर विलिंगटन अस्पताल में पहुँचे । लेकिन वहाँ से भी निराश होकर वापस लौट आये । इस बीच कन्हैयालाल मुंशी आ गये । सरदार दादा भी तुरत पहुँच गये । मणिबेन ने हम लोगों को ढाढ़स बँधाया । मुझे गीता-पाठ शुरू करने के लिए कहा । मणिबेन के आने से और उनके तथा सरदार दादा के आश्वासन की ममताभरी मदद मिलने से मैं अपने को थोड़ा-सा सँभाल पायी और गीता-पाठ शुरू कर दिया । मुंशीजी ने पाठ में पूरा साथ दिया । इसी बीच कर्नल भार्गव आ पहुँचे और उन्होंने बापू का परीक्षण शुरू कर दिया । दो मिनट तो सरदार दादा से लेकर हम सभी उत्सुकताभरी आश्वासन की एक लहर का अनुभव करने लगे । ऐसा लगा कि राहत की कुछ खबर सुनायी पड़े । किन्तु उन्हें तो देखते ही मालूम पड़ गया कि शरीर में अब कुछ जान नहीं । लेकिन कहावत है न कि डॉक्टर तो अन्त तक कुछ कहता ही नहीं । महापुरुष के प्रयाण का यह भयंकर समाचार देना इस डॉक्टर के लिए बापू को बेधनेवाली भीषण गोली से भी कठोर था । इन्होंने मेरा तो ऑपरेशन बड़ी ही सावधानी से किया था । आज सुबह

ही इनके और इनके नर्सिंग-होम के बारे में बातें हो चुकी थीं। समय बिताने के लिए इन्होंने दस-पन्द्रह मिनट लगा दिये और अन्त में कह ही दिया : "मनु बेटी ! अब बापू नहीं रहे !"···वज्रप्रहार-सा यह समाचार सुनने के साथ ही जिस कमरे में रात में हम बच्चे और बापू किलकारियाँ भरते थे, वहीं भयंकर विलाप छा गया। देवदास काका, गोपू, दोनों सबसे छोटे लड़के और नन्हा पौत्र—सभी बापू की छाती पर कठिन वेदना से विलाप करने लगे। और पण्डितजी तो···ओहो !···भगवन्, ऐसा दिन तो दुश्मन को भी देखने को न मिले ! नन्हें बच्चे की तरह सरदार दादा की गोद में मुँह छिपाकर, बिलख-बिलखकर रोने लगे। फिर हम जैसों की तो बात ही क्या थी ?

अन्तिम स्मृति की प्रसादी

देखते-देखते लाखों की भीड़ जुट गयी। करीब घण्टेभर तक यह सब चलता रहा। आखिर सरदार दादा ने अपने लौहपुरुष के बाने के अनुरूप इस कठोरतम परीक्षा को भी पास करने में कोई कोर-कसर नहीं दिखायी। अकेले वे ही सभी को ढाढ़स बँधा रहे थे। बापू के चश्मे और चप्पल का कहीं पता न था। तारीख ३० को प्रार्थना में जाने से पूर्व बातचीत करते हुए बापू ने खुद ही अपने नख काटे और मुझे फेंकने के लिए दिये थे। लेकिन मैं रसिक भाई और ढेबर भाई से बातें करने में उलझी रही, इसलिए वे कागज पर के नख वैसे ही रह गये। मैंने उन्हें अनमोल रत्न की तरह उठाकर सन्दूक में रख दिया (उनमें एक अँगूठे का, एक उँगली का और एक कानी उँगली का भी नख था।)। इसे मैंने आज उनके शरीर की अन्तिम स्मृति की प्रसादी के रूप में अपने पास सुरक्षित रख लिया।

हमारे बापू !

अन्त में लार्ड माउण्टबेटन सभी को शान्त करने लगे। बाहर की भीड़ पू० बापू का समाचार सुनने के लिए आतुर है, इसलिए सरदार दादा ने रेडियो पर सारी बातें प्रसारित कर दीं। पण्डितजी तो बोल ही नहीं पाते थे। सारी हिम्मत बटोरकर बोले : "हमारे बापू···" फिर एक गहरी साँस छोड़कर सिसकते हुए कहा : "बापू अब हमारे पास नहीं रहे।"···उस समय तो धरती भी काँप उठे, इस तरह जनता बिलख उठी।

अब कैसे करना !

आखिर जनता की असाधारण भीड़ देख छत पर से ही बापू का दर्शन कराने की व्यवस्था होने लगी। उस समय मैं किसी काम से बाहर निकली। पण्डितजी ने एकदम मुझे पकड़ लिया और क्षणभर भूल गये, कहने लगे : "मनु ! आओ बापू को पूछो, अब कैसे करना ! हे भगवन् !···ऐसे विद्वान्, अपने देश और दुनिया के इस महापुरुष···!" मैं तो उनके साये में खुलकर रो पड़ी। वे भी उतने ही रोये। उस समय हम दोनों की स्थिति में इतनी एकतानता थी कि इतने बड़े पंडितजी भी मुझ जैसी नादान बालिका को आश्वस्त करने में असमर्थ सिद्ध हुए।

शायद बापू जाग जायँ !

···इसी बीच विभिन्न देशों के राजदूत आते हुए दीख पड़े। उनके साथ पण्डितजी भीतर आये ! सतत गीता-पाठ करने में मैं ही प्रमुख थी। भाई साहब और काका सारी व्यवस्था करने के निमित्त बार-बार बाहर आते-जाते थे। सुशीला बहन तो थी ही नहीं। और सबसे श्लोक कहते नहीं बनते थे। प्यारेलालजी भी व्यवस्था में लगे हुए थे। फिर पण्डितजी कहने लगे : "मनु ! और जोर से गीता-पाठ करो, शायद बापू जाग जायँ !" इतने वैज्ञानिक विद्वान् होकर भी वे क्षणभर सब कुछ भूलकर बार-बार आते और बापू के शरीर पर हाथ फेरकर जाते थे, मानो स्वयं भूल तो नहीं कर रहे हों कि बापू सचमुच नहीं हैं।

महात्मा गांधी की जय !

और कैमरेवालों का तो पूछना ही क्या है ? छत पर मंच बनाया गया और बापू का शव लाया गया। उसे देख छोटे-बड़े, आबाल-वृद्ध सभी की आँखों से अविरल अश्रुधाराएँ बह पड़ीं, मानो चारों ओर से बारिश ही हो रही हो। 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से आकाश गूँज उठा। देखते-देखते जनता की श्रद्धाञ्जलियों के साथ फूलों और पैसों का ढेर ही लग गया। सर्वधर्मों की समानतापूर्वक प्रार्थना जारी थी।

दो बजे बापू की देह को नहलाने के लिए बाथरूम में ले जानेवाले थे। लेकिन अच्छा हुआ कि पू० शान्तिकुमार भाई आ पहुँचे। वे पू० बा के अन्तिम समय में भी उपस्थित थे और आज बापू के भी ! उन्होंने हिन्दूधर्मानुसार अन्त्यविधि करायी

याने अर्थी बनाना, गाय के गोबर से सारी जमीन लीपना आदि। यदि वे यह सब न बतलाते, तो साधारणतः हममें से कोई भी यह नहीं जानता था।

यह घड़ी भी उतनी ही भयंकर थी। बापू की देह बाथरूम में लायी गयी। एक-एक कपड़ा उतारा गया। बापू की आस्ट्रेलियन ऊन की शाल गोली से छिद गयी थी और तीन जगह जल भी गयी थी। धोती और चादर भी खून से सराबोर थी।

बापू की देह पटरे पर सुलायी गयी। रक्त बहते हुए चरण 'भाई एकलो जाणे रे' गीत की इस कड़ी को साकार कर रहे थे। काका और हम सब इस तरह आर-पार बिंधे हुए बापू के शरीर को देख फूट-फूटकर रो रहे थे, फिर भी क्रूर विधाता को दया नहीं आयी! हमारी हृदय-विदारक चीखों से किसे क्योंकर दया आये? कारण हम लोग अत्यन्त पापी थे, फिर विधाता की दया की आशा कैसे रख सकते हैं? कड़कड़ाती सर्दी और हिम-सा ठंडा पानी बापू की देह पर छोड़ने की कौन हिम्मत करेगा?···

बापू को नहलाकर पटरा कमरे के बीच रखा गया। उस पर सफेद खादी की चादर बिछायी गयी और बापू की देह को सुलाया गया।

'कर ले सिंगार !'

भाई साहब ने उनके गले में सूत का हार और उनकी रामनाम जपने की माला पहनायी। गले में और छाती पर चन्दन-केसर का लेप किया गया। मस्तक पर कुंकुम तिलक लगाया गया। सिर की बाजू पत्तियों से 'हे राम' और पैर की बाजू 'ॐ' लिखा गया। सारा कमरा गुलाब और अन्य सुगन्धित फूलों से इतना सुवासित हो उठा था, मानो अर्थी सिर्फ फूलों से ही बनी हो। देखते-देखते ३॥ का घंटा बजा। आज मुझे जगाने के लिए बापू के प्रेमभरे हाथ का स्पर्श न हो पाया। आज भाई साहब को उठाते हुए 'ब्रजकिशन' की पुकार सुनायी नहीं पड़ती थी। सभी ने कहा : "नियत समय पर ब्राह्म मुहूर्त में प्रार्थना की जाय।" आज हम लोगों को आदेश देकर 'नम्यो' कहनेवाले बापू की आवाज नहीं थी। 'दो मिनट की शान्ति' कौन कहेगा?

और 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' से आरंभ कर सारी प्रार्थना बड़ी मुश्किल से शुरू की। 'कर ले सिंगार' भजन गाया और फिर 'वहाँ से नहीं आना होगा···'। क्या

बापू के इस पवित्र और तेजस्वी चेहरे का पुनः कभी भी दर्शन न होगा ? ये प्रेमभरी आँखें ! यह आश्चर्यदायी वात्सल्य ! यह मुक्त हास्य ! अजीब निडरताभरी विशाल छाती और इस चमकते श्वेत चर्मवाले बापू का कभी भी दर्शन न होगा ? राग तो है आसावरी, पर है तो भयंकर निराशा ही !

फिर लोगों की असह्य भीड़ हो जाने से बापू की देह ऊपर लायी गयी। देश-विदेश के दूत एवं प्रतिनिधि और सरकारी नौकर भारतीय शान्ति के सम्राट् के अन्तिम दर्शन करने के लिए पहुँच गये थे।

● ● ●

अन्त्येष्टि : ३२ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
३१-१-'४८

शोक-दिवस

शनिवार ३१ जनवरी का प्रभात हुआ। कहीं भी उषःकाल का उत्सव दिखाई नहीं पड़ रहा था। सूर्यदेव भी इस तरह बादलों में समाये हुए थे, मानो मानव-हृदय के इस करुण कल्पान्त से स्तंभित ही न हो गये हों।

आज की इस अन्तिम यात्रा में भाग लेने के लिए लाखों मानव बड़े तड़के दिल्ली और बिरला-भवन आ पहुँचे थे। देशभर में शोक-दिवस मनाया जा रहा था। शहरभर में सर्वत्र राष्ट्रध्वज आधा झुक गया था। अल्बुकर्करोड सर्वसाधारण जनता के लिए तो बन्द करना पड़ा। वहाँ सेना का कड़ा पहरा था। सैनिकों के काम आनेवाली शस्त्रवाहिनी (Weapons Carrier) बापू की देह पधराने के लिए सजायी गयी। यह काफी ऊँची गाड़ी थी, जिससे सारी जनता देख सके। गाड़ी पर भगवा वस्त्र बिछाया गया था और फिर उस पर वह पटरा रखा गया, जिसे बापू बिरला-भवन में अन्त तक उपयोग में लाये। उस पर एक नीची छोटी-सी खाट उठाकर रखने की योजना थी, जिस पर बापू की देह धरी हुई थी। यह सारी व्यवस्था करने के बारे में प्रधान सेनापति जनरल बुशर के निवास-स्थान पर लंबी मंत्रणा की गयी थी।

ठीक ११ बजे इस पटरे के साथ पू० बापू की देह शववाहिनी पर रखी गयी। सफेद दूध जैसी चादर ओढ़ायी गयी। मैं इसी समय पू० भाई की चिन्ता कर रही थी कि स्टेशन पर उनका क्या हाल हुआ होगा! लेकिन अभी बिरला-भवन से बाहर निकले ही नहीं थे कि किसीने मुझसे कहा : "तेरे पिताजी आ गये हैं!" मुझे लगा, बापू मेरे बारे में स्वर्ग में भी चिन्ता कर रहे होंगे। स्वयं बिरला-भवन से निकलने के पहले ही मुझे मेरे पिताजी को सौंप देना चाहते थे। मानो इसीलिए इतनी देर वहाँ से निकलने के लिए रुके हों।

अश्रु-अंजलियाँ

रामदास काका नागपुर से हवाई जहाज द्वारा आ पहुँचे। पंडितजी का अतिप्रिय गुलाब का फूल उन्होंने अपनी अन्तिम अंजलि के रूप में चढ़ाया। बेचारी सुशीला बहन रोती-कलपती बहावलपुर से आ पहुँचीं। हम तीनों एक-दूसरे से लिपटीं और बापू की छाती पर मस्तक रखकर अपने आँसुओं की अंजलियाँ उन्हें अर्पित कीं। फिर भी आज बापू हम लोगों से बोलनेवाले नहीं थे। मैंने तो बापू से खूब-खूब माफी माँगी और एक ही माँग की कि "आपकी दी हुई पूँजी को भले ही मैं बढ़ा न पाऊँ, पर नष्ट भी न करूँ; इसका मुझे सतत भान कराते रहें!"

महायात्रा में सेना के स्थल जल और वायु तीनों विभागों की टुकड़ियाँ आ पहुँची थीं। लाल वर्दी के सशस्त्र पुलिस-दल की टुकड़ियाँ भी हाजिर थीं। चार बख्तर-गाड़ियाँ इस सारे जन-समुदाय के आगे रखने की योजना थी। मानवों की भीड़ का तो शुमार ही नहीं था। बापू की देह पर पुष्पवृष्टि हो रही थी। पैसों का तो ढेर लग गया। बिरला-भवन के मुख्य द्वार पर तो कड़ा पहरा था। श्रद्धांजलि समर्पण करने के लिए आनेवालों को पास दिया जाता था। लाखों की यह भीड़ शोक-सागर में डूब गयी थी। सभी की आँखों के आँसू सूख ही नहीं पा रहे थे।

जाओ महात्मन्!

हम लोगों ने बापू का शव उठाया। मुझे अपने कंधों पर बापू की ठठरी (अर्थी) उठाने की नौबत आयी! मैं भाग्यशाली हूँ या अभागिन? कोई कल्पना ही नहीं कर सकता कि जगद्वन्द्य बापू को आज मुझे शव के रूप में कन्धे पर ढोने का मौका आयेगा! एक ओर भयानक सिसकियों की आवाज! दूसरी ओर रेडियो

पर 'रिले' करनेवाले हृदय-विदारक शब्दों में दुनियाभर आँखों देखा वर्णन प्रसारित कर रहे हैं : "बापू के अवशेष को अब बाहर लाया जा रहा है। यहाँ लाखों लोग जुटे हैं। निःश्वास तक सुना जा सके, इतनी शोकग्रस्त शान्ति में भारत के राष्ट्रपिता आज अपनी अन्तिम शान्तियात्रा के लिए बिरला-भवन का द्वार छोड़ रहे हैं। लाखों लोग यहाँ हैं, किन्तु उनमें प्राण कहाँ? प्राण तो वह था, जो अभी अन्तिम यात्रा के लिए जा रहा है। जाओ, महात्मन्! जाओ, अपनी अन्तिम शान्तियात्रा के पावनतम मार्गों पर जन-हृदय की अंजलियाँ पाते हुए जाओ!...करोड़ों की जनता आपको—भारत के राष्ट्रपिता को, विश्व के युग-पुरुष को—अन्तिम वन्दना कर रही है। जाओ, महात्मन्!..."

रेडियोवालों के इन शब्दों से तो हृदय का बन्द-बन्द टूटता जा रहा था। हम लोग पण्डितजी का हाथ पकड़कर नीचे उतरे। पण्डितजी की आँखें तो इतनी सूज गयी थीं कि उनका प्रफुल्लित चेहरा देखनेवालों से उनकी यह दशा देखना दुश्वार हो रहा था। वे जनता को रास्ता देने के लिए इशारे से विनती कर रहे थे। एक लाउडस्पीकरवाली मोटर भी जनता को सूचना दे रही थी। सेना के तीनों विभागों के प्रतिनिधियों ने डोरी खींचकर बापू को—राष्ट्रपिता को—यमुना-तट पहुँचाने के पहले प्रणाम किया, सलामी दी। पू० मणि बहन ने कहा कि "आप लोग पाँच मील चल न सकेंगी, इसलिए घर पर ही रहें।" लेकिन रहा ही कैसे जा सकता है? शव-वाहिनी गाड़ी पर सरदार दादा, रामदास काका, मौलाना साहब, कृपालानीजी आदि कभी-कभी बैठ जाते, तो कभी पैदल ही चलने लगते। पण्डितजी भी ऐसा ही कर रहे थे। हम लोग पहली टुकड़ी में रामधुन गाते हुए चल पड़े। हमसे आगे पुलिस थी। सबसे आगे तो चार बख्तरबन्द गाड़ियाँ थीं, फिर सैनिक टुकड़ियाँ, पुलिस टुकड़ियाँ, सेवादल और शव-वाहिनी!

शव-वाहिनी के पीछे भारत-सरकार के मंत्री, गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबैटन, प्रादेशिक गवर्नर और मुख्य मन्त्री एवं मन्त्रिगण, उच्च सैनिक अधिकारी, विदेशी दूतावासों के प्रतिनिधि, मित्र, स्वजन, बिरला-परिवार, महाराज जामसाहब और अन्य देशी नरेश, कांग्रेस महासमिति एवं लोकसभा के सदस्य तथा स्थानीय नेता सभी चल रहे थे।

चार हजार स्थल-सैनिक, एक हजार वायु-सैनिक और एक हजार पुलिस की टुकड़ियाँ अपने-अपने गणवेष (वर्दी) में आ पहुँची थीं। चीन के राजदूत के आदेश से दिल्ली में रहनेवाले सभी चीनी नागरिक भी चीनी भाषा में 'गांधीजी अमर रहें' यह सुभाषित अपने झंडे में अंकित कर महायात्रा में सम्मिलित हो गये थे। वे लोग शव-वाहिनी के पीछे-पीछे चल रहे थे।

'करेंगे या मरेंगे' का शंखनाद

११॥ बजे अन्तिम यात्रार्थ प्रस्थान किया गया और करीब पाँच घण्टे में साढ़े पाँच मील का रास्ता निम्नलिखित क्रम से तय किया गया। लोगों ने शंखनाद किया। आखिर यह किस विजय का शंख था? क्या बापू की इस विजय का कि उन्होंने 'करेंगे या मरेंगे' इन दोनों सूत्रों को साकार कर दिखाया? अलबुकर्क रोड, किंग्स वे रोड, मेमोरियल पोर्च, प्रिंसेस पार्क, शाहजहान रोड से होकर दिल्ली गेट और दरियागंज होते हुए यह महायात्रा राजघाट पर जानेवाली थी। 'महात्मा गांधी की जय, महात्मा गांधी अमर हो गये' इन नारों और शंखघोषों के साथ करीब आध घंटे में महायात्रा मेमोरियल पोर्च के पास आ पहुँची। डेढ़ सौ फुट ऊँचे युद्धस्मारक के निकट से जब भीड़ गुजरने लगी, तो मेमोरियल पोर्च के अन्तिम छोर तक और आसपास के सैकड़ों वृक्षों, तार के खंभों, घरों की छतों—जहाँ भी दृष्टि जाती, वहीं मानवों के मुंड ही मुंड दीखते रहे। उसमें सर्वधर्मीय कौमें थीं। हजारों लोग हाथ जोड़ते, आँखों में आँसुओं की धाराएँ लिये अपने राष्ट्रपिता को प्रणाम करने के लिए टूट पड़ने को आतुर थे। बीच-बीच में पंडितजी और देवदास काका हम सभी लड़कियों को बारी-बारी से शव-वाहिनी पर बैठाते थे। हम लोग रामधुन कर रही थीं, इसलिए बारी-बारी से ही जा पाती थीं। रास्ता साफ रखने के लिए राइफलधारी गुरखा टुकड़ी और स्काउट रास्ते के आगे-आगे चल रहे थे। पंडितजी रस्से को लाँघ-लाँघकर इधर-उधर कूद पड़ते थे, उससे पुलिस और स्वयंसेवकों को बड़ा ही भय लग रहा था। उनकी रक्षा करना मुश्किल हो गया। यदि कोई कभी उन्हें दौड़कर ऐसा न करने के लिए कहता, तो वे काफी बिगड़कर कहते : "अरे, तुम बापू को तो नहीं बचा पाये!"

पाँच मील का पूरा रास्ता गुलाब के फूलों की पंखुड़ियों और पैसों से एकदम

छा गया था। भारतीय हवाई दल के तीन डाकोटा विमान बापू की शव-वाहिनी की तीन प्रदक्षिणा कर पुष्प-वृष्टि कर रहे थे। उस समय रामायण में वर्णित पुष्पक-विमान का दृश्य आँखों के सामने साकार खड़ा हो जाता था। तीन बार ऐसा हुआ। तीनों बार चक्कर काटकर सेंट-इत्र के साथ सिर्फ सच्चे गुलाब के फूलों की वर्षा सचमुच बड़ी अद्भुत बात थी।

दिल्ली गेट से आगे बढ़कर महायात्रा दरियागंज के रास्ते यमुना-तट की ओर मुड़ी। रास्ते में जिला-जेल लगा, जहाँ पू० बापू को कैदी के तौर पर रखा गया था। इस जेल के बाहरी दरवाजे के सामने जेल के चौकीदारों और वार्डरों ने जेलर के नेतृत्व में सैनिक ढंग से राष्ट्रपिता को सलामी दी, तो उस समय पण्डितजी शव-वाहिनी से नीचे उतर गये थे। राजेन्द्र बाबू तो सीलोन में थे। वे वहाँ से दोपहर में दिल्ली पहुँचे। बम्बई से भी बहुत-से मेहमान दोपहर को दिल्ली पहुँचे। अतः वे सब बीच रास्ते से ही महायात्रा में शामिल हो गये। दिल्ली गेट के पास तो भीड़ बेशुमार हो गयी थी, लगभग ३-४ लाख होगी। आसपास के गाँवों से भी लोग आ पहुँचे थे।

अन्तिम दर्शन

यमुना-तट पर १२"×१२" का २॥ फुट ऊँचा एक चबूतरा बनाया गया था। उसे यमुना मैया के जल से पवित्र किया गया। वह पंचपल्लव और पुष्पों से सजा हुआ था। १५ मन चन्दन की लकड़ी, ४ मन घी, २ मन धूप, १ मन नारियल, १ मन समिधा, ७॥ सेर कपूर—यह सारा सामान तैयार था। चिता के स्थान से १०० गज दूर मजबूत घेरेबन्दी कर दी गयी थी, जिससे लोगों की भीड़ न हो। यहाँ भी लाखों लोग पहले से ही पहुँच गये थे। जाड़े की हवा कानों को छेदती जा रही थी। हम लोगों के पहुँचने के पहले ही वहाँ भीषण भीड़ हो गयी। कितने बेहोश हो गये, तो कितने ही आहत हुए। एम्बुलेन्स कारें उपस्थित थीं और उनकी दौड़-धूप जारी रही। इस समय यह स्पष्ट दीख रहा था कि राष्ट्र के सभी मानवों को राष्ट्रपिता का अन्तिम दर्शन का समान अधिकार है। जब हम लोग शव को उतारने चले, तो फूलों के ढेर से सारी देह ढँक गयी थी। सिर्फ दिखाई पड़ रहा था, चन्दन-कुंकुम-चर्चित चेहरा, जो सदैव ऊँचा रहकर अपनी अनुपम विजय की साक्षी दे रहा था।

हम सबने उस शव-वाहिनी पर से शव को नीचे उतारा। पण्डितजी भी हिन्दू-विधि के अनुसार धोती पहनकर आये थे। सभीने उनसे ही बापू की अन्तिम विधि करने का आग्रह किया, पर उन्होंने यह काम रामदास काका को ही करने के लिए कहा। अर्थी उठाते समय वे याद रखकर अचूक हम लोगों को बुला लेते।

दाह-संस्कार

आखिर हम लोगों ने अपने पापी हाथों से बापू की देह को यमुना नदी के जल से सिंचित कर उत्तर दिशा की ओर सिर करते हुए चन्दन की लकड़ियों पर विधि और श्लोकों के साथ पधराया। शास्त्री रामधन शर्मा यह विधि करा रहे थे। हम लोगों ने सर्व धर्मों की प्रार्थना की। किसीकी मजाल है कि इस समय कोई अपना हृदय सँभाले रहे! हरे! हरे! जिस बापू को छोटी-सी पिन चुभ जाती, तो हम लोगों के कलेजे काँप उठते थे, आज उन्हींकी इस कोमल देह पर बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ रची गयी हैं। सचमुच···यह सबसे कठिन क्षण बिताना कितना भयंकर हो गया है! मैं तो सरदार दादा की गोद में ढेर हो गयी और बिलख-बिलखकर रो पड़ी। पण्डितजी भी बेहद रोये। सरदार दादा और पण्डितजी तो मानो आज एक ही दिन में एकाएक बूढ़े बन गये! लार्ड माउण्टबैटन उन्हें हर तरह से शान्त करने का यत्न कर रहे थे। लार्ड और लेडी माउण्टबैटन, उनकी दोनों पुत्रियाँ, उनके दामाद, लार्ड ब्रेबोर्न, मद्रास के गवर्नर सर आर्चीबाल्ड नाई, उत्तर प्रदेश की गवर्नर सरोजिनी नायडू, पूर्वी पंजाब के गवर्नर सर चन्दूलाल त्रिवेदी, खेर साहब, राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, राजकुमारी अमृत कौर आदि बहुत-से लोग तो उन्हें समझा हो रहे थे। आखिर एक प्यारी बहन के तौर पर लेडी माउण्टबैटन ने भी पण्डितजी की पीठ सहलाते हुए उन्हें आश्वस्त करने का यत्न किया, फिर भी उनका रुदन बन्द नहीं हो रहा था।

आखिर लपटें बढ़ने लगीं। हवा के साथ चिनगारियाँ भी जोरों से उड़ रही थीं। मानो अग्निदेव हमारे इन पापों को धिक्कारते हों, इसीलिए हवा के साथ इन चिनगारियों का वेग भी बढ़ता ही जा रहा था। हम लोगों को बेहाल देख सरदार दादा ने जो भी ट्रक मिली, उसमें हम लोगों को बैठाया और स्वयं बिरला-भवन में पहुँचाने के लिए आये। हम लोगों की यह हिम्मत ही कहाँ हो सकती थी कि बापू वाले कमरे में पैर रखें। पूरे बिरला-भवन में हम लोगों के सिवा और कोई नहीं था।

इसलिए हम लोग खूब खुलकर रोयीं, प्रलय ही मचा डाला। आखिर आँसू भी सूख गये। काफी रात और कड़कड़ाते जाड़े में हम लोग एकदम ठंढे पानी से नहाये। ३० तारीख से पानी तक गले से नीचे नहीं उतारा था।

करुण दृश्य

हमें राजघाट पर अन्त तक रहना था, लेकिन अपार भीड़ और यह वेहाल हाल देखकर हमें यहाँ पहुँचाया गया। हम लोगों की खोज-खवर लेने के लिए हम पर अत्यन्त प्रेम रखनेवाले काका-काकी भी आ गये। काका के घर मेहमानों को अपार भीड़ है। देवदास काका ने मुझे तो वहुत ही प्रेम से सँभाला। उन्होंने मुझसे वापू की सभी वस्तुओं की सूची वनाने के लिए कहा और इस तरह वात वदलवायी। अन्त में हम लोगों के इच्छानुसार अपनी गाड़ी में ही वे रात में पुनः चितास्थल पर ले गये। दक्षिण अफ्रीका के वापू के पुराने साथी सोरावजी भाई लगातार पहरा दे रहे थे। रातोरात काँटेदार तार की वाड़ वना दी गयी और सैनिक पहरा भी रख दिया गया।

हम लोग दो वजे पुनः वहाँ गये। अरे, वापू के कोमल चरण जल रहे थे—हड्डियाँ थीं। हमारी आँखें यह देखती हुई फूट क्यों नहीं गयीं! कितना पापाण हृदय होगा! मुझे तो यह देख वहाँ खड़ा रहना मुश्किल हो गया। इसलिए गाड़ी में आकर वैठ गयी। भगवन्! ऐसा करुण दृश्य जीवन में पुनः कभी मत दिखलाओ। मेरे जीवन के अभी दो दशक भी पूरे नहीं हो पाये और उसी वीच ऐसी दो करुण घटनाएँ! पू० कस्तूर वा और पू० महात्मा गांधी जैसे विश्व-इतिहास की अमर विभूतियों के अग्निदाह की मुझे साक्षिणी वनाया! दिल में यह चोट वनी ही रहेगी। और भले ही मैं दुनिया के समक्ष भाग्यशाली मानी जाती होऊँ, वह इस आघात के समक्ष एक आश्वासन ही है। ● ● ●

दाह-संस्कार के वाद : ३३ :

हम लोगों को तो मानो कुछ काम ही नहीं है। वापू थे, तव तो समय कम पड़ता था। लेकिन अव तो समय इतना वढ़ गया है कि उसे किस तरह विताया जाय, यह एक पहेली वन गयी है।

बिरला-भवन में हम लोग नियमानुसार सुबह उठकर प्रार्थना करते हैं—बापू बैठते थे, उस गद्दी के पास ही। कमरा तो अत्यन्त सूना लग रहा है। देवदास काका और रामदास काका तथा मेरे पिताजी यहीं हैं। इसलिए उनके पास ही रहते हैं और उन्हें यह अच्छा भी लगता है। काका और उनकी बनती भी खूब है। भाई भी काका और हम सबके नाम पर आनेवाली चिट्ठियों और तारों का ढेर, ट्रंककॉल आदि को बारीकी से छाँटते हैं, अलग-अलग करते हैं और जो चीज अखबारों में देने योग्य हो, उसे वहाँ भेज रहे हैं।

देश-विदेश के सन्देशों में कुछ तो ये हैं—अमेरिका के प्रमुखजन, अबीसीनिया, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, इटली, इण्डोनेशिया, मिस्र, कनाडा, क्यूबा, कोलम्बिया, चीन, चिली, जर्मनी, जापान, जेकोस्लोवाकिया, जंजीबार, यूनान, डेनमार्क, तुर्की, तिब्बत, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण रेडेशिया, नेपाल, नेदरलैण्ड, नार्वे, न्यूजीलैण्ड, फिलस्तीन, पुर्तगाल, पोलैण्ड, फ्रान्स, फिलीपाइन, फिनलैण्ड, ब्रिटेन, बर्मा, ब्राजिल, बगदाद, मोरक्को, युगांडा, लेबनान, लैक्सम्बर्ग, सानमेरिनो, सीसीलीस, सोमालीलैण्ड सूदान, स्विट्जरलैण्ड, स्वीडेन, सीरिया, संयुक्त राष्ट्रसंघ, हावाई। इस तरह दुनिया के सभी देशों से वहाँ-वहाँ की सरकारों, ब्रिटिश राजपुरुषों तथा सभी देशों में रहनेवाले पू० बापू के अनेक व्यक्तिगत मित्रों और शुभेच्छुकों के तार और समवेदना के सन्देश आये हुए थे। इसे देखकर सचमुच यही मालूम पड़ता है कि बापू ने तो सच्चा जीना भी जाना और सच्चा मरना भी जाना!

पू० बापू की अस्थियों (फूल) और भस्मी की मुख्य विसर्जन-विधि तो प्रयाग के त्रिवेणी-संगम में होनेवाली है, किन्तु भारत के राष्ट्रपिता का अन्तिम भस्म-दर्शन करोड़ों देशवासी कर सकें, इसलिए हर प्रदेश में भस्म-कुंभ पहुँचाना तय हुआ।

अस्थि-विसर्जन

भावनगर के लिए बलवन्त भाई मुझसे भस्म ले गये। उस समय हर प्रदेश में भस्म पहुँचाने की बात तय नहीं हुई थी। महाराजा साहब चाहते थे, इसलिए मैंने अपनी प्रसादी में से थोड़ी भस्मी दे दी। मुख्य-मुख्य प्रदेशों में भस्मी के प्रवाह के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की गयी: (१) इलाहाबाद—त्रिवेणी-

संगम में। (२) वम्बई--नासिक की गोदावरी में। (३) आन्ध्र--वेजवाड़ा की कृष्णा नदी में। (४) तमिलनाड--श्रीरंगम् की कावेरी में। (५) विहार—गया के पास गोमती में। (६) मध्यप्रदेश—त्रिपुरी के पास नर्मदा में। (७) पूर्वी पंजाब—जालंधर की सतलज में। (८) पश्चिम वंगाल—दक्षिणेश्वर की हुगली नदी में। (९) इन्दौर और राजस्थान—क्षिप्रा नदी में। (१०) उड़ीसा—महानदी में। (११) आसाम—ब्रह्मपुत्र में। (१२) अहमदावाद—सावरमती में और (१३) वर्धा—पवनार नदी में। इसके वाद जगन्नाथपुरी, सेतुवंध रामेश्वर, कन्याकुमारी और पोरवन्दर में समुद्र में भी भस्मी विसर्जित करना तय हुआ है।

२ फरवरी को राजघाट पर लाखों लोगों के साथ प्रार्थना हुई और उसके वाद शास्त्रीय विधि से सारी भस्मी तांवे के एक कलश में भर दी गयी। आँखों के सामने पू० वापू की विविध घटनाएँ खड़ी हो जाती हैं और उनका यह पटाक्षेप! सचमुच अन्त में मानव-देह की क्या स्थिति होती है? मुझ अभागिन के भाग्य में यह भी देखना वदा था! देखना ही नहीं, मेरे हाथों भगवान् ने भस्मी और अस्थियों का संचयन भी कराया…!

अस्थि-कलश

अस्थियों का यह कुंभ हम लोग विरला-भवन में ले आये। सारी विधि रामदास काका ने ही की। देवदास काका तो अपार वेदना से दुःखी थे, फिर भी हरएक का भलीभाँति ध्यान रख रहे थे। यह ताम्रपात्र उसी गद्दी पर रखा गया, जहाँ वैठकर पू० वापू हमेशा हँसते हुए कभी किसीको सुख-दुःख में मार्ग-दर्शन करते, कभी किसीसे यों ही वातें करते थे। तकिया पर वापू का भव्य चित्र रखा गया। यह कितना करुण दृश्य था, इसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता! यहीं सुवह रोज प्रार्थना होती। हजारों वहन, भाई और वच्चे इस अस्थि-कुंभ के दर्शनार्थ आये थे। एक चरखा अखण्ड चल रहा था और अखण्ड गीता-पारायण भी हो रहा था। फूलों और पैसों का तो ढेर-सा लग गया था।

भस्मी-विसर्जन

वारह फरवरी को सारे देश में एक साथ अस्थि-विसर्जन करना तय हुआ। आज

१० फरवरी को चरखा, प्रार्थना और गीतापाठ के साथ द्वादशाह श्राद्ध की क्रिया राजघाट पर हुई। यमुना-माता अनादि काल से कितने ही महापुरुषों की अस्थियों को अपने गर्भ में स्थान देती आ रही हैं। आज वहाँ से लौटकर हम लोग कल इलाहाबाद में अस्थि-विसर्जन के लिए जाने की तैयारी में लग गये...।

यह डायरी मैं इलाहाबाद जाते हुए गाड़ी में लिख रही हूँ। ११ फरवरी को रात में ३ बजे हम लोग नियमानुसार प्रार्थना के लिए तैयार हुए। प्रार्थना के बाद स्थूल अवशेष का कलश शंकु आकार की पालकी पर रखा गया और उसे हम लोगों ने अपने कन्धों पर उठाया और स्टेशन की ओर चल पड़े। सुबह ४॥ बजे हम लोग स्टेशन पर पहुँचे। पण्डितजी, लार्ड माउण्टबैटन आदि अन्य लोग कल हमसे पहले हवाई जहाज से इलाहाबाद पहुँच जायँगे।

अस्थियों को ले जाने के लिए पाँच डिब्बों की स्पेशल गाड़ी की व्यवस्था की गयी। बीच के डिब्बे में एक टेबुल पर राष्ट्रध्वज बिछाकर उस पर कलश रखा गया था। उसे फूल-मालाओं और बिजली के लट्टुओं से खूब सजाया गया था। सब लोग बाहर से अच्छी तरह देख सकते थे। अखण्ड रामधुन और गीता-पाठ चल रहा था।

ठीक ६ बजे सुबह पण्डितजी, लार्ड माउण्टबैटन का स्टाफ, देश-विदेश के राजदूत, अनेक नेताओं तथा विशाल जनसमूह ने विदा दी। पण्डितजी तथा अन्य लोगों की आँखों से सावन-भादों बरस रहे थे।

दिल्ली से इलाहाबाद आते हुए रास्ते में १० प्रमुख स्टेशनों पर यह अस्थि-स्पेशल रोकी गयी, जहाँ जनता की भारी भीड़ ने बड़ी ही करुणा और भक्ति के साथ राष्ट्रपिता के अन्तिम अवशेषों के दर्शन किये।

० ० ०

त्रिवेणी-संगम पर

: ३८ :

१२ फरवरी को सुबह हम सब लोगों ने नियमानुसार एकत्र होकर प्रार्थना की। बापू के सान्निध्य में यह अन्तिम प्रार्थना रही।

पण्डितजी, सरदार दादा, लार्ड माउण्टबैटन, लेडी माउण्टबैटन [illegible] में ही हवाई जहाज से इलाहाबाद पहुँच गये। सरोजिनी नायडू, पन्तजी, राजेन्द्र

बापू और केन्द्र का पूरा मन्त्रिमण्डल उपस्थित था। उत्तर प्रदेश के मन्त्रिमण्डल ने अपनी देख-रेख में सारी तैयारी की थी। पण्डितजी तो आये, तब से खड़े ही खड़े थे।

इलाहाबाद में जब-जब बापू आते थे, तो पण्डितजी एक प्रिय पुत्र की तरह स्वयं उनके स्वागत-सत्कार में लगे रहते थे। जनता ने भी इसी तरह उनका सत्कार किया है। भारत को स्वतन्त्रता दिलानेवाले राष्ट्रपिता को गोलियों से मार देने के कारण आये हुए इस अस्थि-कलश का स्वागत करते हुए आज स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री के नाते पण्डितजी को देख यहाँ की जनता को कितनी असह्य वेदना होती होगी !

ठीक नौ बजे हमारी ट्रेन इलाहाबाद स्टेशन पर पहुँची। त्रिवेणी-संगम करीब पाँच मील दूर होने पर भी यहीं से लाखों की भीड़ जमा हो गयी थी। फिर भी वातावरण में अभूतपूर्व शान्ति छायी हुई थी। स्टेशन पर सारा मन्त्रिमण्डल, देश-विदेश के प्रमुख जन हाथों में हार लेकर खड़े थे।

कुम्भ में अस्थि-कुम्भ

अस्थि-कुम्भ की पालकी को पण्डितजी, डॉ० जीवराज भाई मेहता, रफी साहब, सरदार दादा और मौलाना साहब क्रमशः अपने कन्धों पर ढोकर १७ फुट ऊँचे बने हुए गांधी-रथ तक ले आये और उसे रथ में स्थापित किया। विमान ऊपर से रथ पर पुष्प-वृष्टि कर रहे थे। यात्रा क्वीन्स रोड पर से सुव्यवस्थित जुलूस के रूप में परिणत हो गयी।

सर्वप्रथम लाउडस्पीकरवाली मोटरें और चार सैनिक जीपें साथ-साथ चल रही थीं। फिर १२-१२ की कतार में घुड़सवार सैनिक टुकड़ी और उसके पीछे कुमाऊँ रेजीमेण्ट चल रही थी। उसके बाद पुलिस की टुकड़ी और फिर सैनिक टुकड़ी थी। आगे १२-१२ की आठ कतारें और फिर अस्थि-पालकी के दोनों ओर तीन-तीन की कतारें, बीच भीड़ में हम बहनें रामधुन करती हुई चल रही थीं। उसके बाद देश के नेता, प्रादेशिक मंत्री, उच्च सरकारी अधिकारी, देश और विश्व के प्रतिष्ठित नागरिक ६-६ की कतार में चल रहे थे। पालकी के पीछे सैनिक टुकड़ी, विशाल जन-समुदाय और अन्त में भी सैनिक टुकड़ी थी। ८-१० लाख के इस जुलूस की

व्यवस्था सचमुच अद्‌भुत थी। ४ हजार लम्बे बांसों से बाड़ लगा दी गयी थी, जिससे बाहर की जनता दर्शन कर सके।

रास्ते पर पेड़ों, मकानों, तार के खम्भों आदि पर मानवों के मुंड-ही-मुंड दीख रहे थे। बीच-बीच में विमान से पुष्प-वृष्टि हो रही थी। 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से आकाश गूँज उठता था। इन दिनों इलाहाबाद में कुंभ मेला भी लगा हुआ था। लेकिन उस कुंभ से यह कुंभ जन-हृदय में अधिक स्थान कर गया। साधु-सन्तों ने भी इस महापुरुष को अन्तिम प्रणाम किया।

कुंभ मेले के मैदान में तो एक दैवी वातावरण ही छा गया था। लाउडस्पीकर-वाली मोटर से 'रघुपति राघव' की धुन गायी जाती और दस-पन्द्रह लाख की भीड़ एक ताल और एक स्वर से रामधुन को दुहराकर अन्तिम 'हे राम' कहनेवाले अपने प्यारे पिता को श्रद्धांजलि समर्पित कर रही थी।

कौन किसे आश्वासन दे?

आखिर अस्थि-रथ यमुनाघाट पर आकर खड़ा हुआ। जीपनाव (डक) पहले से ही सजाकर रखी गयी थी। उसमें रामदास काका, देवदास काका, सरदार दादा, पण्डितजी, पन्तजी, पद्मजा बहन, सरोजिनी देवी, मौलाना साहब आदि ने अस्थि-कुंभ को पधराया। यह सैनिक डक जमीन से चलकर खास ढलाव पर से यमुना नदी में उतरी। हम लोग अलग नाव से संगम पर गये। बाद में हमें भी उसमें ले लिया गया। इतनी कड़ाके की सर्दी में भी हजारों लोग जल में उतरकर दर्शन करने आ रहे थे। ३०-४० लाख की जनता यह दृश्य बड़ी करुणा के साथ देख रही थी। ऊपर आकाश, नीचे पवित्र जल, बीच में लाखों जनता की आंखों में अश्रुधाराएँ और हृदय में इष्टदेव की आराधना चल रही थी। सतत वेदमंत्र और रामधुन हो रही थी। एक ओर से आनेवाला गंगा मैया का शुभ्र जल और दूसरी ओर से आनेवाला यमुना मैया का श्याम जल तथा बीच में दोनों को मिलाकर गुप्त रूप में रहनेवाली सरस्वती—ऐसे त्रिवेणी-संगम में रामदास काका ने अस्थि-कलश को पधराया। उन्होंने हम लोगों के हाथों में भी एक-एक अस्थि-पुष्प दिया। असह्य वेदना और करुण रुदन के साथ हम लोगों ने भी गंगा और यमुना मैया को उन्हें सौंप दिया!

जवाहरलालजी, देवदास काका बिलख-बिलखकर रो पड़े। कौन किसे आश्वासन दे ? गंगा और यमुना दोनों बहनें भी इस समय मानो एक-दूसरी से मिलकर अश्रुधाराएँ बहा रही थीं। सूर्यनारायण भी यह दृश्य देख न सके और मानो इसीलिए वे बादलों में छिप गये। तीस-तीस लाख मानवों की भीड़ का करुण क्रन्दन कानों से सुना नहीं जा रहा था! फिर गीता का बारहवें अध्याय का पाठ किया गया। शरीर में दुःख का सन्ताप इतना बढ़ गया था कि इतनी ठंड में बरफ जैसे पानी में नहाने पर भी शान्ति नहीं मिल रही थी।

वापस लौटते हुए हम लोगों को बेहद एकाकीपन महसूस हुआ। ४०-५० लाख की भीड़ के सामने ऊँचे मंच पर पण्डित जवाहरलालजी ने भरे हुए गले से सिसकते हुए कहा : "आखिर आज मैं त्रिवेणी में अपने बापू को छोड़ आया!"

यज्ञ का यह उपसंहार ! : ३५ :

बिरला-भवन वीरान

पूज्य बापू के अन्तिम स्थूल अवशेष को इस तरह त्रिवेणी के अमर गर्भ में सौंपकर हम लोग आनन्द-भवन में आये। वहाँ काकी ने जबरदस्ती हम लोगों को खिलाया। रात में हम लोग दिल्ली के लिए रवाना हुए। दिल्ली में आने पर इतना बड़ा भव्य बिरला-भवन अब निर्जन और वीरान लग रहा था। सुबह-शाम राजघाट पर की प्रार्थना में हाजिरी देनेवालों में मन्त्रिमण्डल और अन्य हजारों लोग रहते थे।

देवदास काका ने हम लोगों से पू० मोटी बा (कस्तूर बा) की पुण्यतिथि (२२ फरवरी) करके ही दिल्ली छोड़ने के लिए कहा। फिर भी यहाँ बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता था। समय भी कट नहीं पाता था।

२२ फरवरी को हम लोग महरौली के श्री कस्तूर बा-आश्रम में प्रार्थना करने गये। गीता-पाठ किया। सुशीला बहन और मुझे तो इतना रोना आ रहा था कि हम लोग प्रार्थना ही न कर पाये। आगा खाँ महल में आज से ४ वर्ष पूर्व हम लोगों ने पूज्य बा को इसी तरह अन्तिम विदा दी और ४ ही वर्षों में पू० बापू को भी। शाम को हम लोग राजघाट पर भी गये। आज रात में हम लोगों को यहाँ से

रवाना होना था। अपना सामान बाँधने और आने-जानेवालों से भग्न हृदय से विदा लेने में ही सारा दिन बीत गया।

गुमनाम पत्र

हम लोगों के लिए सरकार ने दिल्ली से बम्बई तक तृतीय श्रेणी का डिब्बा रिजर्व करा दिया था। मेरे नाम सौराष्ट्र से गुमनाम पत्र आते थे कि गांधीजी की मृत्यु की साक्षी देंगी, उसकी सच्ची-सच्ची हकीकत बतायेंगी, तो आप भी गोली की शिकार हो जायँगी। इसीलिए सरदार दादा और बिरलाजी ने अपना एक जमादार भी हम लोगों के साथ कर दिया। कनुभाई भी नोआखाली से लौट आये थे। उनकी ही प्रतीक्षा थी, ताकि सभी साथ जा सकें।

राजघाट से आकर हम लोगों ने सामान गाड़ी में रखा और उसे रवाना कर दिया। हम लोग देरी से निकले। लक्ष्मी काकी ने मुझे बड़ी ही कठिनाई से विदा दी। मुझे एक साड़ी दी और रो पड़ीं। आभा भाभी ने रोरी की डिब्बी दी। स्टेशन पर भी लोग पहुँचाने आये हुए थे। डॉ० सुशीला बहन, देवदास काका, गोपू, तारा सभी की आँखों से आँसू सूख ही नहीं पा रहे थे। पत्र-प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

गाड़ी दो घंटे लेट थी। देवदास काका मुझे एकान्त में ले गये और गाड़ी खुलने तक मुझसे बातें करते रहे। खासकर तो मेरी डायरी के बारे में ही बातें हुईं। उसके बाद आज की राजनैतिक परिस्थिति में...के साथ कुछ बिगड़े हुए संबंधों के बारे में तथा बापू के अन्य साथियों के विषय में चर्चा हुई।...काका ने मुझे अपनी डायरी का विवरण किसीको भी न बताने की ताकीद की। साथ ही अन्य महत्त्वपूर्ण पत्रों को प्रकट न करने के लिए भी कहा।...की घूसखोरी के विषय में बापू के विचार जान लिये। काका ने स्टेशन के प्लेटफार्म पर चक्कर लगाते हुए आज अन्तिम दिन मुझे बड़ी ही ममता के साथ शिक्षा दी और कहा कि "तू खुद छोटी बच्ची है, पर तेरे पास का साहित्य बहुत बड़ा है। फिर तू भोली-भाली है। लेकिन भाई है, इसलिए निश्चिन्त हूँ।" उन्होंने पुनः दिल्ली आने का आग्रह किया और बीच-बीच में अपना हाल लिखते रहने के लिए भी कहा। गाड़ी ने सीटी दी और हम सबकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। बापू को विदा कर आज मैं घर जा रही हूँ। महुआ

इस तरह लौटना होगा, यह कल्पना में भी नहीं था। मेरे साथ जानेवालों में मेरे पूज्य पिताजी, मनु भाई, आभा भाभी और जमादार ये चार व्यक्ति थे।

२३ तारीख का सारा दिन गाड़ी में ही बीता। २४ को हम लोग बम्बई पहुँचे। वहाँ शान्तिकुमार के आतिथ्य में १ मार्च तक रहे। पहली को उन्होंने भावनगर के लिए हवाई जहाज की व्यवस्था कर दी और हम लोग भावनगर आये।

भावनगर से रवाना

यों तो भावनगर में एक ही दिन रहना था, पर लग गये पाँच दिन। महाराज और महारानी साहिबा ने मेरे साथ अपनी पुत्री-सा व्यवहार किया। बापू के एक शब्द से इन दम्पती ने अपना राज्य उनके चरणों में उत्तरदायी शासन के लिए सौंप दिया था। बापू की महत्ता और व्यापक प्रभाव का यहाँ प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। भावनगर के इन पाँच दिनों में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम हुए। ६ मार्च को 'भावनगर-समाचार' के संपादक मिलने आये और उन्होंने बापू के संस्मरण लिख भेजने के लिए अत्यन्त आग्रह किया। मैंने कहा : "यह लिखना मेरे लिए संभव नहीं।" बापू के लिए क्या नहीं लिखा जाय, यही प्रश्न था। इस बारे में मुरती साहब ने भी अत्यन्त आग्रह किया। ६ मार्च को दिन में १० बजे हम लोग भावनगर से रवाना हुए और शाम ५॥ बजे महुआ पहुँचे।

कालाय तस्मै नमः

आखिर में क्या आशा लेकर महुआ से नोआखाली में उस महायज्ञ में भाग लेने के लिए गयी थी? बापू ने मुझे लिखा था : "करेंगे या मरेंगे का संकल्प लेकर आओ!" लेकिन आखिर बापू बापू ही थे—दादा थे, माँ थे, अपनी बच्ची को वे मरने कैसे दे सकते हैं? स्वयं ही उन्होंने नोआखाली के इस महायज्ञ में अपना बलिदान देकर यह मन्त्र सिद्ध कर लिया और उसके बाद ही मुझे महुआ में आने दिया। यहाँ आने के बाद आज पहली बार मुझे यह भास हुआ कि अब इस जगत् में पुनः बापू मिल नहीं सकते। वर्षभर पूर्व १९४६ के दिसम्बर में मैं इसी महुआ से कलकत्ता गयी थी और सन् १९४८ की मार्च के इस पहले सप्ताह में दुनिया की एक विश्ववन्द्य विभूति की जीवन-लीला समाप्त करके ही वापस आयी। 'कालाय तस्मै नमः!'

सर्वोदय तथा भूदान-साहित्य

सुन्दरपुर की पाठशाला	|||)
गो-सेवा की विचारधारा	||)
समाजवाद से सर्वोदय की ओर	|=)
सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र	|)
सर्वोदय-संयोजन	१)
वर्ग-संघर्ष	||=)
गाँव का गोकुल	|)
शोषण-मुक्ति और नव समाज	||=)
भूदान से ग्रामदान	=)
पूर्व-बुनियादी	||)
एशियाई समाजवाद	१||)
लोकतांत्रिक समाजवाद	१||)
बच्चों की कला और शिक्षा	८)
गांधीजी क्या चाहते थे ?	||)
भूदान-पोथी	|)
सर्वोदय की सुनो कहानी [पाँच भाग]	१|)
किशोरलाल भाई की जीवन-साधना	२)
गुजरात के महाराज	२)
जाजूजी : जीवन और साधना	१|)
ग्राम-राज क्यों ?	|=)
ग्राम-स्वराज्य	||-)
ताई की कहानियाँ	|)
विनोबा-संवाद	|=)
सत्याग्रही शक्ति	|-)
जीवन-परिवर्तन [नाटक]	|)
कुलदीप [नाटक]	|)
प्रायश्चित्त [नाटक]	|)
चन्द्रलोक की यात्रा [नाटक]	|)
एक भेंट [नाटक]	||=)
प्राकृतिक चिकित्सा-विधि	१||)
बापू के पत्र	१|)
सुधरे हुए खेती के औजार	||)
गो-उपासना	|)
घर-घर में गाय	|)
कुष्ठ-सेवा	१|)
मेरा जीवन-विकास	||)
अहिंसात्मक प्रतिरोध	||)
प्यारे बापू [तीन भाग]	१|=)
तपोधन विनोबा	१||)
खाद और पेड़-पौधों का पोषण	१)
जापान की खेती	|||)
हमारे बाबा	=)
बाबा विनोबा (छह खण्डों में) प्रत्येक	|)